गढ़वाली लोकगीत

गोविन्द चातक, एम० ए० के लोक-साहित्य संबधी
अन्य संचयन

गढ़वाल की लोक कथाएं—१
गढ़वाल की लोक कथाए—२
नेपाल की लोक कथाएं
उत्तराखण्ड की लोक कथाए

गढ़वाली लोकगीत

खंड एक : लघु गीत

गोविन्द चातक

प्रकाशक
जुगल किशोर एंड कंपनी
राजपुर रोड, देहरादून
वितरक
साहित्य सदन, देहरादून

शिवास्ते पन्थानः

देश के विभिन्न भागों को एक-दूसरे के निकट लाने तथा उन्हे एकता के दृढ सूत्र में बांधने के साधनों में लोक-गीतो का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। यह बड़ी प्रसन्नता की बात है कि आज जबकि अपने देश को एक और अखड बनाने तथा बनाये रखने का प्रश्न इतना महत्वमय बनगया है, कुछ साहित्य-सेवियो का ध्यान लोक-गीतों के सग्रह और उनके प्रकाशन की ओर गया है।

मेरे परम प्रिय शिष्य श्री गोविन्द चातक, एम० ए० का यह गढवाल-लोक-गीत-सकलन अपने ढंग की पहली रचना है। एक तो यह सकलन पूर्णतया वैज्ञानिक दृष्टि से किया गया है। दूसरी बात यह है कि समूचे गढवाल प्रात के गीत इसमे आ गए हैं, जिनसे गढवाली भाषा के विभिन्न सूक्ष्म अवांतर भेदो का भी परिचय हो जाता है। चुनाव सहस्त्रो गीतो के भीतर से हुआ है। फलत. बहुत ही उच्च कोटि के गीत प्रस्तुत किये जा सके हैं और सग्रह को वास्तव में एक प्रतिनिधि संग्रह बनाया जा सका है। गीतों के हिंदी-पद्यानुवाद बहुत ही सुन्दर और सफल हैं। इनमे मूल के भावो की पूरी रक्षा की गई है। इस सकलन मे छोटे किंतु मार्मिक गीत ही रखे गये हैं। लम्बे गाथा गीतों तथा प्रबन्ध गीतों को लेखक ने दूसरे सकलन में देने का सङ्कल्प किया है, वह पुस्तक के आकार और प्रकाशन की सुविधा की दृष्टि से उचित ही है।

इसमे सदेह नहीं कि यह 'गढवाली लोक-गीत' बडे ही परिश्रम का सुफल हैं। ऐसी सुन्दर पुस्तक के संग्राहक अपने शिष्य गोविन्द चातक से मुझे ममता ही नहीं, आशाये भी हैं। उनका पथ प्रशस्त हो, यही मेरा आशीर्वाद है।

अध्यक्ष, हिंदी-विभाग, गया प्रसाद शुक्ल
दयानन्द कालेज, देहरादून।

लोक-गीत सभी के सुन्दर होते हैं पर हिमालय के केन्द्र में वह अपनी प्रकृति की तरह ही अति सुन्दर हैं। इनमें यहाँ की हर ऋतु की झाकी देखने में आती है। लघु गीतो में ही नहीं पवाड़ो में भी ५२ गढ़ों की भूमि समृद्ध है। यह कुछेक पवाडों के दिए हुए अंशो से मालूम होगा। वीर माधवसिंह को राजा ने पकड़ कर जेल में बन्द कर दिया था। जनता के लाडले की यह अवस्था जनता लिए असह्य थी। टिहरी के कितने ही भागों में दिवाली महीने भर बाद में आती है। कहते हैं, जब वह छूटकर आया, तभी वह मनाई गई। आज भी मसूरी के आस पास के गावो मे नाच के समय माधव के गीत गाये जाते हैं।

चातक जी ने विद्यार्थी अवस्था से ही लेखक होने के साथ ही अपनी भाषा के लोक-गीतों का प्रेम पाया। अभी ही वे बहुत से गीत संग्रह कर चुके हैं, भविष्य में भी उन्हें अपने सामने गीतों, पवाडो और कथाओं के परिमाण का लक्ष्य रखना चाहिए।

मसूरी — राहुल साकृत्यायन

१७-९-५४

दो शब्द

डा० आर० एन० सक्सेना, पी-एच० डी०, डी० लिट
डाइरेक्टर, इन्सीट्यूट आव सोशल साइन्सेज,
आगरा यूनिवर्सिटी, आगरा

किसी जाति के जीवन में लोक गीतो का बड़ा महत्व होता है। गढ़वाल के लोक गीत उस पर्वतीय भूभाग की आकाक्षाओं, भावनाओं, हर्ष और दुखों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो अपने प्राकृतिक सौंदर्य के लिए प्रसिद्ध है। हिमाच्छादित शिखरों की सुन्दरता, हरी-भरी उपत्यकाएँ, गहराई में गिरती फेनिल सरिताएँ—सभी एक आकस्मिक आगन्तुक की कल्पना को जाग्रत किये बिना नहीं रहतीं। इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं कि ये इस भूमि के लोक गीतों में अभिव्यक्ति पायें।

साथ ही जीवन पर लदी कठोरता का भार, जो कि गढ़वाल के लोगों को निरन्तर प्रकृति और कुरूप प्रभावों से सघर्ष करने के कारण सभी पहलुओ को आच्छादित किए हुए है, वह गीतों को गाते हुए हलका हो जाता है क्योंकि ये उनके हृदय के ऐसे उद्गार हैं, जो उनकी भावनाओं को पूरा प्रश्रय देते हैं।

श्री गोविन्द चातक ने उस गढवाल के लोक गीतों को एकत्र करने का महान प्रयास किया है, जो ऐसे लोगों की भूमि है, जो अपनी सैनिक परपरा और साथ ही शांति के व्यवसायो के लिए समान रूप से ख्यात हैं। श्री गोविन्द चातक ऐसे सुन्दर सचयन के लिए धन्यवाद के पात्र हैं और मुझे सदेह नहीं कि इस ग्रन्थ का प्रकाशन उन लोगों के द्वारा अच्छा सत्कार प्राप्त करेगा, जो जन-सस्कृति के अध्ययन में रुचि रखते हैं।

परिचय

गढवाल के लोक गीतों का प्रस्तुत संकलन हिन्दी के सामान्य पाठक को दृष्टि में रखते हुए किया गया है। सहस्रों गीतों मे जो लघु गीत मुझे विशेप रूप से अच्छे लगे, मैंने उन्हें संग्रह के लिए चुन लिया। गढवाली लोक गीतों की विविध शैलियों और भाव भूमियों का भी हिन्दी पाठक को परिचय देना आवश्यक था। इस लिए सचयन मे मैंने विविधता का भी विशेप ध्यान रखा है। प्रस्तुत संकलन मेरे वृहद् सग्रह का प्रथम खड है। सभी गीतों को एक साथ प्रकाशित करवाने के आज मेरे पास साधन नहीं। फलत. इस सकलन में केवल लघु गीत ही दिए गए हैं और जागर पवाडे तथा गाथा-गीत आदि इसमें आने से रह गए, जो प्रकाशक के मिलते ही दूसरे तीसरे खडों के रूप मे प्रस्तुत किए जा सकेंगे।

गीतों का वर्गीकरण मैंने स्थानीय नामों से ही किया है। छडा खुदेड, बाजबन्द, लामण, छोपती वासती आदि सब लोक प्रचलित नाम ही हैं। यह वर्गीकरण गीतों के भावों, विपयों और शैलियों पर आधारित है। किन्तु इसकी कमजोरी ऐसी है कि कहीं शैली को वर्गीकरण का आधार माना गया है, कहीं भाव को। उदाहरण के लिए, बाजूबंद छोपती, लामण विपय की दृष्टि से एक ही (प्रेम गीतों की) कोटि मे आने चाहिए थे किन्तु शैली, स्थान, और अवसर के अन्तर ने उन्हे पृथक पृथक् रूप मे ख्यात कर दिया। इसी तरह नृत्य के साथ होने के कारण भी कुछ गीतों ने अपनी एक पृथक सज्ञा ग्रहण कर ली, यद्यपि उनमें भाव की एकता नहीं मिलती। छोपती थाड्या, चौंफुला, झुमैलो, दरोल्या,

तांदी ऐसे ही गीत हैं, जो नृत्य विशेप के साथ गाए जाने के कारण नृत्यों के नाम से ही अभिहित होने लगे। नृत्य संवधी ऐसे वर्गीकरण को महत्वपूर्ण समझते हुए भी मैंने उसे साहित्यिक वर्गीकरण के लिए आवश्यक नहीं समझा है, अन्यथा 'विविध और सामयिक गीतों' के अंतर्गत संकलित गीत उन श्रेणियों में आ गए होते। किन्तु मेरे सामने एक उलझन रही है—कभी एक गीत कई नृत्यों—विभिन्न कोटि के नृत्यों—के साथ गाये जाने के कारण अनेक नाम वदलता दिखाई देता है। एक ही गीत कभी थड़्या वन जाता है कभी चौंफुला। दूसरी बात यह है कि एक ही कोटि मे माने जाने वाले इन नृत्य-नामी गीतो में मुझे कोई आधार स्वरूप एकता और एक सूत्रता नहीं दिखाई दी। 'सामयिक गीत' 'प्रेम, रूप, रस,' 'दाम्पत्य जीवन' मेरा अपना वर्गीकरण है। इस प्रकार के पृथक (नए) वर्ग वनाने की आवश्यकता मुझे इसलिए पड़ी क्योंकि पुराने वर्गों की रूढ़ परिधि मे वे नहीं आते थे। प्रेम गढ़वाली लोक गीतों का व्यापक विपय है। इतना मैं भी अनुभव करताहूँ कि छोपती, लामण, वाजूवद, के समान ही 'रूप, रस' तथा 'दाम्पत्य जीवन' को प्रेम गीतों की विभिन्न शैलियों में मानना चाहिए।

इस वर्गीकरण के साथ प्रत्येक कोटि के गीतों की पृष्ठभूमि मे मैंने उनके परिचय मे कुछ लिख दिया है। यह परिचय शास्त्रीय ढंग का न होकर कुछ सौन्दर्यान्वेपी का-सा हो गया है। वैसे पुस्तक के प्रारभ मे मैंने एक छोटी—सी भूमिका दे दी है। वह वहुत विस्तार पूर्ण और शोधात्मक होनी चाहिए थी, पर मैंने उसकी आवश्यकता नहीं ममझी। वास्तव में अभी हमारे सामने लोक साहित्य के संकलन का प्रश्न है, व्याख्या और विश्लेपण वाद की आवश्यकता है। विद्वान गीतो से ही अध्ययन

के सूत्र स्वयं निकाल लेंगे—इस विश्वास से ही मैंने केवल विषय-वस्तु को प्रस्तुत करने का ध्येय रखा है। वैसे जहा तक शास्त्रीय विवेचन का प्रश्न है, उस ओर भी मेरी दृष्टि है और पी-एच० डी० के लिए प्रस्तुत अपने थीसिस में मैंने उसअभाव की पूर्ति करने का संकल्प किया है।

गीतों का अनुवाद करते हुए मैंने शब्दों के अर्थ और भावों की रक्षा का यथेष्ट प्रयत्न किया है। बहुत से स्थानों पर हिन्दी के उपयुक्त शब्दों के अभाव में मुझे गढ़वाली शब्द ही ज्यों के त्यों रखने पड़े हैं। उनका अर्थ परिशिष्ट में दे दिया है। अनुवाद के सबंन्ध में यह बात भी कह देनी चाहिए कि कई लोक गीतों में पट्ट—तुक-मिलाने के लिए पहली पंक्ति व्यर्थ की जोड़ दी जाती है। उसका दूसरी से कोई भावात्मक सबन्ध नहीं होता। मैं जानता हूं कि कुछ विद्वानों ने उन पंक्तियों को भाव की दृष्टि से जोड़ने के लिए अर्थ की बड़ी खींचा तानी की है, पर मैंने ऐसा करने की चेष्टा नहीं की है। उन पट्ट-पक्तियों को मैंने अनूदित तो कर दिया है, किन्तु उन्हें कोष्ठकों में ही रखना उपयुक्त समझा है।

जिस रूप में जो गीत सुना गया है, मैंने उसे उसी रूप में स्वीकार किया है। मेरी ओर से उनमें भाषा या भाव के कोई परिवर्तन नहीं हुए हैं। एक गीत कई कंठों में कई रूप धारण कर सकता है। उसमें कहीं न्यूनता, कहीं वृद्धि भी हो सकती है। ऐसी अवस्था में मैं गीत के उसी स्वरूप के लिए उत्तरदायी हूँ, जिसमें मैंने उसे सुना है। प्रत्येक गीत के प्रारंभ मे मैंने टिप्पणिया तो दे ही दी हैं। इसके अतिरिक्त परिशिष्ट मे उन गायकों के नाम और स्थान भी दे दिए गए हैं, जिन्होंने मुझे इन्हे सुनाने की कृपा की है। मैं उन सबके सामने श्रद्धावनत हूं।

उत्तर प्रदेश की सरकार ने इस पुस्तक के प्रकाशन के हेतु आर्थिक सहायता दी—यद्यपि वह बहुत कम थी, फिर भी इस पुस्तक के प्रकाशन की दिशा में उससे मुझे बहुत संबल मिला है। प्रसिद्ध समाज शास्त्री डा० सक्सेना ने कार्यव्यस्त रहते हुए भी दो शब्द लिख कर पुस्तक को गौरवान्वित किया है। महा पंडित राहुल साकृत्यायन बहुत पहले से ही मेरे कार्य में रुचि लेते रहे हैं। उनके सुझाव मेरे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण रहे हैं। गुरुवर प्रो० गया प्रसाद शुक्ल का आशीर्वाद उनके हृदय के औदार्य्य के समान ही मेरा मार्ग दर्शन करता रहा है, श्री शंभुप्रसाद बहुगुना की प्रेरणा तथा 'पहाड़ी' जी का सौहार्द मैं कभी नहीं भूल सकता। इन गीतों को एकत्र करते हुए मुझे जिन लोगों का आतिथ्य और साहचर्य मिला, उनका मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ। रवाईं में गीत एकत्र करते हुए श्री वचन सिंह भंडारी (रेंजर) तथा भैय्या राजेन्द्र नयन ने मेरी बड़ी सहायता की है। श्री शकुन्त जोशी जौनपुर (गढ़वाल) यात्रा मेरे साथ रहे हैं। प्रभा ने इन गीतों को मेरे हृदय में स्वर और संगीत दिया। श्री ललिता प्रसाद बडोनी ने मुझे अनेक सुविधाएँ दी हैं। मेरे मित्र माया राम भट्ट, राजेश्वर प्रसाद उनियाल तथा अनुज श्याम सिंह कंडारी ने मेरी अनुपस्थिति मे पुस्तक के प्रूफ देखे हैं। मैं इन सबके लिए क्या कहूँ !

सरकासैंणी, लोस्तू
गढ़वाल

—गोविन्द चातक

प्रारंभिक शब्द

पुण्य सलिला गगा यमुना का उद्गम स्थल, गिरिराज हिमालय का हृदय, भारत का दिव्य भाल गढवाल प्रकृति देवी के शिशु की क्रीडा-भूमि-सा धरा का अद्वितीय शृंगार है। नेपाल, तिब्बत, कुमाऊँ, विजनौर तथा हिमाचल प्रदेश से घिरा हुआ, दस हजार वर्ग मील और दस लाख से अधिक जन संख्या वाला यह पर्वतीय प्रदेश एक दूसरा ही विलखता, विहसता ससार है। पृथ्वी के इस सुरम्य, सरल और सजीव भूभाग को, जिसे हम आज गढवाल कहते हैं उसकी सहस्रों वर्षों की प्राचीन सार्थक संज्ञा उत्तराखण्ड, केदारखण्ड, तपोभूमि आदि है। कालिदास ने इसे देव भूमि कहा है और पाली साहित्य में यह हिमवन्त के नाम से अभिहित हुआ है। बाद में गढों की अधिकता के कारण ही इसका नाम गढवाल पड गया।

गढ़वाल के मूल निवासी सभवत 'खश' जाति के लोग थे। बाद में जब आर्यों के एक दल ने ईस्वी सन् ३००० (पार्जीटर के अनुसार २२०० ई० पू०) मे इलावृत्त, अर्थात् मध्य हिमालय (कनौर, जौनसार, गढवाल, कुमाऊँ) के रास्ते भारत में अतर्वेद मे प्रवेश किया और खशो का पराभव कर उन्हें दस्यु बना दिया। उस समय जो आर्य यहाँ बसे या जो नीचे से भी यहाँ आकर रहने लगे, उनका जीवन नई परिस्थितियो में फला फूला। इसी लिए मैदानी उपत्यकाओं में निवास करने वाले आर्यों से उनका जीवन कई बातो में भिन्न रूप में विकसित हुआ। धार्मिक जीवन की एकात साधना हिमालय के क्रोड में विशेष फली फूली। इसी लिए गढ़वाल तीर्थों आश्रमो, और साधना का पुण्य स्थल बनकर रहा और दूर दूर की धर्म प्राण जनता को अपनी ओर आकर्षित करने की क्षमता उसमें सदा से बनी रही।

बाद मे जब मध्यदेश में राजनैतिक सघर्ष हुए तो कई भारतीय

जातियां शरण की खोज में गढवाल पहुची। पंवार, चौहान, कत्यूरी, राठौर, राणा, गुर्जर, पाल, तथा कुछ बगाल और दक्षिण की ब्राह्मण जाति के लोगों ने इस पर्वतीय प्रदेश को अपने प्राणों और धर्म की रक्षा के लिए सुरक्षित समझकर इसे अपना अधिवास बना लिया। यही कारण है कि गढवाली लोक जीवन, भाषा और संस्कृति पर भारत के सभी भागो— विशेषत. राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब और बंगाल—का प्रभाव स्पष्ट लक्षित होता है। इसी तरह नेपाल से गढवाल बहुत निकट ठहरता है। इस दृष्टि से गढवाल भारत का एक सूक्ष्म रूप ही है।

फिर भी गढवाल की अपनी एक ऐतिहासिक परम्परा है और भौगोलिक विशिष्टता भी। जैसे उसकी एक पृथक सामाजिक पृष्ठभूमि है, वैसे ही एक सांस्कृतिक सुष्ठुता भी। वह यक्ष, गंधर्व, किन्नर, और अप्सराओं का पौराणिक अधिवास और ऋषि-मुनियो के तप और अजस्र चिन्तन तथा दर्शन का एक कल्पनालोक है। वह रिखोला, माधोसिह और कपफू चौहान की वीर प्रसविनी भूमि है। इससे भी अधिक, वह प्रकृति का क्रीडा स्थल है। वहा के किनगोड, हिसर, घिघारू, कायफल आदि फल, फ्यूली, बुरास, कूजो, बालई, रायमासी, सुरमाई, जई जैसे प्राणों को कल्पनालोक में हर ले जाने वाले फूल, कपफू, हिलास, घूगती, म्योली, मुनाल आदि विहग वहां के ही हैं। पाताल को जाती हुई घाटिया और आकाश को चूमती हुई शैल मालाएँ वहा की अपनी ही विषमताएं हैं। वहां के देवदारु, बांज, रौंस, कैल, चीड, तथा कुकाठ के वन, वर्फ से ढके भूमि खण्ड, रवि की किरणों से हँसती, मदमाती पर्वत की कटि से लिपटी सरिताएं, सीढीनुमा खेत, कहीं ककरीली, कहीं पथरीली कहीं चढती कहीं उतरती पहाड की रीढ की तरह राहें, सग्वाडियां, फुलवाडियो लता-मंडपो से सजी कुटियां, घराट और मरुढियां न

जाने विश्व का कितना सरल सौन्दर्य समेटे हुए हैं। इसीलिए गढ़वाल का मानव प्रकृति-पुत्र है। वह हल चलाकर, भेड़ें चराकर वंशी और गीत के स्वरों में जीवन की कटुताओं को भूल जाता है। उसकी भुजाएँ रात दिन पहाड़ों से लड़ती हैं और वह अपनी अथक श्रम-साधना के कणों का शिलाओं पर जड़ते हुए हृदय के सत्य को कर्म में ढालने के लिए जीता है। इसी लिए जगत् की कृत्रिमताओं से दूर वहां जीवन उगता सूर्य-सा खिलता है। वहां फूल व्यर्थ नहीं फूलते, नदियां व्यर्थ नहीं गातीं। वहा आकाश 'भाई' है और चन्दा 'माता'। उसी तरह कफफू पक्षी हृदय की एक हूक है और फ्यूंली का फूल किसी की भटकी हुई लालसा का करुण अवसान! वहा मानव विश्व परिवार का अग बनकर जीता है। इसी लिए आखों में आंसू और होंठों पर मुस्कान लिए गढवाल का मानव आज भी मानव है। इसीलिए उसकी सास्कृतिक निधि भी उतनी ही सजीव और सुन्दर है। उसके व्रत, त्योहार, थौल, मेले, इतिहास, लोक काव्य और संगीत, युग युग से चली आती परम्पराएँ, रीति नीतिया और जनश्रुतियां—सभी जन जीवन का सशक्त और सहज स्वरूप व्यक्त करती हैं। और इसीलिए वहां का लोक साहित्य वहां के लोक-मानस की उतनी ही सजीव और पूर्ण व्याख्या प्रस्तुत करता है।

गढ़वाल का हृदय संगीतयय है। यहां की हरी भरी धरती गाती है, बुरास के फूलों के सिंदूरी सोहाग से रगी डाडी-कांठिया (पर्वत शृंखलाएं) गाती हैं। ढाक्की और वाद्यी, औजी और हुड़क्या गाते हैं। जीवन वहां कला के मर्म को स्वत ही छूता है। जिस प्रकार एक बार वाल्मीकि का विषाद स्वत ही काव्य की सज्ञा ग्रहण कर गया था, उसी प्रकार गढवाली नारी के एकात क्षणों की वेदना अभिव्यक्ति का जो रूप धारण करती है, वह हृदय से कविता बनकर फूट पडती है। वाद्यी तो प्राशु कवि ही होते हैं। और

जागरी पुरोहित भक्ति की रसानुभूति में अनजाने ही काव्य की सृष्टि कर जाते हैं।

गढवाल कई स्वरों में गाता है। वहां के जागर, पवाड़े, बाजूबंद खुदेड गीत लिखित साहित्य की भक्ति, वीर, शृंगार और करुण रस की परम्पराओ को भी मात करते हैं। पवाडे मौखिक प्रबन्ध अथवा खण्ड काव्य बनने की क्षमता रखते हैं। बाजूबंद, छोपती और लामण उदात्त शृंगार के मनोहारी संवाद-गीत हैं। खुदेड गीतों में नारी हृदय की करुणा की काव्य श्री है। झुमैलो और चौफुला में प्रकृति का वैभव बिखरा है और जागर देवी देवताओं की अर्चना और स्तुति के गीत हैं। छुडो में नीति और अनुभवजन्य गम्भीर चिन्तन है। इन गीतों के रूप में स्वय गढवाल ही गाता है।

२

पिछे कहा जा चुका है कि आरम्भ में गढवाल सायको की भूमि थी। उस समय लोग गृहस्थ आश्रम छोडकर यहा साधना और चिन्तना के लिए आते थे। अपने देश मे साहित्य का प्रारंभिक रूप हमें देवी देवताओं और प्राकृतिक शक्तियो को सबोधित कर लिखे गये वैदिक गीतो मे मिलता है। आर्यो के वे वैदिक स्वर आज भी गढ़वाल के प्राचीन गीतो में सुने जा सकते हैं। तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर गढवाल के स्तुति और जागर गीतों की परम्परा निर्धारित को जा सकी है। इसके सिवा राम, कृष्ण, शिव के साथ साथ बाद मे भक्ति की जो धाराए समय समय पर प्रवाहित हुई, उनका प्रभाव जागरों पर देखा जा सकता है। बौद्ध, वज्रयानी, सिद्ध, नाथ और कबीर पथी साधुओ का उल्लेख जागर गीतो में कई सदर्भो मिलता है। नाथो ने गढवाल के लोक-जीवन को बहुत प्रभावित किया है। गढवाल के भिन्न भिन्न भागो में उनकी समाधिया हैं और आज भी इस सम्प्रदाय के योगी और गृहस्थ वहां

मिल जाते हैं। इन्हीं के प्रभाव से यहा शैव स्मार्त तथा बौद्ध धाराओं ने कुछ भिन्न रूप धारण कर लिया। भक्ति की नारायणी धारा ने आगे चलकर वहा एक नया रूप धारण किया और उसी प्रकार शैव मत बौद्ध धर्म में घुल मिल गया। यक्ष पूजा गढवाल में अपने चरम उत्कर्ष पर पहुंची। यही नहीं, वैदिक कर्म-कांड शाक्त रूप धारण कर जब बौद्ध धर्म की ओर अग्रसर हुआ तो तन्त्र-मन्त्र ही धर्म का प्राण बन गया। ओझा के मन्त्रों, झाडा-ताडा, भूत, भैरव हटाने के तन्त्र-मन्त्रों में शिव, मछदरनाथ, गोरखनाथ, माणिक नाथ, चौरगीनाथ, कबीर, रैदास आदि प्रमुख रूप से आते हैं और उनकी 'बोकसाडी विद्या' का यत्र-तत्र उल्लेख मिलता है। वस्तुत यह बोकसाडी विद्या और कुछ नहीं, तंत्र-मंत्रों की यक्ष-विद्या ही थी। गढ़वाल के जागर गीतों में हमें धर्म की विभिन्न धराओं का सगम दिखाई देता है।

जिस प्रकार ये जागर-गीत अपनी युग भावना के अनुकूल पडते हैं, इसी प्रकार उसके बाद की सामाजिक स्थिति ने नए प्रकार के गीतों को जन्म दिया। बाद में ज्यों ज्यों गढ़वाल में गृहस्थों की बस्तिया बसने लगीं, त्यों त्यों समाज के जीवन में कुछ नए परिवर्तन होने प्रारभ हुए। पहाडी भूमि होने के कारण गढ़वाल कई छोटे २ खण्डों में विभक्त रहने को बाध्य रहा। फलत· रोम के नगर राज्यों की भाति गढवाल भी शासन की कई इकाइयों में बँटा रहा। गढ़वाल के तत्कालीन ५२ गढ प्रसिद्ध ही हैं। पहाड की हर चोटी पर गढ था और उसका एक गढपति। वे सत्ता के लिए प्राय लडा-भिडा करते थे। इसी लिए, हिन्दी में जिस प्रकार सामंतों की छाया में वीर गाथाओं की परम्परा चली, उसी प्रकार गढ़वाल में पवाडों की स्थिति है। पवाडे गीत रण कुशल वीरों के जीवन के आख्यान हैं जिनका आधार ऐतिहासिक ही है।

जहा इस युग की देन कूटनीति, छल छद्म और राग द्वेष पूर्ण शौर्य है, वहा पतनोन्मुख सामतयुगीन विलासिता भी उसके पीछे लगी रही। जीतू बगड्वाल, फ्यूंली रौतेलो, सरू इसी युग के विलास के भाव-चिह्न हैं। युद्ध के अवसर पर, सामतो के पारस्परिक कलह के समय वीरता के साथ शृगार फुरसत का साथी था पर सामती सत्ता के दृढ होते ही शृगार ने वीर का स्थान ले लिया। नारी एक ओर विलास की साधन बनी, दूसरी ओर बैल की तरह उसका उपयोग खेती-पाती के लिए किया जाने लगा। फलत. इन परिस्थितियो ने नारी जाति के जीवन में जिन विषमताओ को जन्म दिया, वे लोक गीतों मे बहुत स्पष्ट होकर सामने आईं। खुदेड गीतो में गढवाली स्त्री की सारी करुणा सिमटी सिकुड़ी है। उस समाज की भूख, नाग (नग्नता), सास का दुर्व्यवहार, काम का भार, स्नेह और समानता का अभाव कुल मिलाकर ससुराल की भयकरता जीवन को घेरे रही। बाद में जब जीविका के लिए गढ़वाल के लोग बाहर जाने लगे तो पति-वियोग उसके मत्थे आ पढ़ा। परदेश गए प्रिय के लिए सदेश, मायके की याद, और जाते यौवन की अस्थिरता के चित्र इसीलिए गढवाली लोक गीतों में बहुत गहरे रँगो में अँकित हुए है। बारहमासी, चैती, चौंफुला, झुमैलो आदि गीतो में गढवाली नारी के अभावों की वाणी गूँजती है। प्रकृति उनमे उद्दीपन बनकर आई है पर आत्मीयता के रंग से रँगी हुई है। गढवाल में मनुष्य और प्रकृति की एक सूत्रता है। वहाँ प्रकृति मानव और पशु की साझी मा है। इसीलिए इन गीतो में गढवाली लडकी अपने मायके के वनो, पर्वतो, नदियों, पशु, पक्षियो को उसी तरह याद करती है, जैसे कोई अपने भाई-बहिनो को याद करता है। पति-वियोग ने जहाँ उसे आत्मीयता पूर्ण बनाने में सहायता दी, वहा यौन सम्बन्धों के अभावो ने जीवन को नई विषमताएँ भी दीं। वर्षों तक

पतियों के बाहर रहने से एक स्थिति ऐसी आ जानी किसी के लिए सम्भव है जब यौवन ढिगने लग जाय। तब वह लोगों के बीच चर्चा का विषय बन जाता है। गढवाल के बहुत से प्रेम-गीतो के पीछे ऐसी ही परिस्थितिया, मजबूरिया और कुंठाएं हैं। वैसे 'रामी' का गीत गढवाली नारी का अभिव्यक्त आदर्श है और अनेक लोक गीतों मे प्रेम की अन्यन्यता व्यक्त हुई है। 'बाजूबन्द' में प्रेम का स्वस्थ रूप व्यक्त हुआ है।

अग्रेजों के आने पर गढ़वाल खेती-पाती से दूर भागकर नगरों की ओर आकर्षित हुआ। गढ़वाल के निकट फौजी छावनिया खुलीं। नौकरी-पेशा, पढ़ाई लिखाई, कुलीगिरी, और सेना मे भर्ती होने के लिए नये द्वार खुले। पहली बार उसकी आखें बाहरी जगत् में खुली— उसने अग्रेजी (साहबी) जीवन के चमत्कार देखे, फिर अपने घर को निहारा और वह हीनता की भावना से हमेशा के लिए लद गया। यह सत्य है कि इस समय उसे फौज में नौकरी मिल गई, पर सैनिक जीवन के प्रति उसकी जो घोर प्रतिक्रिया हुई, वह कई लोक-गीतो मे व्यक्त है। उससे कुछ लोगो को रोटी रोजी तो जरूर मिल गई किन्तु गढवाल अपनी धरती से अलग हो गया। परिवारिक व्यवस्था छिन्न भिन्न हो उठी और खेती पर ही आधारित आत्म निर्भरता मिट-सी गई फलत: सामत-युग की परिस्तिया, विवशताएं और कुठाएं तब और विकसित होकर सामने आईं। गढवाल बौखलाया हुआ उठ खडा हुआ। अग्रेजों की दासता और सामती सत्ता के विरुद्ध जन आदोलन प्रारभ हुए। गाधी जी की राष्ट्रीय चेतना ने एक बार पहाडों को भी हिला दिया। सुभाष ने आजाद हिंद के नारों से गढवाल को गुंजा दिया! नेहरू, पटेल, सुमन, नागेन्द्र मोलू तब गढवाली लोक गीतो की चेतना बनकर आये। इस समय जो राष्ट्रीय गीत बने उनमें जन आन्दोलन का उत्साह और हर्ष समाया हुआ है।

भारत की स्वतन्त्रता के बाद जीवन ने जैसा एक नया मोड लिया है वैसे ही लोक गीतों ने भी। गढवाली लोक गीतों में आज के जीवन की आशा-निराशा, चेतना-अवहेलना, क्रिया-प्रतिक्रिया सजीव रूप में मुखरित हुई है। आरम्भ की मँहगाई, दुर्भिक्ष, भूख, नग्नता, बेकारी के गीत बरसाती सोतो की तरह पहाडो से बह चले। किन्तु लोक जीवन फिर भी हारा या थका नहीं। 'अपनी ही दुनिया है अपना ही राज है' और 'भारत के गरीव, नेहरू, तेरे हीं भरोसे हैं। पक्तिया जन हृदय की उस आशा और सहिष्णुता को व्यक्त करती है जिसकी पूर्ति का विश्वास जनता युग-युग से अपने राष्ट्र के कर्णधारो से करती आई है। फलत निर्माण के सुन्दर सपने जन जन की आखों में घूम रहे हैं। श्रमदान सम्बधी गीतो में निर्माण के सुन्दर भाव व्यक्त हुए हैं। आज जनता के विचारो, भावो और सास्कृतिक तत्वों में भारी परिवर्तन होते जा रहे है। फैशन विरोधी गीत, नये जमाने के गीत, छुवाछूत, और नारी की समानता के गीत हमारे इस युग की बहुत बडी देन हैं।

३

लोग कहते हैं कि कविता सभ्यता के साथ मरती जा रही है। हिंदी कविता जो हमें आज पढ़ने को मिल रही है, वह भी इसी बात का समर्थन करती है। सचमुच सभ्यता ने मानव का भाव-पक्ष कुछ दुर्बल बना दिया है। आज के बुद्धि जीवी मानव के जीवन से इसीलिए कविता और भावुकता दूर भागती जा रही है। न्तिु लोक गीनो में आज भी वह विद्यमान है क्योंकि लोक के पास अभी हृदय है। लोक-हृदय की वे भावनाएँ, जो केवल लोक गीतों में ही विद्यमान हैं, मरती हुई कविता को भी जिलाने की क्षमता रखती हैं। वस्तुत जीवित साहित्य की रचना कुर्सी पर बैठकर खिड़की से बाहर झाकने में नहीं की जा सकती। जीवन का जो

गहरा सपर्क लोक-साहित्य को प्राप्त है, वह किसी भी अभिजात वर्ग के साहित्य को नहीं। जहा तक गढ़वाली लोक गीतो का सबंध है, उनमें से ऐसे स्थल सरलता से चुनें जा सकते हैं जो जीवन की व्यापक गहराइयों मे पाठक को डुबा सकने की क्षमता रखते हैं। रूप की जैसी सुन्दर उक्तिया गढवाली गीतो में आई हैं, उन पर लाखो लिखे-पढ़े कवियों के काव्य न्योछावर किये जा सकते हैं। उसके लिए जो प्रतीक और उपमाएं चुनी जाती हैं, उनमें सजीवता के साथ नवीनता का भी आभास होता है। बाजूबन्दो में स्त्री पुरुष के आमने-सामने के बोल सरल हृदयों की प्रेम-पूर्ण अनुभूतिया हैं। उनमें जहा एक ओर प्रेम की स्वस्थ मांसलता है वहां जीवन के सजीव आदर्श भी हैं। भवभूति को मोहनें वाली करुणा के दर्शन खुदेड गीतो मे ही होते हैं।. गढ़वाल की प्रत्येक दबी-कुचली नारी कवियित्री है। वहा की सभी स्त्रिया मीरा और महादेवी हैं। अध्यात्म और ऊंचा चिन्तन उनकी चिन्तना का विषय भले ही न रहा हो किन्तु धरती पर जिए जाने वाले अपने जीवन की अनुभूतिया जिस रूप में उनके गीतों में व्यक्त हुई हैं, उस पर काव्य न होने की शका नहीं की जा सकती। राम और कृष्ण काव्य के बडे प्रिय विषय कवियों के बीच रहे हैं। सूरदास, देव, बिहारी, मतिराम अपने में महान् हैं किन्तु गढवाली जागरो में कृष्ण का जो चित्रण हुआ है, उसकी भी अपनी मौलिकता है। अभिजात वर्ग के हमारे हिन्दी कवियों ने वीरता के वर्णन में मास के लोथडो, खून की नदियों, कालिकाओ और गिद्धो का वर्णन करके ही अपनी भावुकता की इतिश्री समझली, किन्तु गढ़वाली लोक गीतों मे जो युद्ध के ऐसे भयकर और जुगुप्सा जनक दृश्य नहीं मिलते, उसके पीछे लोक मानस की अपनी मान्यताएं व्यक्त हुई है। इसी तरह गढवाली प्रबध गीतो मे कथा के साथ भावों का वातावरण बडा मोहक होता है,

मागल गीतों में विवाह की सामान्य क्रियाओ का उल्लेख ही नहीं वरन कन्या की भावना, मातृपक्ष की करुणा तथा श्वसृ-पक्ष का उल्लास भी व्यक्त हुआ है, जो काव्य की मार्मिक अनुभूतियों से युक्त है। ससुराल के मार्ग में पड़ने वाला मेघाछन्न, भयावह पहाड़ नवविवाहित कन्या के हृदय में जो काली छाया डालता है, वह बहुत मार्मिक है। उसी प्रकार मायके की स्मृति के साथ ससुराल की कटुता के जो चित्र उनमें उतारे गए हैं, वे हृदय को अनायास ही छू जाते हैं।

छोपती, लामण और छूड़े विशेषत. रवाई-जौनपुर क्षेत्र के लोक गीत हैं। वहा के लोगों के अनुरूप ही इन गीतों में हृदय की रसमता दिखाई देती है। छोपती नृत्यगीत हैं, जो युवा हृदयो की उन्माद के स्वरो में मुखरित होते हैं। लामण में प्रणय की गहन अनुभूति है। छूड़ों में वात्सल्य का भाव सतान की चाह के रूप में व्यक्त हुआ है। छूड़ों मे भेड जीवन पर जो पद्य मिलते हैं, वे लोक जीवन की सच्ची अभिव्यजना करते हैं। यही नहीं, उनमें जीवन के सजीव अनुभवों की निधि सुरक्षित प्रतीत होती है।

अधिकाश लोक गीत जीवन की श्रमशील परिस्थितियों, निरन्तर परिश्रम तथा प्रकृति जन्य बाधाओ के बीच के यथार्थ से उद्भूत हुए हैं। गढवाली लोकगीतों में एक वृहत बडा अश स्त्रियो के गीतों का है और ये गीत मूलत: श्रम की पीडाओं से निस्सृत हुए हैं। उसी प्रकार धार्मिक गीतों का आधार आदिम मानव का प्रकृति जन्य प्रतिक्रिया ही है। देवीदेवताओं, भूत, प्रेत और अप्सराओ की पूजा स्वान्त सुखाय न होकर मनौती के लिए थीं जिसके पीछे यह भावना प्रबल थी कि गौएँ अधिक दूध दे, फसल अच्छी हो, आकाश ठीक समय पर बरसे तथा आधि व्याधिया दूर हों। इससे स्पष्ट है कि लोक जीवन में लोक गीतो के सम्बध में उपयोगिता

पहली वस्तु है। इस कथन मे अधिक सत्य नहीं कि लोक-कला आदिम मानव की सौंदर्यानुभूति से अविर्भूत हुई है। वास्तव मे सौंदर्यानुभूति की यह प्राथमिकता तो बहुत कुछ 'कला कला के लिए'-अभिव्यजक काव्य-साहित्य में मिलती है। इस अतर के कारण ही लोकगीतो और कविता की भावुकता मे धरती और आकाश का व्यवधान होना असम्भव नहीं। लोक सपंर्क में फूल-फलने वाले लोक गीतो की भावुकता धरती की वास्तविकता है, काव्य की भावुकता आकाश की उडान। लोकगीत सामूहिक रचनाएँ होने के कारण कविता के वैयक्तिक तत्व के कारण भिन्न ठहरते हैं। कविता जब कविता बनकर ही रह जाती है, तब लोकगीत एक ही साथ कथा, इतिहास, नाटक का रूप भी धारण किये प्रतीत होते हैं। फलत: उनकी गद्यात्मकता अनिवार्य-सी हो जाती है। किंतु बुद्धिवादी को लोकगीतो की जो पक्तिया नीरस और गद्यात्मक लगती है, उनमें भी लोक हृदय मे भावनाओ को जगाने की अपूर्व क्षमता होती है। गढ़वाली लोक गीतो मे आये हुए डांडी काठी, खुद, हिसर, काफल, फ्यूंली, बुरास, हिलास जैसे शब्द गढवाली मानस को सिहरन से भर देते है, किंतु यही बात हिंदी पाठको के विषय में नहीं कहा जा सकती। स्पष्ट है कि लोक गीतो मे लोक की दृष्टि में कोई पंक्ति नीरस और गद्यात्मक नहीं होती।

४

जहाँ तक गढवाली लोकगीतों की शैली का प्रश्न है, सभी गीतो में शैली की एक सूत्रता नहीं मिलती। वस्तुत प्रत्येक वर्ग के गीतों की अपनी पृथक शैली होती है किंतु स्थूल रूप से प्रबधात्मक, वर्णात्मक तथा भावात्मक नामो के अतर्गत उसे रखा जा सकता है। प्रबंध गीत में कथात्मक अथवा प्रबधात्मक शैली के दर्शन होते है। बहुधा इन गीतों का प्रारम्भ मगलाचरण के साथ होता है। राजाओ की गाथाओं में प्राय एक ही ढग से प्रारम्भ मे

राज्य-श्री, एश्वर्य और सम्पति का वर्णन विशेष रूप से होता है। रूप के सुन्दर चित्र इन गीतों में बड़े मोहक होते हैं। कथा के सूत्र को आगे बढ़ाते हुए प्राय: भावों, शब्दों, तथा अभिप्रायों की पुनरावृत्ति प्रभाव और संवद्धता के हेतु प्राय: सर्वत्र मिलती है।

गीतों की एक बहुत बडी सख्या वर्णनात्मक शैली को प्रकट करती है। सामयिक घटनाओं आन्दोलनों तथा अनुष्ठान सबधी गीतों में विवरण और वर्णन की ही प्रधानता होती है। फिर भी बात या घटना को सीधे ढग से कहने की अपेक्षा घुमा फिरा कर कहने की प्रवृत्ति प्राय: दीख पडती है। इस कोटि की शैली में विवरण की गति इतनी हलकी और तीव्र होती है कि किसी भाव विशेष की स्थिरता वातावरण का रूप ग्रहण नहीं कर पाती। इसके अतिरिक्त इन गीतों के घटनात्मक होने के कारण इन गीतो में आख्यायिका की शैली का भी प्रयोग हुआ है।

छड़े, छोपती, बाजूबन्द, लामण, और खुदेड गीत भावात्मक शैली के गीत हैं। छोपती और बाजूबद पूर्णत प्रेम के सवाद-गीत हैं। लामण भी दोहे की शैली के प्रेम-गीत होते हैं किंतु सवाद का उनमें भी अभाव नहीं। छूडे अपनी अनुभूति और अभिव्यक्ति में गभीर, दार्शनिक और सरस होते हैं। उनमें भावों का सौंदर्य शब्द, शक्ति और प्रसाद गुण पर्याप्त मात्रा में निहित होता है।

पुनरावृत्ति, सवाद, प्रश्नोत्तर, तथा असवद्धता प्राय सभी कोटि के गीतों में किसी न किसी रूप में पाई जाती है। कुछ बातों का अनावश्यक विस्तार और कुछ का संकेत मात्र सामान्य सी बात है। इसी तरह, बहुत सी बातों और अभिप्रायों की कल्पना और पूर्वापर सबंध का ज्ञान पाठक को स्वयं करना होता है। फलत. असवद्धता के कारण उद्भूत अवरोध के बीच की कड़िया उसे स्वयं खोजनी पड़ती हैं।

प्रतीको का प्रयोग अर्थ-गौरव में बहुत सहायक हुआ है। बाजूबदों, छोपतियों तथा अन्य प्रम गीतों में प्रतीकों के द्वारा भावो की अश्लीलता, सुरुचि और मर्यादा की रक्षा कलात्मक ढग से की गई है। यौन भावो के प्रयुक्त प्रतीक लोक मानस की महान् क्रियात्मक सूझ को प्रकट करते हैं। चटनी चखना, पानी पीना, बर्तन का भरना इसी दृष्टि से मनोरजक प्रयोग हैं।

जहां तक अलकारों का प्रश्न है, शब्दालकारों में अनुप्रास और अर्थालकारों में उपमा का प्रयोग गढ़वाली लोकगीतो में बहुत मिलता है। उपमाएँ रूप साम्य का ही आग्रह नहीं करती दीखतीं वरन् उनमें गुण और प्रभाव की भी उपेक्षा नहीं की गई है। उपमान मूर्त और अमूर्त दोनों मिलते हैं। उपमा के अतिरिक्त रूपक, दृष्टान्त, उत्प्रेक्षा आदि के उदाहरण भी गढवाली लोकगीतों में विद्यमान हैं। किन्तु लोक गीतो का यह अलकार—विधान प्रयत्न प्रसूत नहीं है। वास्तव में शब्द, भाव अलकार, लय और छद को मानव की समन्वित चेतना से पृथक नहीं किया जा सकता। जो लोग यह कहते हैं कि लोक गीतों में 'अलकार नहीं रस है, छन्द नहीं, केवल लय है' वे इस सत्य से अवगत नहीं होना चाहते कि लोकगीतों में अलकार, रस, छन्द, लय सभी है। वास्तव में लोकगीतों का रस, अलकार और छद शास्त्र अभी लिखे जाने को है।

जहां तक गढवाल के लोकगीतों का प्रश्न है, प्रत्येक कोटि के गीत का अपना एक छन्द है। छोपती, बाजूबंद, छूडा, लामण, मागल गीतों को ध्यान से पढ़ते हुए पाठक उनके छांदिक रूप से अवश्य अवगत होंगे। इसी तरह, तुकात, अतुकात दोनों प्रकार के छद भी देखने को मिलेंगे। जिस मुक्तक छंद की हिंदी में एक समय बडी चर्चा रही है, वह गढ़वाली लोकगीतो में प्राचीन

परंपरा है। तुकांत गीतो में कभी पहली पंक्ति केवल तुक मिलाने के लिए ऊपर से थोप दी जाती है। इसे 'पट्ट' कहा जाता है। पट्ट भाव की न सही, गीत की अकेली सार्थक पंक्ति को आकार, लय तथा छंद की पूर्णता देता है। वैसे पट्टों में दूसरी पंक्ति के भावो की छाया भी कहीं कहीं मिल जाती है। पट्टो की सार्थकता के अनेक उदाहरण एकत्र किये जा सकते हैं किंतु सर्वत्र वे सार्थक ही हों, ऐसी बात नहीं। दूसरी बात यह है कि पट्टों की खींचतान कर दूसरी पंक्ति से उनका अर्थ जुडाना उचित नहीं, क्योंकि उनकी सृष्टि भावाभिव्यक्ति से नहीं, तुक मिलाने के हेतु की गई होती है। हा, 'पट्टों' का अध्ययन लोक के मनोविज्ञान की दृष्टि से भी किया जा सकता है। उससे लोक मानस की कल्पना और चित्रांकन की शक्ति का आभास मिल सकता है।

तुक और छद लय पर आधारित होते हैं। एक सीमा तक यह सत्य है कि लोकगीतों में तुक और छदों की अपेक्षा लय का महत्व अधिक होता है। वास्तव में लोक गीतो से लोक सगीत और लोक नृत्यो की गत्यात्मकता को पृथक नहीं किया जा सकता। छोपती गीतो नृत्य के समान थिरकते सगीत के दर्शन होते हैं लामण, छूडें और बाजूबंद प्राय लम्बे स्वरों मे गाये जाते हैं। वीर-गीतों की स्वर-रचना उत्तेजना-प्रधान और रोमाचकारी होती है धार्मिक गीतों में प्रशान्त प्रवाह होता है। गढवाली लोक सगीत में स्वरो के आरोह-अवरोह का वैचित्र्य और वैविध्य नहीं मिलता किंतु उनकी मधुरता शास्त्रीय सगीत की अपेक्षा अधिक ग्राह्य होती है। यदि गढवाली सगीत को शास्त्रीय मानदडो से नापें तो उनमें पहाडी, दादरा, दुर्गा, मालकोस आदि रागों को सरलता से खोजा जा सकता है।

गढ़वाली संगीत का लोक नृत्यों से घनिष्ट संबंध है। यही

कारण है कि बहुत से गीतों मे पदगति, वाद्य-ध्वनि तथा गीत के शब्दो का लय पर बहुत प्रभाव पडता दीखता है। यह इससे भी सिद्ध होता है कि झुमैलो, चौंफुला, छोपती, तादी थाड्या जैसे गीतो के नाम उनसे सबद्ध नृत्यो के ही कारण पडे है। यह दर्शनीय है कि पदाघात पर ही गीतों की यति निर्धारित हुई है और नृत्य की तीव्र और मद गति ने गीत की लय को बहुत प्रभावित किया है। पैरों के उठाने मे आरोह और गिराने में अवरोह प्रतीत होता है और लय पद-गति का अनुसरण सी करती दिखाई देती है।

गढ़वाल

देवतों की थाती

गढ़वाल मेरो मुलुक देवतों की थाती !
देवतों की थाती गढवाल देवतो की थाती !
गंगा, जमुना, धौली चोडी छन जौंकी छाती,
दूध की धार पिलौंदी जो हम नैं मेंडी-सी !
बाँज, बुरांस धौला, तुंगला, ताछुला का पाती,
गोरू-भैंसा, भेंगा-बाखरा खांदन दिन-राती !
बदरी केदार हिंवाला काँठा थर्थरांदन गाती,
मादेव को मुलुक मेरा दुनिया मा ख्याती !
गढवाल मेरो मुलुक देवतों की थाती !

बाजा बण ग्वैर छोरा मुरली बजौंदा भाँति,
हैंसदी-खेलदी छोरी जांदी कमर जुडी दाती !
भैंस पिजाई गर्र गर्र परोठी भरेन्दी सर्र सर्र
दौडी दौडी नौना खाँदन दूध-भाती !
गढ़वाल मेरो मुलुक देवतों की थाती !

—मेरी जन्म भूमि गढवाल देवतो की थाती है,
देवतो की थाती है, गढवाल देवतो की थाती है।
गंगा, यमुना और अलकनंदा, जिनका विशाल वक्ष है,
हमें माता की भाँति दूध की धार पिलाती है।
बांज, बुरास, धौला, तुंगला और ताछुला के पत्तो को
हमारी गाय-भैंस, भेंड-बकरियां रात दिन खाती हैं।
बदरी, केदार और हिमालय के शिखर गात को कंपा देते हैं।
शिवकी यह भूमि विश्व में ख्यात है।
मेरी जन्म-भूमि गढ़वाल देवतों की थाती है।
विजन वनों में चरवाहे मुरली बजाते हैं।

और किशोरियां कमर पर रस्सी और दराती लेकर
हँसती खेलती वन को जाती हैं।
हम गर्र गर्र करते हुए भैंस दूहते हैं, हमारी दोहन्दियां
जल्दी ही दूध से भर जाती हैं।
तभी हमारे बालक जल्दी से दूध-भात खाते हैं।
मेरी जन्म भूमि गढ़वाल देवतों की थाती है।

मेरो गढ़वाल

मेरो गढ़वाल दिदौं, कनो भग्यान दिदौं!
डांडी काठ्यों मा दिदौं, सेयूं छ ह्यूं दिदौं!
सूरज को उद्यो दिदौं, चमलांदू कैलास दिदौं!
गंगा और जमुना दिदौं, दूध की धार दिदौं!
बद्री केदार दिदौं, नर नारैण दिदौं!
देवतों को डेरो दिदौं, आछरी ओडार दिदौं!
मेरो गढ़वाल दिदौं, कनो भग्यान दिदौं!

कौंलू को बासो दिदौं, केला-कुलैं दिदौं!
बांज बुरॉस दिदौं, देऊदार की बणै दिदौं!
सेरा का फाट दिदौं, जौ की हरयाली दिदौं!
सरग की सीढ़ी दिदौं, पुंगड़ी सग्वाडी दिदौं!
मेरो गढ़वाल दिदौं, कनो भग्यान दिदौं!

घाडो घमणाट दिदौं, भकोरी रुणाट दिदौं!
गदऱ्यों सिस्याट दिदौं, चूड़ीयों छमणाट दिदौं!
घूघती को घोल दिदौं, हिलॉस का बोल दिदौं!
पयूँली को फूल दिदौं, बुरांस को डोला दिदौं!

रैमासी को फूल दिदौं शिव शौभलो दिदौं।
मेरो गढ़वाल दिदौ, कनो भग्यान दिदौं।
राति को व्याण दिदौं, व्याखुनी को घाम दिदौं।
स्वीली को पराण दिदौं, डाल्यूँ को छैल दिदौं।
माई का लाल दिदौं ह्वैन गढ़वाली दिदौं।
—मेरा गढ़वाल कितना भाग्यशाली है भाइयो!
यहा पर्वत-शिखरो पर हिम सोया है भाइयो!
सूर्य के प्रथम उदय से यहाँ कैलाश चमकता है!
दूध की धार की तरह गगा और यमुना बहती!
यहा बदरी और केदार हैं, नर और नारायण है!
यहा देवताओ के आवास है, अप्सराओं की गुफाएँ है!
मेरा गढ़वाल कितना भाग्यशाली है भाइयो!
यहाँ कमलो का वास है, केला और चौड है भाइयो!
बांज और बुरास के पेड हैं, देवदारु के वन हैं भाइयो!
चौडे चौडे खेत हैं, जौ की हरियाली है भाइयो!
स्वर्ग की सीढियों के समान खेत और सागबाडियां है,
मेरा गढवाल कितना भाग्यशाली है भाइयो!
यहा घटियों की ध्वनि है, भंकोरियो की रुनरुनाहट है,
नदियो की कल कल है और चूडियो की छनछनाहट!
यहाँ फ्युली का फूल है, बुरास की डोली है!
रायमासी का फूल है जो शिव पर चढता है!
मेरा गढ़वाल कितना भाग्यशाली है भाइयो!
यहा का विहान सुन्दर है, सध्या की धूप सुंदर है,
जिसमें प्रसवा के प्राण रहते हैं; और पेडो की छाया है!
गढवाली माई के लाल हुए हैं भाइयो!
मेरा गढ़वाल कितना भाग्यशाली है भाइयो!

पूजा गीत

जय जश दे

प्रस्तुत गीत हीत (हित देव) से जय और यश की कामना को प्रकट करता है। प्रार्थी मोतियों-भरी थाल और सोने का धूप-दान लेकर देव-यात्रा मे आया है।

पोखरी का हीत जय जश दे!
तेरी जाति आयो जय जश दे!
भेंटुली क्या लायो जय जश दे!
सोवन धुपाणी लायो जय जश दे!
मोत्यों भरी थाल लायो जय जश दे!
जाति तेरी आयो जय जश दे!
पोखरी का हीत जय जश दे!

—हे पोखरी के हित देव, जय और यश दे!
तेरी यात्रा आया हूं, जय और यश दे!
भेंट क्या लाया हूं, जय और यश दे!
सोने की धूपदानी लाया हूं, जय और यश दे!
मोतियो से भरी थाली लाया हू, जय और यश दे!
तेरी यत्रा आया हूं, जय और यश दे!
पोखरी के हित देव, जय और यश दे!

जौं जश दे

किसी भी धार्मिक अनुष्ठान के पहिले धरती माता, कूर्म देवता, भूमिपाल, गगा की धारा, पचनाथ देवों और देवभूमि गढ़वाल को जौ और यश देने के लिए स्मरण किया जाता है। जौ के दाने और हरियाली आर्यों में पवित्रता के प्रतीक हैं और ऐश्वर्य की भावना उनके साथ सबद्ध है।

जौ जश दे धरती माता।
जौ जश दे कुरम देवता।
जौ जश दे भूमि को भम्याल।
जौ जश दे गंगा की मौणी धार।
जौ जश दे पंचनाम देव,
जौ जश दे भायों की जमात,
जौ जश दे देऊ भूमि गढ़वाल।

—जौ और यश दे धरती माता,
जौ और यश दे कूर्म देवता।
जौ और यश दे भूमि का भूमिपाल!
जौ और यश दे गंगा की सुहावनी धारा,
जौ और यश दें पंचनाम देव!
जौ और यश दे भाइयों की जमात,
जौ और यश दे देवभूमि गढ़वाल!

जौ ल्यौ

माघ की पंचमी को औजी लोग खेतों से जौ उठाकर सवर्णों के द्वारों पर दमामा बजाते हुए बांटते हैं। ये हरे जौ गोबर के साथ द्वारों पर चिपकाये जाते हैं। जीवन की हरियाली और बसन्त की पूर्वपीठिका के प्रतीक रूप में माघ-पंचमी मनाई जाती है। इसके अतिरिक्त अपने श्रम-प्रसूत जौ के हरे भरे ऐश्वर्य को देवताओं को अर्पित करने की भावना भी उसमें सन्निहित है।

जौ ल्यौ पंचनाम देवता,
जौ ल्यौ पंचमी का सालै।
जौ ल्यौ हरि, राम, शिव,
जौ ल्यौ मोरी का नारैण!

जौ ल्यौ वार मैना,
जौ ल्यौ पंचनाम देवता !

—जौ लें पंचनाम देवता,
जौ ले पंचमी का यह वर्ष !
जौ लें हरि, राम और शिव,
जौ लें सिंह द्वार पर स्थित गणेश !
जौ ले वातायन सें दृश्यमान नारायण,
जौ लें वर्ष के बारह मास,
जौ लें पचनाम देवता !

जाग

प्रभात कालीन पूजा का प्रारम्भ पृथ्वी, सूर्य, आकाशदेव, पशु, पक्षी, देव, नाग, नर, कीट-पतग सबको जागरण का आह्वान देते हुए होता है। प्रकृति, पुरुष, जड़, चेतन सभी के प्रति इस आत्मीयता पूर्ण उद्बोधन में जीव जगत की एकता और एकसूत्रता ही नहीं वरन ब्रह्मांड की परिवार-भावना भी व्यक्त हुई है।

प्रभात को परव जाग, गो सरूप पृथवी जाग,
धर्म सरूपी अगास जाग, उदयकारी कांठा जाग !
भानुपँखी गरड़ जाग, सत्त लोक जाग !
मेघ लोक जाग, इन्द्र लोक जाग !
सूर्य लोक जाग, चन्द्र लोक जाग,
तारालोक जाग, पवन लोक जाग !
ब्रह्मा का वेद जाग, गौरी का गणेश जाग !
ह्रो भरो संसार जाग, जन्तु जीवन जाग,
कीड़ी मकोड़ी जाग, पशु-पन्छी जाग !
नर नारैण जाग, मरद औरत जाग,

दिन और रात जाग, जमीन आसमान जाग !
शेष समुद्र जाग, खारी समुद्र जाग,
दूधी समुद्र जाग, खैराणी समुद्र जाग !
घोर समुद्र जाग, अघोर समुद्र जाग,
प्रचंड समुद्र जाग, श्वेत वध रामेसुर जाग !
ह्यूँ हिंवाल् जाग, पयाल् पाणी जाग,
गोवर्धन पर्वत जाग, राधाकुंड जाग !
वाला वैजनाथ जाग, धौली दिप्रियाग जाग,
हरि हरद्वार, काशी विश्वनाथ जाग !
बूढा केदार जाग, भोला शम्भूनाथ जाग
कालसी कुमौंऊ जाग, चोपडा चौथान जाग !
फटिंग का लिंग जाग, सोवन की गादी जाग !

—हे प्रभात के पर्व जाग, गौ-रूप पृथ्वी जाग !
धर्म-रूप आकाश जाग, उदय के शिखरों, जागो !
भानु-पखी गरुड़ जाग, इन्द्रलोक जाग।
मेघ लोक जाग, चन्द्रलोक जाग,
सूर्य लोक जाग, चन्द्र लोक जाग !
तारा लोक जाग, पवन लोक जाग !
ब्रह्मा के वेद जाग, गौरी के गणेश जाग !
हरे-भरे ससार जाग, जन्तु-जीवन जाग !
कीट-पतग जाग, अघोर समुद्र जाग !
नर नारायण जाग, स्त्री-पुरुष जाग !
दिन और रात जाग, पृथ्वी—आकाश जाग !
शेष समुद्र जाग, खारी समुद्र जाग,
दूध-समुद्र जाग, खैराणी समुद्र जाग !
घोर समुद्र जाग, अघोर समुद्र जाग,

प्रचण्ड समुद्र जाग, सेतु बंध रामेश्वर जाग !
हिमालय के हिम जाग, नदियो के जल जाग,
गोवर्धन पर्वत जाग, राधाकुण्ड जाग !
वाल वैजनाथ जाग, काशी विश्वनाथ जाग,
हरि हरिद्वार जाग, धौली देव प्रयाग जाग !
बूढा केदार जाग, भोला शम्भुनाथ जाग,
कालसी कुमाऊ जाग, चोपड़ा चौथान जाग !
स्फटिक के लिंग जाग, सोने के सिंहासन जाग !

वीजी जावा

जब कभी मनुष्य में देव-शक्ति का आह्वान करना होता है, तब देवता नचाने के अवसर पर जाग्रति के उद्‌बोधन गीत गाये जाते हैं। इनमें देवताओ, मनुष्यों और प्रकृति को जगाने का भाव तो निहित रहता ही है, साथ ही सोई हुई देवत्व शक्ति को बुलाने का अभिप्राय भी सवद्ध होता है। इसीलिए देवनृत्यों, यात्राओं, और मण्डाणो में जागरों का प्रारम्भ कभी इन गीतों से होता है।

वीजी जावा वीजी हे खोली का गणेश
वीजी जावा वीजी हे मोरी का नारैण !
वीजी जावा वीजी हे खतरी का खैंडो,
वीजी जावा वीजी हे कूंती का पंडौऊँ !
वीजी जावा ह्वैगे उदैगिरि कांठ्यों उदंकारों,
वीज जावा वीजी हे नौखण्डी नरसिंह !
वीजी जावा वीजी हे, शभु भोलेनाथ,
वीजी जावा वीजी रात की चादना !
वीजी जावा वीजी हे दिनका सूरज !
वीजी जावा वीजी हे ऐंच का आगास,

बीजी जावा बीजी हे नीम की धरती!
बीजी जावा बीजी हे नौ खोली का नागो!

—जागो, हे जागो सिंह पोर के गणेश,
जागो, हे जागो वातायन के नारायण!
जागो, हे जागो क्षेत्रपाल की असिधारो,
जागो, हे जागो कुन्ती के पंच सुतो!
जागो, हे जागो, फूटा प्रकाश उदयगिरि पर,
जागो, हे जागो नव खण्ड धरा के नर सिंह!
जागो, हे जागो शंभु भोलेनाथ,
जागो, हे जागो रात की चांदनी,
जागो, हे जागो दिन के सूरज!
जागो, हे जागो ऊपर के आकाश,
जागो, हे जागो नीचे की धारा!
जागो, हे जागो नौ घूमो वाले नागो!

हित-कामना

मांगलिक कार्यों के अवसर पर औजी गृह द्वार पर ढोल-दमामा बजाते हुए गृह-स्वामी की हितकामना करते हैं। ब्राह्मणों के आशीर्वाद के समान औजी की हितकामना मांगलिक कार्यों की आवश्यक क्रिया होती है।

यूँ को राज रखो देवता,
माथा भाग दे देवता!
यूँ का बेटा बेटी रखो देवता,
यूँ का कुल की जोत जगौ देवता!
यूँ का खाना जश दे,
माथा भाग दे देवता!

यूँ की डाँडी काँठ्यों मा,
फूलीं रौ फ्योंली ढँड्योली!
यूं कि साग सग्वाड़ी,
रौन रोज कलवली !
धरती माता सोनो बरखाओ,
नाजा का कोठारा दे,
धन का भंडारा देवता!

—इनका राज रखे देवता,
इनके माथे भाग्य दे देवता !
इनके बेटे-बेटी (जीवित) रखें देवता,
इनके कुल की ज्योति जगाए देवता !
इनके कुल को यश दे देवता,
माथ भाग्य दे देवता !
इनकी डांडी कांठियो में,
फूली रहें फ्यूली, ढंड्योली !
इनकी सागकी बाड़ियां,
रहें रोज हरी भरी !
धरती माता सोना बरसावे,
अन्न के इन्हें कोठार दे,
धन के दे भंडार देवता !

सौंजाड़्या दे मिलाई

समवयस्क पति का न होना अनमेल विवाह की एक बड़ी विषमता है। इसीलिए किशोरिया ज्वालपा देवी से प्रार्थना करती हैं—मायके की देवी, हमें अच्छा जोड़ीदार देना !

हे ज्वालपा देवी, मौंजड्या दे मिलाई !
सौंजड्या का खातिर, मौंजड्या दे मिलाई !
तेरी जातरा आई, सौंजड्या दे मिलाई !
त्वैक भेटूली लाई, मौंजड्या दे मिलाई,
दैणी होई जाई, सौंजड्या दे मिलाई !
हे मेरी मैत्या देवी, मौंजड्या दे मिलाई,
मैं मौंजड्या की खरी, सौंजड्या दे मिलाई।
हे ज्वालपा देवी, सौंजड्या दे मिलाई !

—हे ज्वालपा देवी, हमउम जोडी देना !
जोडीदार के खातिर—जोडीदार को मिलादे—
तेरी यात्रा आई हू, जोडीदार को मिला दे !
तेरे लिए भेंट लाई हूं, जोडीदार को मिला दे !
दाहिनी हो जा, जोडीदार को मिला दे !
हे मेरी मायके की देवी जोडीदार को मिला दे !
मुझे जोडी का दुख है, जोडीदार मिला दे !
हे ज्वालपा देवी, जोडीदार को मिला दे !

खितरपाल

क्षेत्रपाल गढवाल का भूमि रक्षक देव है। इस गीत में उसे काली और रुद्र का पुत्र बताया गया है।

देव खितरपाल, घडी घडी का विघ्न टाल !
माता महाँकाली का जाया, चड भैरौं खितरपाल !
प्रचण्ड भैरौं खितरपाल, काल भैरो खितरपाल !
माता महाँकाली का जाया, बूढ़ा महारुद्र का जाया !
तुमारो ध्यान जागो !

—देव क्षत्रपाल, घडी-घडी के विघ्न टाल !

हे माता महाकाली के जाये, चड भैरव क्षेत्रपाल,
प्रचड भैरव क्षेत्र पाल, काल भैरव क्षेत्रपाल,
माता महाकाली के जाये, वूढ़े महा रुद्र के जाये,
तेरा ध्यान जागे !

हनुमान

वीरता के देवता के रूप में हनुमान गढवाल मे पूजे जाते हैं। जब कभी हनुमान मनुष्य के रूप में नाचता है तो लोहे की कई लडियो की चावुक के अघातो को नगे शरीर पर साघता है।

जै हनुमन्त वीर वजरंगी
लंका साधे त्रिलका साधे। असराली पाटण साधे,
जम को जाल साधे। काल की फॉस साधे!
राम जी को दूत, महादेव जी को सूत,
अजनी को जायो, हनुमत वजरग वली,
तेरो ध्यान जागो।

—जै हनुमन्त वीर वजरगी,
तूने लंका पर विजय पाई; असुरो के पट्टनो पर विजय पाई!
तूने यम के जाल पर विजय पाई, काल की फांस पर विजय पाई!
हे राम जी के दूत, महादेव जी के सूत,
अजनी के पुत्र! हनुमान वजरगी,
तेरा ध्यान जागे !

सुरकडा देवी

आदि ससार की आदि माया देवी चडिका प्रच राक्षसों से निश्चित होकर एक ऊंचे शिखर पर रौसाल वृक्षो की छाया मे निवास करती है। देव-दानव युद्ध में उसने विकराल रूप धारण कर दैत्यो का

ऊँचे सुरकंडे में, जहाँ रौंसाल की छाया है
वहाँ तुम्हारी बारह बहिनें परस्पर मिलने आती हैं।
जब राक्षसों ने उत्पात किया,
तब तू मद पीकर विकराल हो गई,
तूने एक-एक कर राक्षस मारे,
मारकर तूने धड़ नेपाल पहुचाए मा,
और सिर सुरकंडा !

नगेलो

नगेलो नागेन्द्र भी कहलाता है। नाग पूजा बहुत प्राचीन है। इस गीत में नाग—देवता के पृथ्वी पर आने और उसके दिये हुए ऐश्वर्यों का वर्णन है।

द्यूल नगेलो आयो जसिलो देवता
द्यूल नगेलो आयो रैती देंद जस !
द्यूल नगेलो आयो मुलक लगे धेऊ,
द्यूल नगेलो आयो लसिया की थाती।
द्यूल नगेलो आयो वजीरा की गादी,
द्यूल नगेलो आयो तै मोतू का सिर।
द्यूल नगेलो आयो छै मैन का बालक,
द्यूल नगेलो आयो भौंकोर्यों का रुणाट।
द्यूल नगेलो आये घाड्यों का घमणाट,
द्यूल नगेलो आयो परचो वतौंद।
द्यूल नगेलो आयो जौ वणौंद चौंल,
द्यूल नगेलो आयो हरियाली जमौंद !
द्यूल नगेलो आयो लैन्दी देन्द दूद,
द्यूल नगेलो आयो मनखी देंद वूध।

डिमरी रसोया जाग, केदारी रौल जाग ।
नेपाली तेरो चिमटा जाग, खैरुवा की तेरी झोली जाग !
तमा की पत्री जाग, सतमुख तेरो शख जाग !
नौं लड़्या चावूक जाग, ऊर्ध्वमुखा तेरो नाद जाग !
गुरु गोरखनाथ का चेला जाग,
पिता भस्मासुर माता महाकाली जाग !
लोह खम्ब जाग ! जागरन्तो होई जाई वीर बावा नरसिंह !
वीर तुम खेला हिण्डोला ! वीर उच्चा कविलासू,
हे बावा तुम खेला सोवन हिण्डोला ।
हे वीर तुम मारा झकोरा ! अब चौद भुवन मा,
हे वीर तीन लोक पृथि, सातों समुद्र बाचा !
हिण्डोलो घूमद घूमद चढ़े वैकुण्ठ सभाई ! बीर इन्द्र सभाई,
तब देवता जागदा होई गैन, लौंदन फूल किन्नरी !
शिव जी की सभाई पैंदन भाग की कटोरी,
सुलपा की रौंण पेन्दन—राठ वाली भांग !
तब लैग्या भॉग का झकोरा !
तब नांदू वाबू कविलासी गुफा,
जादू गोरख सभाई, जांदू वैकुठ सभाई !

—जाग जाग नरसिंह वीर बाबा !
रूपा का तेरा डडा जागे ! स्फटिक की तेरी मुद्रा जागे,
डिमरी रसोइया जागे, केदार का रावल जागे,
तेरा नेपाली चिमटा जागे, राख की तेरी झोली जागे,
ताम्बे का तेरा पत्र जागे, तेरा शतमुख शख जागे
नौ लडियों की चावुक जागे, तेरा ऊर्ध्वमुखी नाद जागे,
गुरु गोरखनाथ के चेले तू जाग !
तेरा पिता भस्मासुर और माता महा काली जागे !

लोहे का तन जागे ! जाग्रत हो जा हे वीर बाबा नरसिंह,
हे वीर तू हिंडोला खेल, ऊँचे कैलाश पर, हे वीर तू खेल,
सोने का हिंडोला ! हे वीर हिंडोले पर झकोरे मार !
अब चौदह भुवन में, हे वीर तीन लोक पृथिवी में,
हे बाबा सातों समुद्रों में, घूमता घूमता हिंडोला बैकुंठ चढ़ा।
इन्द्र की सभा में, तब देवता जाग्रत हो गये,
किन्नरियाँ फूल लाईं, शिवजी की सभा में तुम भांग पीते हो,
सुल्फे की चिलम पीते हो, और राठ की भांग !
तब भांग का नशा लगता है, और तुम कैलाश की गुफा में जाते हो,
गोरख की सभा में जाते हो, इन्द्र की सभा में जाते हो !

ऐजा अगनी

प्रस्तुत गीत हमें अग्नि के आविष्कार, प्रसार और उपयोगिता के उस युग तक ले जाता है जिसमें द्यौ लोक पितृलोक के रूप में और पृथ्वीलोक मातृलोक के रूप में माने जाते थे, ब्रह्मा, ब्रह्म और अग्नि देवता की एकता थी तथा जब दो विषम संस्कृतियाँ आपस में मिल रही थीं।

ऐजा अगनी मेरा मातलोक, मेरा मातलोक,
त्वे बिना अगनी ब्रह्मा भूखो रैंगे, ब्रह्मा भूखो रंगे।
कसु कैकि औलू, कसु कांक औलू तेरा मातलोक,
तेरा मातलोक यो बुरो अत्याचार यो बुरो अत्याचार
क्या होलो अगनी बडो अत्याचार, बुरो अत्याचार।
माया धीया माया धीया ऊज्ञो—पैछो,
बेटा बाबू को लेखो जोखो !
ब्वारी ह्वैकी सासु अडाली,
नौनो ह्वैक बाबू पढ़ालो !

नगरी का लोको, नगरी का लोको तै मातलोक !
मी तैं लत्याला, थूक थूकाला,
कसु कैकि औलो, कसु कैकि औलो तै मातलाक ?
तुमारा लोक मा बढ़ो अत्याचार
तुमारा लोक को, तुमारा लोक को खोटो चलण !
ऐजा अगनी ऐजा अगनी मेरा मातलोक,
त्वै बिना अगनी ब्रह्मा भूखो रैगे !

—हे अग्निदेव, मेरे मातृलोक में आ जाओ।
तुम्हारे बिना ब्रह्मदेव भूखे रह गये हैं।
किस प्रकार तेरे मातृलोक में आऊं ?
तेरे मातृलोक मे यह बुरा अत्याचार है।
मेरे मातृलोक में अग्नि अत्याचार है ?
माता और बेटी में लेन-देन चलता है,
बाप-बेटे का लेखा—जोखा रहता है,
बहू अपनी सास को सीख देती है,
बेटा अपने बापको पढ़ाता है।
हे नगरी के लोगो, तुम्हारे मातृलोक में,
लोग मुझ पर लातें लगायेंगे, थूकेंगे !
कैसे आऊं, कैसे आऊं तेरे मातृलोक ?
तेरे मातृलोक मे बड़े अत्याचार हैं।
तेरे लोक की खोटी चालें हैं।
आ जाओ अग्निदेव, मेरे मातृलोक में आ जाओ,
ब्रह्म देव तेरे बिना भूखे रह गए है।

पैंयाँ डाली

मांगलिक क्रियाओ में काम आने वाले पद्म वृक्ष को यहां

देव-वृक्ष के रूप में लिया गया है। वृक्ष-पूजा की भावना उसमें स्वतः निहित है ही, इसके अतिरिक्त धूप, दीप अर्चा तथा दुग्ध सिंचन से उस नवांकुरित पौधे का उगना, पनपना होने और फिर एक दिन सघन छायादार वृक्ष के रूप में बढ़ने की भावना के साथ जीवन का सहज उल्लास और प्रकृति के प्रति तादात्म्य भी अभिव्यक्त हुआ है।

नई डाली पैयाँ जामी, देव ऐ की डाली,
हेरी लेवा देखो, मेरी पैया डाली!
नई डाली पैया जामी फूली का थेग्वाल,
नई डाली पैयाँ जामी मेरा का डेल्या॥।
नई डाली पैया जामी कभी चौंरी चिरयाला,
नई डाली पैयाँ जामी, कभी दूध चरियाला!
नई डाली पैया जामी, एक पता हाये छुपती,
आई गन माई, फटी गन फागी,
नई डाली पैया जामी थ्र कया कुपाणी!
हेरी लेवा दखा मेरी पैया डाली!
नई डाली पैयाँ जामी के देऊ शोभली,
नई डाली पैया जामी, खितरपाल शोभली।
नई डाली पैया जामी, देवतों का मरान,
नई डाली पैया जामी कैन घाड चढैन,
नई डाली पैया जामी, मुलक लगे धेऊ!

—पद्म का नया वृक्ष उगा—देवतों का वृक्ष!
देखलो, देखलो पद्म के इस वृक्ष को!
नहर के नीचे पद्म का नया वृक्ष उगा,
धान के खेतों के ऊपर पद्म का नया वृक्ष उगा।
नया पद्म वृक्ष उगा है कोई थाला बनालो,

नया पद्म वृक्ष उगा है, कोई दूध से सींचलो !
नया पद्म वृक्ष उगा है एक पत्ता आया, दो पत्ते आये।
उस पर कोंपल आई, शाखें फूटीं।
नया पद्म वृक्ष उगा है, दीप-धूप दान दो,
देखलो, देखलो इस पद्म वृक्ष को !
नया पद्म वृक्ष उगा है, किस देव को शोभेगा ?
नया पद्म वृक्ष उगा है, क्षेत्रपाल को शोभेगा।
नया पद्म वृक्ष उगा है, देवताओं के सत से,
नया पद्म वृक्ष उगा है, किसीने घटे चढ़ाए,
नया पद्म वृक्ष उगा है, देश-भर में, प्रसिद्धि फैल गई !

रैमासी: देवतों को फूल

कैलाश पर रैमासी के दिव्य कुसुम खिलते हैं। पार्वती उन्हे पूजा के लिये चुन चुन कर अपना दुकूल भरती हैं। महादेव को ये कुसुम बहुत भाते हैं।

रैमासी को फूल कविलास,
रैमासी को फूल कविलास !
कै मैना फूललो कविलास,
को जालो ह्यूं चला कविलास ?
कै देव सोभलो कविलास,
रैमासी को फूल कविलास ?
मादेव ज्यू शोभलो कविलास,
पार्वती ज्यू शोभलो कविलास !
पूजाक चैंद कविलास—
को लालो तोड़ीक कविलास ?
को जालो नीला कविलास,
रैमासी को फूल कविलास !

—कैलाश पर्वत पर रैमासी का फूल खिला है,
हाँ, कैलाश में रैमासी का फूल खिला है,
कैलाश में किस महीने फूलेगा ?
हिम से ढके कैलाश में कौन जायेगा ?
कैलाश में रैमासी का फूल खिला है,
कैलाश में वह किस देव को शोभा देगा ?
वह कैलाश में महादेव जी को शोभा देगा,
वह कैलाश में पार्वती को शोभा देगा !
कैलाश में वह पूजा के लिए चाहिये,
कैलाश से उसे कौन तोड़ लायेगा ?
उस नीले कैलाश पर कौन जायेगा ?
कैलाश पर रैमासी का फूल खिला है।

गुरु वन्दना

नाथो, सिद्धों और कबीरपंथियों में गुरु का स्थान ब्रह्म से उच्च प्रदर्शित किया गया है। प्रस्तुत गीत में भी शिष्य हरि, शिव और पार्वती को जोहार करते हुए सकल संसार, चन्द्र और सूर्य की याचना गुरु से ही करता है।

हाथ जोडी गुरु जी परणाम।
पैले मामा हरि को परणाम,
जौन उपजाई सकल संसार।
जुवार लगौंदू देवी जी पार्वती,
जौं का सत से होये अनिधिपुराण।
जुवार लगौंदू गुरु जी गोरख,
हाथ जोडिक अरज गुरु जी गोरख।
मैक दण गुरु जी सकल संसार,

चन्द सुरज देण पौण पाणी,
मैक देण गुरुजी विधना को भार।

—गुरु जी, हाथ जोडकर तुमको प्रणाम !
पहले मामा हरि को प्रणाम,
जिन्होने सारे ससार की सृष्टि की !
देवी पार्वती को नमस्कार करता हूं,
जिसका सत् पुराणो में वर्णित है !
गुरु गोरख को मैं प्रणाम करता हूं,
हाथ जोडकर गुरु गोरख से प्रर्थना करता हूँ—
गुरु जी, मुझे सारा ससार देना है,
मुझे चन्द्र सूर्य दो, पवन और पानी दो !
मुझे गुरु जी, ब्रह्मा का भार दो !

गंगा माई

महात्म्यमयी गंगा भारत में कोटि-कोटि जनों की जननी है, धर्म प्राण जनता के लिए वह अकलुषा, पापहारिणी सुरसरि है किन्तु इस गीत में अर्थधात्री, ऐश्वर्यदात्री प्रकृति के रूप में भी उसे लिया गया है। इसीलिए जहाँ जहा वह जाती है वहा पीछे पीछे हीरे और मोतियों का ऐश्वर्य और कृषक की बैलों की जोड़ी भी चली आती है। इसके अतिरिक्त गंगा माई का सोने की अलकों और मणिवधो से सुशोभित बाहों वाला सुहागिन रूप इस लोक-गीत की अपनी विशेषता है।

गंगा माई गाड़ू रिंग्या ओद,
गंगा माई इनी मातमी माई,
त्वैन उत्पइ लिने हिमालै का गोद।
ंगा जी रीटी जाली काई,

विष्णु चरण में छूटी शिव जटा समाई ।
गंगा माई इनी मातमी माई शिव जटा समाई ।
गंगा जी गंटी जाली काई,
शिव जटान छूटे, मृत्यु मंडल आई ।
गंगा माई इनी मातमी माई, मृत्यु मंडल आई ।
गंगा जी नराज् का झोका,
तेरी जातरा औंदा देस-देसू का लोग ।
गंगा जी अग्योड की माई,
मोवन की जटा माता, मोती भरी ले थाली ।
गंगा माई इनी मातमी माई, मोत्यों भरी ले थाली ।
आगड़ा की तणी, गंगा जी
आगे आगे चले माता पीछ पीछ हीरों की कणी ।
गंगा जी लमडाई लोडी,
आगे आगे चले माता पीछ गौ की जोडी ।
गंगा माई इनी मातमी माई पीछ गौ की जोडी ।
गंगा जी मॅडवा की माणी,
चाटी सी चलक माता सुहाग-सी स्वाणी ।
गंगा माई इनी मातमी माई, सुहाग सी स्वाणी ।
गंगा जी कागज् की स्याई,
भगतू का खातर माता, मृत्यु मंडल आई !
गंगा जी औलू को अचार,
पंचनाम देव माता करदा जै-जैकार ।
गंगा माई इनी मातमी माई करदा जै जैकार ।

—(गंगा माई, नदियों भांवरे घूमे)
गंगा माई ऐसी महात्म्यमयी माता है,
तूने हिमालय की गोद जन्म ले लिया ।

(गगा जी काई घूमी)
विष्णु चरण से छूट कर शिव जटा में समाई।
गंगा माई ऐसी महात्म्यमयी माता है।
(गगा जी काई घूमी)
शिव जटा से छूटकर तू मृत्यु-मंडल में आई।
गगा माई ऐसी महात्म्यमयी माता है।
(गगा जी, तराजू की झोक)
जगह जगह के लोग तेरी यात्रा आते हैं!
गंगा माता ऐसी महात्म्यमयी माता है!
(गगा जी, अखरोट की कोपल)
माता, तेरी सोने की जटा है, मोतियो से भरी बाँहें है।
गंगा माता ऐसी महात्म्यमयी माता है।
(गगा जी, अगिया के बधन)
आगे आगे तू चली और पीछे पीछे हीरो के फण!
गगा माता ऐसी महात्म्यमयी माता है।
(गगा जी, लोडे लुढ़काये गए)
आगे आगे माता चली और पीछे पीछे गौ की जोडी।
गगा माई ऐसी माहात्म्यमयी माता है।
(गगा जी मडुवा का माणा)
चादी की तरह चमकती हो माता, सुहागिन सी सुन्दर हो।
गगा माता ऐसी महात्म्यमयी माता है।
(कागजो की स्याही गगा जी,)
भक्तों के निमित्त माता तू मृत्यु–मडल में आई है।
गगा माता ऐसी महात्म्यमयी माता है।
(गगा जी आवलो का अचार)
माता, पचनाम देवता तेरी जै–जैकार करते है।
गगा माता ऐसी महात्म्यमयी माता है।

तू आया देव

तू आया ले देव सुगड़ी सुवेर,
आँद देव की मुगड़ी बादणी,
जाँद देव की पिठुगी बादणी।
लो मेरी माता गौंत की गौंतार्डी,
गौंत की गौंतार्डी सुकला ज्यूँ दाल।
सुक्ला ज्यूँ दाल पिंगली पिठाई।
तू आयी देव शङ्ख की धुनी।

—हे देव, तू शुभ घड़ी में आ शुभ वेला में आ!
आते हुए मैं तेरे मुँह की वन्दना करूँगा,
जाते हुए तेरी पीठ की वन्दना करूँगा!
ला मेरी मा गो मूत्र का पात्र ला!
गो मूत्र का पात्र और श्वेत अक्षत ला!
श्वेत अक्षत और पीली मेंहदी ला!
हे देव, तू शंख की ध्वनि से आ!

ओजो-झाडो

दवा-दारू के बजाय तंत्र-मंत्र और देवी देवताओं की मनौती के रोग-निवारण की प्रणाली कई जातियों में पाई जाती है, 'ओजो झाडो' भी ऐसी ही प्रथा है।

रच्छा करी बटुकनाथ भैरों,
चौडिया नारसिंह, वीर नौरतिया नारसिंह।
ढौंढिया नारसिंह, चौरंगी नारसिंह!
फोर मंत्र ईश्वरो वाच।
ॐ नमो आदेश, गुरु कौं आदेश!

प्रथम सुमिरौं नादबुद भैरों,
द्वितीय सुमिरौं ब्रह्मा भैरों,
तृतीय सुमिरौं मछेन्द्रनाथ भैरौं,
मच्छ रूप धरी ल्यायो !
चतुर्थ सुमिरौं चौरगी नाथ,
विध्या उत्तीर्थ करी ल्यायों !
पंचमे सुमिरौं पिंगला देवी,
षष्ठे सुमिरौं श्री गुरु गोरख राई,
सप्तमे सुमिरौं चडिका देवी !
या पिंडा को छल करी, छिद्र करी,
भूत, प्रेत हर ले स्वामी !
प्रचड वाण मारि ले स्वामी !
सप्रेम सुमिरौं नाद बुद भैरों,
तेरा इस पिडा को ध्यान छोड़ाद !
इस पिंडा को भूत, प्रेत, ज्वर उषेल दे स्वामी !
फिर सुमिरौं दहिका देवी,
इस पिंडा को दग्ध वाण उषेल दे स्वामी !
अब मैं सुमिरौं कालिपुत्र कलुवा वीर,
धूलो तोई स्वामी गुगल को धूम,
कलूवा वीर आग रख पीछ रख !
सवा कोस मू रख, पाताल म रख !
फीली फेफ्नी को मास रख,
मुंड को मुडारो उषेल,
गति को जर उखेल !
पीठी को सलको उषेल,
कोरवी की धमाक उषेल,
चार विथा, छत्तीस बलई तू उपेल, रे बाबा !

मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति मंत्र साचा,
पिंडा काचा, चालो मंत्र ईश्वरो वाच !
फोर मंत्र फट स्वाहा,
या चिथा नी आन दूसरी वार !

—रक्षा करो वटुक नाथ भैरव,
चौडिया नरसिंह, वीर नौरतिया नरसिंह,
ढौंढिया नरसिंह, चौरंगी नरसिंह रक्षा करो !
यह मंत्र ईश्वर ने कहा।
ॐ नमो, गुरु को नमस्कार !
पहले नादोद् भूत भैरव का स्मरण करता हूँ,
दूसरा, ब्रह्म भैरव का स्मरण करता हूँ,
तीसरा, मछन्दर नाथ भैरव को स्मरण करता हूँ,
जो मत्स्य-रूप धारण कर लाया !
चौथा, चौरंगी नाथ भैरव का स्मरण करता हूँ,
जो विध्या की तीर्थ यात्रा कर आया !
पाचवाँ, पिंगला देवी का स्मरण करता हूँ
छठा, श्री गुरु गोरखराई का स्मरण करता हूँ
सातवाँ, चंडिका देवी का स्मरण करता हूँ
इस पिंड (शरीर) में जो छल-छिद्र हैं,
या भूत-प्रेत हैं, वह सब हर ले स्वामी !
अपने प्रचंड बाण मार ले स्वामी !
हे नादोद् भूत भैरव तुझे सप्रेम स्मरण करता हूँ—
इस पिंड से किसी अन्य का ध्यान छुड़वा दे !
इस पिंड से भूत, प्रेत और ज्वर उखाड़ दे !
चंडिका देवी तेरा स्मरण करता हूं,
इस पिंड पर जो बाण लगे हैं, उन्हें निकाल दे !
मैं काली के पुत्र कलुवा वीर का स्मरण करता हूँ

स्वामी, तुझे गूगल की धूप चड़ाऊँगा,
तू इस रोग को आगे-पीछे फेंक दे,
दूर सवा कोस पर रख दे !
इसकी बाहुओं, जांघो पर फिर से मांस लाकर रख दे !
इसके सिर का दर्द उखाड़,
गात का ज्वर उखाड़,
पीठ की पीड़ा उखाड़,
कोख का दर्द उखड़,
बारह व्यथाएँ, छत्तीस बलायें उखाड़ रे बाबा !
मेरी भक्ति और गुरु की शक्ति सच्ची है,
इस रोगतप्त पिंड को तू हरा कर दे,—
ईश्वर के बचन हैं कि यह मंत्र चले
मंत्र स्फुरित हो, स्वाहा !
यह व्यथा कभी दूसरी बार न आये !

उपेल-भेद

जब कोई व्यक्ति किसी का बुरा करना चाहता है तो वह मंत्र-तंत्रों की शक्ति से उसे अनिष्टकारिणी 'व्यथा' का शिकार बनाता है। उस व्यथा से मुक्ति पाने के लिये 'उपेल-भेद' में व्यथा को, सौ मन लोहे की साकल बाध कर पांवों के नीचे दबा लेने वाले तुर्कनी के पुत्र मैमन्दा वीर का आवाहन किया जाता है।

कौन देस जाई जटा फिकराई,
सौ मण लुव्वा सॉगुल कसिकी पगमुड़ि बॅधाऊं ।
आऊ रे मेरा मैमन्दा वीर, वेग मंत्र तेग आऊ।
चड़ंतो आऊ, पढंतो आऊ, गांजतो आऊ, गर्जतों आऊ !
उपरन्तो आऊ, डुकरंतो आऊ, किलकंतो आऊ, विलकतो आऊ
चौदन्तो फेरन्तो आऊ, तोड़तो आऊ नरकोटी, मेरा मैमंदा आऊ,

इस पिंडा की सुपति विथा की मोत्र मार, देग्यद आंग्पी मार !
बोलॉटी विथा को जिभ्या मार, हागणदी विथा की हाथ मार !
चलदा विथा का पग्ग मार, मार मार मैंमन्दा वीर मार !
वाटा का छोदा को वाण, अवाट का ओजा का वाग उपेल,
धार की माटी का वाण उपेल, राजस्थान की माटी का वाण उपेल,
धरती अगास फेरन्ता चले नाटिक चले चेटक चले !
छल चले छल भूत चले, मयगा चले मसना चले !
मार मार करन्तो वीर मैंमन्दा, चले वीर मैंमन्दा चले !

—हे व्यथा, कहा आकर तूने जटा बिखराई है !
सौ मन लोहे की सांकल कसकर, पैरों के नीचे दबा दूंगा !
आओ मेरे मैंमन्दा वीर, मंत्र के वेग से आओ !
चढते आओ, गिरते आओ, हंसते आओ, गरजते आओ,
उखड़ते आओ, गरजते आओ, किलकते आओ, पकड़ते आओ !
चारों दातों को निकालते आओ, सहार करते आओ मेरे मैंमदा आओ,
इस पिंड मे सुप्त व्यथा के श्रोत मार दो इसकी आखें निकाल दो,
इस बोलती व्यथा की जिह्वा मार दो, व्याधि को हांक,
कर लाने वाली इस व्यथा के हाथ मार (काट) दो !
इस ओर अग्रसर होती इस व्यथा के पैर मार दो !
मार दे, मार दे मेरे मैंमन्दा वीर मार दे !
वाट की अनिष्ट कारिणी शक्तियो के वाण उखाड़दे !
अवाट के ओझा के मन्त्रो के वाण उखाड दे !
शिखर की मिट्टी के वाण उखाड दे,
राजस्थान की मिट्टी के वाण उखाड दे !
तू धरती और आकाश को फेरता चल, जागते-सोते चल,
जिससे छल चले जाय, क्रूर वेशी भूत चले जाय
उनके नाटक-चेटक चले जाये !
इसलिए मार करता हुआ वीर मैंमन्दा, तू चल !

रखवाली

अनिष्ट प्रभावो से रक्षा रखवाली कहलाती है, किन्तु रखवाली या राखावली मन्त्र तन्त्रो मे ऐश्वर्य और सुखो की साधिका मानकर क्षारावली (राखावली) को ही अनिष्टो से बचाने वाली शक्ति माना गया है। इसी लिए रक्षा की रेखा राख से बनाई जाती है और रोग शोको को दूर करने के लिए राख की चुटकी का उपयोग किया जाता है। इस 'रखवाली' या 'राखावली' मे उसी राख की महत्ता और गुरु गोरखनाथ की शक्ति अभिव्यक्ति हुई है।

ओं नमो बभूत, माता बभूत, पिता बभत,
बभूत तीन लोक तारिणी।
ओं नमो बभूत, माता बभूत पिता बभूत,
सब दोष की निवारिणी।
ईश्वरल श्रौणी गौर्जाल छाणी,
अनन्त सिद्धों ने मस्तक चढ़ावणी।
चढ़े बभूत नि पड़े हाऊ,
रच्छा करे आतम विश्वासी गुरु गोर्क राऊ!
जरे जरं बरेतरी फले धरेतरी मात गायत्री चरं,
सुपे सुपे अगनि मुख जले,
स्या त्रभूत नौ नाथ पूर्ष्क चढ़े,
स्या बभूत हँसदा कमल कूँ चढ़े,
तिरतिया बभूत तीन लोक कूँ चढ़े
चतुर्थी बभूत चार वेद कूँ।
चढ़े पचमे बभूत पंचदेव कूँ चढ़े।
हसन देखे तुमारू नाऊँ
आप गुरु दाता तारो, ज्ञान खड्ग ले काले मारो।
औंदी डेंकणी घालो पताल,

त्वं देऊं रे डाकणी वजुर का नाल !
दुप नावे, सुप बैठ यम कुँवार निकरे माया,
इस पिंड की अमर काया,
अमर पृथ्वी वजुर की काया !
घर घर गोरक्ष वं कर सिद्धि काया निरमल निर्वी !
सोल कला सा पिंड वाला घट पिंडक गोरक्ष रखवाला।
अम्मर दृढि पिंवे पार वट्टे पिंड रखले गोरक्ष वीर।

—ॐ नमो विभूति, माता विभूति, पिता विभूति,
तीन लोकों से तारने वाली विभूति !
ॐ नमो विभूति, माता विभूति पिता विभूति,
सब दोषों का निवारण करने वाली विभूति !
ईश्वर ने तुझे उत्पन्न किया
छानकर सिद्ध तुझे मस्तक पर चढ़ाते हैं !
विभूति के चढ़ाने पर भय नहीं रहता,
आत्म विश्वासी गुरु गोरक्ष उसकी रक्षा करते हैं !
हरी भरी होकर धरती फलती है, धरती को गौ माता चरती है,
सूख सूख अग्नि से वह जलती है,
वही विभूति नाथ पुरुषों को चढ़ती है !
वही विभूति हंसते कमलों को चढ़ाई जाती है,
तीसरी, वह विभूति तीन लोकों को चढ़ाई जाती है,
चौथी, वह विभूति चार वेदों को चढ़ाई जाती है,
पांचवी, वह विभूति पचदेवों को चढ़ाई जाती है,
हंस आत्माएं आदि गुरु का ज्ञान रखती हैं,
गुरु दाता आपने लोग तारे, ज्ञान की खड्ग से काल को मारा
आती हुई मायविनी डाकनी को,
वज्र के नाद से मारकर पाताल भिजवा दिया !

दु ख नष्ट हुए, सुख बैठे, सिद्ध का माया क्या कर सकती है ?
इस पिंड की काया अमर है,
पृथ्वी अमर है, काया वज्र की है ।
घर घर फिर कर गोरख ने लोगों की काया निर्मल की !
सोलह कलाओं से सुन्दर पिंड के गोरख ही रखवाले हैं,
गोरख, अमृत-दुग्ध पिलाकर हमारी रक्षा कर ।

भूत

जीवन की अतृप्त अभिलाषाओं को लेकर असमय ही मर जाने वाले व्यक्तियों की आत्माएँ लोक धारणा के अनुसार पुनर्जन्म के लिए शून्य में भटकती हुई स्वजनों को आपत्तिग्रस्त करती रहती है। उन्हें मनाने के लिए जागरी-पुरोहित उनका आवाहन कर नचाता है। वाद्य और नृत्य के साथ इनके जो गीत चलते हैं, वे बहुत ही करुण और मार्मिक होते हैं।

१

ओ ध्यान जागि जा, ध्यान जागिजा ।
गाड का बग्यों को ध्यान जागिजा !
भेल का लमड्यॉ का ध्यान जागिजा !
सर्प का डॅस्या को ध्यान जागिजा ।
फॉस खैक मर्यॉ को ध्यान जागिजा ।

२

तेरी ओडी च ओई चाखुड सी टोली,
तेरो होलो वोई जसी माता को पराणी,
होलो ओई पराणी जसी पाफड़ सो पाणी,
कनो रै होलो वोई तेरो उ बाण रीट दो,

कनो रई होलो बोई तेरो उ काल छोंपदो !
जसी होली बोई तेरी द्यूराणी जिठाणी,
तिन बोली होल ह्वै-'मी हर्ष देखुलो !'
कै कालन ढाली होलो ह्वै जोडी मा विछोड,
यखी मू बैठ्यूं च ह्वै तेरा सिर को छत्तर,
देखी भाली जादूं अपणी ईं गरी भीतरीं,
देखी जा दौं बोई ई रौंत्याली गेत्राडी !

३

कनी छै भूला तेरी वा हौंसिया उमर,
कनो छौ चुचा तू जै कै को पियारो !
देख बैठ्यां यखी मू तेरा गोती सोरा,
टूटा ह्वै हुई चा या त्यरी निपूती मयेड,
कनि छै भुला तेरी वा जोडा सौंजडी !
उना मयला सुभौ का रै अकल्या रई तू,
मर्दि बगत भुला, त्वन पाणी भी नी पेयो,
विदेसु जगा होई तू, भुंचेणी नी पाया !
कख गै ह्वल्यो भला तू तै मयेडी ऐंसै का
डारी मा की छुटीं च त्यरी भग्यान ब्वारी !

—अहो, ध्यान से जागो, ध्यान से जागो !
जो नदी में डूबी आत्माए हैं, उनका ध्यान जागे !
जो ढगार से गिरी आत्माए हैं, ऊनका ध्यान जागे !
जो सर्प से डसे हैं, उनका ध्यान जागे !
जो फास खाकर मरे हे, उनका ध्यान जागे !

२

हे मा, तेरी चकोरो की-सी टोली छोडी हुई है ।

हे मा, तेरा प्राण पत्तो के ऊपर रखे पानी की भाति था।
तेरा वह काल कैसा घूमता रहा !
तुझे ले जाने वाला वह काल कैसा निठुर रहा !
मा, तूने कहा होगा—मैं हर्ष देखूंगी !
किन्तु काल ने तेरी जोडी में विछोह डाल दिया !
तेरे सिर का छत्र तेरा पति आज यहाँ पर बैठा है,
अपने इस प्यारे घर को देखजा।
हे मां, अपने इस रमणीक गांव को फिर से देख जा !

३

भैया, तेरी वह हँसिया उम्र थी,
हा, तू जिस-किसी का प्यारा था।
देख, तेरे सहोदर और सगोत्र यहाँ पर बैठे हैं,
आज तेरी माता तेरे विना निपूती बनी है।
हा भैया, तेरी कैसी जोड़ी थी, कैसे साथी थे,
और तू कितना स्नेही और मस्त था !
मरते समय भैया, तूने पानी भी नहीं पिया,
तू विदेश के योग्य ही रहा, जवानी न भोग पाया !
अपनी मां को दुखी कर भैया, तू कहां चला गया ?
तेरी विधवा वहू टोली में से छूटे पशु की तरह हो गई है।

आछरी

आछरी भूतो की भाति ही अनिष्ट के निवारण के लिये नचाई जाती है। नीचे की पक्तियों में उन्हें तुष्टि के लिए उपहार देने की बात कही गई है।

सुवा पंखी त्वै साडी द्यूलो,
नौरंगी त्वै कू चोली द्यूलो,
वैणी कू-सी त्वै दैजो द्यूलो,
न्यूतीक बोलौलो, पूजीक पठौलो,
पिंगली मिठाई न रंगौलो,
औंला सरी त्वै डोला द्यूलो।

—तुझे मैं सुवा पखी साड़ी दूँगा,
नौ रग वाली चोली पहनाऊँगा,
बहिन का-सा दहेज दूँगा,
न्योता देकर बुलाऊँगा, और पूजकर बिदा करूगा;
तुझे पीली हल्दी से रगा दूँगा,
और आवले के समान डोली पर बिठाऊँगा!

मांगल

भैय्या मेरा बहू लाया !

विवाह का दिन है।

ढोल बज रहे हैं। मंगल गीत गाये जा रहे हैं। हृदय में उल्लास है अधरों पर हंसी ! आज आंखें नीची कर वधू वर से मिलेगी।

जीवन में एक यही तो सावन आता है, जब मुरझाये मुखों पर भी नई कोपलें आ फूटती हैं, नये फूल खिलते हैं और हृदय में सोये भाव अपनी अभिव्यक्ति के लिये अंगडाई लेने लगते हैं। कहते हैं पानी से भी अधिक मीठी प्यास होती है और जो सुख भोगा ही नहीं, उसके प्रति उतनी ही उत्कंठा भी हुआ करती है। इसीलिये विवाह का आकर्षण हृदय की सिहरन की भांति मधुर होता है।

मां-बाप की मर्जी—ब्याह ! ब्याह ! एक खीज सी होती है—वनों में बुरांस खिलते देखे हैं, पहाडों से निकलती सरिता को 'स्या स्या' (कल कल) करते हुए किसी के आमन्त्रण के स्वर सुने हैं, किन्तु सरल प्रपातों में किसी के लिये प्रेम सजोये कहीं हिरणी की भांति पलती उस बालिका ने अपने प्रिय को नहीं देखा है। किसी ने किसी को नहीं देखा, किन्तु हृदय पर जो मृदु स्पर्श होता है, (उससे) लगता है, जैसे कोई चुपके से झांक गया हो। हां सचमुच किसी ने किसी को नहीं देखा, किन्तु हृदय की गहराइयों में जो फूल की तरह खिलकर छाया की तरह फिरता है, वह चिर-परिचित सा लगता है। तभी तो सरस हृदय की सरल कल्पना कभी विवाह को मधुर बना देती है !

हां विवाह का दिन है !

वह गांव की बाट से किसी की पालकी आ रही है। उसके साथ गाजे-बाजे हैं, हाथी घोडे हैं और हैं रंग बिरंगे कपड़े पहने बराती। गांव की स्त्रियां झरोखों से बाहर सिर निकाल कर उधर देख रही हैं। लडकियां रंग लेकर मकानों की छतों पर चढ गई

हैं। सर्वत्र उल्लास है, उमग है और सबसे अधिक है उत्कठा। बरात द्वार पर पहुँच चुकी है—घर के लोग सत्कार मे व्यस्त हैं; किन्तु कन्या की सहेलियां वर के चारो ओर घिर आई हैं। वे उसे आ-आकर निहार रही हैं—कैसा है, क्या है! और कोई ओठ बिचका कर, कोई मुँह फुलाकर चली जा रही हैं। हसती हैं—अच्छा है! आज खूब गालिया देने को मिलेंगी। बन्नू को ऐसा बनाया जायगा कि । और तब वे भागती भागती वहा पहुचती हैं, जहा कन्या भविष्य के भावो मे डूबी बैठी है। सहेलियां कोई उसे झकझोरती हैं, कोई गुदगुदाती है—'तेरा वह ।' और वह बिना कुछ बोले ही शरमा कर रह जाती है।

२

विवाह हो रहा है।

वर और वधू वेदी के ऊपर बैठे हुए हैं। समने पुरोहित बैठा हुआ मन्त्रोच्चार कर रहा है। वर वधू का परिचय कराया जा रहा है—किं गोत्रस्य किं प्रवरस्य, किं शाखिनो, किं वेदाध्यायिनो ? और हसी आती है जब अनपढ वर वधू को पुरोहित अमुक वेद का अध्येता कहता है। अब पाणि-ग्रहण हो रहा है। पुरोहित ने वधू की उगली कामदेव के प्रथम अकुर की भाति वर के हाथ मे थमा दी है। वर पुलक कम्प मे सिहर उठता है, कन्या लाज से पसीज जाती है। लगता है, दोनो के आंचलो के साथ उनके हृदय भी बांध दिए गए हों।

भांवरें हो रही हैं। वर वधू मथर गति से पग रख रहे हैं। उधर हर भावर पर मागल गीतों की कड़ियां गाई जा रही हैं—पहली भावर फेरी लाडी कन्या क्वारी है । दूसरी तीसरी भांवर में वह मां और भाइयो की प्यारी रहती है चौथे में मायका छोड देती है, आगे ससुराल की तैय्यारी करते हुए सास की बहू बनते हुए सातवें फेरे तक वह सबका स्वत्व खोकर किसी की हो जाती है। मागल गीतों में व्यक्त यह सप्तपदी विवाह-संस्कार की प्राण-शक्ति है।

दिन ढलने लगा है। सूर्य शिखर पर चढ गया है, नदियो मे छाया पड चुकी है। बरात के जाने का समय हो गया है। गायिकाएँ सगीत स्वरो में बरातियों को विदा दे रही हैं—उठो, उठो बरातियो, बहुत समय हो गया है ! किन्तु कन्या की बिछुडन हृदय को विह्वल कर देती है। कन्या परकीय विभूति होती है, उसे जाना ही होता है। किन्तु यह विवेक कितने हृदयो को सात्वना दे पाता है ? कालिदास ने भी तो कण्व जैसें तपोधन की आँखें करुणा की तरलता से भर दी थीं। उधर उस कन्या के हृदय की न पूछिये, जिसके लिये ससुराल का अनिश्चित भविष्य काले पहाडो के कुहरे के समान भयावह है—व्याह ने उसकी दुनिया ही बदल दी है। अब उसके लिए न मायके के वे पहाड न रहेंगे, न वे बन, न वे नदिया और न वे लोग ही। मायके में फूल खिलेंगे, हिलांस बोलेगी, सखियाँ हिंसर बीन कर लायेंगी, किन्तु हन्त, वह वहाँ न होगी। केवल ऊनकी एक 'खुद' उसके हृदय में पीडा बन कर कांटे की तरह कसकती रहेगी ! वर प्रसन्न है—वह डोली पर बिठा कर ब्योली (दुलहिन) को जो लिए जा रहा है अब वह घर पहुचेगा। ऊसके घर में मोतियों सी दमकती ब्योली जायेगी। तब वह अपनी मा से कहेगा—'मा, शिव पार्वती को लेकर आया है। खैर देखिये, बरात अभी बैठी भी नहीं कि गाँव की स्त्रिया 'ब्योली' के चारो ओर घिर आई हैं जैसे वह कोई प्रदर्शनी की वस्तु हो। किसी ने उसका हाथ पकड रखा है, कोई उसकी वेणी सहला रही है और कोई उसके गहनों को टटोल रही है।

'कैसी 'बाद' (सुन्दरी) है !'—कोई कह रही है। और 'ब्योली' लज्जा से मुस्करा रही है।

और जब मैं व्याह की बात कर रहा हू तो एक रूप-छवि मेरी आखो में घूम जाती है, जिसे मैंने अपनी लोक गीत यात्रा में जौनपुर (गढवाल) में देखा था। उछल कर वह जो गीत गा रही थी ऊसकी कडी आज भी मेरे कानो में गूज ऊठती है

भैय्या मेरा वह लाया दाडिम जैसा फूल।

सगुन बोला

यहाँ गीतों के स्वरों में धरती, कूर्म, गणेश तथा भूमिपाल देवताओं से मंगल मय कामनाएं की जा रही हैं।

बोला न बोला, सगुन बोला,
जौ जस द्यान, कुरम देवता;
जौ जस द्यान, धरती माता!
जौ जस द्यान, खोली का गणेश;
जौ जस द्यान भूमि को भूम्याल!
तुमारी थाती मा, यो कारज वीरे,
यो कारज सुफल फल्यान!

—बोलो न, बोलो सगुन बोलो!
कूर्म देवता जय और यश दे,
धरती माता जय और यश दे,
सिंह पौर पर स्थापित गणेश जय और यश दे!
भूमि का 'भूमिपाल' देवता जय और यश दे!
तुम्हारी थाती में यह कार्य हो रहा है,
यह कार्य सुफल फले, जय और यश हो!

बोल कागा

लोक धारणा में कौवा भविष्य का संदेश-दाता माना जाता है। उसे दूर से उड़ते हुए देखकर उसके मुख से भविष्य की शुभ सूचना पाने की उत्कंठा हृदय की स्वाभाविक अनुभूति है।

औन कागा, बैठ कागा हर्‍याँ बिरगुछ!
बोल कागा चौदिशी सगुनो!
त्वै द्यूलो कागा मैं दूद भाती,
बोल कागा चौदिशी सगुनो!

—आ न कौवे, आ, हरे वृक्ष पर आ बैठ।
चारो दिशाओं में शुभ शकुन बोल।
मैं तुझे दूध और भात दूंगी कौवे,
बोल कौवे, चारों दिशाओं में शुभ शकुन बोल।

निमंत्रण

ब्याह में मनुष्य मात्र का निमंत्रण आज की सामान्य प्रथा है, किन्तु उस लोक हृदय की उदारता कितनी काव्यमयी है, जो ब्याह में वेद मुखी ब्रह्मा, मंगल वाद्य बजाने वाले औजी, हल्दी की क्यारियों, मंगल गीत की गायिकाओं तथा शस्य श्यामल खेतो को भी निमंत्रित किये बिना नहीं रहती।

पैले न्यूते पैले न्यूते, वेदमुखी बरमा,
आज चैन्द बरमा जी को काज।
तब न्यूते, तब न्यूते औजी को बेटा,
आज चैन्द बढैं को काज।
आज न्यूती याले मैन हालदानू की बाडी,
आज चैन्द हलदी को काज,
आज न्यूती यालेन मैन मंगल्याली नारी,
आज चैन्द मांगल को काज।
आज न्यूती यालेन मैंन साट्यों की सटेड़ी,
आज चैंद मोतियों को काज।

—पहले न्योता पहले न्योता दिया वेदमुखी ब्रह्मा को
आज ब्रह्मा जी का काम है,
तब न्योता दिया, तब न्योता दिया औजी के पुत्रको,
आज बधाई का काम है,
आज मैंने हल्दी की क्यारियों को न्योता है,
आज हल्दी का काम है।

आय मैंने मांगल गीतो की गायिकाओ को न्योता है,
आज मगल गायन का काम है !
आ मैंने धान के खेतो को न्योता है,
आज (उनके) मोतियो का काम है !

नहोंदारियोंक न्यूतो

मगल स्नान के हेतु प्रस्तुत कन्या अपनी प्रिय सखियो को नहलाने के लिए निमत्रण देने का आग्रह करती है ।

न्यूती बुलावा सुहाग सुहागणी
न्यूती बुलावा बैणी दगड़्याणी,
न्यूती बुलावा तुम बौंजी मेरी,
करावा मैं मगल असीनान, ।
लाख वर्ष जियान तुम,
जुग जुग जियान तुम,
जिन दूद नचाई,
जिन हलदी रगाई ।

—न्योता देकर बुलाओ सुहागिनों को,
न्योता देकर बुलाओ बहिनों और सहेलियों को !
न्योता देकर बुलाओ मेरी भाभी को,
मुझे मगल स्नान करवाओ,
तुम लाख बरस जिओ,
युग-युग तक जिओ,
जिन्होंने मुझे दूध से नहलाया,
और हल्दी से रगाया !

बांद

मगल-स्नान का प्रारभ उस क्रिया से होता है, जिसे सामान्यत. 'बांद देना' कहा जाता है। यह वंदना का रूप प्रतीत होता है।

स्नान करवाने वाली सुहागिनें दोनों हाथो में दूब के गुच्छे लेकर उन्हें डुबाते हुए पाच या सात बार क्रम से कन्या के चरणो, घुटनों, कधों और सिर मे छुवाती हुई वदना के रूप मे स्नान की भूमिका प्रस्तुत करती हैं।

बाद देली दीदी स्वागीण,
बाद देली चाची स्वागीण,
बाद देली बौजी स्वागीण,
बाद देली माजी स्वागीण!

—सौभाग्यवती बहिन मुझे बाद देगी,
सौभाग्यवती चाची मुझे बाद देगी।
सौभाग्यवती भाभी मुझे बाद देगी,
सौभाग्यवती माता मुझे बाँद देगी।

कैन होये कुंडी कजोली

कन्या के रूप की आभा जल कजला और सूर्य धुंधला बनाकर व्यंजित की गई है।

कन ह्वे ली, केन ह्वे ली कुंडी कजोली
कन ह्वे लो, केन ह्वे लो सुरीज धुमैलो?
उबा देस, उबा देस गौरा नहेणी
यान ह्वे ली, यान ह्वे ली कुंडो कजोली, सुरीज धुमैलो।
केन होये केन होये सिंधु छलार,
उबा देश लछमी नहेणी,
यान होये, यान होये सिंध छलार!

—क्यो हो गया क्यो हो गया कुंड कजला,
क्यो हो गया क्यो हो गया सूरज धुंधला?
ऊर्ध्ववर्ती प्रदेश में गौरा नहाई,

इसलिए हुआ, इसलिए हुआ कुंड कुजला और सूरज धुवला !
किस लिए उठीं, किसलिए उठीं सिंधु में लहरें ?
ऊर्ध्ववर्ती प्रदेश में लक्ष्मी नहाई,
इसलिए उठीं, इसलिए उठीं सिंधु में लहरें।

वस्त्र पैर्द

स्नान के पश्चात् शरद के समान निखरा रूप माँ के इस अनरोध के साथ वस्त्रों की शोभा पाता है।

नहेक धोयेक लाडी मेरी हरफूया ह्वेगे,
पैर पैर लाडी मेरी यों कपड्यों,
बाबा जी तेरा लैन बजार मुलेक,
माँ जीन तेरी पिटारी साँजीन।
पैर पैर लाड़ी मेरी रेशमी कापडे।

२

वस्तर पैर स्वार्गीणिय सोना मोती हार,
रूपा पैर स्वार्गीणिय सोना मोती हार।
काडी त बोलू तौ कस्तूरी,
तेरे अंग मोडी जाला वास,
पिंगली बोला हल्दूरिये,
तेरे अंग लागी जालो राग।

—नहा-धोकर लाडली स्वच्छ हो गई है,
अब इन कपडों को पहन लाडली।
तेरे पिता जी इन्हे बाजार से खरीद कर लाये है
तेरी मा ने उन्हे पिटारी में सजोकर रखा।
मेरी लाडली, रेशमी कपडे पहन !

हे सुहागिन, वस्त्र और सोने,मोती के हार पहन।
चाँदी के आभूषण और सोने, मोती के हार पहन!
मे तुझे कहती हूँ कि कस्तूरी
की सुवास तेरे अगो मे रम जायेगी,
पीली हल्दी का रग—
अब तेरे अग में रग जायेगा!

गहणा पैर्द

रूप को आभूषणो से सुरूप बनाने की कामना को लेकर नारी कब अघाई है। आभूषणो की याचना ब्याही जाने वाली कन्या के लिए पहली वस्तु है।

मैं त देणा बाबा जो डबलो का गैणा,
मैं देणा बाबा जो अनभन भाँत का वस्तर
मैं देणा बाबा जी, कड़ा त झॅरी,
मैं देणो बाबा जो, हाथ की पौंछी, गला को हार।
मैं देणो बाबा नाक की नथूली, सुहाग बेन्दी,
मैं देण बाबा जी शीशफूल चलमलान्दो!
मैं देण बाबा जी हस्ती लादी सोनो,
हस्ती लादी सोनो, घोड़ा लादी चाँदी।

—मुझे दो पिता जी डब्बे के गहने,
मुझे दो पिता जी भाँति भाँति के वस्त्र!
मुझे देने हैं पिता जी, कड़े, नूपुर भी
मुझे देनी हैं हाथो की पहुचियां, हार गले का,
मुझे देनी है पिता जी, नाक की नथ, सुहाग की बिन्दी।

मुझे दो पिता जी, चमकता शीश फूल,
मुझे दो पिता जी, हाथी लादकर सोना
हाथी लाद कर सोना दो, घोडे लादकर चांदी !

बरात आगमन

कन्या, गृह के सन्निकट ही बरात के आने का आभास पाकर स्वागत के लिये अपने पिता को सजग करती है।

कै भड़ को आइ होलो यो दल बल,
कै भड़ को आई होली या पिंगली पालकी,
केक सेन्दो बाबा जी, निंद सुनिंद,
ऐ गैन बाबा जी जनती का लोक,
नी सेन्दू बेटी मैं निन्द सुनिंद।
तेरी जनीत कांद ओगी लौलू।
बरमा जी करला गणेश की पूजा,
वर तैं लगौलू मंगल पिठाई।

—यह दल-बल किस वीर का आया है।
यह पीली पालकी किस वीर की आई है ?
क्यो सोते हो पिता जी गहरी नींद में,
आ गए हैं पिता जी, बराती लोग।
मैं गहरी नींद में नहीं सो रहा हूं बेटी,
तेरे बरातियो को मैं सर-आंखो पर चढ़ाऊंगा,
पुरोहित गणेश की पूजा करेंगे,
वर को मंगल तिलक लगाया जायेगा !

को देव ऐन

पूर्व परिचय के अभाव में हुए विवाह-सम्बंधों मे वर और कन्या एक दूसरे के लिये 'कौन' रुपी प्रश्न वाचक चिन्ह बने रहते हैं।

परम्परा ने उनकी कल्पना को शिव और पार्वती, विष्णु और लक्ष्मी के आदर्श-व्यक्तित्व में बांधकर रख दिया।

रथ रथ चढि को देव ऐन ?
रथ चढि वरमा जी ऐन।
वरमा जी ऐन सावेतरी वेवौणा।
रथ रथ चढि को देव ऐन ?
विष्णु जी ऐन लक्ष्मी वेवौणा।
रथ रथ चढ़ि को देव ऐन,
मादेव ऐन पारवती वेवौण ?

—रथ पर चढ कर कौन आया है ?
रथ पर चढ कर ब्रह्मा जी आये हैं।
सावित्री को ब्याहने ब्रह्मा जी आये हैं।
रथ पर चढ़कर कौन देवता आया है ?
महादेव जी पार्वती ब्याहने आये हैं।

धूलि अर्घ

प्राय वर की वेश-भूषा ही उसका परिचय होता है। प्रस्तुत गीत में पिता की यह उक्ति कि मैं वर को जानता-पहचानता नहीं—उस सामाजिक परंपरा का संकेत करती है जिसमें व्याह एक जुआ है, संयोग है!

जाणदो नी औं पछाणदो नि छौं मी,
कै देण धूली अरघ ?
कै देण शंक की पूजा ?
जैका होला जैका होला पाऊँ खड़ाऊ,
ओ होलो धिया को धुमैलो, शीश की शोभा।
वई देवा धूली अरघ, शंक की पूजा।
जैका होला जैका होला, हातु कगण,

जैको ह्वोलो, जैको ह्वोलो झिलमिल जामो,
जैकी ह्वोली जैकी ह्वोली पितावर धोती,
वई देण दई देण धूली अरघ।

—मैं जानता नहीं, पहचानता नहीं,
कहो, गोधूलि-अर्घ्य किसे चढाऊ ?
शख की पूजा किसे दू ?
जिनके हैं, जिसके है पैरो पर खड़ाऊ
वही तुम्हारी बेटी का वर है, शीश की शोभा है।
उसी को अर्घ्य और शख की पूजा दो।
जिसके हाथो में कंकण है,
जिसके झिलमिल वस्त्र है
जिसकी पीली धोती पहनी है,
उसी को, उसी को अर्घ्य दो।

देखण देवा

कन्या की सखियो द्वारा वर को देखने की उत्सुकता सर्वत्र है और सुदर तथा सरस भी।

छॉटा होवा छॉटा होवा, जनती का लोको
कनो ह्वोलो क्या ह्वोलो दे को जवाई ?
कु ह्वोलो, कनो ह्वोलो दे को वर,
ऑखू को अन्धो त नी, कंदूड़ को बैरो,
कालो छ कवा जसो मैलो धुमैलो,
कि छ गोरो ग्वीराल जसो फूल।

—हटे होओ हटे होओ बरातियो!
देवी का वर क्या है, कैसा है,
कौन है, कैसा है देवी का वर ?
आख का अन्धा कान का बहरा तो नहीं
कवे की तरह काला, मैला धुंधला है
या गोरा है ग्वीराल के फूल जैसा ?

खोल देवा धौड़ पड़दा

वर पक्ष के लोग भी कन्या का रूप देखने का लोभ सवरण नहीं कर पाते। किन्तु कन्या पक्ष के लोग अपनी कन्या को रूपवती

बताकर वर पर ही कुरूप होने का व्यंग कर टाल देते हैं।

खोल देवा, खोल देवा धौड पड़दा,
देखू मैं कन्या को रूप !
हमारी कन्या च गौरी सरूप,
तुमारो वनडा श्याम सरूप !
खोल देवा खोल देवा धौड पडदा,
देखू मैं कन्या को रूप !

—'खोल दो, खोल दो पर्दे को
मै कन्या का रूप देखना चाहता हू !'
'हमारी कन्या गौरी-स्वरूपिणी है,
तुम्हारा बन्दर (वर) काला है !'
'खोल दो पर्दे को खोल दो,
मै कन्या का रूप देखना चाहता हू !'

दी देवा बाबा जी

कन्या का यह अनुरोध भारत में कन्यादान की महत्ता का समर्थन करता है।

दी देवा बाबा जी कन्या को दान
दानू मा दान होलो कन्या को दान !
हीरा दान मोती दान सब कोई देला,
तुम देला बाबा जी कन्या को दान !
तुम होला बाबा जी पुण्य का लोभी,
दी देवा बाबा जी कन्या को दान !
हेम दान गजदान सब कोई देला,
तुम देला बाबा जी कन्या को दान !

—पिता जी, तुम कन्या का दान दो,

दानो में श्रेष्ठ दान कन्या दान है !
हीरा-दान, मोती दान सभी कोई देंगे,
तुम पिता जी, कन्या का दान दो !
पिता जी, तुम पुण्य के लोभी हो !
कन्या का दान दो तुम पिता जी !
हेमदान, गजदान सभी कोई करेंगे,
पर पिता जी, तुम कन्यादान करो !

सप्त पदी

भांवर देते हुए गाई जाने वाली यह सप्तपदी पत्नीत्व की ओर अग्रसर होने वाली कन्या के विभिन्न संबधो और स्थितियो की ओर संकेत करती है ।

पहिलो फेरो फेरे लाडी, कन्या च कुमारी,
दूजो फेरो फेरे लाडी, कन्या च मॉ की दुलारी ।
तीजो फेरो फेरे लाडी, कन्या च भायों की लड्याली,
चौथो फेरो फेरे लाडी, मैत छोड्याली ।
पॉचों फेरो फेरे लाडी, सैसर को च त्यारो,
छटो फेरो फेरे लाडी, सासु की च ब्वारी
सातों फेरो फेरे लाडी, कन्या ह्वे चुके तुमारी ।

—पहिली भांवर फेरी, लाडली कन्या कुवारी है ।
दूसरी भावर फेरी, लाडली मा की दुलारी है ।
तीसरी भावर फेरी, कन्या भाइयो की लाडली है ।
चौथी भावर फेरी, लाडली ने मायका छोड़दिया ।
पाचवी भावर फेरी, ससुराल की तैयारी है,
छठी भांवर फेरी, लाडली सास की बहू बनी ।
सातवीं भावर फेरी, लाडली तुम्हारी हो चुकी !

छोलका

मातृत्व में विवाहित जीवन की सबसे बड़ी सार्थकता है। विवाह की क्रिया के साथ इसी लिये लड़की के आँचल में फलों का उपहार समर्पित करने की प्रथा है। लक्ष्मी, सावित्री, पार्वती आदि से पुत्रों का वरदान माँगा जाता है। कहीं इस प्रथा को 'अ चला' भी कहा जाता है, जो आचल का पर्याय है।

छोलियाँ दे, छोलियाँ दे बामण,
केला, छोलंग, बिजोरा, नरयूल !
धक दालिम, मोत्यो भरी थाल,
छोलियां दे, छोलियां दे बामण !
सुन पछी सुवा, लाल लौहि सुवा,
दे सुवा तू स्वागीण्यों न्यूतो—
सबी देवी ऐन लछमी नी आए,
क्या अबेर लाए !
औंदो छऊँ मै औंदो छऊँ
नाती पूतन गोद भरी लौन्दू !
सबी देवी ऐन पार्वती आए !
औन्दो छऊँ मैं औन्दो छऊँ
नाती पूतन गोद भरी लौन्दू।

—'मेरे आंचल में दे, आचल में दे ब्राह्मण,
केला, छोलग बिजोरा, नारियल,
द्राक्षा, दाड़िम और मोतियो से भरी थाल दे !
मेरा आचल भर दे, भर दे ब्राह्मण !
हे सुवा, सुन ! लाल चोच वाले सुवा,
तू सुहागिनों को न्योता दे आ !
सभी देविया आगई हैं किंतु लक्ष्मी नहीं आई,

न जाने क्यों देर लगाई है !'
'आती हूँ, आती हूँ,
पुत्र और पोतों से तेरी गोद भर लाऊँगी !'
'सभी देवियां आ गईं, पर पार्वती नहीं आई !'
'आती हूँ, आती हूँ,
पुत्र और पोतो से तेरी गोद भर लाऊँगी !'

ब्याई

पैले को मंगल गाऊ सुवागीण,
मेघ राजन भूमि वसन्तर ब्याई ।
दूजो मगल गाऊ सुवागीण,
दूसर जगरनाथ गरजा ब्याई ।
तीजो मगल गाऊ सुवागीण,
नारैणन रमौण दे ब्याई ।
चौंथो मगल गाऊ सुवागीण,
पाडुराजन कुन्ता ब्याई ।
—पहला मगल गाओ सुहागिन,
मेघराज ने वासन्ती भूमि को ब्याहा है ।
दूसरा मंगल गाओ सुहागिन,
शिव ने गिरिजा को ब्याहा है !
तीसरा मगल गाओ सुहागिन,
विष्णु ने रमा को ब्याहा है ।
चौथा मंगल गाओ सुहागिन,
पाडुराज ने कुन्ती को ब्याहा है ।

आज छूटो

विवाह के नाम पर कन्या के लिए दुनियां ही बदल जाती है—जीवन बदलता है, पहाड बदलते हैं, घर और खेत बदलते हैं । मायके के पुराने सबध पीछे छूट जाते हैं ।

'मेरी ससुराल का (प्र) देश कौन सा है ?'
'जिस देश मे वेद के शब्द सुनाई देते हैं,
वही ससुराल का देश है ।
जिस देश मे मगल गीत गाए जा रहे है,
वही ससुराल का देश है ।
जिस देश में काले बादल है,
वह ससुराल वालो का घर होता है ।
जिस देश मे वाटिका मे कुगू का फूल खिलता है
वह मायके वालो का घर होता है ।

लगदो डर

मायके से बिछुड़ती हुई कन्या कुहरे से घिरे मार्ग से ससुराल जाने में सकोच प्रकट करती है । एक ओर मायके का मोह है, दूसरी ओर ससुराल की सुखद कल्पना ! पिता की सात्वना पुत्री के साथ है, किन्तु शायद वह नहीं जानता है कि हृदय के कसकते अभावो की पूर्ति हाथी घोडे नहीं कर सकते ।

काला डाडा पीछ बाबा जी काली छ कुरेड़ी,
बाबा जी एकुली मै लगदी डर !
एकुली मैं कनकैक जौलू विराणा विदेश !
आग दिऊलू बेटी त्वै सकल जनीत,
पीछ दिऊलू बेटी त्वै हाथी घोडा,
त्वै दगड़ी जाला लाड़ी, तेरा दीदा भुला,
त्वै तैं बेटी एकुली ना भेजू !
आग दिऊलू बेटी, त्वै दास व दासी,
पीछ दिऊलू त्वै भैंस्यो को खरक,
गायों को गुठार दिऊलू,
बाखरियों कू दिऊलू गोठ ।

पर मेरी लाडी त्वै एकुली नी भेजं ।
तिन जाण लाडी चौडाडा पोर,
त्वै मैं एकुली ना भेजूं ।

—'काले पर्वत के पीछे पिता जी, काला कुहरा है।
अकेले जाते मुझे डर लगता है पिता जी !
अकेली मैं परदेश कैसे जाऊँगी !'
'आगे आगे तेरी बारात भेजूंगा' बेटी,
तेरे पीछे हाथी घोडे भेजूँगा !
लाडो, तेरे साथ तेरे छोटे-बडे भाई जायेंगे,
तुझे बेटी, अकेली न भेजूंगा !
तेरे आगे तुझे दास और दासियां दूंगा,
पीछे भैंसो का खर्क दूंगा;
गायो की गोशाला दूंगा,
बकरियो का गोठ दूंगा !
पर तुझे अकेली न भेजूंगा बेटी !
तूने चार पहाडो से भी पार जाना है
तुझे मैं अकेली न भेजूंगा !'

गृह-प्रवेश

श्वसुर-गृह मे प्रवेश करती वधू नव जीवन ऐश्वर्य और शोभा की अधिष्ठात्री होती है।

शुभ घडी, शुभ दिन आई सुहागण,
हम घर हम घर आई सुहागण,
अमरित सिचदी आई सुहागण,
शुभ घडी शुभ दिन आई सुहागण !
हम घर, हम घर आई सुहागण,

कोठडी दिपकण लैगी सुहागण,
शुभ घडी शुभ दिन आई सुहागण ।

—शुभ घडी और शुभ दिन को आई है सुहागिन
हमारे घर, हमारे घर आई है सुहागिन ।
अमृत सींचती आई है सुहागिन,
शुभ घडी शुभ दिन आई सुहागिन ।
हमारे घर, हमारे घर आई है सुहागिन ।
घर दमकने लगा है सुहागिन,
शुभ घडी, शुभ दिन आई सुहागिन ।

मैं जॉदू

वर जब कन्या को लेने चला था तो उसने मा से कहा था—मै तुम्हारे लिये 'छोन्यारी-पन्यारी' (दही मथने और पानी भरने वाली—काम में हाथ बँटाने वाली) लाने जा रहा हू ।' अपने लिए जो (हृदय की) स्वामिनी है, माँ के सामने वही चरणो की सेविका है ।

मैं त जॉदू मॉजी पार्वती लेण,
तुमूक लौण मॉजी, छोन्यारी पन्यारी
अफूक लौलू राणी सुविनों की ।

—माँ, मै पार्वती लेने जा रहा हू,
तुम्हारे लिये 'छोन्यारी पन्यारी' लाऊ गा,
और अपने लिये स्वप्नो की रानी !

गाली

गालिया ब्याह में बहुत प्रिय विषय होती है । गालिया भी कभी कितनी मीठी बनकर आती है, यह मांगल गीतो के सगीत स्वरो मे ही अनुभव हो किया जा सकता है । ये गालियां प्राय कन्या पक्ष

की ओर से ही झरती हैं और विवाह की सभी क्रियाओं से सवद्ध होती है। पहले बरात के आगमन पर की गाली सुन लीजिए

ऐता ऐता पौणा ऐता,
अपणी वोई क्यों नी लैता।
लौणक त लैता,
रस्ता मा धुनारून लूटियाले।
—आ गए हो, आ गये हो बरातियो!
अपनी माँ को साथ क्यों नहीं लाये?
लाये तो थे, लाये पर—
रास्ते में उसे मल्लाहों ने चुरा लिया।

खाँद

भात देन्द पौणा करछी लाट दीठ,
हमन नी जाणी लुवार को जायो।
मिठै देन्द पौणो पुडखी लॉट दीठ,
हमन नी जाणी हलवै को जायो।
—पके चावल देते हुए पाहुना कर्छी पर दृष्टि लगाए है
हमने न जाना कि वह लोहार का बेटा है।
मिठाई देते हुए पाहुना, दोने पर दृष्टि लगाए है,
हमने न जाना कि यह हलवाई का बेटा है।

जुठो-पिठो

वर और कन्या को परस्पर एक दूसरे का जूठा खिलाया जाता है। प्राय: लड़की के जूठे लड्डू या दही को चुपके से पुरोहित (लड़की के हाथ को अपने हाथ में लेकर) वर के मुह पर लगा देता है। चतुराई इससे बचने में समझी जाती है। अन्यथा कन्या पक्ष की स्त्रियाँ वर की बड़ी मजाक उड़ाती है। इस प्रथा को स्थानीय

भाषा में 'जुठो पीठो' कहा जाता है। नीचे स्त्रियां कन्या को वर का जूठा न खाने का आग्रह कर रही हैं।

छि लाडी, जुठो नी खाई।
तू लाडी, सुकुल को जाई
छि लाडी, जुठो नी खाई।
तू लाडा लुवार को जायो,
हमारी लाडी छ जनी गौरा माई,
छि लाडी जुठो नी खाई।

—छि लाडली, जूठा न खाना !
तू लाडली उच्च कुल में उत्पन्न हुई है।
छि लाडली, जूठा न खाना।
तू लाडले, लोहार का पुत्र है,
हमारी लाडली तो पार्वती के समान (पवित्र) है।
छि, लाडली (वर) का जूठा न खाना।

खोल बेटी कंकण

मंगल-सूत्र तोड़ते हुए

खोल बेटी कंकण, सुकुल की जाई।
खोल बेटा कंकण, तेरी वोई लीग्या मंगण।
—मंगल सूत्र खोल बेटी, तू सुकुल की संतान है !
खोल बेटा मंगल सूत्र, मेरी मां को मंगते (भिखारी) ले गए !

गोत्रोच्चार

बेटी न बेटी, कुंकुम लेटी,
कस्तुरीन लेटी, चन्दन लेटी,
बोल बेटी गोत्र अपणो।
माता च पार्वती, पिता च मादेव,

मामा रिस्यों का पुतर।
ई होलो कन्या को गोतर !
बेटा न बेटा, कुंकुन लेटा, कस्तुरीन लेटा,
बोल बेटा गोत्र अपणो ?
माता च अप्सरा, पिता च खतरी,
मामा यूका गंधर्व का पुतर,
ई होलो वर को गोतर !

—'बेटी, हे बेटी, तुझे कुकुम से रँगाऊँ,
कस्तूरी से सुरभित करूँ, चन्दन से चर्चित करूँ !
बता बेटी गोत्र अपना !'
'मेरी मा पार्वती है, पिता महादेव हैं
और मेरे मामा ऋषियों के पुत्र हैं।'
यही है कन्या का गोत्र।
'बेटा, हे बेटा, तुझे कुंकुम से रजित करूँ,
कस्तूरी से सुरभित करू
बता बेटा गोत्र अपना !
(तेरी) माता है अप्सरा, पिता है खत्री
और मामा इनके गधर्वो के पुत्र।
यही तो होगा वर का गोत्र।'

आरती

मागलिक क्रियाओ के अत में पूर्णा के रूप में आरती की जाती है।

छणवा छणवा माटा का दिवडा बणाया,
कर रंभा सेली आरती।
कपिला गौ को होलो दई दूद शुद्ध,
वे दूद अर्घ देऊला,

रेणु पिठाईं होली राम सगूनी
ईं रेणु शीस चढ़ौला,
गंगा जमुनी को जल च पवेतर
ये जल अर्घ चढ़ौला।

—छनी हुई मिट्टी के दीप बनाए,
रंभा, तू शांतिपूर्वक आरती कर !
कपिला गौ का शुद्ध दूध है,
उस दूध का अर्घ्य देंगे।

राम के सगुन तिलक को
हम शीस चढायेंगे !
गंगा और यमुना का जल पवित्र है
इस जल का अर्घ्य चढ़ायेंगे।

प्रेम, रूप, रस

प्रेम गीत

'प्रेम, रूप और रस' के अन्तर्गत प्रेम गीतो का सचयन किया गया है। गढवाल मे प्रेम गीत अपनी विभिन्न शैलियो, रूपो और गायन की क्रिया के भेदो के कारण छोपती, वाजूबन्द, लामण आदि अनेक स्थानीय नामों से प्रसिद्ध हैं किन्तु कई गीत ऐसे हे, जो वैभिन्य के स्थानाय वर्गीकरण के अन्तर्गत नहीं आते। इनमे से कुछ प्रेम गीत भाभी और सालियों सबन्धी है, कुछ शृगार के हलके रसीले गीत। अनेक ऐसे भी हैं, जिनमें भावो की गभीरता और काव्य की सी रसात्मकता प्रयाप्त मात्रा में विद्यमान है। इस कोटि के लोक गीतो की कोई स्थानीय सेंज्ञा नहीं है। इसका कारण यह है कि शृगार के हलके-फुलके गीत बहुत बाद की उपज हैं। कुछ सुन्दर काव्यमय गीत भी आधुनिक कविता के प्रभाव स्वरूप ही बने है। फलत उनका नाम करण भी नया ही हो सकता है। हमने इस कोटि के सभी प्रेम गीतों को, जो स्थानीय वर्गीकरण की सीमा के अन्तर्गत नहीं आ सके हैं, अगले पृष्ठों में अनाम ही दे दिया है।

२

जिस दिन मनुष्य को हृदय मिला, शायद उसी दिन प्रेम भी। हृदय हृदय को खींचता है — हृदय की प्रीति हृदय पर ही हुआ करती है। तबसे न जाने कितने हृदय खिलती कलियों पर हँसें और बिखरी ओस पर रोये। वस्तुत: सवेदन शील हृदह प्रेम का मधु-कोष है; सुन्दरता उसकी पुण्य-याती है। सौन्दर्यानुभूति स्वय हृदय की एक विशेषता है। सौन्दर्य आँखो के द्वारा हृदय में प्रवेश करता है और फिर आखो में ही आ खिलता है। वैसे वस्तु भी सुन्दर होती है किन्तु देखने वाली आँखो (की आत्मीयता) को पाकर ही सौन्दर्य सार्थक होता है। यही वस्तुगत सौन्दर्य ही कभी व्यक्ति की चेतना से रजित होकर सस्कार, उपादेयता और अभ्यास के

ाधार पर प्रेम के रूप में अपना विस्तार करता है। अत. प्रेम मे हुत बडा हाथ देखने वाली (हृदय की) आँखो और दीखने वाले रूप सौन्दर्य का ही होता है। तभी रूप प्रेम और यौवन की चेतना का पहला विषय होता है। सामान्यत: रूप की वाह्य रेखाओ पर ही पहले ध्यान जाता है।

प्रथम दृष्टि मे ही अपनी ओर खीच लेने वाला रूप गढवाल को वरदान में मिला है। प्रकृति के वीच कृत्रिम जीवन की सीमाओ से वाहर वहा सौन्दर्य घास की तरह उगता है, फूल की तरह खिलता है। गढवाल की नारी का सौन्दर्य जीवन की अकृत्रिमताओ के वीच निर्मित हुआ है। वहां सौन्दर्य न कोमलता का नाम है, न शक्ति हीनता का। दिन भर पहाड़ो से सघर्ष करते हुए, उसने जिस रूप सौन्दर्य को अर्जित किया है वह वन्य, अवध और अकृत्रिम है। वहा रूप उसके आत्म विश्वास, श्रम साधना और तेज को प्रकट करता है। रूप उसके लिए वह वस्तु नहीं है जो शृगार प्रसाधनो पर पाला जाता है और शरीर वह फूल नहीं, जिसे वर्षा-पानी से ओट करके रखा जाय। इसीलिए गढवाल की नारी सुन्दर है और पुरुष सहृदय।

गढवाल के प्रेम विषयक लोक गीत गढवाली नारी के रूप और पुरुष की सहृदयता का मनोरम चित्र उपस्थित करते हैं। नख-शिख वर्णन काव्य साहित्य की प्राचीन परम्परा है। उसी तरह, प्रकृति से उपमान लेकर भी रूप चित्रित हुआ मिलता है। गढवाली लोकगीतो मे भी रूप चित्रण में ऐसा हुआ है किन्तु इन सवसे भी ऊपर उनमे रूप की एक अरूप व्यजना प्रभाव डालने की अपूर्व क्षमता प्रकट करती है। उस रूप-राशि की कल्पना कीजिए जो 'न हाथ में ही ली जा सकती है, और न भूमि पर ही रखी जा सकती है।' (रत्नाकर ने ऐसी ही वात गोपियो के उस उपहार के विषय मे भी

कही है, जो उन्होने कृष्ण को उद्धव के पास भेजा था।) श्रद्धा, प्रेम और रूप की ऐसी व्यजना अन्यत्र दुर्लभ है। उसी तरह शिखर पर की तारिका तन्वगी दौंता की नाजुकपने की जो तुलना एक हल्के हवा के स्पर्श से भी हिलने वाली पालक की डाली से की गई है, वह कहीं अपना साम्य नहीं रखती। 'पयूली रौतेली' मे रूप की इन्द्रधनुषी रेखाए हैं। 'धार के ऊपर बूरास का फूल खिला मैंने समझा मेरी सरू (प्रेयसी) है'—जैसी उक्तियां रूप का एक स्पष्ट चित्र निर्मित करने मे असमर्थ होने पर भी व्यजना मे कितने प्रभावशाली हैं। 'लठ्याली कंकी दावू छ' गीत अपनी उपमाओ के कारण रूप की सशक्त अभिव्यक्ति लिए हुए है। इसके अतिरिक्त वाजूबन्दों मे शत शत असंबद्ध भाव अर्गो के खड चित्रो के रूप में बन्धकर आए हैं।

रूप जब तक अपनी स्थूलता में आंखों तक ही सीमित रहता है तब तक वह धु धला ही रहता है। वस्तुत रूप के भीतर भी एक रूप होता है। सुन्दर के भीतर का सुन्दर भी जब दीखने लगता है, अथवा रूप जब प्राणों में घुल जाता है तब वाह्य रेखाए मिटती सी लगती हैं और उसमें अनुभूति का रस और अभिव्यक्ति का माधुर्य ही विशेष रह जाता है। यद्यपि वाह्य रूप से मुक्ति तब भी सभव नहीं, किन्तु रूप को जब अतर की गहराइयो मे उतारकर देखा जाता है, तब ही प्रेम आकाश की सीमा को नाप पाता है। गढवाली लोक गीत हृदय के इस सौन्दर्य की सहज और सुन्दर अभिव्यक्ति करते हैं। आत्म निवेदन पीडा, रीझ, खीझ, उपालभ, सम्पंग आदि अनेक मनोभाव गढवाली प्रेम गीतो के प्रिय विषय रहे हैं। दो शरीर किन्तु उनके बीच धडकते प्राणो की एकसूत्रता उनमें विविध रूपों में व्यक्त हुई है। जो एक है वह दूसरा नहीं। फिर भी कौन किससे कम है? कौन अराधक है कौन अराध्य? तू मेरा भक्त है और मै तेरी जोगन' जैसी उक्तियो मे व्यक्त

पारस्पारिक आश्रयत्व गढ़वाली नारी के प्रेम की आवश्यक शर्त है। यही नहीं, रूप लिप्सा एक पर केन्द्रित होकर जब अपने भावों का आलंबन लाखों में एक को बना लेती है तो एकाधिकार की मांग करती है। इसीलिये तो नायक अपनी प्रेयसी को घने गांव से आने को मना करता है। इसी में उसे प्रेम बँटता दीखता है। दूसरी ओर प्रिय में अपने को विलय कर देने वाली प्रेमिका पुरुषों की भरी दुनियां में अपने 'मन के योग्य' एक को ही मानती है—आकाश असीम तारों से भरा होता है किंतु आलोक विधु का ही होता है।

किन्तु प्रेम मे हृदय की जिस विशालता की आवश्यकता होती है, उसकी उपेक्षा गढ़वाली लोकगीतों में नहीं मिलती। उनमें प्रेम की अभिव्यक्ति नित्य भरे बर्तन से पानी उडेलने के रूप में की गई है। स्वार्थ और वासना मात्र पर आधारित 'छाती से नीचे का प्रेम' उनमें हेय दृष्टि से देखा गया है।

फ्यूँली रौतेली

फ्यूँली रौतेली प्रसिद्ध चैती गीत है। रूप, यौवन तथा प्रणय की यह गाथा बहुत ही सरस है। लोक मे इस गीत के कई रूप. मिलते है, (जिनको हम अन्यत्र प्रकाशित कर चुके है)।

बिजीगैन बिजी देवतों का थान,
बिजी गैन बिजी कॉठों को ले सुरीज !
बिजी नी बिजी तैं सौंरी कोट मा—
नागू सवर्याल की फ्यूली स्या रौतेली !
तब बाजे शतमुख शंख राजों का भौन,
चचडैक उठे फ्यूली, भिभडैक बैठे !
हॉ, ओल्यो पोल्यो द्वार खोल्दी धाम लै गए,
जोडदी फ्यूली हात वाला सूरज तई !
तैं की मुखडी मा सुरीज, पीठी मा चदा,
सोना की गेंद जनी वा, पिरथी को मोल सी !
वीं का रग मा मैलो होन्दो धुमैलो सुरीज
वीं की मुखडी से बुरॉसी कर्दी रीस !
वीं की बाकी धौंपेली काला नाग-सी लंवी,
नाकड़ी तरतरो—खाडाधार सी पैंडी !
ओंठडी त देखेली, दालमी फूल सी वींकी,
दातुडी त होली, घूघूती जौंल जनी रये।
भरीं जवानी छै वींकी जनो पाणी कोसी ताल,
रूडी की-सी तीस छै वा, रूप की राणी।
जॉदी तब वा मोरू मोरू जागा तुम चेल्यों,
चलीन पार्णाक् तव हात लीक गागरी।
कुछ आग छई नौनी, कुछ छई पीछ,
बीच मा देखेन्दी फ्यूली, औछाड जनी।

डिस्वाल चलदी वा, विड़्वाल छ ढलदी,
हौंर सरासर् गैन, फ्यूली गुर गुर दा।
ह्लफ़दी ढलकदी गै पाणी का पास
हाती धोन्दी खुटी वा बैठी डाली नीम।
देखे वींन पाणी मा पड़्यूं छैल केको,
एक छैल मेरो होलो हैंको छैल केको ?
वौण फरके देखे वीन भूपू स्यो रौत
डाली मा बैठीक माला छौ गॅठ्यौणू।
फ्यूंली देखीक वो मुलमुल हैसण लैगे,
फूलमी शरमाणी फ्यूली, जोन सी खिले।
डाले वेन गला फ्यूली का फूल की माला,
वजाये मुरली अनमन, फ्यूली मोइत होए।
डाली मा न नीस उतरे भूपू स्यो रौत—
पकड़े वाउंली वींकी, वा भ्वॉ वैठाए।

तू मेरी जुकुड़ी छै फ्यूॅली चाद जनी टुकुड़ी
मेरी जिकुड़ी पर देख कुरेड़ी सी लौंखणी।
धारू डूबे दिन, गाड़ू पडे जब छाॅया,
घर आये फ्यूॅली तब ध्यान वीं आए।
बैठ्यूॅ छयो जागणू , घर वीं को स्वामी,
भरीं छई आखी कुरोध की आगन।
त्वे चीरदू आरौंन, सूली देन्दौं चढ़ाई,
सारा दिन कख रै, दिने माला या कैन ?
छेत्री को रोप चढ़े, दूध को-सी उमाल
मारी लात चोट वेन आए काल कनो।
फूटे कपाल वीं को, नाक डॉडी टूटी,
रूप को विणस है जिन्दड़ी को को ज्यान।
—जागे हे, पच देवो के देव-स्थान जागे,

उदय के द्वारों पर सूर्य भगवान जागे !
पर उस सौंरी कोट में नागू सवर्याल को,
जागी न फ्यूँली, सोई उस काल थी ।
बजा तब शतमुख शंख राज भवन में,
बडबडा उठी फ्यूँली, हडबडा बैठी क्षण में ।
खोले द्वार उसने, दिशाओ में थी धूप आती,
लगी जोडने हाथ बाल-रवि को आखें झुकाती !
उसके मुख में शशि, पीठ मे रवि की आभा थी,
सोने की गेंद थी वह, निधि पृथ्वी की, साथी !
उसके रग से धूमिल होता था दिनकर,
उसका मुख देख बुरासी ईर्ष्या से थी जाती भर !
उसकी बेणी बाँकी थी, लटकती-सी व्याली,
खडी नासिका थी पैनी, असि-धार-सी ढाली ।
दाड़िम फूल सी खिली थी अधरों की लाली,
दांतो के मिस घुघतियो की जोडी थी पाली !
भरी जवानी थी उसकी ताल का-सा पानी,
ग्रीष्म की सी प्यास थी वह, रूप की रानी !
गई तब द्वार-द्वार वह कहती 'जग री !'
चली सखियाँ पानी को हाथ लिए गगरी ।
कुछ आगे थी सखियां, कुछ थीं पीछे,
बीच में फ्यूँली थी, हरिणी-सी मन खींचे ।
ऊपर चलती थी वह, नीचे थी ढलती,
दबी छवि-भार से धीरे थी पैर बदलती ।
पहुँची वह पास जलाशय के हिलती-डुलती,
बैठ तरु छाया मे, तब हाथ-पांव थी धुलती ।
देखी जल में उसने एक और छाया,
एक मेरी है, पर दूसरा कौन यहाँ आया ?

उठाकर आखें उसने ऊपर जो ताका,
तरु पर बैठा भूपति माला गुंथता था।
देख फ्यूंली को वह धीरे यो मुस्काया,
खिली शशि-सी वह, फूल ज्यो शरमाया।
डाली गले मे जो उसने फ्यूंली के माला,
बजाई मुरली मधुर, मोहित हुई बाला।
उतरा तब तरु से वह भूपति रौत, भाई,
पकड कलाई उसने, वह पास बिठाई।
तू प्राणो की प्राण, फ्यूंली, तू चाद की टुकडी,
मेरे उर पर देख, यह प्रेम-घटा उमडी।
शिखरों पर डूबा दिन, पड़ी नदियो पर छाया,
लौटी फ्यूंली तब, ध्यान घर का आया।
बैठा था इन्तजार मे कब से उसका स्वामी,
अग्नि क्रोध की आखो में थी उसकी थामी।
तुझे चीरता हू आरों से चढाता हू सूली,
पहनाई किसने माला, रही कहा दिन भूली।
चढा रोप उसे, दूध के ऊबाल जैसा
मारी लात फ्यूंली पर, आया काल कैसा!
फूटा सिर फ्यूंली का, नाक उसकी टूटी
विनष्ट रूप हुआ यो, जिन्दगी छूटी।

मेरो मन लागो भेना

सिदुवा ग्रामीण कृपक था। खूब विशाल शरीर था। कोदो, सवाँ का मोटा-झोटा खाना खाता था, ऊन का मोटा कपडा पहनता था। वह भेडें चराता और ऊन कातता था। पर ऊपर से दीखने वाले इस सारल्य मे जीवन का सौन्दर्य छिपा था। उसकी साली सुरति उसे इन्हीं बातो के लिये प्यार करती थी। वह सौरयाल वंश

मे व्याही थी। लाछन, कष्ट और विरोध भी उसको सिदुवा से अलग न कर सके।

मेरो मन लागो भेना, तेरी बाकी रमोली !
तेरी जई फुल्याल पाग भेना, मन लागी !
लोहजंकी जामा तेरा भेना, मन लागी !
तेरी रिंगाली की छान्यो भेना, मन लागी !
तेरा कलमेना का खम्भू भेना, मन लागी !
तेरी रिंगदी डँड्याल्यो भेना, मन लागी !
तेरा फिरदा छतरू भेना, मन लागी !
तेरी नारी विजोरा भेना मन लागी !
तेरी ऊँ ढेबर्यों भेना मेरो मन लागी !
तेरा चौसिंग्या खाडू भेना मेरो मन लागी !
तेरा सेम मुखेम भेना, मेरो मन लागी !
तेरी गोंदुवा हिंसर भेना, मेरो मन लागी !
तेरी सेन्दुरी का फूलू भेना, मेरो मन लागी !
तेरा रैमासी का फूल भेना, मेरो मन लागी !
तेरी मोडुवा जुलफ्यों भेना, मेरो मन लागी !
तेरी रतन्याली आख्यों भेना, मेरो मन लागी !
तेरी नौ दाम थमाली भेना मेरो मन लागी !
सौ हाथ पैगुड़ी भेना, मेरो मन लागी !
तेरी ऊनि ताकुली भेना, मेरो मन लागी !
भलू फोंदा बगौंदे भेना, मेरो मन लागी !
मैं भी औंद् त्वैक भेना, मेरो मन लागी !
तेरी बाँकी रमोली भेना, मेरो मन लागी !
कख ली जाणी स्याली, तेरो मन लागी !
तु होली सौंर्यालू की बाद, तेरो मन लागी !
मैन मरी जाण भेना, मेरो मन लागी !

—तेरी बांकी रमोली पर जीजा, मेरा मन लगा है !
तेरी जई के फूलो से सजी पगडी पर मेरा मन लगा है !
तेरे लोहे के जामे पर भेना, मेरा मन लगा है !
तेरी रिंगाल की छानो पर जीजा, मेरा मन लगा है !
तेरे कलमेना के स्तम्भों पर जीजा, मेरा मन लगा है !
तेरी घूमती डड्यालियो पर जीजा, मेरा मन लगा है !
तेरे फिरते छत्रों पर जीजा, मेरा मन लगा है !
तेरी पत्नी विजोरा पर जीजा मेरा मन लगा है !
तेरी भेडो पर जीजा, मेरा मन लगा है !
तेरे चार सींग वाले भेडो पर जीजा, मेरा मन लगा है !
तेरे मेम मुखेम पर जीजा, मेरा मन लगा है !
तेरी हिसर की गोदकियो पर जीजा, मेरा मन लगा है !
तेरे सिन्वुरी फूलो पर जीजा, मेरा मन लगा है !
तेरे रायमासी के फूलों पर जीजा, मेरा मन लगा है !
तेरे घुघराले बालो पर जीजा, मेरा मन लगा है !
तेरी रतनारी आखो पर जीजा, मेरा मन लगा है !
तेरी नौ दाम तौल की दरान्ती पर जीजा, मेरा मन लगा है !
तेरे सौ हाथ लम्बे पटुके पर जीजा मेरा मन लगा है !
तेरी ऊन की तकली पर जीजा मेरा मन लगा है !
तू मेरे लिये भली चुटिया बनादे मेरा मन लगा है !
मै भी तेरे घर आती हूं, जीजा, मेरा मन लगा है !
तेरी बांकी रमोली पर जीजा, मेरा मन लगा है !
तेरा मन लगा है साली, पर मैं तुझे कहा ले जाऊ !
तू सौर्‌यालो की बहू है, फिर भी तेरा मन लगा है !
मैं मर जाऊं भी जीजा, मेरा मन लगा है !

सलारी मलारी

मलारी बल मलारी दुई छन बेणी,

जैसी सिसरी गोडी !
आँख तूड़ी, मलकाई नसी,
ज्यू लगाई जिकुड़ी तोड़ी,
सलारी वल मलारी दुई छन वैणी,
दुई झणी कूटदी धान,
हाथू रणकांदी खैर मुसल्टी,
आंखटड्या मारदी सान,
सलारी सोना को गेन्दुवा,
मलारी पृथा को मोल !
दुये सुण बैंठीणे,
हून्दे तराजू से तोल !

—सलारी और मलारी दोनो बहिने हैं,
जैसे शीशे की गोलियां हों !
आंख मटकाकर फिर मुख मोडती है,
जी लगाकर जी तोडती हैं !
सलारी और मलारी दोनो बहिनें हैं !
दोनों धान कूट रही हैं,
हाथों में खैर की मूसल छनकती है,
वे आंखों से सकेत करती हैं !
सलारी सोने की गेंद है,
और मलारी पृथ्वी का मोल !
दोनों समान सुन्दरियां हैं,
जैसे तराजू से तोली गई हों !

सूखे जियारो भस

भिंडा काटो बान मौरू, उजेडा बांधले दम !
तेरा बांठायाँ देखीक सूखो मेरो जियारो भस !

मसकारी बोल मसकारी, धार न चराणी गोरू,
मैं त जांदू वेडु नुएयांदो, त्वै माया नी लाणी औरू।
जियो जुकड़ी ग्वाल आंखटुड़ी, होंदी त्वै बकेल्या पार,
तू होन्दो मेरा जिया को प्यारो, केक सेउन्दो देउली धार।

—काफी बांज-मौरू काट लिया है, अब पुले बांधो !
तुझ सुन्दरी को देखकर मेरा जी सूखकर भस्म हो गया !
हे मेरी प्रेयसी, तू इस शिखर पर अब गोएं न चराना,
मैं परदेश जा रहा हूं, तू किसी और से प्रेम न करना !
अगर तुझ निगोड़े की छाती में प्राण, कपाल पर आंखें होतीं
तो तू मेरे प्राणो का प्यारा होता, इस तरह बाहर क्यों सोता !

वै देश जौला

श्रम और साधना की दुनिया से ऊबकर एक प्रेमिका अपने प्रिय से एक दूसरे ही देश में चलने का आग्रह करती है। इस तरह की कल्पनाएं जगत् में सर्वत्र व्याप्त हैं। भौतिक जगत् के घेरो से दूर पहाड़ो मे बसी किशोरी के इस लोक का भी दर्शन कीजिए।

वै देस जौला भंडारी झमको,
जै देस मेला मा खेती झमको।
वै देस जौला भंडारी झमको,
जै देस चुला खॉद्रा पाणी झमको,
जै देस नी होंदी गाणी झमको।
वै देस जौला भंडारी झमको,
जै देस कोदा को तेल झमको।
जै देस लैय्या की वाड़ी झमको।
वै देस जौला भडारी झमको,
जै देस विड्वा पदान झमको,
जै देस लय्या का वाडी झमको !

वैं देस जौला भंडारी झमको !
जै देस घुगती गितेर झमको,
जै देस कागा डुलेर झमको !

—चलो, उस देश चलें भडारी,
जिस देश में फर्श पर खेती होती हो !
चलो उस देश चलें भडारी,
जिस देश में चूल्हे के पास ही पानी बहता हो।
जिस देश में गणना न करनी पडती हो।
चलो, उस देश चलें भडारी,
जिस देश में मडुवे का तेल होता हो,
जिस देश में सरसो की बाडी हो,
चलो, उस देश चलें भडारी,
जिस देश में गौरैया प्रधान हो,
जिस देश में सैंटुला वाचक हो।
चलो, उस देश चलें भडारी,
जिस देश में फाख्ता गायिका हो,
जिस देस में कागा डोली ले जाने वाला हो !

सर बियाँरा वौ क्या धरे हो

घर के दूसरे लोगों से छिपाकर किसी प्रिय वस्तु को पति के लिये रख देना और फिर अवसर पाकर आंचल की ओट में उसे अपने आराध्य को समर्पित कर देना, गढ़वाल की पतिप्राणा गृहिणी के उस प्रेम का नाम है जिसके लिये वह जीवन जीती है। ननद इस बात को जानती है और जैसे कि यह कहने के लिये कि मै जानती हूँ कि तुमने क्या छिपाया है, वह पूछ पडती है—'यह क्या छिपा रहीं हो भाभी ! कुछ मुझे भी दे दो न !' भाभी कई प्रकार बातें बदलती हैं पर उसकी सहज चातुरी उसके आगे ही निकल जाती है।

सर वियॉरा क्या धरे वौ हे !
त्यरा दादू क रोटी धरे !
खंडकि तोड़िइ मैं दियाल वौ हे !
छी तु कति मंगण्या छै !
छी तु कति चूमण छै !
सर वियॉरा क्या धरे वौ हे !
तेरा दादूक बुखणा धरेन।
एक खौंकाल मैं दियाल वौं हे !
छी तू कति मंगण्या छै !
छी तू कति निदेऊ छै !
सर जटोली क्या धरे वौ हे !
तेरा दादून नर्यूल दे तो !
टुकड़ा तोड़िइ मैं दियाल वौ हे !

—'तूने आले पर क्या रखा है भाभी ?'
'तेरे भाई के लिये रोटी रखी है।'
'जरा एक टुकडी तोड कर मुझे दे दो !'
'छि तू कैसी मंगन है !'
'छिः तू कैसी कजूस है !'
'तूने आले पर क्या रखा है भाभी !'
'तेरे भाई के लिये चवेना रखा है।'
'एक मुट्ठी-भर मुझे भी दे दे भाभी !'
'छि तू कैसी मंगन है !'
'छि तू कैसी 'नदेऊ' (न देने वाली) है !
तूने जटा में क्या रखा है भाभी ?'
'तेरे भैय्या ने नारियल दिये थे।'
'एक टुकडा तोड कर मुझे दे दे भाभी !'

त्यरो दादू का जायूँ छ ?

ननद और भाभी का यह सवाद भाभी की आभषण प्रियता और प्रिय के अभाव के एक एक क्षण को वर्षो समझने वाली मनोस्थिति का चित्रण करता है।

नांदु, त्यरो दादू का जायू च ?
दादू सोनार की ओटी च !
ओटी बैठीक क्या करदो च ?
नाक बीसार गढ़ौंदू च,
नाक नथूली गढ़ौंदू च।
बौ की जिकुड़ी झुरौंदू च !
नादु त्यरो दादू का जायूँ च ?
दादू सोनार की ओटी च।
ओटी बैठीक क्या करदो च ?
टाटा हँसुली गढ़ौंदू च,
बौ की जिकुड़ी झुरौंदू च !

—'ननद, तेरे भैया कहाँ गये हैं ?'
'भैया सुनार की हट्टी गये हैं !'
'हट्टी में बैठे क्या कर रहे हैं ?'
'नाक की बेसर गढ़वाते हैं।
'(क्या कहा) नाक की नथ गढ़वाते हैं ?'
'(नहीं) भाभी का हृदय दुखाते हैं !'
'ननद, तेरे भैया कहा गये है ?'
'भैया सुनार की हट्टी गये हैं !'
'हट्टी में बैठे क्या कर रहे हैं ?'
'गले की हँसली गढ़वाते हैं !
भाभी के हृदय को दुखाते हैं !'

दौंता

मसुराली आँखी चलौंदी मेरी दौंता कथैं गै ?
दातुड़ी का छुवका वजौंदी जव गौं का उथैं गै !
दौंता की आँख्यों मा क्या जादू भरियूं छ,
कनी टमकौंदी आँखी नजरूकू मौका जथैं रै।
दौंता की सी कमरी जनी कुमाली-सी ठाण,
जैक जाली दौंता- वैन सट सूखी जाण।
दौंता की मुखडी मा जनी तस्वीर टॅगी छ,
दौंता की मायान सारी दुनियॉ रॅगी छ !
दौंता की-सी मुखडी तस्वीर मा नी छ,
सुकली दॉतडयू को भलो निक्साट वतौन्दे।
दौंता खड़ी हौंदी जनी धार मा-सी गैणी,
पालिगा की-सी डाली, हलै जॉदी वथौं लै।

—गई दौंता कहाँ मेरी, चलाती आँखें मदमाती,
गाव के उस पथ पर, घूघर हँसिया के बजाती।
दौंता की चितवन में, जाने क्या जादू भरा है,
मटकाती है आँखें लो, देखती जिधर जरा है ?
दौंता की कटि का है श्रृंगार कुमाली-सा,
जिसको व्याहेगी दौंता वह सूख मरेगा डाली-सा !
दौंता के मुख पर है जैसे तस्वीर टगी,
दौंता के प्रणय राग वे है मही सारी रगी !
दौंता की-सी छवि है नहीं तस्वीर में भी कहीं,
उज्ज्वल दाँतों की पाँतें हैं मुस्करा रहीं !
दौंता खड़ी शिखर पर तारिका-सी खिलती,
हवा के लगते ही पालक की डाली ज्यो हिलती !

आई जाणु धना

आई जाणू धना, डॉडू का सौडू मा ।
तू हवा से हलकी छई,
पाणी से पतली छई,
हिंसर की गोंदी छई,
फूलीं जनी फूल जई ।
आई जाणू धना, डॉडू का सौडू मा ।
तरतरी नाकुड़ी तेरी,
चरचरी खावुड़ी तेरी ।
गोल पाखुड़ी तेरी
तू हरी काखड़ी छई ।
आई जाणू धना डॉडू का सौडू मा ।

—धना, पर्वतीय वनों में आया कर !
तू हवा से भी हलकी है,
पानी से भी पतली है !
हिसर फल से भी मीठी है,
तू फूली हुई जई है !
धना, पर्वतीय वनो में आया कर !
तेरी सीधी पैनी नाक है,
तेरा बातूनी मुख है,
तेरी गोल बाहें हैं !
तू हरी ककडी है,
धना, पर्वतीय वनो में आया कर !

कैकी बौराण छ ?

किसी की वह वधू घास काटते हुए पति-वियोग की वेदना के गीत गा रही है । एक पथिक उस पथ से गुजरते हुए उस रूप छवि

को देखता है और उस पर पडे अभिशाप को देखकर तरस खाये बिना नहीं रहता।

हे लठ्याली दादू कैकी बौराण छ?
धुवाँ-सी धुपली, पाणी सी पतली,
केला-सी गलखी, नौण-सी गुंदकी,
ढिवा जसी जोत, कैकी बौराण छ?
इनी मेरी होंदी जिकुड़ी मा सेंदी।
बादल सी झड़ी, दूबला सी लड़ी,
भीमल सी सेटकी, लाबू सी-ठेलकी,
फ्यूली की-सी कली, कैकी बौराण छ?
नाक मा छ तोता, जीभ मा क्वील,
आँख्यों मा आग, गालू मा गुलाब।
हुडकी-सी कमर, कैकी बौराण छ?
इनी मेरी होंदी हथगुली मा सेन्दी।
चाँदू मा की चाँद, चाँदृ मा की चाँद।
चीणा जसी झम, पालिंगा सी डाली।
हिसर की-सी डाली कैकी बौरण छ?
घास काटद काटद वर्णा छ गितांग,
स्वामी गैन माल चिठी आई नी च
कनू निरदै होलू जु बिसरदू ईं तैं,
हे लठ्याली दादू कैकी बौराण छ?

—हे आली, तू किसकी बहू है?
धूवें से भी धुंधली, पानी से भी पतली,
केले की-सी गलगी, नवनीत की-सी गुदकी,
दीप की-सी ज्योति तू किसकी बहूरानी है?
ऐसी अगर मेरी होती तो हृदय पर सोती।

बादल की-सी झड़ी, दूर्वा की-सी लड़ी,
भीमल की-सी लकुटी, पत्तों की-सी ठेलकी,
फ्यूली की-सी कली, तू किसकी बहूरानी है ?
नाक में तोता है, जीभ में कोयल,
आँखों में आग है गालों में गुलाब,
हुड़की-सी कमर वाली तू किसकी बहूरानी है ?
ऐसी अगर मेरी होती तो हथेली में सोती।
सुन्दरियों में सुन्दर, शशियों में शशिवर,
वीणा की बाली सी, पालक की डाली सी,
हिसर की सी गुदकी तू किसकी बहूरानी है ?
घास काटते काटते गीत गाती जा रही है .
स्वामी परदेश गए, चिट्ठी नहीं आई।
कैसा निर्दय है वह, जो इसे भूलता है,
हे आली तू किसकी बहूरानी है ?

छुओं

पर्वत के शिखर पर घास काटने और गौएँ चराने आए हुए प्रिय और प्रेयसी की यह बातचीत काव्य की परिधि को छूती है।

देख त कनो यो छ, घास को सुंदर मैदान,
चोर्‌या कना ये बुराँसन ओंठ तेरा नाराण !
द्दाथेक रैंगे दिन धार मथेक वण छ सुनसान,
माया लाणी मन छ मेरो भ्वाँ बैठ तू पराण !
ह्यूं छ सेयूं सिल्ला पाखा वासणी छ हिलाँस,
मैं नी डाल्दू अपणा गला माया की अफ्वी फाँस !
तेरी मेरी माया जुग जुग सुण मेरी मैणा,
तेरी सौं मैं त्वै नी छोड़ौं राति जना गैणा !

कालैं ह्वोली नीसी, डॉडा ह्वोला ये सैणा,
तेरी माया तौं नी तोड् बैठी जा मेरी मैणा!
कूल ह्वोंदी आल माल सेरा पड दी भौणी,
तेरी मेरी माया तन्ने, सूण छुँयालून खोणी!
भात पकी तौली भरदी, फत्रतॉदो छ मॉड,
तेरी मेरी माया ह्वोली, रोंदी रली स्यी रॉड!

—देख न घास का कितना सुंदर मैदान पड़ा है!
इस बुरास के फूल ने, हाय राम, तेरे ओंठ कैसे चोर लिए?
धार पर छिपने को दिन हाथ भर गया है, वन सुनसान हो चला है
मेरे मन में तेरा प्रेम उमड़ा है, प्राण, तू जरा बैठ न!
नहीं, इस ठंडे पाखे पर हिम सोया है, हिलांस बोल रही है;
मैं अपने आप अपने गले में प्रेम की फांस नहीं डालती!
तेरा-मेरा प्रेम युग युग तक रहेगा, सुन मेरी मैना,
तेरी कसम, मैं तुझे न छोड़ूंगा, जैसे तारे रात को नहीं छोड़ते!
चीड़ के पेड़ चाहे छोटे हो जांय, पर्वत चाहे समतल हो जांय,
पर मैं तेरा प्रेम तब भी न तोड़ूंगा, बैठ न मेरी मैना!
धान के खेत में हल चलाते ही नहर उसमें समा जाती है,
ऐसे ही, सुनले, तेरा मेरा प्रेम चुगलखोर खो देंगे!
चावल पकाकर बर्तन भरता है, माड थिरकता ही है,
वैसे ही तेरा-मेरा तो प्रेम होगा, पर और रोती रहेंगी!

चौ

भाभी लोक-संबंध की सुन्दर कल्पना है। उसी तरह भाभी और देवर का प्रेम लोक साहित्य का परिपुष्ट विषय है। एक चुलबुलाहट एक मसखरापन, एक नाजुक दिली, और चलती-फिरती छेड़ छाड़ उसमें होती है, जिसमें वासना की तुष्टि से भिन्न रस, और भिन्न माधुर्य होता है! इसलिए टोपी को फूल

प्यारा होता है और भाभी को देवर। किस स्त्री को देवर की भौजाई (भाभी होना) नहीं सुहाती? किन्तु उस देवर के भाग्य को क्या कहें, जिसकी दृष्टि भाभी पर है, किन्तु भाभी उसकी तरफ देखती ही नहीं।

मेरी नजर बौ की नथूली,
बौ की नजर का च?
मेरी नजर बौ की आँख्यों,
बौ की नजर का च?
मालू पात रूमझूम,
निम्बू डाली खैंच,
मेरी नजर बौ की मुखड़ी,
बौ की नजर का च?
छम घूघर बाजला पौड़ी की उकाली मा,
भली बेसर साजली बौकी लवी नाकी मा!
नौनू होलो तेरो त मेरा रंग रूप मा,
नौनी होली तेरी त तेरा रंग रूप मा!

—मेरी नजर भाभी की नथ पर है,
पर भाभी की नजर न जाने कहाँ है?
मेरी नजर भाभी की आँखों पर है,
पर भाभी की नजर न जाने कहाँ है?
मालू का पेड झूम रहा है,
नीम्बू की डाली तर बनी है,
मेरी नजर तो भाभी के मुँह पर है,
पर भाभी की नजर न जाने कहा है?
पौडी की चढाई पर छमछम नूपुर बजते हैं,
भाभी के लबे नाक में बेसर भली सजती है!

भाभी का लड़का होगा तो मेरे रंग का होगा,
मगर लड़की होगी तो वह तेरे ही रंग-रूप की होगी।

बौ—२

और जब व्यंग्य का शिकार बनती है तो—

मारी बाखरी पूज्यो मसाण,
बौका हात भली रसाण।
सड़की फुड बाखरा भेरा,
व्याखनदों जाण बौ का डेरा।
बौ छ मेरी छोटी छौनक,
बौ का बौंड भली रौनक।
उवा वणू बल हिंसरी गोंदा,
छोटी बौ वड़् छ फांदा।
पल्यापटाला वासी त कवा,
बौ वणीगे बजारी हवा।
बौ च मेरी रिक पठोली,
बौ की धोती कैन लटोली?
छड़्या चौंल, भूज्या चिण्याल,
दिदा मसूरी घर निन्याल।

—(बकरी मारी, श्मशान की पूजा की,)
भाभी के पकाये भोजन पर बडा रस है।
(सड़क पर भेड़ बकरियां चलीं,)
शाम को भाभी के घर जाना है।
भाभी की मेरी छोटी गुडिया है,
भाभी के घर मे बड़ी रौनक है।
ऊपर के वनों मे हिसर के फल हैं,
भाभी छोटी है, पर उसकी चुटिया लंबी है।

दूसरे गाँव में कौवा बोला,
भाभी अब बाजारू हवा बन गई है !
भाभी क्या है कि जवान रोशनी है,
भाभी की धोती किसने टटोली ?
(चावल कूटें, चीणा भूनो,)
भैया मसूरी और घर में देखलो भाभी के बच्चे !

यखी रै जा

भाभी के संबंध से कुछ मिलता जुलता संबंध साली का होता है। बड़े भाई की पत्नी जिस प्रकार भाभी कहलाती है, उसी प्रकार पत्नी की छोटी बहन साली। पत्नी यौवन और जीवन की सम भागिनी होती है, किन्तु साली इन दोनों में कुछ न होकर भी हृदय की मीठी गुदगुदी की तरह होती है। उसमें एक ओर पत्नी की दिशा से एक प्रकार की आत्मीयता होती है, दूसरी ओर परकीया सा आकर्षण !

घाम उड़ीक धारू चलोग, रै जाणू भेना आज यखी,
सुघडी को छ माया लगीं या, नी जाणू भेना आज कखी !
सेणा को मुई खटिया घ्यूलो, गील्लो गुड़ाखू पेणाकू तैं,
पथलि रोटी खाणकू घ्यूलो, कंकरियालो घीऊ साग भी,
थालि भरीक भाती घ्यूलो, भगवान जसी भेंट हो !
त्वै सणी मेरा सौं छन भेना, नी जाणा भेना आज कखी !
त्वै सणी रखलु भेना मैं ईं तीमी जिकुड़ी बीच हो,
इनो त बतौ मैं सणी स्याली, कख ब्याहिलो तेरो वो ?
सची बोलर त्वै सुण भेना, ब्याहिलो जायूं भोटन्त हो !
भोटन्त जायूं ब्याहिलो स्याली, किय वख काम जी ?
काम किया वख होणा जो भेना, राड़ो गऊ का सौदा जी !

राड़ी गऊ का सौदा जायूँ छ, कब तैं आलो घर वो ?
अठवाड़ा को तैन खॉटा लगे तो, सारो वितीगे मैना यो !
भूला मन से सदापन मा, तौन तिवारी लाए खाट जी,
साईं को संजोग जुड़िरु ऐंगे व्याहिलो आइ लगि घर जी !
खाटी मा पड़्यां तैन देखीन, आंख्यों मा सरिगे लुोई जी !
पकडीक तैन खंम बांध्याल्या, मर्चूं को दिने धुवा जी !
पिंगली छाती तेरी छै भेना, नीला पड़्या अब घाव जी,
मेरो कटेलो नाक हे भेना, तेरो कटेलो शीश जी !

—धूप उडकर शिखरो पर चली गई है, जीजा कहीं और न जाओ !
सुघडी मे प्रेम हुआ है, जीजा, आज यहीं रहो !
सोने के लिए खटिया दूंगी, पीने के लिए उम्दा तम्बाकू,
पतली रोटियां खानेको दूंगी और साग के साथ रवेदार घी भी
थाली भरकर चावल दूंगी—जैसे भगवान को भेंट !
तुम्हे मेरी कसम है जीजा, आज कहीं न जाओ !
तुझे मैं इस प्यासे हृदय के बीच रखूंगी जीजा !
मुझे यह तो बता साली, तेरा वह पति कहां है ?
सच कहती हूँ जीजा, मेरा पति भोटान गया है।
भोटान गया है !— वहां उसका क्या काम है ?
काम क्या होना है जीजा, राडी-गौ के सौदे के लिए गया है।
अच्छा राडी गौ के सौदे के लिए गया है, घर कब आएगा ?
अठवाडे की अवधि थी, अब तो सारा महीना ही बीत गया
भोलेपन से, सादे मन से उन्होंने तिवारी में खाट लगाई,
साईं का कुछ ऐसा सयोग आया कि पति घर आ पहुँचा,
उसने उन्हें खाट मे सोया देखा, आंखो में खून दौड गया,
पकड कर उन्हें खभ पर बाध दिया, मिर्चो का धुवा लगाया।
जीजा तेरी पीली छाती थी , अब उस पर नीले घाव पड गए है,
मेरी तो नाक ही कटेगी, पर तेरा तो सिर कटेगा !

मैं दूर की रे

प्रस्तुत गीत जौनपुर क्षेत्र का है ।

नेड़ी लाया दोसती, मैं दूर की रे !
माभी वोटड़ी, माभी वोटडी रे !
तेरी मेरी बातुडी जागरथ खोटड़ी रे !
लिखि चिठीया, लिखि चिठीया रे !
मन तेरो कपटी, बात मिठीयाँ रे !
गढ़ी मूरती, गढ़ी मूरती रे !
रेशमी को ठाडू सज काडी कूरती रे !
नेडी लाया दोसती, मै दूर की रे !

—तुम कहीं नजदीक लगाओ दोस्ती, मं दूर की हूँ रे !
वनों के बीच में, वनो के बीच में,
तेरी मेरे साथ की गई बातें खोटी मालूम पडती हैं !
तूने चिट्ठी लिखी, चिट्ठी लिखी,
तेरा मन कपटी है, बातें मीठी है !
तू गढी हुई मूर्ति है, गढ़ी हुई मूर्ति है,
तुझ पर रेशमी रूमाल फबता है और काला कुर्ता !
ना तुम कहीं नजदीक लगाओ दोस्ती. मं दूर की हूँ ।

पिंगली मुखड़ी

पिगली च मुखडी घोटीक पेणी,
दिन चैंद पिंगलो या याद रख लेणी !
यो गीत सुणी ले !
दुनिया छ ढिलकी, प्यारी प्यारी राती,
बिछुडी न गैल्या मिले मुलाकाती !
यो गीत सुणी ले !
चन्दा की टुकड़ी बादलू का ओट,

जब छिपद चन्दा दिल लगदी चोट !

यो गीत सुणी ले !

—प्रेयसी का पीला मुखड़ा घोल-घोल कर पीलो,
याद रखलो, दिल भी तो पीला होना चाहिए !

यह गीत सुन लो !

दुनिया दिलकी है, प्यारी प्यारी रातें हैं,
आज मुलाकाती मिला है, साथी, बिछुड़ना नहीं।

यह गीत सुन लो !

चंदा की टुकडी जब बादलो की ओट मे आजाती है,
और तब जब चदा छिपता है तो दिल पर चोट लगती है !

यह गीत सुन लो !

तेरी बातुड़ी

प्रिया के स्वागत से भी अधिक महत्व प्रेमी की आँखों मे उसकी बातो का है, उसकी सूरत का है !

सलारी भरे तमाखू, गजू पिठोरी फेरो,
एबी ना भर्‌या सलारी तमाखू,
तीरे नो तेरो सैलूड़ो हेरो,
तेरो देऊं तमाखू बाटा अधबाटा मा खम,
तेरी लाईं बातुड़ी सबू साथ्यो मा लगावां !

—सलारी ने तम्बाकू भरा, गजू ने पीठ फेर दी !
सलारी अभी न भर तू तम्बाकू,
मुझे अपनी शोभा तो देखने दे !
तेरा पिलाया तम्बाकू तो आधे रास्ते में ही खत्म हो जायेगा,
पर तेरी की हुई बातें मे सब साथियो से जा कहूँगा।

तेरी आँखियें

तेरो खाम्रो आखियें मेरो काडेजो।
बाज मुनिया, बाज मुनिया,

मैं दूर की रे

प्रस्तुत गीत जौनपुर क्षेत्र का है।

नेड़ी लाया दोसती, मैं दूर की रे !
माफी बोटडी, माफी बोटड़ी रे।
तेरी मेरी वातुडी जागरय खोटड़ी रे।
लिखि चिठीया, लिखि चिठीया रे !
मन तेरो कपटी, बात मिठीयाँ रे।
गढ़ी मूरती, गढ़ी मूरती रे !
रेशमी को ठाडू सज काड़ी कूरती रे !
नेडी लाया दोसती, मैं दूर की रे।

—तुम कहीं नजदीक लगाओ दोस्ती, मैं दूर की हूँ रे !
बनों के बीच में, बनो के बीच में,
तेरी मेरे साथ की गई बातें खोटी मालूम पड़ती हैं।
तूने चिट्ठी लिखी, चिट्ठी लिखी,
तेरा मन कपटी है, बातें मीठी हैं !
तू गढी हुई मूर्ति है, गढी हुई मूर्ति है,
तुझ पर रेशमी रूमाल फबता है और काला कुर्ता !
ना तुम कहीं नजदीक लगाओ दोस्ती, मैं दूर की हूँ।

पिंगली मुखड़ी

पिगली च मुखडी घोटीक पेणी,
दिन चैंद पिंगलो या याद रख लेणी।
यो गीत सुणी ले।
दुनिया छ दिलकी, प्यारी प्यारी राती,
विछुडी न गैल्या मिले मुलाकाती।
यो गीत सुणी ले।
चन्दा की टुकर्डी बादलू का ओट,

जब छिपद चन्दा दिल लगदी चोट !

यो गीत सुणी ले !

—प्रेयसी का पीला मुखड़ा घोल-घोल कर पीलो,
याद रखलो, दिल भी तो पीला होना चाहिए !

यह गीत सुन लो !

दुनिया दिलकी है, प्यारी प्यारी रातें है,
आज मुलाकाती मिला है, साथी, बिछुडना नहीं।

यह गीत सुन लो !

चंदा की टुकड़ी जब बादलो की ओट मे आजाती है,
और तब जब चदा छिपता है तो दिल पर चोट लगती है !

यह गीत सुन लो !

तेरी बातुड़ी

प्रिया के स्वागत से भी अधिक महत्व प्रेमी की आँखों में उसकी बातो का है, उसकी सूरत का है।

सलारी भरे तमाखू, गजू पिठोरी फेरो,
एबी ना भर्या सलारी तमाखू,
तीरे नो तेरो सेलूड़ा हेरो,
तेरो देऊँ तमाखू बाटा अधबाटा मा खम,
तेरी लाईं बातुड़ी सबू साथ्यो मा लगावा !

—सलारी ने तम्बाकू भरा, गजू ने पीठ फेर दी !
सलारी अभी न भर तू तम्बाकू,
मुझे अपनी शोभा तो देखने दे !
तेरा पिलाया तम्बाकू तो आधे रास्ते मे ही खत्म हो जायेगा,
पर तेरी की हुई बातें मैं सब साथियो से जा कहूँगा।

तेरी आँखियें

तेरो खाम्रो आखियें मेरो काडेजो।
बाज मुनिया, बाज मुनिया,

तेरी मेरी नजीर जुड़िए, कपू भाम के रड़ी !
चादरा सुखिया दिल्ली गडला सिक्का,
से जा खाणा जु राये करम कपाड़ी लिखा !

—नदी नीचे की ओर वह रही है, तुम ऊपर को तैर रही हो,
बैठ जा न धन्या, मौरू-वृक्ष अब मुकुलित हो गया है !
एक गाडी में बनिया बैठा है और एक में तेली,
तेरी मेरी जवानी वैसे ही अकेली अकेली कट रही है,
एक भूमि भाग पर बकरी चर रही है, एक रूखा पड़ा है,
मैंने तुझे थाल भर कर अपना मांस दे दिया है तब भी कहती है भूखी हू।
ऐसी असह्य बात न कर, इससे नष्ट हो जाऊँगा,
हा कह दे न, मेरे हृदय पर मछली के से काटे चुभ रहे हैं।
पहाड़ पर की गाय, और रास्ते के नीचे का घास,
ऐसी ही तेरी मेरी नजर मिली है, तू फिसलना नहीं !
दिल्ली में सिक्के ढले, चादर पर कहीं सूखे,
वही मिलेगा जो कर्म ने कपाल पर लिख दिया है !

ऐ जाणू रुकमा

प्रेमी अपनी प्रेयसी को पत्नी के रूप में अपने गांव मलेथा में आने को अनुनय विनय कर रहा है। अपने गाव के ऐश्वर्य और सौंदर्य का वर्णन कर वह उसे ललचाना चाहता है। प्रसिद्ध भड़ माधोसिंह भडारी से इस गीत का संबंध बताया जाता है।

कनु छ भंडारी तेरो मलेथा ?
ऐ जाणू रुकमा मेरा मलेथा
मेरा मलेथा भैंस्यों का खरक !
मेरा मलेथा घाड्यों को धमणाट,
मेरा मलेथा बाखर्‌यों को तॉदो !
कैसो छ भडारी तेरो मलेथा ?

देखेण को भलो मेरो मलेथा,
लगदी कूल मेरा मलेथा।
लगदी कूल मेरा मले था।
गों मुड़े को सेरो मेरा मलेथा।
गों मथे को पंद्यारो मेरा मलेथा!
कैसो छ भंडारी तेरो भ्लेथा?
पालिगा की वाडी मेरा मलेथा,
लासण की क्यारी मेरा मलेथा।
वादू की लसक मेरा मलेथा।
वेखू की ठसक मेरा मलेथा।
ऐ जाण रुकमा, मेरा मलेथा।

—भंडारी, कैसा है तेरा मलेथा?
मेरे मलेथा आ जाओ रुकमा!
मेरे मलेथा मे भैंसो के खरक हैं!
मेरे मलेथा मे घटियो का घमणाहट है,
मेरे मलेथा मे बकरियों के झुन्ड हैं।
भडारी, कैसा है तेरा मलेथा?
देखने में भला है मेरा मलेथा,
चलती नहर है मेरे मलेथा में!
मेरे मलेथा में गाव के नीचे खेत है,
मेरे मलेथा में गाव के ऊपर पनघट है!
कैसा है भडारी, तेरा मलेथा?
मेरे मलेथा में लहसन की क्यारिया है,
मेरे मलेथा मे पालक की वाडियां है।
सुन्दरियों की लचक है मेरे मलेथा मे,
मेरे मलेथा मे पुरषों की शान है।
रुकमा, आ जाओ न मेरे मलेथा!

ल्हसक कमर

धन ! मेरी धनूलि धना, ल्हसक कमर !
मुठी भोर्या च्यूड़ा, धना ल्हसक कमर,
पथली कमर च तेरी ल्हसक कमर,
सर्प जसी न्यूडा, धना ल्हसक कमर !
पीना भोड्या कैंटा, धना ल्हसक कमर,
पटपटी फत्वै का बटण, ल्हसक कमर !
केन हैन ऐंठा, धना ल्हसक कमर,
झगोरा को रेट, धना ल्हसक कमर,
औंजल्योंन भुकि पेन्दू, ल्हसक कमर,
नी भरेंदो पेट, धना ल्हसक कमर !
पिंडालू का गोवा, धना ल्हसक कयर,
तेरी माथा पर, धना ल्हसक कमर,
लाल वेन्दी शोवा, धना ल्हसक कमर !

—तू धन्य है मेरी धन वाली धना, तेरी लचकती कमर है !
तेरी पतली कमर में—धना, तेरी लचकती कमर है—
पटुका सांप की तरह लिपटा है, धना तेरी लचकती कमर है !
तेरी कसी फतुही के बटन—धना, तेरी लचकती कमर है—
यौवन के उभार से ऐंठ गये हैं, धना तेरी लचकदार कमर है !
अजुलियों भर भर तेरे चुबन पीता हू,-धना तेरी लचकदार कमर है !
फिर भी पेट नहीं भरता, धना, तेरी लचकदार कमर है !.
तेरे माथे पर,—धना, तेरी लचकती कमर है—
लाल विंदिया शोभती है; धना, तेरी लचकती कमर है !

झोपती

छोपती

छोपती गीत अब गढ़वाल के रवाईं , जौनपुर क्षेत्र तक ही सीमित हैं। छोपती स्त्री पुरुषों का मडलका नृत्य होता है। इसमें पहले और तीसरे नर्तक के हाथ दूसरे की कमर के पीछे जुडे होते हैं और दूसरे तथा चौथे के तीसरे की कमर के पीछे। हाथो की वृत्ताकार श्रंखला के भीतर नर्तक कधे से कधा मिलाकर जुडे रहते हैं। इस स्थिति में पैरो की दो कदम आगे, एक कदम पीछे की गति के साथ जो नृत्य होता है उसके साथ गाए जाने वाले लोक गीत भी छोपती ही कहलाते हैं।

छोपती गीत मुख्यत: रूप और प्रणय माधुरी के गीत होते हैं। बारी बारी से स्त्री और पुरुषो का समूह एक दूसरे के प्रश्नो का उत्तर, प्रत्युत्तर देता जाता है। एक समूह की कही गई अतिम पक्ति को दूसरा समूह दुहरा कर अपनी बात कहता है। इसके अतिरिक्त हर एक छोपती की अपनी एक टेक होती है, जो हर वक्त दुहराई जाती है और जिसको किसी भी स्थिति में बदला नहीं जाता है।

१

घूयती को घोल, गोवरधन गिरधारी,
ख्वसी गिचीन, गोवरधन गिरधारी,
तू रौनक खोल, गोवरधन गिरधारी !
भैंसा की दौंली, गोवरधन गिरधारी,
रात का सुपिना देखी, गोवरधन गिरधारी
सिराण वौंली, गोवरधन गिरधारी !
रिंगलो मलेऊ, गोवरधन गिरधारी,
मैणा नी दिखेंदी, गोवरधन गिरधारी,
पिरथी पलेऊ, गोवरधन गिरधारी
सुतर का धागा, गोवरधन गिरधारी,
तुमारा विना, गोवरधन गिरधारी,
ज्यू नी रदो जागा, गोवरधन गिरधारी !
श्रागुडी को नील गोवरधन गिरधारी,
गंगा जी को पूल टूटे, गोवरधन गिरधारी,
तू न टूटी ढील, गोवरधन गिरधारी !
पाणी भरी कुई, गोवरधन गिरधारी,
तोता जी की याद श्रोंदी, गोवरधन गिरधारी,
नो थामेदी रुई गोवरधन गिरधारी !

—(फाख्ता का घोंसला गोवरघन गिरघारी,)
अपने सुमधुर अधरों से प्रिय, गोवरघन गिरघारी,
रौनक लादे, गोवरघन गिरघारी !
(भैंस की दौंली, गोवरघन गिरघारी,)
रात के सपने में मैंने देखा, गोवरघन गिरघारी,
तुम्हारी बांह मेरे सिरहाने थी, गोवरघन गिरघारी !
(मलेऊ मंडराये, गोवरघन गिरघारी,)

जब कभी मैना नहीं दीखती, गोबरधन गिरधारी,
तो मुझे पृथ्वी पर प्रलय होता लगता है, गोबरधन गिरधारी !
(सूत के तागे, गोबरधन गिरधारी,)
हृदय अपनी जगह पर नहीं रहता, गोबरधन गिरधारी !
(अगिया का नील, गोबरधन गिरधारी,)
चाहे गगा का पुल टूट जाये, गोबर्धन गिरधारी,
किन्तु मेरे दिल तू न टूटना, गोबरधन गिरधारी !
(कुएँ से पानी भरा, गोबरधन गिरधारी,)
जब मुझे तोता जी की याद आती है, गोबरधन गिरधारी,
तो मैं रुदन नहीं थाम सकती, गोबरधन गिरधारी !

२

पोसतू का छुमा, मेरी भग्यानी बौ !
आज की छोपती, मेरी भग्यानी बौ,
रै तुमारा जुमा, मेरी भग्यानी बौ !
अखोड़ू का ढोका, मेरी भग्यानी बौ,
रै तुमारा जुमा, मेरी भग्यानी बौ,
हम अजाण लोका, मेरी भग्यानी बौ !
बाजी त छुड़ीका, मेरी भग्यानी बौ,
इनू देण दुवा, मेरी भग्यानी बौ,
हिंग सा तुड़ीका, मेरी भग्यानी बौ !
काखड़ की सींगी, मेरी भग्यानी बौ,
रातू क सुपिना देखी, मेरी भग्यानी बौ,
दिन आंख्यों रींगी, मेरी भग्यानी बौ !
बान को हरील, मेरी भग्यानी बौ,
रिंगदो रिंगदो, मेरी भग्यानी बौ,
त्वै मुंग सरील, मेरी भग्यानी बौ !

वदल को रूम, मेरी भग्यानी वौ
यनु मन को कुरोध, मेरी भग्यानी वौ,
जनु रेल धूम, मेरा भग्यानी वौ !
वान की वराणी, मरी भग्यानी वौ,
हँसी रण खेली, मेरी भग्यानी वौ,
द्वि दिन पराणी, मेरी भग्यानी वौ !
पैरी त सुलार, मेरी भग्यानी वौ,
द्वी दिन की ज्वानी, मेरी भग्यानी वौ !
ज्वानी का उलार, मेरी भग्यानी वौ !
दाली ध्वैंती छ्वीलो, मेरी भग्यनी वौ,
तेरा वाना होइगे, मेरी भग्यानी वौ,
सरील को क्वीलो, मेरी भग्यानी वौ !
काटी गालो घास, मेरी भग्यानी वौ,
काम करी काज, मेरी भग्यानी वौ,
ज्यू तुमारा पास, मेरी भग्यानी वौ !
खग्वाडी का तोडा, मेरी भग्यानी वौ
हँसी रण खेली, मेरी भग्यानी वौ,
ज्वानी रैगे थोडा, मेरी भग्यानी वौ !
वुल-बुली कौंल, मेरी भग्यानी वौ,
हैंसण खेलण, मेरी भग्यानी वौ
त्वे जीवन-जौंल, मेरी भग्यानी वौ !
वासुरी दनकी, मेरी भग्यानी वौ,
भरपूर्‌या ज्वानी मेरी भग्यानी वौ,
नी होणी मन की, मेरी भग्यानी वौ !
गेऊं जौ का कीम, मेरी भग्यानी वौ,
तेरी मेरी माया, मेरी भग्यानी वौ,
जनु ठंट पाणी ताम, मरी भग्यानी वौ !

काली गौ को चौंर, मेरी भग्यानी बौ,
त्वै सरी गुलाबी फूल, मेरी भग्यानी बौ,
मैं सरीको भौंर, मेरी भग्यानी बौ !
तमाखू को गूल, मेरी भग्यानी बौ,
तू सुइण को धागो, मेरी भग्यानी बौ,
मु गुलाब को फूल, मेरी भग्यानी बौ !
ढोल की लाकुडी, मेरी भग्यानी बौ,
तू येनी देखेन्दी, मेरी भग्यानी बौ,
ह्वाण सी काखुड़ी, मेरी भग्यानी बौ !
आणी चूणी माणी, मेरी भग्यानी बौ,
एक मन बोद, मेरी भग्यानी बौ,
काखडी तोडी खाणी, मेरी भग्यानी बौ !
कोरी त कुनाली, मेरी भग्यानी बौ,
भौंज तू देखेन्दी, मेरी भग्यानी बौ,
डॉडू-सी मुनाली, मेरी भग्यानी बौ !
अतर की डबी, मेरी भग्यानी बौ,
आज की छोपती, मेरी भग्यानी बौ,
सौंती गाली कवी, मेरी भग्यानी बौ !
सौड़ पके बेर, मेरी भग्यानी बौ,
आज की छोपती, मेरी भग्यानी बौ !
बरसू को फेर, मेरी भग्यानी बौ !
—(पोस्त का फूल, मेरी सौभाग्यवती भाभी,)
आज की छोपती, मेरी सौभाग्यवती भाभी
तुम्हारे जिम्मे है, मेरी सौभाग्यवती भाभी !
(अखरोट के पत्ते, मेरी सौभाग्यवती भाभी,)
नहीं तुम्हारे ही जिम्मे मेरी सौभाग्यवती भाभी,
मैं तो जानती ही नहीं, मेरी सौभाग्यवती भाभी !

(छुडकी वजी, मेरी सौभाग्यवती भाभी,)
ऐसे दोहे कहो, मेरी सौभाग्यवती भाभी,
जैसे साग मे हींग का तुडका दिया हो, मेरी सौभाग्यवती भाभी !
(काकड के सींग, मेरी सौभाग्यवती भाभी,)
रात तुझे स्वप्न मे देखता हूँ, मेरी सौभाग्यवती भाभी,
और दिन को तू आंखों मे घूमती है, मेरी सौभाग्यवती भाभी,
(वाज के पेड की हरियाली, मेरी सौभाग्यवती भाभी,)
घूमता ही रहता है घूमता, मेरी सौभाग्यवती भाभी,
मेरा यह प्राण तेरे ही पास, मेरी सौभाग्यवती भाभी !
(बादल के रोयें, मेरी सौभाग्यवती भाभी,)
मेरे हृदय में एसी व्यथा है मेरी सौभाग्यवती भाभी,
जैसे रेल घूमती है, मेरी सौभाग्यवती भाभी !
(वाज का पानी, मेरी सौभाग्यवती भाभी,)
हँस-खेलकर रहो, मेरी सौभाग्यवती भाभी,
दो दिन की जिन्दगी है, मेरी सौभाग्यवती भाभी ।
(सलवार पहिना, मेरी सौभाग्यवती भाभी,)
जवानी दो दिन की है, मेरी सौभाग्यवती भाभी
और जवानी की उमंगे भी, मेरी सौभाग्यवती भाभी !
(दाल के छिलके धोये, मेरी सौभाग्यवती भाभी,)
तेरे लिये हो गया—मेरी सौभाग्यवती भाभी,
इन प्राणो का कोयला, मेरी सौभाग्यवती भाभी !
(घास काटा जायगा, मेरी सौभाग्यवती भाभी,)
काम-काज सब करता हूँ मेरी सौभाग्यवती भाभी,
पर जी तेरे ही पास है, मेरी सौभाग्यवती भाभी,
(कठुला के लोट, मेरी सौभाग्यवती भाभी,)
हस खेलकर रहो, मेरी सौभाग्यवती भाभी,
अब जवानी थोडी रह गई है, मेरी सौभाग्यवती भाभी !

(कोमल बाल मेरी सौभाग्यवती भाभी)
हँसना खेलना तब तक ही है, मेरी सौभाग्यवती भाभी,
जब तक तू जीवन में है, मेरी सौभाग्यवती भाभी !
(बकरी दौडी मेरी सौभाग्यवती भाभी)
भरपूर जवानी आ गईहै, मेरी सौभाग्यवती भाभी !
पर मन की होती ही नहीं, मेरी सौभाग्यवती भाभी !
(गेहू-जौ के कोस, मेरी सौभाग्यवती भाभी)
तेरा मेरा प्रेम ऐसा ही है, मेरी सौभाग्यवती भाभी,
जैसे प्यास में ठंडा पानी होता है, मेरी सौभाग्यवती भाभी !
(काली गाय का चवर,मेरी सौभाग्यवती भाभी)
तु गुलाब के फूल-सी है, मेरी सौभाग्यवती भाभी,
और भौंरा मुझ-सा ही है, मेरी सौभाग्यवती भाभी,
(तम्बाकू का गुल, मेरी सौभाग्यवती भाभी)

तू सुई का तागा है मेरी सौभाग्यवती भाभी,
और मैं गुलाब का फूल हू, मेरी सौभाग्यवती भाभी !
(ढोल बजाने की लकडी मेरी सौभाग्यवती भाभी)
तू ऐसी दीखती है मेरी सौभाग्यवती भाभी,
जैसे हवाण से लटकी ककडी हो, मेरी सौभाग्यवती भाभी !
(माणी बुनी गई, मेरी सौभाग्यवती भाभी)
मेरा मन कहता है, मेरी सौभाग्यवती भाभी,
कि तुझ ककडी को तोडकर खा जाऊँ, मेरी सौभाग्यवती भाभी !

(कुनाली कोरी गई मेरी सौभाग्यवती भाभी,)
भाभी तू ऐसी दीखती है, मेरी सौभाग्यवती भाभी,
जैसे पहाडो की मुनाली हो मेरी सौभाग्यवती भाभी !
(इत्र की डिबिया, मेरी सौभाग्यवती भाभी)
आज के गाए हुए छोपती मेरी सौभाग्यवती भाभी,

कभी स्मरण कर लेना, मेरी सौभाग्यवती भाभी !
(मैदानों में बेर पके, मेरी सौभाग्यवती भाभी)
आज 'छोपती' गा लीं, मेरी सौभाग्यवती भाभी,
अब वर्षों का फेर पड़ गया है, मेरी सौभाग्यवती भाभी !

३

प्रस्तुत छोपती की टेक 'दरसन की तरऊँ सी' बहुत ही मार्मिक है। वैसे इसका शाब्दिक अर्थ 'दर्शन की तरह' है जिसका भावार्थ यह है कि नायिका ईश्वर के दर्शन की भांति नायक को प्रिय है। इसके अतिरिक्त इस अर्थ में भी इसे लिया जा सकता है कि नायिका दर्शनीय है।

छोली जालो छाजो, दरसन की तरऊँ सी,
कैका पाम होलू, दरसन की तरऊँ सी,
हारमुनी बाजो, दरसन की तरऊँ सी,
घूगती को घोल, दरसन की तरऊँ सी,
रुयमी गलीन, दरसन की तरऊँ सी,
छोपती दि बोल, दरसन की तरऊँ सी।
साग लाइ कोया, दरसन की तरऊँ सी,
तुमारी जवान, दरसन की तरऊँ सी,
सोवन की छाया, दरसन की तरऊँ सी,
घूगता की घोली, दरसन की तरऊँ सी,
तुमारी गिचीन, दरसन की तरऊँ सी,
अशरफी तोली, दरसन की तरऊँ सी।
भूणी गाली माणी, दरसन की तरऊँ सी,
तेरा संग चल, दरसन की तरऊँ सी,
नारंगी को पाणी, दरसन की तरऊँ सी।
डाली भूणी घेर, दरसन की तरऊँ सी,

लाल रंग ललूड्यों कू, दरसन की तरऊँ सी,
गेऊं रंग तेरू, दरसन की तरऊँ सी।
बजाई त बेरी, दरसन की तरऊँ सी,
मैं खुद लगीं, दरसन की तरऊँ सी,
द्वी दात्यु की तेरी, दरसन की तरऊँ सी !
बन्दूकी को गज, दरसन की तरऊँ सी,
पथूली कमरी, दरसन की तरऊँ सी,
सदूरी को सज, दरसन की तरऊँ सी,
गोई गेलो गेरू, दरसन की तरऊँसी,
बोता नी फुरेणू, दरसन की तरऊँसी,
रंग जालो तेरो, दरसन की तरऊँसी !
पाडू पर छोया, दरसन की तरऊँ सी,
विराणी बातून, दरसन की तरऊँ सी,
पिरेम नि खोया, दरसन की तरऊँ सी।
रोटी की पापड़ी, दरसन की तरऊँ सी,
विराणा बग बात, दरसन की तरऊँ सी,
नो खोणी आपड़ी, दरसन की तरऊँ सी !
माछू को रगीत, दरसन की तरऊँ सी,
तू मेरी पियाॅरी, दरसन की तरऊँ सी,
मैं तेरो भगीत, दरसन की तरऊँ सी !
पकाई त खीर, दरसन की तरऊँ सी,
मेरी छाती पर, दरसन की तरऊँ सी,
तेरी तसवीर, दरसन की तरऊँ सी।

—(छांछ मथी गई, दर्शन की तरह)
किसके पास है—दर्शन की तरह,
हारमोनियम बाजा, दर्शन की तरह !

(फाख्ता का घोंसला, दर्शन की तरह)
अपने मधुर कंठ से, दर्शन की तरह,
छोपती बोल, दर्शन की तरह।
(कोया का माग लगाया, दर्शन की तरह)
तुम्हारी वाणी, दर्शन की तरह,
सुवर्णमयी हो, दर्शन की तरह !
(फाख्ते का घोंसला, दर्शन की तरह,)

तुम्हारा मुख, दर्शन की तरह,
अशर्फियों के तोल है, दर्शन की तरह !
(माणी बुनी गई, दर्शन की तरह,)
तेरे साहचर्य में, दर्शन की तरह,
नारंगी का-सा रस है, तू दर्शन की तरह है।
(हलिया का घेरा बुना, तू दर्शन की तरह है।)
तेरे गले की मूंग माला लाल है, तू दर्शन की तरह है
तेरा रंग गेंहुआ है तू दर्शन की तरह है।
भेरी बजाई तू दर्शनीय है)

मुझे 'सुख' लगी है—तू दर्शनीय है,
तेरे दो दांतो की, तू दर्शनीय है।
(बन्दूक का गज, तू दर्शनीय है)
पतली कमर पर, तू दर्शनीय है,
सदरी की शोभा है तू दर्शनीय है।
(गेन्द धोला जायेगा तू दर्शनीय है)

बहुत दुखी न हो तू दर्शनीय है,
नहीं तो तेरा रंग चला जायेगा, तू दर्शनीय है !
(पहाड़ों पर सोते, तू दर्शनीय है)
दूसरे की बातों में, तू दर्शनीय है,

प्रेम नहीं खोना चाहिये, तू दर्शनीय है।
रोटी की पापडी, तू दर्शनीय है
दूसरे की बातो पर, तू दर्शनीय है,
अपना नहीं खोना चाहिए, तू दर्शनीय है।
(मछली का रक्त, तू दर्शनीय है)
तू मेरी प्यारी है, तू दर्शनीय है,
और मैं तेरा भक्त, तू दर्शनीय है
(खीर पकाई, तू दर्शनीय है)
मेरे हृदय पर, तू दर्शनीय है,
तेरा ही चित्र अंकित है, तू दर्शनीय है !

४

लक्ष्मी भाभी वियोगिनी है। उसका 'तोता' (प्रिय) सात पहाड़ से भी दूर गया हुआ है। वह उसे आने को कह गया था पर आया नहीं। लक्ष्मी भाभी इस गीत में उसे घर बुलाती है और उसके साथ दूर शहर में जाकर रहने की कल्पना करती है। इसी भावावेश में उसे लगता है, जैसे उसके पास ही बैठा वह उसे साथ ले चलने की स्वीकृति दे रहा हो—'हां, हम साथ चलेंगे, होटलों की सैर करेंगे ! मैं साहब बना रहूंगा, तुम्हें साड़ी पहनकर फिरती रहोगी।'

पाणी भरी कुई, प्यारी लगसमी बौ।
तोता जी की याद औंदी, प्यारी लगसमी बौ,
नी थमेन्दी रोई, प्यारी लगसमी बौ !
कनूड़ का सोर, प्यारी लगसमी बौ
मेरो सुवा जायू, प्यारी लगसमी बौ !
सात डॉडू पोर, प्यारी लगसमी बौ,
काटी जालो कौणू, प्यारी लगसमी बौ।
तोता जी को बोल्यूं प्यारी लगसमी बौ,

मैन घर ग्रौंण, प्यारी लगम्मी चौं।
ग्चकू की लाद, प्यारी लगम्मी चौं,
नी भूली मैं कृक्षौरी, प्यारी लगम्मी चौं।
रखी याली याद प्यारी लगम्मी चौं,
काटी जालो नग, प्यारी लगम्मी चौं।
मैं भलुमाण गुवा, प्यारी लगम्मी चौं,
तुमारो त मग, प्यारी लगम्मी चौं।
काटी जालु कौण, प्यारी लगम्मी चौं,
तू नी घर ग्रौलू सुवा, प्यारी लगम्मी चौं,
मैन मरी जौंण, प्यारी लगम्मी चौं।
हलदा को रंग, प्यारी लगम्मी चौं,
जब तू घर ग्रौलू, प्यारी लगम्मी चौं।
मैं वि चललू मग, प्यारी लगम्मी चौं
काटूंो त क्लिौंना प्यारी लगम्मी चौं।
जब तुम मग चल प्यारी लगम्मी चौं
हात त मिलौंला, प्यारी लगम्मी चौं।
पाणी तडानड, प्यारी लगम्मी चौं,
हात मिलौंला छोरी प्यारी लगम्मी चौं।
चलला दडादड, प्यारी लगम्मी चौं
नामी गालो को, प्यारी लगम्मी चौं,
चलला दडादड प्यारी लगम्मी चौं,
मिटाई त खौं, प्यारी लगम्मी चौं!
काटी त कठन प्यारी लगम्मी चौं,
मिटाई खौंला प्यारी लगम्मी चौं,
होटल चैटल प्यारी लगम्मी चौं।
काटी जाली काडी प्यारी लगम्मी चौं,
गुटे जब टोप पैर, प्यारी लगम्मी चौं
पैरली त माटी, प्यारी लगम्मी चौं।

—(कुए से पानी भरा, प्यारी लक्ष्मी भाभी,)
तोता की याद आती है, प्यारी लक्ष्मी भाभी,
रुदन नहीं रोका जाता, प्यारी लक्ष्मी भाभी !
(कानो के स्वर, प्यारी लक्ष्मी भाभी)
मेरा सुवा गया है, प्यारी लक्ष्मी भाभी,
सात पहाडो से दूर, प्यारी लक्ष्मी भाभी !
(कगूनी काटी गई, प्यारी लक्ष्मी भाभी)
तोता का कहा हुआ है, प्यारी लक्ष्मी भाभी,
मैं घर आऊगा, प्यारी लक्ष्मी भाभी !
(खच्चरो की लाद, प्यारी लक्ष्मी भाभी)
मुझे न भूल , प्यारी लक्ष्मी भाभी,
याद रख लेना, प्यारी लक्ष्मी भाभी !
नाखून काटे जायेंगे, प्यारी लक्ष्मी भाभी,
मैं अच्छा मानता हूँ प्रिय, प्यारी लक्ष्मी भाभी,
तुम्हारा साहचर्य, प्यारी लक्ष्मी भाभी !
(कगूनी काटी गई, प्यारी लक्ष्मी भाभी)
अगर प्रिय, तुम घर न लौटोगे, प्यारी लक्ष्मी भाभी,
तो मै मर जाऊँगी, प्यारी लक्ष्मी भाभी !
(हल्दी का रग प्यारी लक्ष्मी भाभी),
जब प्रिय, तुम घर आओगे, प्यारी लक्ष्मी भाभी,
तो मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगी, प्यारी लक्ष्मी भाभी !
(काटे किलौला, प्यारी लक्ष्मी भाभी)
जब मैं तुम्हारे साथ रहूँगी, प्यारी लक्ष्मी भाभी,
तो हम हाथ मिल ाकर चलेंगे, प्यारी लक्ष्मी भाभी !
(पानी का गिरना, प्यारी लक्ष्मी भाभी)
हाथ मिलाकर, प्यारी लक्ष्मी भाभी,
अकडते हुए चलेंगे, प्यारी लक्ष्मी भाभी !
और मिठाई खायेंगे, प्यारी लक्ष्मी भाभी !
(कटहल काटा, प्यारी लक्ष्मी भाभी,)
मिठाई खायेंगे, प्यारी लक्ष्मी भाभी,
और होटल में बैठेंगे प्यारी लक्ष्मी भाभी !
(बिच्छू काटा जायेगा, प्यारी लक्ष्मी भाभी,)
मैं टोप पहनूंगा, प्यारी लक्ष्मी भाभी,
और तू साडी पहनेगी, प्यारी लक्ष्मी भाभी !

लामण

लामण प्रेम-गीत है। वैसे बाजूबन्द, छोपती आदि गीतो का विषय भी प्रेम ही है। किन्तु बाजूबन्द और छोपती मे सवाद होते हैं। इनमें भी बाजूबन्द वन में गाये जाते है और छोपती और लामण विशेष अवसरो पर नृत्य के साथ। शैली, छद और लय की दृष्टि से भी वे अलग अलग ठहरते है। लामण का विषय यद्यपि छोपती और बाजूबन्द की भाति प्रेम ही है किन्तु उसकी शैली, छन्द और लय सर्वथा अपनी है, जिसके कारण लोक बुद्धि ने उसका एक पृथक अस्तित्व माना है।

प्रेयसी के लिये अपना सर्वस्व अर्पित करने की भावना के साथ लामणो में प्रेम का एक ऊचा आदर्श व्यक्त हुआ है। वहा प्रेम प्राप्ति का नाम नहीं और न प्रेम का आलम्बन ही वासना की विभूति है। उनमें प्रेम के स्थायित्व की बहुत कामना की गई है और प्रेमियों के पारस्परिक सबधो को प्रकृति के माध्यम से व्यक्त किया गया है। ऐसी उक्तिया बहुत रसात्मक हैं और उनमें काव्य की सहज गरिमा लक्षित होती है।

लामण गीतो मे तुक मिलाने के लिये निरर्थक पक्ति नहीं जोडी गई है, वरन् दोनों पक्तिया कविता की भांति सार्थक और तुकात हैं।

१

लामण लान्दगिय किति लामण जाणे,
टोडी के भितर किती फीमेर दाणे।
लाऊँ लामण, लाऊँ देवोरा थुंगा,
कोई शुण टीर, कोई शुण बाडवा तुगा।
लाऊँ लामण जाण कौगाई जाला,
तीन्द शुण मुर्ख, मुर्ख इन्दिया रवदिया खाला।
हँसी खेलव गश जुगर बल,
आग जाण अगरिया, राम जाण, किण हल।
बीम् बाज बाशुडी चीजी शब्दी जाण,
बावडा जियरा शाडद् रूंगीदार दी जानरा चाण।

—हे लामण गीत गाने वाली, तू कितने लामण जानती है?
यह तो बता पोस्त के फूल के भीतर कितने दाने होते हैं?
मैं भी लामण गीत गाता हूँ,
कोई खिड़की पर बैठा सुनता है कोई बरामदे में।
मैं कैसे लामण गीत गाता हूँ—
चतुर उन्हें खुशी से सुनते हैं, पर मूर्ख क्रोध करते हैं।
हँसो, खेलो, भली बातें करो,
पहले की बात अग्रजन्मा ही जानते हैं और भविष्य की बात राम ही।
मैं ऐसी बंसी बजाता हूँ जिसे त्रिलोक जानता है,
मैं अपने बावले दिल को (बंसी बजाकर, गीत गाकर)
रंगी थान पर (श्रोताओं का मेला लगाकर) तुष्ट करता हूँ।

२

नेरे नि लामण नमन्न गक नपडू,
मेरा शुण लामण गारा पैं नजज नन।

दुशगो औडी नैगो गौडिया घाटा,
फूल मिले शोनेरो नाणी मिली आदड़ी वाटा।
मेरो तेरो नाणिये लोखड़ी औरेर सात,
खूबी देऊँ ओठड़ू उबू कर नाकर नाथ!
तेरो मेरो नाणिये लोखड़ी औरेर सात,
डोक नाइ पाण थामि थ दैण हात।
फूल फूललो बाडि नोकली छूटलो वाश,
तेरी नाईं याद आरद जावल ज्यूदो शाश!
तेरो मेरो नाणिये बाऊबी लगिगो लाड़,
चोड़ी नाइ देण खरी जीण धोणरू खाड़!

—तेरा एक भी लामण मेरी समझ में नहीं आया,
मेरे सुनाये हुए लामण तो सब के हृदयों को छूते हैं!
सूर्य अस्त होकर घाटे पर चला गया है,
तब कहीं सुनहरा फूल मिला, आधी बाट में यह सुन्दरी मिली!
सुन्दरी, तेरा मेरा बचपन का साथ है,
तेरे अधरों को चूमता हूँ जरा नाक को नथ उठा!
सुन्दरी, तेरा मेरा बचपन का साथ है,
मेरे दाहिने हाथ को, जो तुझे पकडे है, नीचे न गिरा!
बाड़ी में फूल खिला, नोकली में उसकी गंध छूट गई,
तेरी याद भी ऐसे ही आती है, जीते ही सांसें जा रही हैं!
सुन्दरी, तेरी मेरी घनिष्ट प्रीति है,
मुझे छोडना नहीं, जैसे धनुष टूटी डोरी को छोड देता है!

२

दार लुमटू लामण्यो लान्दो आऊँ,
गर शुण वुशड़ी दामटो जेणी दौंवली ताऊँ।
तेरी ताईंये दाईं साइया आव,
डॉडू पाच वुमड़ा एक ना खापदी पाव।

पाची पाडला खाऊँ विऊँदा पाऊँ,
ताऊँ विलर माठ केवी किल नजरा लाऊँ !

—घार के ऊपर मैं लामण गा लेती,
पर घर वालें सुनेगी तो (तेरी पत्नी) मुझे बछड़े की तरह मारेगी !
तेरे लिये तो मैं दौड़ा दौड़ा आया हूँ,
शिखर पर बमूर फल पके थे मैं उन्हें भी न खा पाया !
पके फल खाता हूँ, कच्चे फेंक देता हूँ,
हृदय तेरी ओर है, नजर किधर लगाऊँ ?

४

लामण लान्दारिय मेरी मादारी ओटी,
कोई बोल काचण, कोई बोल मासेरी मोटी।
चाँदीरे दागुले मजरिण उठे,
मोटे जिवरे लाऊ के छेडे मानादेरे मौत खोटे !
चादी रे दामरु उमणे नाँदणे दागे,
ओर मिल मातिय मोंगी मिल आपणे भागे !
रावे मादुवे ऐवे किन्दिये जाऊँ,
डेर दे आमग रोटी आऊँ पालरी खाऊँ।

—लामण गाने वाली, तू सीधी सादी है,
कोई तुझे सुवर्णा कहता है, कोई कहता है तू मास की मोटी है।
चांद के कड़े मंजाकर रखो,
तेरे जेवर मोटे हैं, पर मन तेरा खोटा है।
चांदी के दाने तागे में पिरोये जाते हैं,
और सब कुछ कमाया जा सकता है पर प्रेमी भाग्य से ही मिलता है।
रात हो गई है, अब कहां जाऊँ ?
तू आज मुझे डेरा दे, आश्रय दे, रोटी मैं अपने पल्ले से खाऊँगा।

एको चाविये वामिये गौणे चाणे,
सेजियो वाठण शोवो रो चौदुर ठाणे।
तेरी ताइये कानेर एर नेरी,
पेड़ राइलो गड़ देण वार फेरी।
वोगू हु च वोगिय खाल्ड माड गु वार,
माडि मूडिय खाल्ड एवे पाउ जदुर वार।
शिमली वेडीर दूदने मेटु पीन्द,
देव रूठो कुलेर मेरो तेरो न डोवण दींद।
आऊँ तू डेइ भागिये उट सॉडि रे देश
आऊँ वाजल ढोलकी तू नाचली चौडूर भप।
तू वोले थी नाणिये, टीठ ठोडेर जाण,
बात गौण थी वो गण सूना नेजुवा लाण।
आऊँ वी शौगिया ठिंडी ठिडेर गोइ थी जाई,
वात वोगिया सुनाणो नेजुवा लाई।
दूदू जौलके खावटी गई वई,
वरदू गोई उतरी, न काम की रई।

—"एक चमक-दमक गहनो में होती है,
(दूसरा) सुन्दरी शैय्या पर पक्षी की भांति सहज सुन्दर भाती है।
तेरे लिये मैंने क्या न किया, क्या न सुना ?
अपने कुटुम्बियो को रुष्ट किया, गाव के बाहर फेरी दी।"
"यौवन था, उसे भी तन मसल कर लूट लिया
खाल मांडली गई है, अब अतिम वार क्या होगा ?
भेड छींकती है, मेमना दूध पीता है,
कुल देव रूठा जिसने तेरा मेरा सयोग न होने दिया।"
"चलो, तू और मे मडी की ओर भाग चलें !

मैं ढोलकी बजाऊँगा, तू पक्षी के वेष में नाचा करना।
"अरी तू तो कहती थी, मैं अमीर के घर ब्याहूँगी,
वहाँ भात खाने को होगा, सोने के गहने पहनने को।"
"हाँ, मैं मेरे सगो, अमीर के घर गई थी,
मैंने भात खाया है, गहने पहने हैं।
अब स्तन ढीले पड़ गये हैं, मुख फीका पड़ गया,
जवानी उतर गई, मैं काम की न रही।"

६

मुजिय इजिया तेरी थी लाड को दियो,
तैं पें बिसरी मुडके पाथरो जियो।

शाणो भादरो पाड कुरेडिय भेट,
रुदि आ मेत, कदिय आंग्यि येंट।

शावणे ग्वाडुवा मरने उनें वारा,
मंगी मिल जियरो दुग लागी गेणी तारा।

काली चादुली लुमा लुमी लेश,
कालरो मनं चावगो फिर्त देश।

शेयर छपके रिस चागरो दाडो,
कुमुस्त् शावरो भोग्ने छोड काम दी आडो।

—हे माँ, तूने मुझे लाड प्यार से पाला था,
तूने भी मुझे बिसार दिया, तू भी पत्थर जी की है!
सावन-भादों में बादल छा गये हैं,

मैं कब मायके जाऊँगी, कब आखें तुम्हें भेंट पायेंगी ?

ऊन के भार से भेंडा सावन में मर रहा है,

अगर प्रिय, तुम मिल जाओ तो दिन में ही मुझे

आकाश में तारे दीखने लगेंगे !

काली बदली के रोयें बिखरे हैं,

या तो मैं मर जाऊँगी, या बावली बनकर देश-देश फिरूँगी।

शेर उछाल मारता है, रीछ दहाडता है,

बुरी ससुराल में मैं काम पर हड्डियां तोडती हूँ !

७

मेरी गुठरी कागर्णा लाई, न बीलियो काई,
घर झूठी तेरी जुवतरी देली चुगली खाई।
चीटी चादरा नान्दै पाणिय भीजी,
दुर मोरे लाक नेडै ना बोलदो दीजी।
भिड बोई काकड़ी क्निारिय बौई कोदू,
शोभक फुलटू नींद खो अपड़ा जोदू।
लावी शौंगाटी औरची काचरी कागी,
का देख शौंगिय आ थै लोकू मॉगी।
काली ऑडकी रींग जाली माखी—
तू वाज वाठीया तेरा डौ काजली ऑखी।

—मेरे लिये अगूठी और कघी लाना, पर किसी से कहना नहीं !

घर में तेरी स्त्री है वह झूठी चुगली खायेगी !

सफेद बेदाग चादर भी पानी मे भीग जाती है
मुझसे दूर रहो, नजदीक से न बातें करो !
बीच में फफटी बोई, किनारो पर मडुवा बोया,
शोभा फूल की ही होती है, नींद अपने पति के लिये ही सोनी चाहिये
मेरी नथ की जजीर खो गई है और काच की कघी,
तू मुझे क्या देखता है सखी, मैं किसी और की मगेतर हूँ !
जिस तरह काली मक्खी घूमती है,
वैसे ही सुन्दरी, तेरी कजरारी आखें घूमा करती हैं !

१०

सामान्य प्रश्न और उनके उत्तरो की परिपाटी लामणो मे कभी दिखाई देती है। प्रस्तुत लामण इसी कोटि का है।

कस राजा री बादर,
का राजार पौन पाणी ?
कस राजार गुडक,
कस राजार बिजली राणी ?
बर्ड राजार बादरा,
पौन राजार पाणी
बिर्ड राजार गुडक,
मेघ राजार बिजली राणी !
चम्रू की बाट की टोपरी,
चम्रू को जड़िया सान !

कसू को रॉगुला धणोटी ?
कसू को फ्यूली भाग ?
कसू की वली वाठीण,
मेरी वाट की डोखरी,
मेरो स जड़िया साग !
राम की स रागुला धणोटी,
राम की भली वाठीण,
राम की कर्मट्यों भाग !

—वायु किस राजा का है ?
पानी किसका है ?
मेघ किस राजा का है,
और बिजली रानी किस राजा की है ?
वायु वायुराज का है,
पानी पवनराज का है !
मेघ भीमराज के हैं
और बिजली रानी मेघ की है।
रास्ते पर का खेत किसका है ?
जड़ों वाली सब्जी किसकी है ?
रगीली घनुही किसकी है,
और किसका फ्यूँली जैसा भाग है ?
भली सुन्दरी किसकी है ?
किसके कर्मों में भाग्य है ?

रास्ते का खेत मेरा है,
जड़ों वाली सब्जी भी मेरी ही है !
रंगीली धनुही राम की है,
राम की ही भली मुन्दरी है,
और राम के ही कर्मों में भाग्य लिखा है !

११

मेरा अ तेरो अ शौगिय लोड़ड़ी, औरैर साता,
पारो वाजिय द्रोपिन्द वीच पड देऽन्त सापा !
सांपेर नाईं मुंडकी पोरू देऽले काटी,
आऊँ चाईंय दीट्टू, त चाईंथी दियेरी वाटी।
दियेरा वाटिय पोरू वि मरेलि जली,
तू चाईंथ चोरा, अऊँ चाईंथी कुजेरी कली।
कुजेरी कली पोरू ची मरेको रिजी,
आऊँ चाईंथी सूरीज तू चाइथी गेणा विजी।
विजी नाईं अफूणी नाईं वरेगे पाणी,
तू चाईंथी गुडको आऊँ चाइथि विजली राणी।
तू ऑन्दी नाणिये इन्दु राजा री परी,
जिन्दै वसै मनैइ तिन्दै का मरनू डरी।
फूल फूल वाली लुंगड़ी छुटेलो वाग.
तेरी नाड़गे आरद आऊ अलभिऊंद शाग।
॥ जी चियाली वुशी लागी थी तेरी,

उज कीय   धुवारों ऑखी लागी पोणाली मेरी ।
कालिये   चूलिये   वुइयें   फालिये   फूटी,
ऑड गोई   दुरेरि गिण   मोह् वेदना छूटी ।

—'प्रिय, तेरा मेरा साहचर्य बाल्यकाल से है,
किन्तु बीच में साप की तरह यह नदी पड़ी हुई है !'
मैं सांप के सिर को काट कर फेंक दूंगा,
मै तेरा दीप हू और तू मेरी बाती है !"
'नहीं, दीप जलाकर प्राण हरता है,
प्रिय, तू भौंरा बनना, मै कूजे की कली बन जाऊंगी ।'
'पर कूजें की कली तो झड़कर मर जाती है,
मै सूर्य बनूगा और तू निर्मल आकाश बन जाना !"
'पर निर्मल आकाश भी तो कभी बरसता नहीं,
तू गरजता बादल बनना, मै बिजली रानी बनू गी '
'अच्छा तो तू इन्द्र की अप्सरा बनना,
जहां मन बसता है, वहा मौत से डरना ही क्या ?
फूल फूलकर झरता है उसकी वास छूट जाती है,
जीवन हारकर भी सहारे पर जीता है !
अरे कल (मित्रों में) तेरी चर्चा हुई थी,
धुवा लगने के बहाने मेरी आखों से आसू बह चले !
तू न जाने कहाँ काले बालो को गू थती रहेगी,
मेरे लिये आना जाना दूर है, केवल वेदना बची है ।

वासंती

१

आई रितुड़ी रे सुणमुणया रे
आई गयो बालो वसन्त रे।
फूलण लैगी गाड़ू की फ्योंलडी,
फूली जालू डांडू बुरांस।
बुरांस दादू तू बड़ू उतौलू रे,
औरू फूलू तू फूलण नी देन्दो।
जाति को खास ठकरौल,
बास तेरी कै देवन हरे।

—सुहावनी रितु आई है,
वसन्त रूपी बालक आ गया है!
नदी के तटों की फ्यूँली फूलने लगी है,
शिखरों पर अब बुरांस फूलने लगेगा!
बुरांस भैय्या, तू बड़ा उतावला है,
और फूलों को तू अपने से पहले फूलने ही नहीं देता!
तू जाति का खास ठाकुर है,
तेरी सुगन्ध किस देवता ने हर ली है?

२

रीतणिये आई रे स्वागणिये,
अयालो न पयालो वसन्त।
नेवल फूले ऐनल कैनल,
पर्वत मौले डांडाड़े बुरांस!

—अरी सुहागिन नई ऋतु आई है,
आकाश पाताल में वसन्त छाया है।
उपत्यकाओं में ऐनल, कैनल फले हैं
और पर्वतों पर बुरांस मुकुलित हुए हैं!

या फूलडी भेना ले गांठी,
भेना दिउनू दीदो रोपाली।
तती किछाड़ी कोह्ना दिन्यू
मेरी जिकुडी कोइना दिन्यू।
—शुभदा फूलों की रखवाली करती है,
और अमला घराट का भाड़ा वसूल करती है।
आज कोई फूल न तोडना,
नहीं तो मेरी मा की गाली खाओगे!
इन फूलों को मै मा के लिये गूंथूंगी,
पर मा को दूंगी तो पिता बुरा मानेंगे!
इन फूलों को मै भाई के लिये गूंथूंगी
पर भाई को दूंगी तो भाभी रूठेगी!
इन फूलो को जीजा के लिये गूंथूंगी,
पर जीजा को दूंगी तो दीदी रूठेगी!
तब किसी को भी न दूंगी,
हे मेरे प्राणों, तुम्हे किसी को न दूंगा!

५

बुरास के फूल को धरती की ही नहीं, वरन शिव के शीश की शोभा के रूप में भी पूज्य माना गया है।

वालिया बुरास, कोण-सिरा सोबो?
वालिया बुरासा ले शिव सिरा सोबी,
वालिया बुरासा जागा जागा सोबी.
वालिया बुरॉसा लेऊ सिर!

—बाल बुरांस किसके सिर पर शोभता है?
बाल बुरांस शिवके सिर पर शोभता है!
बाल बुरास जगह जगह शोभता है,
बाल बुरास को सिर पर रक्खो!

६

अलकनन्दा के तट पर हृदय को मोह लेने वाले किसी फूल के प्रति इस गीत में एक रहस्यमय कौतूहल व्यक्त हुआ है। प्रतीक रूप

में यह फूल यौवन के पथ पर पग धरती किसी सुन्दरी का बोधक भी माना जा सकता है।

घौली का किनारा यो फूल के को ?
अनमन भाँति को यो फूल के को ?
सैरो बोण मोयेणे या फूल के को ?
सैरी धौली धुमैली यो फूल के का ?
सेतु होन्दु सिरताज, यो फूल के को ?
देवतों मरोख्या यो फूल के को ?
टोपी मा धर लेणु यो फूल के को ?
धौली का किनारा यो फूल के को ?

—अलकनन्दा के तट पर यह कौनसा फूल है ?
विलक्षण रूप का यह कौनसा फूल है ?
सारा वन मोहित हुआ है, यह कौनसा फूल है ?
इसकी आभा से अलकनन्दा भी धुंधली होगई है, यह फूल कौन-सा है ?
सफेद फूल सिरताज का होता है, यह फूल कौन-सा है ?
टोपी पर रखलू, यह फूल कौन-सा है ?
अलकनन्दा के तट पर यह फूल कौन-सा है ?

७

फ्यूँली-फूल और कफू-पक्षी दोनों वसन्त के सहचर हैं।

और फूल फूलला बार मास,
फ्यूँली फूलली चैत मास,
और पंछी बासला बार मास,
कफू चड़ बासलो चैत मास।

—और फूल तो बारहों मास फूलते हैं,
किन्तु फ्यूँली मधुमास में ही फूलती है।
और पक्षी बारहों मास बोलते हैं
किन्तु कफू मधुमास में ही बोलता है।

वासंती

वसत जीवन में उठते यौवन और दाम्पत्य सुख का प्रतीक है। इसीलिये लोग जीवन में, वन और आगन में उसका आमत्रण करते हैं। गढ़वाल के कई भागो में वसत पंचमी के अवसर पर जो की हरियाली बाटते हुए वसन्त के स्वागत और शोभा के गीत घर-घर में गाये जाते हैं। चैत के महीने भर कुमारी कन्यायें फ्यूली के फूल चुनकर सुबह सुबह घर की देहलियो पर डाल जाती हैं और वसत के स्वागत में वासती गीत गाती हैं।

इन गीतो में मुख्यत वृक्ष और लताओ के मुकुलित होने तथा फूलो के खिलने का ही वर्णन होता है। पक्षियो में कफू और फूलो में फ्यूली को लोक हृदय में बडी आत्मीयता मिली है। कफू वसन्त की प्रथम ध्वनि लेकर आता है और फ्यूली वसन्त के प्रारम्भ में ही खिल उठती है। फ्यूंली में तापस सौंदर्य की गरिमा और अपने सौंदर्य को अपने में ही संचित कर भोगने की एकातिक साधना है। पहली ही दृष्टि में उसे देखकर हृदय में एक टीस-सी उठती है। बात है भी ऐसी ही—उसके पिछले जीवन के साथ एक राजकुमारी के करुण अवसान की कथा सबद्ध है, जिसे औजी लोग इस अवसर पर गाते हैं।

फ्यूली से भी कुछ दूसरे ही रूप और रग का फूल है बुरास। अल्हड यौवन की तरह खिला यह लाल फूल जीवन में मादकता, नवीन रक्त और प्रणय-माधुरी का प्रतीक है। इसमें कोई गध नहीं होती, किन्तु रायमासी के फूल की तरह यह शिव के सिर की शोभा बनता है।

गढवाली लोक जीवन मे फूलो के प्रति एक ममतामयी आत्मीयता व्यक्त हुई है। वहा का मानव उन्हें अपने ही कुटुम्बियों के रूप में देखने का अभ्यासी है। उनके प्रति एक कोमल ममता ही वासती, झुमैलो और खुदेड गीतों में अनेक रूपों में व्यक्त हुई है। खुदेड गीतो में तो प्रकृति मनुष्य के सुख दुख की सहयोगिनी बनकर आई है। प्रकृति का वह रूप धन्य है, जिसे मानव की इतनी आत्मीयता प्राप्त हुई है।

वाजूबंद

बाजूबन्द

बाजूबन्द गढ़वाल का प्रसिद्ध लोक-गीत है। वह दो स्त्री-पुरुषों का गीतात्मक प्रेम-सवाद है। इसके मधुर स्वरो को सुनने के लिये हिमवन्त के वनों मे आकर देखिये

क्षितिज पर एक ऊँची सी पहाड़ी चोटी है। उसके बाद उसके अनुचरों की तरह एक के बाद दूसरी कई गिरी मालायें खड़ी है। उन पर बाज, बुरास, चीड और देवदारु के वन मोती-सा स्वेत जल बरसाने वाले निर्झरो के साथ हस रहे है। इन्हीं वन-पर्वतों की उपत्यकाओ में गढ़वाल के गांव बसे है, जो नित्य अपलक हिमालय की शोभा देखा करते हैं। इन्हीं गावो से सुबह-सुबह उठकर चरवाहों की टोली अपनी भेड़ बकरिया लेकर नदी की रम्य घाटी पर चढ़ रही हैं। देवदारु के नीले पर्वत पर पहले दो चार बकरियां शरद काल के सचरण शील शिशु बादलो की तरह दिखाई देती है। फिर धीरे धीरे समूह का समूह पर्वत के ऊपर बिखर जाता है। चरवाहा सुन्दर और सुडोल है। अपनी भेडों की काली सफेद ऊन की वह मिरजई पहने है। कमर पर ऊन की ही रस्सी लपेटे हुए है। हाथ पर एक बडी सी दरांती रखी हुई है। पहाड़ पर चढ़ते ही उसके भोले सतेज मुख मडल पर हँसी उभर आती है और उसके अधर गीतों की धारा में खुल पडते हैं।

गीत के वे स्वर किसी देवदारु के नीचे, जल में चरण डुबोकर, शिला पर बैठी मृदु हसती किशोरी के कानों को छूकर उसके हृदय को प्रस्फुटित कर देते हैं। सोई धरती में सहसा नवयौवन की एक माया-सी फैल जाती है। स्तब्ध घाटियां गूंजने लगती हैं। किशोरी के प्राण उत्कठित हो उठते हैं और चरण चचल। वह उठकर देखती है। एक हल्की-सी आभा उसके मुख पर दौड पडती है— वह अपने स्वर्ग को पहचानती है। सभवत: वह 'वही' है। एक

दिन किशोरी की बकरियो में बाघआ पडा था तो वही दूर से उसकी चिल्लाहट सुनकर दौड आया था। तब उसने इस सुन्दर चरवाहे लड़के को देखा था और उसने भी एक किशोरी को देखा था। उसने उसे अपना नाम बताया था और कहा था—'मै रोज इसी पहाडी पर बकरिया चराने आती हूँ।' उन शब्दो में न जाने क्या मोहिनी थी। 'मेरी बकरियाँ भी पहाड की दूसरी तलहटी में चर रही हैं!' चरवाहा कहे बिना न रहा। तब से वे यों ही बकरी चराते प्रायः मिल जाया करते हैं।

हाँ तो, चरवाहा गाता आ रहा है। किशोरी अभी मौन है। वह वृक्षो की अवनत शाखाओ से कोमल किशलय तोडकर बिछा रही है चरवाहा अपने उल्लास को गीतो में बिखेरता जा रहा है। अपनी प्रिया की माधुरी, रूप-छवि और उसके प्रति अपनी प्रेमानुभूति को व्यक्त किये बिना युवक प्रेमी कब अघाता है? उसका चेहरा, उसकी आँखें, उसके अधर, कटि और अलकावली—सब उसके संगीत स्वरो की अभिव्यक्ति बनकर पर्वत पर गूंज उठती हैं। उसका थाली-सा छनछनाता गला गिरि के सून उर को मुखरित कर देता है। आखिर स्वर निकट निकटतर आता जाता है और फिर उस वृक्ष के ही नीचे जहा कोई कोमल किशलय बिछाकर पहले से बैठी थी, वह खडा हो जाता है।

'आ गई तू नन्दा?'

'हा, मेरी बकरिया बहुत पहले आ गई थीं। मैं तुम्हारे गीत सुनती रही!'

'मेरे गीत! नहीं, अब तो तुम्हारे गीत सुनने की चाह होती है! सुनाओगी न!'

'ना, पहले तुम बासुरी सुनाओ न!'

'तो तुम नाचोगी?'

नन्दा शरमा जाती है। उसके गोरे गालो पर ऊषा की लाली थिरक उठती है।

'ओ बुरासो! आओ तुम्हें सजाऊँगा!'

किशोरी उसकी जानुओ पर सिर थमा लेती है। चरवाहा वन-कुसुमो से उसकी अलकावली सजाने लगता है।

फूली जाली जई,
बांज काट दारी कैई गों की छुई ?
बावला की कूची,
कै भो गौं की होलो, तू क्या कदू पूछो ?
गिंजाला की गाज,
सरकारी जंगल, केक काटदी बाँज।
थकुला की थरी,
रजा कौंकू मरे जौन वंद जंगल करो।
घमकालू वण,
तू इनी जाणदी छुई त केक आई वण ?
सरकाई त सुई,
सैसरियों को मरे भैंसी धरीन दुई।
झगूली को मैल,
मैं इनू पूछदू छोरी, कुछ तेरी गैल।
साग लाई कोई,
ईश्वर भगवान कुई एकल्वास्यां न होई।
पाणी का कुला,
मैं काटलू बॉज गैल्या, तू बांधली पुला।
डाला पकी बेर,
तू लॉंदी वार पार, मैं होन्दी अबेर।
गेऊँ जौ की सार,
तरुणी जवानी तेरी प्यारी, द्वि दिन की वार।
स्यूंदी लायो फोंदा,
विदेशी भँवर कभी अपणा नी होन्दा।
रोटी को नरम,
उँठ कर हाती दाईं देऊ दिऊलो धरम।

चाँदी का बटण,
माया लाणी सौंगी, निमौणी छ कठण।
थोडी लाया छमा,
डाली त्वै न लाण परोसणी मेरा जुमा।
पोसतू की फीम,
दुपट्टा बेमान होन्दू, टोपी लांदू नीम।
बाखरा को मासू,
जु रचलू धोका, तैकी ज्वानी को तमासू!
हीरू पीस्यो जीरू,
इनी लाणी वाली माया जु पाणी ना छोरू!
लंग लंगी साईं,
तेरी मेरी माया छोरी, जुग जुग ताईं।
गौड़ी नौं छ बीजा,
गंगा जी को ठण्डू पाणी छमोट्यौन पी जा।
हर्‌यॉ जौ का कीस,
ज्यूं ज्यूं ठण्डू पाणी, त्यूं त्यूं जादा तीस।
पितल की संगल,
कित लौण मुंगमाला कित रण खंकल।
घोडी को कमर,
त्वै जौला भाग होंदा, ह्वै जांदू अमर!
डाला घूरे गोणी,
विधाता की लेख गैल्या, अटल होणी!
गौड़ी को मखन,
दही होंदू वॉटी खांदू, भागी को क्या कन?
सग्वाडी को साग,
मनखी जौली माया, पुरुष जौला भाग।

—(जई फूली,)
बांज काटने वाली लड़की, तू किस गांव की है ?
(बावला घास की कूची,)
मै किसी भी गांव की होऊँ, तू पूछकर क्या करता है ?
(मूसल का घेरा,)
सरकारी जंगल है, तू यहां बांज क्यों काटती है ?
(थाली का तला,)
राजा का बुरा हुआ, जिन्होंने जंगल बन्द किया।
(घन चलाया,)
तुझे ऐसा मालूम था तो तू वन में आई ही क्यो ?
(सुई सरकाई,)
ससुराल वालों का मुर्दा मरा कि दो भैंस रखी हैं।
(बगुले का मैल,)
मैं ऐसा पूछती हूँ साथी, कि तेरे साथ कौन है ?
(साग बनाया,)
हे ईश्वर, घर में कोई अकेला न हो !
(पानी के कुल्ले,)
साथी, मै बांज काटूंगा और तू पुले बांधना !
(पेड़ पर बेर पकी,)
तू इधर उधर की बातें करता है, मुझे तो देर हो रही है !
(गेहूँ के खेत,)
हे प्रिया तेरी तरुणावस्था है, दो दिन की बहार है !
(वेणी पर चुटिया लगाई,)
विदेशी भौंरे कभी अपने नहीं होते !
(नर्म रोटी,)
अपना दाहिना हाथ इधर करो, मैं तुम्हे वचन देता हूँ।

(चांदी के बटन,)

प्रेम करना सरल है, निभाना कठिन !

(कौड़ी का गुच्छा,)

प्रेम का वृक्ष तू रोप दे, उसे पालना मेरे जिम्मे रहा।

(पोस्तों की अफीम,)

दुपट्टा बेइमान होता है, टोपी नियम से रहती है।

(बकरी का मांस,)

जो धोखा रचेगा, उसकी तरुणाई का तमाशा हो !

(हरा जीरा पीसा,)।

ऐसा प्रेम करना है जिसमें पानी न छिरके !

(लम्बी लम्बी टहनिया,)

तेरा मेरा प्रेम युग युग तक रहेगा !

(गाय का नाम बीजा है,)

गगा जी का ठंडा पानी अजुली भर भर पी ले !

(हरे जौ के कोस,)

ज्यों ज्यों ठडा पानी पिओ, त्यों त्यों ज्यादा प्यास बढ़ती है।

(पीतल की सांकल,)

या तो मुंगमाला को ब्याह लाना है या लम्पट बना रहना है।

(घोड़ी का कमर,)

तुझे पाना भाग्य में होता तो मैं अमर हो जाती !

(पेड़ पर लगूर घूरा,)

विधाता का लेख, साथी, अटल होकर रहेगा।

(गाय का मक्खन,)

दही होता तो बांट कर खाते पर भाग्य का क्या करना ?

(साग की बाड़ी की सब्जी,)

मनुष्य को अपने ही अनुकूल भाग्य और प्रेम मिलता है !

सुलपा की साज,
द्वि बचून बाजू लै दे, मुलकी रवाज
चरी जालो भेरो,
द्वि वचून बाजू लै दे, नौं लि जौलू ते
घमकायो घण,
कति सुनकार लगदो तेरो यो वण ?
कन्दूड़ बुजनी,
कै जगा विराजली बिना दिवा रोशनी ।
ताम्बला की ताच,
मेरी मायादार होली झट देली वाच ।
छोप की कुखड़ी,
तब कुरेड़ी औंदी झट दिखऊ मुखडी ।
राड़ी गौं को चौंर,
कु होलू इनू तू गैल्या, परदेशी भौंर
रेशमी रुमैल,
माया को भूको छऊँ, जगलू की सैल
छटकायो रुआ,
कैलासी भौंर मैं त्वै लै वैठयो भुआँ ।
आग की अगेठी,
तेरी मायान छुमा, जिकुडी लपेटी ।
माछी मारे ऐन,
ऐना मती पाणी रखी जाणी कैन ?
गाडू रिग्या औत,
तराजून तोल छोरी, कैकी माया भौत ।
हु गर्‍यो त बाग,

गौं पर की माया, सग्वाड़ी-सी साग ।
हलाया त आम,
जनी कनी माया चुली तैलो ताप्यो घाम ।
सुपा लाई पीठी,
जनी कनी माया चुली किनगोड़ मीठी ।
घट मारे मूसी,
जनी कनी माया चुली औला दाणी चूसी ।
तौला की तमाई,
जनी कनी माया चुली बभूत रमाई ।
साग लायो कोई,
राम जी न सीता जपे, मैं जपलू तोई ।
गाड़ू रिंग्या औत,
तू ही मेरी ज्यू ज्यान, तू ही मेरी मौत ।
कुरता की वौंली,
तू गला की घंडुली, सुतरा की मैं दौंलो ।
राड़ी गौ को चौंर,
तू गुलावी फूल होलू, मैं केसरी भौंर ।
रुमैल की भावी,
मैं तेरो खजानो छुमा, तू मेरी चाबी ।
सुपा लाई दैण,
तू होली मेरी जमीन, मैं तेरी गैण ।
तिलू की खली,
मैं होलू तेरो वादल, तू मेरी विजली ।
डाली को छैल,
तू वणली मेरो ऐना, मैं तेरो रुमैल ।
अखोड़ का डोका,
निरमोही होन्दा सुवा परदेसी लोका ।

सेरा गाडे कूल,
रस रस चूसी लेन्दा, छोड़ी देन्दा फूल।।
पितल को छोका,
पैले लांदा सतभौ पीछ देन्दा धोका ।
चिलमी को कीच,
सच माण छुमा, ईश्वर छ हमारा बीच ।
धणिया को बीज,
नी त खाणू शक-सुबा मैं तुमारी चीज ।
सेन्दूर की डबी,
ग्यान ध्यान भूली जौलू त्वै न भूलू कबी ।
तितर की पॉख,
तेरी माया पार्जा राखो, जिकुड़ी का काख ।
साम्फ को बगत,
मरीक मिटलो भामा, माया को दगध ।
बांज की सौंली,
गला की घंडुली छई, नो तोड़ी दौंली ।
गुलाब की कली,
देश्वाली करार रखी पाणी सा न चली ।
—(सुल्फे की चिलम,)
दो वचन बाजू गीत सुनावे, यह हमारा मुल्की रिवाज है
(भेड चरती रही,)
बाजू गीत के वो बोल सुना दे, तेरा नाम लेकर जाऊंगा
(घन चलाया,)
हा मेरा यह वन कितना सूना सूना लगता है ?

।वन। दीप की ज्योति-सी तू कहा विराज रही है ?
(ताचला के पत्ते,)

हे मेरी मायाविनी, झट आवाज क्यों नहीं देती ?
(अंडे देने वाली मुर्गी,)
तब कुहरा छाने वाला है, जल्दी ही मुख की छवि दिखा!
(राढ़ी गाय का चँवर)
कौन है तू साथी, परदेशी भौंरा ?
(रेशमी रूमाल,)
मैं हूँ—तुम्हारे प्रेम का भूखा, तुम्हारे बनों में घूम रहा हूँ ।
(दर्मा फैलाया,)
मैं कैलाशी भौंरा हूँ, तेरे लिये यहा आ बैठा हूँ ।
(आग की अंगीठी,)
तेरे प्रेम नें प्रेयसि, हृदय को लपेट लिया है ।
(मछली मारकर आये,)
दर्पण के ऊपर पानी की बूंद को कौन टिका सका है ।
(नदी के भांवर घूमें,)
तराजू से तोल कर देखलो, किसका प्रेम अधिक है ?
(शेर गरजा,)
तेरा मेरा प्रेम ऐसा ही है जैसी अपनी ही बाड़ी की सब्जी ।
(आम हिलाये,)
उँह जैसे-कैसे प्रेम से तो धूप सेकना अच्छा ।
(सूप की पीठ,)
जैसे-कैसे प्रेम से तो फिनगोड ज्यादा मीठी ।
(पनचक्की पर चूहा मारा,)
जैसे-कैसे प्रेम से तो विभूति रमाना अच्छा ।
(तांबे का बर्तन,)
जैसे कैसे प्रेम से तो आँवला चूसना अच्छा ।
(कोई की सब्जी बनाई,)
राम ने सीता को जपा, मैं तुझे जपूंगा ।

(नदी में भांवर पड़े)

तू ही मेरी जीवन-प्राण है और तू ही मेरी मौत !

(कुर्ते का आस्तीन,)

तू गले की घटी है, और मैं उससे लगी रस्सी !

(राडी गाय का चवर,)

तू गुलाब का फूल है, मैं केसर प्रिय भौंरा !

(रूमाल के किनारे)

मैं तेरा खजाना हू प्यारी, और तू मेरी ताली !

(सूप पर सरसों रखी,)

तू मेरी धरा है और मैं तेरा तारा !

(तिल की खली,)

मैं तेरा बादल हूं और तू मेरी बिजली !

(वृक्ष की छाया,)

तू मेरा दर्पण है और मैं तेरा रूमाल !

(अखरोट का वृष)

परदेशी लोग निर्मोही होते हैं प्रिय !

(खेत में नहर निकाली)

रस-रस तो चूस लेते हैं और नीरस फूल को छोड देते हैं।

(पीतल का हुक्का,)

पहले सर-माथे पर रखते हैं, पीछे धोका दे जाते हैं।

(चिलम का कीचड,)

प्रेयसी, तू सच मान, ईश्वर हमारे बीच है !

(धनिया का बीज,)

तू सदेह न कर, मैं तेरी ही वस्तु हूँ।

(सिन्दूर की डिबिया,)

ज्ञान ध्यान तो शायद भूल भी जाऊँ पर तुझे नहीं भूल सकता।

(तीतर के पंख)

तेरे प्रेम को हृदय कक्ष में संजोकर रखूंगा।

(सध्या की वेला,)

प्रेम का जो दाग हृदय पर पड गया है, वह मर कर ही मिटेगा।

(बाज के पत्ते,)

तू गले की घटी है, उस रस्सी को न काटना जिस पर घंटी लटकी है।

(गुलाब की कली,)

अपने देश की मर्यादा निभा, पानी की तरह न समा जाना।

३

घूघती की घोली,
मैं इनु पूछदो गेल्या, केइ गौं की होली ?
नथूली को मूंगो,
तू कखन आई छोरा छौंदाड़-सी ढूंगो।
कागज़ की स्याई,
मैं दूरून आयूं मैणा, तेरो नाम ध्याई।
दाथुडी की नौक,
सुपिना मा देखे प्यारी, तेरी दांतु चौक।
सांदण की कीली,
सुघड़ी की माया छोरी बीच बाटा मा मीली।
डाला को हरील,
बाटा पर मीली प्यारी, जनी कांठा मा शरील।
नाचला की नाच,
मेरा मन माया लाग, तेरा मन क्या च ?
फेडू पाक्या वर,
माया लाग वालो तू नी जाग पालो घर।
नर्यूल की गीरी,
दुन्या जाणक बौलेणी रणू ढंग मीरी।

साग लाये कोजी,
त्वै सरी जवान, छोरा, मेरा घाघरों का वोजी।
माछू मार्‍या ऐन,
मुख मोड़ि फुंड ल्यांदी क्या बलेलो मैन।
हिसर की गोंदी,
माया-वाया फुंड् फूक पिछनाई रीट।
मरच् की पीरी,
भौं कुछ बोललो त मुख धूलो चीरी।
चरी जालो भेरो,
माया लाण आई, क्या सगोर छ तेरो।
घूघता की घोली,
औरू का विचार कर्दौ, अफू कनी होली ?
धणिया को बीज,
ढांड् की आछरी मोहे, त् कतनी सी चीज।
सेन्दुर की डबी,
करडा मिजाज तेरा भबटौल् कबी।
साग लाए भूजी,
पथर पराण छई, बरखान नी रूभी।
भंगोरा की घाण,
जा, किलै ऐ छोरा दूणी खद लाण ?
लपलप कोई,
ढाली-सी परोसी माँ जी, खंकलूक होई।
पाणी को पनेरो,
तू नी लाली बाली माया मुलक घनेरो।
हलूंगी को हैल,
दांफरा की रूडियों बल डाल्यों डाल्यों छैल।
गौढी दिने ढैजा,

रुखा-सूखा मन न जा, राजीनामा कै जा !
सेरा नेला सैंदी,
रोसाई मानाये जॉदी मरीं नी चैंदी !
अखोड़ू की साईं,
राजी रखी नारैण, फेर मिलण ताईं।

[—घूघती का घोसला,]
मैं पूछता हूँ साथी, तू किस गांव की है ?
[नथ का मूँगा,]
अरे तू नाली का सा पत्थर कहा से चला आया !
[कागजों की स्याही]
मैं दूर से आया हूँ मैना, तेरा नाम जप कर !
[दराती की नोक,]
प्यारी सपने में मैंने तेरी उज्जवल दंत पंक्ति देखी !
[सांदन का खूंटा,]
सुघडी का प्यार रहा, बीच बाट में मिल गई !
[हरा भरा पेड]
तू रास्ते पर ही मिल गई, जैसे शिखर पर सूरज !
[ताचला का पत्ता,]
मेरा हृदय तुझे प्यार करता है, तेरे हृदय में क्या है ?
[पेड़ पर फेडू पके]
प्रेम करने वाला तू घर न जाने पावे ?
[नारियल की गिरी,]
दुनिया नाश के लिए उन्मत्त हुई है, ढग से रहो।
[साग सब्जी बनाई,]
तुझ जैसे जवान तो मेरे घाघरों के कुली हैं !
[मछली मार कर आये,]
हु, मुंह मोड़ती है, मानो, मैंने क्या कह दिया !

[हिसर की गोंदी]
तेरा प्रेम भाड मे जाय, तुझे मनाना पडता है।
[सूप की पीट,]
अच्छा, प्रेम-प्रेम छोड दे, जरा मुडकर तो देख ले !
[मिर्चों की पीडा,]
इस तरह अनाप शनाप कहेगा तो मु ह चीर दूंगी।
[भेड चुगती रही,]
बडा प्रेम करने वाला चला आया, तुझे क्या सहूर है ?
[घूघती का घोंसला,]
ओहो, दूसरे की निंदा करती है, अपने को तो देखती ही नहीं।
[धनिया का बीज,]
मैंने वन की अप्सराएँ मोही हैं तू कौन सी चीज है ?
[सिन्दूर की डिबिया,]
अच्छा, तेरी यह अकड भी कभी देख लूंगा !
[साग सब्जी बनाई,]
पत्थर-प्राण पर वर्षा पडी, न गीला हुआ न भीगा !
[सवां का अनाज,]
जा, लड्के जा तू मुझे दूना दुख देने क्यो आ गया ?
[लपलपाती लता,]
मेरी मा, डाली की तरह तूने मुझे पाला था, आज लपटों के लिए (खिली) हूँ
[पानी की धारा,]
तू प्रेम न करेगी तो (क्या हुआ) इतनी बडी दुनिया पडी है।
[हल का फाल,]
गर्मियो की दुपहरी में डाल-डाल के नीचे छाया होती है !
[गाय दहेज में दी,]
रूखे मन से क्यों जाती है, राजीनामा करके जा !

(क्यारी गोडी गई,)
रूठी हुई मनाई जा सकती है, तू केवल मरी हुई नहीं चाहिए !
(अखरोट के पत्ते,)
फिर मिलने के लिए नारायण तुझे राजी रखे !

४

छाछ छोली रौड़ी,
डाँडू मा फूल फूल्या आई रितु बौड़ी।
खणी जालो च्यूणो,
चार दिन होन्द मनख्यों कू ज्यूणो।
सड़क की घूम,
द्वि दिनक रंदी प्यारी जवानी की धूम।
भेरा लीगे भेराक,
द्वि दिन की जवानी छुमा, बथौं सी हराक।
पाड़ काटे घास,
सदा नी रंदो भाना, यो दिन यो हि मास।
आगूड़ी का तोया,
सदा नी रंदा प्यारी, पाड़ उन्दू छोया।
पड़ बैठे गोणी,
हौर चीज लेणी देणी ज्वानी फेर न होणी।
लगी जालो तैक,
ज्वानी नी औणी, मरी जाण हात फट कैक।
गौडी को मखन,
दुनियान मरी जाण, क्या लिजाण यखन !
घोड़ी को कमर,
दुनियान मरी जाण धरती अमर।
बाँज को वॅजेलो,

दुरसो तमाखू पीजा, जिकुडी रॅगेलो।
चादी शीश फूल,
तेरा वाना छोड़े छुमा, टीरी इस कूल।
रौड़ी को नेत,
बाली माया टूटी जादी नो टूट दो हेत।
तोली जाली चाँदी,
माया-मोन टूटी जादी, कागसा नी जादी।
साग लाए भूजी,
बाली माया त्वैन तोड़े, त्वै क्नी सूजी।
चिलमी को कीच,
मेरी माया घुंडू तेरी माया नी च।
नीम्बू की चटणी,
माया मोन टूटी जादी आखी नी मणनी।

—(मट्ठा मथा गया,)
वन-पर्वतों पर फूल खिल उठे हैं, ऋतु लौट आई।
(कद खोदे गए,)
मनुष्यो का जोवन चार दिन का होता है।
(सडक की घूम)
जवानी की घूम दो दिन की होती है प्यारी।
(भेड को बाघ ले गया,)
जवानी दो दिन की है, जैसा हवा का झोका।
(पहाड पर घास काटा,)
भाना, हमेशा यही दिन यही मास नहीं रहेगा।
(अगिया की तनियां,)
प्रेयसि, पहाडो पर भी सदा जल स्रोत नहीं फूटते।
(पहाड पर लँगूर बैठा,)

और चीजें तो ले देकर भी मिल जायेंगी, पर जवानी फिर न आएगी।

(अन्न पकाया,)

जवानी लौट नहीं आएगी, यो ही हाथ भटका कर मरना होगा।

(गाय का मक्खन,)

दुनिया ने ऐसे ही मर जाना है, कोई यहा से क्या ले जायेगा ?

घोड़ी की कमर,

दुनिया ही तो मरती है, धरती सदा से अमर है।

(बांज का बक्कल,)

दो रस वाला तम्बाकू पीजा, हृदय रंग उठेगा।

(चांदी का शीश फूल,)

प्रिया, तेरे खातिर टिहरी का स्कूल छोड़ा।

(रौड़ी की नेत,)

बाल्यकाल का प्रेम टूट जाता है किन्तु कांक्षा नहीं जाती।

(सब्जी बनाई,)

तूने मेरे नये प्रेम को तोड़ा, न जाने तुझे क्या सूझी ?

(चिलम का कीचड,)

मेरा प्रेम घुटनों-घुटनों तक है पर तेरा प्रेम बिल्कुल नहीं।

(नीम्बू की चटनी,)

प्रेम का माया-मोह टूट जाता है, किंतु आंखें फिर भी नहीं मानती।

५

ग्वैरू मा, की ग्वैन,

मैं जॉदू मसूरी मैरणा, रै विचारी चैन।

जोगी को भेस,

सौकारो ह्वैगे प्यारी ह्वैगे विदेश !

घाघरा की खाल,

नाक की नथूली धौलो न जा सुवा माल !

कतर्यो त प्याज,
नाक की नथूलीन नी पूरेण्या ब्याज।
बूणी जालो खेश,
अभी लगी बाली माया, अबी परदेश।
देवता को भोग,
गरीबू का छोरी-छारों कू वणवासी जोग।
डाला की फांगी,
त्वैक तई छोरी मैं धोती लौलू आँगी।
दाथुड़ा की नौकी,
लेणी देणी फुंड फूका मैं दिलै की शौकी।
ईन खणे मीन,
तेरी मेरी माया जब कटलू रीण।
बाँदरू की स्यैंट,
ज्यू ज्यान बचीं रली फेर होली भेट।
बाखुरी बन्वार,
कै पर देखण सुवा, तेरी स्या अन्वार।
चरी जालो भेरो,
त्वै खुद लगली प्यारी, ऐना देखी मेरो।
कुचला गैंच,
बांयो हात सिराण धरी, दाईं हाती ऐंच।
खाई जाली सोंट,
दूरू चली जौला सुवा, बल्दू की सी जोंट।
झंगोरा की झावी,
तू कख लिजाणी मैन खजाना की चाबी।
छांछी छोली रौड़ी,
फूलू दगड़ी जाणू छौं, कुयेड़ी दगडी औलू बौडी।

तामा की तामी,
चिठी मा लिखी ग्रान राजी छन खुसी स्वामी।
तितर की पॉख,
मेरी माया पॉजी राखी जिकुड़ी का काख।
मूसा की वची,
मेरी खुली छाती होली तू धोका न रची।
दवे खाये गिलैमा,
जो तेरो वोल्यू छ प्यारी वो मेरा दिलै मा!
गुलौरी का गारा,
सुवा परदेश, गैगो फिकरी का मारा!
भॅगोरा की वाली,
सुवा उड़ी परदेश, रै पिंजरी खाली!
ऐना खवट्याणी,
तोता उडी जंगल नै, मैना टपट्याणी।
वूणी जाली माणी,
वालो दिल त्वै मा दिने टूटलो तू जाणी!
डाला को रमानो,
जरा वीची पेण देई वाट को समानो!
आगाश को गैणो,
मैं जागदू रौलू त्वै, जनो प्यारो-सी पैणो।
—(चरवाहों के बीच चरवाहिन,)
मैं मसूरी जा रहा हूँ प्यारी, तू चैन से रहना!
(जोगी का भेष,)
क्या करूं कर्ज हो गया है, परदेश न जाना पड़गया!
(बकरी की खाल)
नाक की नथ दूंगी प्यारे, तू परदेश न जा!
(प्याज कतरा)

नाक की नथ से, साहूकार का ब्याज भी पूरा न होगा !

(खेश बुना गया)

अभी अभी प्रेम हुआ, और अभी परदेश जाने लगे।

(देवता का भोग,)

गरीबों के लड़कों के भाग्य में प्रवास ही लिखा है !

(पेड की टहनी,)

प्यारी, तेरे लिए मैं धोती और अंगिया लेकर आऊंगा।

(दरान्ती की नोक,)

देना-लेना भाड में जाय, मैं हृदय की शौकीन हूं।

(इसने मीन खोदा,)

तेरे मेरे प्रेम में बहार तब आएगी जब ऋण कट जाएगा

(बंदरो की टोली)

अगर जीवन प्राण रहे तो कभी भेंट होगी !

(ब्याहने वाली बकरी)

हा, प्रिय, तेरा यह रूप अब किस पर देखूंगी !

(भेड चरती रही,)

प्यारी, तुझे मेरी याद आवे तो मेरी तस्वीर देखना !

(कूटला का प्रहार)

बाया हाथ सिरहाने रखना, और दाया हाथ गालों के ऊपर

(इस पकार मन मसोस कर सो जाया करना)

(सोठ खाई जायगी,)

चलो, क्यो न बैलों की जोडी की तरह दूर चले चलें !

(सर्वां के बाल,)

पर तुझे कहा ले चलूं मैं खजाने की चाबी की तरह !

(दही मथा गया,)

फूलों के साथ जा रहा हू, बादलों के साथ लौट आऊंगा !

(ताम्बे की तोमी,)
स्वामी, चिट्ठी में लिख देना कि तुम कुशल हो ।
(तीतर के पंख,)
मेरे प्रेम को अपने हृदय-कक्ष में सजोकर रखना !
(चूहे की बच्ची,)
मेरी खुली छाती है तू धोखा न रचना ।
(गिलई के साथ दवा खाई,)
जो तूने कहा, वह पहले से ही मेरे दिल मे है !
(गुलौरी के ककर,)
हा, मेरे प्रिय, तू फिक्र के मारे परदेश चला गया ।
(सवाँ की बालीं,)
तोता उडकर परदेश चला गया, पिंजरिया खाली रह गई ?
(आयने का टुकडा)
तोता जंगलों में उड गया मैना बेबस देखती रह गई ।
(माणी बुनी गई)
बाल्य हृदय तुझे दिया है, टूटेगा तो तू जिम्मेदार रहेगा ।
(पेड की प्रार्थना,)
जरा इन अधरों को तो पीने दे, रास्ते का सबल हो जायेगा ।
(आकाश का तारा)
मैं प्यारे उपहार की तरह तुम्हारी प्रतीक्षा करती रहूगी ।

६

कोठारी का गॉजा,
अफू गैल्या परदेश, घर डाले वॉजा ।
च्यू खाये छकीक,
वालो दिल त्वै मा दिने नी जाणे रखीक ।
मोटो वट्यो रसा,

तूमारी खुद की सुवा या च मेरी दसा ।
परोठो दूद को,
बिना मौती मैं भी मर्‌यूँ तूमारी खूद को ।
साग लाई सौंदो,
कै मा लाण रूखो सूखो कै मा लाण भौंदो ।
वण काटे घास,
त्वै सुवा की याद औंदे कलेजी को नास ।
खैणी त कंडारो,
कोरी-कोरी खाँदो सुवा, माया को मुंडारो ।
करी त सिंगार,
बालो दिल ऐसो बुझे जैसो कि अंगार ।
काटी जालो घास,
मन मेरी मरियूँ छ, शरील उदास ।
ह्लाया त आम,
ओंठड़्यू कू पाणी सूखे ओडार-सी घाम ।
बणाई त लेई,
तेरा बाना विष खौलू मरण न देई ।
बाखरा की खाल,
मैं लिखवारी होंदू चिठी देन्दू स्वाल ।
लाठी लायो रंदा,
पछी होंदी उडी औंदी, मै मासू को बंदा ।
साकीनो सुजायो,
बावरो पराण सुवा, बैठीक बुझायो ।
डाली को हरील,
बुझौणी बुझैले सुवा, नी बूझद शरील ।
डाली को हिंदोल,
रात दिन मैकू सुवा तेरो हि दॅदोल ।

सौदा चवन्नी को,
सौ साठ गैणुवा होन्दा उजालो ज्वनी को।
चाखरी को फेकू,
वैखून दुन्या छ भरीं, मन को एकू।
देवी को तखत,
मैं तेरी जोगीण सुवा तू मेरो फगत।
छकी ख्याये ध्यूऊ,
तेरो मेरो सुवा माछी पाणी ज्यू।
मैत को कलेऊ,
कै पापीन फट्याये जोड़ी को मलेऊ।
—(कोठार के खाने,)
मेरा साथी परदेश गया है, घर को उजाड़ कर गया।
(छक कर घी खाया)
मैंने यह बाल-हृदय तुझे दिया था, तूने रखना न जाना
(मोटी रस्सी बनाई,)
तुम्हारी याद में प्रिय, मेरी यह दशा है।
(सब्जी बनाई,)
किससे दुखी सुखी कहूँ, किससे मन की बात लगाऊँ?
(बन में घास काटा,)
तेरी याद आती है तो हृदय का नाश होता है।
(कडारा खोदा)
प्रेम का सरदर्द कुरेद कुरेद कर खाता है।
(शृंगार किया,)
मेरा बाल हृदय अंगार की तरह बुझ गया है।
(घास काटा)
मेरा मन मर चुका है, मेरे प्राण उदास है।
(आम हिलाये,)

ओंठों का पानी सूख गया है जैसी गुफा की धूप !
(लिई वनाई,)
तेरे लिए विष खाऊंगी, पर तू मरने न देना !
(बकरी की खाल,)
मैं लिखना जानती तो तुम्हें चिट्ठी लिखती, सवेश भेजती !
(छडी पर रवा लगाया,)
चिड़िया होती तो मैं तुम्हारे पास उड आती पर मैं तो माँस पिंड हूँ।
(साकिना धोया,)
प्रिय, इस बावले हृदय को कई बार बैठ कर समझाया है।
(वृक्ष की हरियाली,)
कई तरह से हृदय को समझा लिया पर यह मानता ही नहीं।
(पेड पर हिंडोला,)
मुझे रात दिन तेरी ही चिन्ताएं हैं।
(चवन्नी का सौदा,)
आकाश पर अगणित तारे हैं, पर आलोक चन्द्रमा का ही होता है।
(बकरी का हृदय,)
दुनिया पुरुषों से भरी है पर हृदय का आराध्य एक ही होता है।
(देवी का सिंहासन)
प्रिय, मैं तेरी जोगन हूं, और तू मेरा भक्त !
(छककर घी खाया,)
प्रिय, तेरा मेरा मछली और पानी का-सा हृदय है !
(मायके का कलेवा,)
हा, किस पापी ने जोडी के हंस को टोली से अलग किया ?

७

पकी जाला आरू,
गौं पर की माया सुवा नजरू को सारू।

कतरे त प्याज,
गौं पर की माया प्यारी, कोठारी सी नाज।
तलवारी म्यान,
निरदयी रांड तू, त्वै गुण न ज्ञान।
चौंलू की दवाल,
तेरा गौं का सीदा सादा तू वड़ी ववाल!
नारंगी की दाणी,
मुख मोड़ी फुंडू लिजांदी आखिर विराणी।
फूट्यो त पटासो,
मैन क्या बुरो करे, सवी खोजदा डुंगा को अडासो।
पितल को वंठा,
औरू मा तेरी रामारूमी, मैं मा तेरो टॅटा।
दाथी गड़ी पाती,
कैका सिराण रली चूड्यों भरी सी हाती।
केला को फिरक,
जाण दे चौमासो होई जालो निरक।
खेल को गेंदो,
दुकान-सी चीज होंदी मोल लेई लेंदो।
भैंसो नौं छ वेंदो,
अठन्नी चवन्नी होंदी किसा भरी लेन्दो।
नथूली वीस की,
वाली माया टूटी जांदी जिकुड़ी नीस की।
वूणी जाली माणी,
सौंण का गदरा सूखी जांदा रै जॉंदू सेल्वाणी।
लोट्या की कलई,
डंडी गाडी फुंडी जादी, जा मेरी वलई।
सुपी भरी दैण,

डांडू का चुबल्या पाणीन नी भीज दो सैण !
कांठा मा की जोन,
टूटदी टूटदी ऐगी तेरी माया मोन !
कुटला की कूटी,
गेऊँ वोद माया लगी, वाली लौंद टूटी।
चुवै जाली छोई,
मूरखू मा प्यार दिने वालो रग खोई !
नथुली पवॉर,
दिलदार माया बाच, नी वाचदों गवॉर !
घास काटे वण,
तेरो दिल लग्यू छोरी, पैसा छना छन !
पाणी भरे सेरन,
तेरी मेरी प्रीत टूटे दस का फेरन !
झंगोरो गोड़ी,
रोणो धोणू मैक होये, तू हँसणू न छोडी !
छोली जालो छाजो,
अनाड़ी का हात पडे हारमुनी वाजो।
—(आड़ू पके,)
नजदीक के प्रेम में नजरो का सहारा ही काफी।
(प्याज कतरा,)
गाव के आस पास का प्रेम ऐसा होता है, जैसा कोठार में रखा हुआ अनाज।
(तलवार का म्यान,)
तू निर्दय स्त्री है, तू न गुणज्ञ है, न तुझ में ज्ञान ही हे।
(चावलों की अजुली,)
तेरे गांव के सब सीधे-सादे हैं, पर तू बडी लबार हं।
(नारंगी का फल,)

उँह, मुँह मोड़ती है, आखिर पराई ही है न !

(पटाशा फूटा,)

मैंने क्या बुरा किया, बैठने को शिला का आधार सभी खोजते हैं।

(पीतल का बठा,)

औरो से तो तेरी बोल चाल है पर मुझसे ही टंटा क्यों ?

(दराँती गढी गई,)

कौन भाग्यवान होगा वह, जिसके सिरहाने तेरा चूडियों भरा हाथ रहेगा।

(केले का फल,)

खैर, चौमासा जाने दे, फिर फैसला हो जायगा !

(खेल की गेंद,)

दूकान की-सी चीज होती तो म तुझे मोल ले लेता।

(भैंस का नाम वे दो,)

तू अगर अठन्नी चवन्नी होती तो मैं तुझसे जेब भर लेता।

(बीस की नथ,)

हृदय के नीचे का नया प्रेम टूट ही जाता है।

(माणी वुनो,)

बरसाती नाले सूख जाते हैं, स्थायी जलस्रोत ही बच रहते हैं।

(लोटे की कलई,)

तुझे इधर बुलाता हूँ तू उधर जाती है, अच्छा जा, तू मेरी बला।

(सूप पर राई भरी,)

पहाड से निकलने वाले अजुलि भर पानी से मैदान नहीं भीगता।

(शिखर पर चन्द्रमा,)

अब तो तेरा प्रेम टूटता टूटता आ रहा है।

(कुटला का बेंटा,)

गेहूं बोते हुये प्रेम हुआ था, बालियां काटते टूट रहा है।

(छोई बनाई,)

मूर्खों को प्यार दिया, बाल्यकाल का रूप रंग ही खो दिया।
(नथ की पँवर,)
दिलदार प्रेम को पढ़ लेता है, गँवार उसे नहीं पढ पाता।
(वन में घास काटा,)
तेरा मन पैसे की छनाछन पर लगा हुआ है।
(पानी को सेर से भरा,)
(सभा को गोडा,)
रोना-धोना मेरे लिए हुआ, हँसना न छोडना।
(दूध मथा गया,)
जिस अनाडी के हाथ हारमोनियम बाजा पडा।

८

घट को भग्वाडी,
तौं रूबसी खुट्यौंन मैणा, तू चल अग्वाडी।
बन्दूकी को गज,
तू चल अग्वाडी, मैं देखलू दौं सज।
चली जालो भैंरो,
पिछनाई रीट छोरी, कनो रंग छ तेरो ?
गुड़ खायो मार्ल्योंन,
हौर खाँदा गिचीन तू खादी आर्ल्योंन।
तितर की पाँख,
ढकै लेण दांतु चौक, घुमै लेण आँख।
भाँजी त छनी,
मुलमुल हैंसदी दै खतेणी जनी।
अखोड् की जखेली,
मुलमुल हैंसदीं प्यारी दातुड़ी दिखेली।
साटी दुणगोड,
पतली कमरी टूटली कु लगालू जोड़।

वासी त मलेऊ,
पतली कमरी प्यारी जतन इलऊ !
पकी जालो स्य,
ओंठड्यूं की लाली तरसौंदी ज्यू !
दरजी की कैंची,
सी रतन्याली आँखी मैं दी देणी पैंछी।
धारा को पाणी,
घस्यार्यों का बीच तू जनी शीशू चमलाणी।
भैंसा की तीस,
त्वै देखीक भाना, वुरासी लाँदी रीस !
फेड़ू पक्या वर,
नथूली को क्स लैगे गल्वाडियों पर।
ईन खणे मीन,
देखेण की छोटी-मोटी, माया की मशीन।
ग्वैरू मा की ग्वैन,
देखेण की छोटी-मोटी, छुयौं की रामैण।
सूलपा की सूट,
धार मा खडी होंदी उजाला-सी मूठ।
मालू को टांटी,
घणा गौं की वाट नी औणू माया जाँदी वाटी।
चूड़ी को काँच,
माया को किताव छोरी हेरी हेरी वांच !
सेरा की कूल,
वौ प्यारो घूर होंद, डाली प्यारो फूल।
लसपसी खीर,
जैकी माया जैमा ज्यादा, तैकी तकदीर।

झंगोरा की धाण,
जैकी माया घनघोर, आँख्यों मा पछाण।
हुरियूं च तरियू च,
तेरी माया को मोटर चीनीन भर्यूँ च।

—(पनचक्की का भाडा,)

उन कोमल पावों से प्यारी, तू आगे आगे चल !

(बन्दूक का गज,)

तू आगे आगे चल, मैं पीछे तेरी गति की शोभा देखूंगा।

(भेड चरी,)

कभी पीछे घूमकर देखना, देखूंगी तेरे चेहरे का रग कैसा है।

(मक्खियो ने घी खाया,)

और तो मुंह से खाते हैं पर तू आखों से ही खाती है।

(तीतर के पख,)

अपनी दत पक्ति ढका ले, आखों को फेर ले।

(छलनी मांजी गई,)

तू पुलकित होकर ऐसी मुस्काती है, जैसे वही गिर रही हो।

(अखरोट की गिरी,)

धीरे-धीरे मुस्करा, तेरे दात तो देख लूं।

(धान गोडे गये,)

तेरी पतली कमर टूट जायगी तो उसे जोडेगा कौन ?

(मलय-पक्षी बोला,)

इसलिये प्यारी, पतली कमर को चलते हुए यत्न से हिला।

(सेव पके,)

तेरे ओंठो की लाली जी को तरसाती है।

(दरजी की कैंची,)

अपनी ये रतनारी आंखें मुझे कुछ दिनो के लिये उधार दे दे न।

(धारा का पानी,)

घसियारिनों के बीच तू ऐसी दीखती है, मानो आयना चमक रहा हो।
(भैंस की प्यास,)
तुझे देखकर बुरांस का फूल भी ईर्ष्या करता है ।
(इसने मीन खोदी,)
तेरे गालों पर नथ का दाग पड गया है ।
(बेर पके,)
देखने को तू छोटी-मोटी है पर है तो प्रेम की मशीन ही।
(चरवाहों के बीच चरवाहिन,)
देखने की तू छोटी-मोटी है, पर बातो की रामायण है ।
(सुल्फे को घूंट,)
तू शिखर पर मशाल की तरह खडी होती है ।
(मालू की फली,)
घने गाव के रास्ते से न आया कर, प्रेम बँट जाता है।
(चूडी का कांच,)
मेरे प्रेम की पुस्तक ध्यान देकर पढती रह !
(क्यारी की नहर,)
भाभी को देवर प्यारा होता है, जैसे वृक्षो को अपने फूल।
(गाढ़ी खीर,)
जिसका प्रेम जिससे ज्यादा है, उसकी अच्छी तकदीर है।
(सवा के दाने,)
जिसके हृदय में घना प्रेम है, उसकी पहिचान आखो मे होती है।
(हरा-भरा है,)
तेरे प्रेम की मोटर चीनी से भरी है !

९

हिंसर की गोंदी,
आगास थेगली लगौंदी कैकी मऊ खोंदी ।
पाणी की छुईं,
आंदी तेरी जुवानी, वभुक-सी रुईं !
मारी जालो मैर,
भरपूर्‌या जुवानी, नी चलायेन्दा पैर ।
विधाता की लेख,

लेसुर्याली ऑख्यॊन हॅसी जा कणेक !
कौवा वास्यो कालो,
ताऊॅ कनो ललायो जनू दूदी को वालो ।
काटी त घास,
मुई रया निगान, तू चढ़ी अगास ।
चादी की चुवानी,
गटि ल नजर सबूकी जुवानी ।
गेऊॅ को बीज,
कदि ले वण आली उड़ॉदो-सी सुरीज !
मारी जालो मैर,
तेरी औंदी याद हात टूटौं पैर ।
काटी त खड़ीक,
मन भौ की जोड़ी चाईं मॉगी खौलो भीक ।

—(हिसर की गोदी)
तू आकाश पर थेकली लगाती है, न जाने किसका घर बर्बाद करेगी !
(पानी का कुवा)
तुझ पर जवानी छाई है, जैसे रुई बिखरती है।
(मुर्गा मारा गया)
भरपूर जवानी है, तुझसे पैर भी तो नहीं चलाए जाते ।
(विधाता का लेख)
रतनारी आखों से जरा हॅस तो जा !
(घास काटा)
मैं धरती पर हूं पर तू आकाश चढ गई है।
(चादी की चवन्नी)
अरी, नीची नजर कर, जवानी किस पर नहीं आती ?
(गेहू का बीज)
उडते-से सूरज की तरह तू फिर कब बन आयेगी ?
(मुर्गा मारा जायेगा)
तेरी याद आती है तो मेरे हाथ-पैर टूट जाते हैं ।
(खडीक काटा जायेगा)
मेरे मन की जोडी मिलनी चाहिये, भीख मागकर खालूंगा।

दाम्पत्य जीवन

हृदय पर लौटे बादल

एक दिन था जब आकाश पर चाद था, पृथ्वी पर हरियाली थी और पति नव-विवाहिता पत्नी की बाँहो में था ! चरणों में तब मादक गति थी। हृदय में अपूर्व उल्लास था। आखों के आगे फूल खिले थे। नदियां नाचती थीं और पक्षी गाते थे ! सारे विश्व की सम्पदा उन पर निहाल थी। उनका प्रेम दो हृदयो में धांज के अंगार की तरह खिला था ! तब जीवन कितना मधुर था। दो प्राणियो के स्वप्न तब शरद के बादलों की भाति आकाश में विचरते थे। खेतों में काम करते, भेड बकरिया चराते, घास काटते कभी प्रेम का कोई भाव सहसा उनके अधरों पर स्मित ले आता था ! उनकी आँखों के सामने तब सावन लहराता होता ! दोनो साथ-साथ खेतो में काम करते और गाते गाते घर लौटते ! प्रभात उनकी हँसी-सा खिलता, संध्या उनके प्रेम गीतों से गूंज उठती ! तभी धोती अगिया लाने का लोभ देकर प्रिय ने प्रिया से विदा मागी थी। प्रिया ने कहा था— 'नाक की नथ देती हूं तुम परदेश न जाओ !' पर नाक की नथ में साहूकार का ब्याज भी पूरा न होने वाला था। एक ओर साहूकार था, दूसरी ओर पत्नी। उसके हृदय में तूफान था। आखिर हृदय को शिला बनाकर बिछुडते प्रिय ने पत्नी को देखा। अतिम बार उसने उसे बाँहों में भरा और डबडबाई आंखों से परदेश की वाट लग गया।

दिन बीते, फिर महीने और आज तो बरसों बीत गए। प्रवासी प्रियतम घर नहीं लौटा। प्रिया सोचती रही—वे कहकर गये थे—फूलों के साथ जा रहा हू, बादलों के साथ लौट आऊगा। तब से कई फूल खिले, खिलकर झडे, वन-पर्वतो,पर कई बादल आये और चले गए, पर लौटने को कह गया प्रियतम लौटकर न आया !

आज वह अकेली है। जीवन भार है, मातृत्व सूना है दो दिन के लिये यौवन आया पर वन में मोर नाचा किसने देखा ! पानी का

प्रवाह रोका भी जा सकता है पर जाती जवानी कब किसके लिये रुकी है ? फूलते हुए फूलो ने आज तक किस किस का इन्तजार किया है ? जो प्राज है, वह कल न रहेगा । हमेशा एक ही दिन, एक ही मास कब रहा ? पहाडो पर भी जल-स्रोत हमेशा नहीं रहते ! एक दिन इन आँखों के स्वप्न इन्हीं में मिट जायेंगे । ये प्राण हमेशा प्यासे नहीं रहेंगे । आज इसीलिये बहती गगा का पानी अजुली भर कर क्यों न पिया जाय !

पर पृथ्वी ने किसको दुख नहीं दिया, आकाश ने किसको नहीं छला ? वृक्षों पर सभी फूल फल नहीं बनते । कभी कभी अपनी आकांक्षाओं को ठीक उसी प्रकार अनचाहे ही मारना पडता है, जैसे कोई अपने प्यारे बच्चे को मार दे । कभी मनुष्य की फूल-सी रगीन कल्पनाओं को गरीबी योंही कीडे की तरह चाट जाती है । तब प्रिया आसू की बूंद-सी आँखों में रहती है और प्यार चढ़ाई का बोझ बनकर ! वह औरो को ही प्यार करते देख सकता है, अपनी प्यारी का बाहुपाश उसके लिये बिना कसूर की फासी है ! अगर साहूकार का व्याज न बढता तो वह कभी परदेश न जाता । हा, किस पापी ने जोडी का हस पृथक कर दिया ! तोता उडकर बनों मे खो गया, मैना टुकुर-टुकुर देखती रह गई । वह अपने सुवा की याद में आसू बहाती है, खाना पीना छोड चुकी है ! उसके मुख का पानी सूख चुका है । ओंठों पर मास नहीं रह गया है । शरीर पर हड्डी रह गई है । वह पापिनी बिना मौत की मर रही है । आते-जाते लोग उसको देखते हैं और उस रूप-राशि पर पडे विरह के इतने बडे अभिशाप को देखकर तरस खाये बिना नहीं रहते । फूल आज भी खिलते हैं, मेघ आज भी उमडते हैं , पर मानों किसी और के लिये ! इसीलिये प्रकृति के वे उपकरण दूसरी ही भावना से सबद्ध होकर 'बारहमासी' में व्यथा के सन्देश बनकर आते हैं ।

बाई के फेरे की तरह इसी तरह वर्ष, मास और दिन बीतते रहे। वह अपने प्रिय को उपहार की तरह जागती रही। पर न वह स्वयं आया, न उसका पत्र ही। सौभाग्यवतियों के परदेश गये प्रिय घर आये, पर उसके लिये गाँव की वह बाट सदैव सूनी ही रही। घर में साहूकार खाने-सोने नहीं देता। रोज आकर छज्जे पर बैठ जाता है! पहिनने के लिये धोती नहीं, खाने को अन्न नहीं! पर उसकी इस बेबशी को उसका दूर गया प्रिय क्या जाने?

जाते हुए प्रिय ने कहा था—फूलों के साथ जा रहा हूँ, बादलों के साथ लौट आऊँगा! वर्षों बीत गये। आज भी आते बादलों में उसे खोजती रहती है। हृदय पर साँपों को लोटते आपने भी देखा होगा किन्तु बिरह की आग में संतप्त हृदय के ऊपर लोटते बादलों की अनुभूति केवल उसी को है!

न वास पापी मोर

वर्षा ऋतु साहित्य मे सर्वत्र विरह के उद्दीपन-रूप में आती है। प्रस्तुत गीत में प्रकृति और मानव के बीच के कोमल तन्तु को छू लिया गया है।

भादों की अँधेरी झक-झोर,
न वास, न वास पापी मोर!
ग्वैरू की मुरली तू तू वाज,
भैंस्यू की घाडून डांडू गाज!
तुम तैं मेरा स्वामी कनी सूझी,
आसुन चादरी मेरि रूझी।
तुमारा बिना क्या लाणी खाणी,
मन की मन मा रैन गाणी,
छलबलाण्या रौ भरेये पाणी,
कब आला स्वामी करदू गाणी?
अब डेरा ऐ जावा तुम स्वामी,
आँख्यों की रोई नी सक्दू चामी।

—भादों का घना अंधकार छाया है,
हे मोर, तू मेरे पास न बोल, न बोल।
चरवाहों की मुरली 'तू तू' बज रही है,
भैंसों की घटियो से पर्वत गूँज रहा है!
तुम्हे मेरे पति, कैसी कठोरता सूझी,
आसुओ से मेरी धोती भीग गई है!
तुम्हारे बिना क्या पहिनना, क्या खाना? (सब व्यर्थ)
मन की कल्पनाएँ मन मे ही रह गई हैं।
पानी से भरकर तालाब छलबला रहे हैं,
स्वामी, तुम कब आओगे, मै गणना करती रहती हूं।

हे प्यारी, आज गाढ़ी दाल पका दे,
जीवन का काल युद्ध छिड गया है !
प्यारी तू आज खीर खिला दे,
युद्ध छिड गया है, फिर मिलना नहीं होगा !
स्वामी, मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगी,
मैं औरत जात तुमसे अलग कैसे रहूंगी !
भाग्यवाली सहेलिया देश जायेगी,
बैठी-बैठी मेज के ऊपर होटलो में खाना खायेंगी।
वे भाग्यवाली सहेलिया जगह जगह घूमेंगी,
और देश की बात पहाड में सुनायेगी !

गणेशी

झांसी के कैम्प में सिपाहियों को युद्ध में जाने का आदेश हुआ। गणेशी का पति युद्ध में जाने से पहले अपनी पत्नी को घर भेजना चाहता है। गणेशी के सामने युद्ध के चित्र घूम जाते हैं और पति को छोड़ना उसके लिए और भी कठिन हो जाता है।

झॅगोरा को बोट गणेशी, झॅगोरा को बोट,
मैं जॉदू लड़ै गणेशी, छोड़ मेरो कोट !
साग की कड़ाई सिपैजी, साग की कड़ाई,
तुम जावा दौं घर सिपैजी, मैं जौलू लडाई !
सेरा को सऊॅ सिपैणी, सेरा को सऊॅ,
तु जाली लड़ै सिपैणी, लोग धरला नऊॅ !
पेई त सराप सिपैजी, पेई त सराप,
घर जाणू मैं जॉदी सिपैजी, तेरी बोई च खराप !
जूड़ी मार्‌यो फद सिपैणी, ज्यूड़ी मार्‌यो फंद,
जा प्यारी घर सिपैणी, तू छ आशा बंद !
हंसुली की गढ़ाई सिपैणी, हसुली गढ़ाई,

नौनो होई जालो पियारी अंगरेजी पढ़ाई !
वाखरी को रान गणेशी, वखरी को रान,
नौनी होली मेरी गणेशी, दे निकसू दान !
फेडू पक्या वर गणेशी, फेडू पक्या वर,
म्यारा दिल की प्यारी गणेशी, जा पियारी घर !
धार मा की तोण सिपैजी, धार मा की तोण,
जनी शोभा तुमारि सिपैजी, तनि मेरि नी होण !
तौली मरी टांकी सिपैजी, तौली सरी टॉकी,
भाग मा क्या होलो कुजाणी मलकणी छ आखी !
ताकुला की ताकी गणेशी, ताकुला की ताकी,
गौरा दैणी होली पियारी, तू भरोसो राखी !
झँगोरा को बोट गणेशी, झँगोरा को बोट,
मैं जादू लड़ै लिपैणी, छोड़ मेरो कोट !
शीणाई की भौण सिपैजी, शीणाई की भौण,
चीठी दीई घान पौंछ्यॉ की मिन ससेई रौण !
चीणा चिण्याल गणेशी, चीणा का चिण्याल,
तीन नी खूदेणु गणेशी तेरा छन निन्याल !
दूद को उमाल गणेशी, दूद को उमाल,
त्वै खुद जगली गणेशी, भेंटी ये रूमाल !

—(सवां की जड़ गणेशी, सवां की जड,)
मं लडाई पर जाता हूं गणेशी, मेरा कोट छोड़ दे !
(साग की कड़ाई सिपाही जी, साग की कडाई,)
तुम घर जाओ सिपाही जी, लडाई पर मे जाऊंगा ।
(खेत का धान सिपाहिन, खेत का धान,)
तू अगर लड़ाई पर गई सिपाहिन, तो लोग मुझे नाम रखें
(शराब पी सिपाही जी, शराब पी,)

मैं जाती तो सही पर सिपाही जी तुम्हारी माँ बुरी है !
(रस्सी का फंदा सिपाहिन, रस्सी का फंदा,)
तू घर जा सिपाहिन, तू गर्भवती है !
(हँसुली की गढाई सिपाहिन, हँसुली की गढाई,)
अगर तेरा लडका हुआ तो प्यारी, उसे अंग्रेजी पढाना !
(बकरी का रान गणेंशी, बकरी का रान,)
अगर लडकी पैदा हुई तो गणेशी, उसे दान देना !
(फेंडू पके गणेशी, फेंडू पके,)
मेरे दिल की प्यारी गणेशी, तू घर चली जा !
(धार पर की तून सिपाही जी, धार पर की तून,)
घर में जैसी तुम्हारी शोभा होती, वैसी मेरी थोडी ही होगी !
(तौली पर टांका सिपाही जी, तौली पर का टाका,)
न जाने इस भाग्य में क्या लिखा है, आँख स्फुरित हो रही है।
(तकली की घूम गणेशी, तकली की घूम,)
गौरा दाहिनी होगी गणेशी, तू भरोसा रख !
(सवां की जड गणेशी, सवां की जड,)
मैं लडाई पर जा रहा हूँ सिपाहिन, मेरा कोट छोडदे !
(शहनाई गूँज सिपाही जी, शहनाई की गूँज,)
अपने पहुँचने की चिट्ठी भेज देना, मैं भरोसे पर पर रहूंगी।
(चीणा के दाने गणेशी, चीणा के दाने)
तू दुखी न हो गणेंशी, तेरे बच्चे हैं !
(दूध का उबाल गणेंशी, दूध का उबाल,)
तुझे मेरी सुध आयेगी गणेंशी, मेरा रुमाल भेंट लिया करना।

दौंथी

दौंथी अपने पति के साथ क्वेटा मे रहती थी। पन्द्रह दिन उसे वहाँ गए हुए ही थे कि सन् ३४ के भूकम्प ने उसका सुहाग सदा के

लिए छीन लिया। उसका भाग्य स्वयं उस पर अट्टहास कर उठता है—अब घर क्या लेकर लौटेगी ? वे पर्वत, वन, गेह और परिजन उसे किन आँखों से देखेंगे !

दौंथी भग्यानो दौंथी, चल दौंथी घौर !
कूटी जाला रीठा,
पंद्रा हि दिन ह्वै ने तै पापी क्वीटा।
केला को पतर,
फूटीगे भाग, टूटे सिर को छतर।
झँगोरा की दाण,
ये देश वटि मैन क्या ल्हे की जाण।
काटी त कंडाली,
कसु कैक रौलु स्वामी, यकुली डंड्याली!
पसै जालो मांड,
कसु कैक रौलु ब्वे, वाला-तन रांड।
झँगोरा की वाली,
डाडी कॉठी देखली, खाण कू त आली!

—भाग्यवती दौंथी, चल घर चल !
(रीठे कटे गये,)
उस पापी क्वेटा में आये अभी पन्द्रह ही दिन हुए थे।
(केले का पत्ता,)
मेरा भाग्य फूटा जो मेरे सिर का छत्र टूटा!
(सवां के दाने,)
मैं इस देश से क्या लेकर जा रही हूँ !
(बिच्छू घास काटा,)
अकेली अट्टालिका में मैं कैसे रहूंगी स्वामी !
(मांड पसाया गया,)

हे माँ, मै वाल-विधवा अब कैसे रहूगी !
(सवा की वाल)
वे पर्वत शिखर मुझे देखेंगे तो खाने आयेगे !

गेंदा

गेंदा अपने पति के साथ टिहरी बाजार में रहा करती थी। अचानक वह बीमार पडी और मृत्यु निकट आती-सी दीखने लगी। इस गीत में उसी पतिप्राणा मरणासन्न युवती की अंतिम भावनाएँ व्यक्त हुई हैं।

बन्दूक की कोठी स्वामी, बन्दूक की कोठी की,
तुम कना खाला स्वामी, वै का हात की रोटी की
चौंलू कूटी धाण गेंदा चौंलू कूटे धाण की,
त्वई विना मैन गेन्दा, घर कनू जाण की !
लोण भरे दोण स्वामी, लोण भरे दोण की,
सब खड करया स्वामी, कायरो नी होण की !
मायाली मुखड़ी स्वामी, मायाली मुखड़ी की,
कुरोध नी लाणो स्वामी, चिरेन्दी जिकुड़ी की !
कोदा की लगड़ी गेंदा, कोदा की लगड़ी की,
कनी चूकी मैकू गेंदा, तुमारी दगडी की !
तेल को कसीव गेंदा तेल को कसीव की,
कनो रूप रंग छयो, क्या करीगे नसीव की !
काटी जालो घास स्वामी, काटी जालो घास की,
तुम जान मेरा स्वामी, मेरी ब्वै का पास की !
गुलेरी का गार स्वामी, गुलेरी का गार की,
माँ जी माँ दियान स्वामी, मेरो रैबार की !
मोतियों की खान मांजी, मोतियों की खान की,
भुली मेरी द्यान मांजी, स्वामी मेरा दान की !

काड़ों की वाड़ माँ जी, कांड़ों की वाड़ की,
भुली मेरी वणली माँ जी, मेरा नौनों का लाड की
थाली राल्या मेवा माता, थाली राल्या मेवा की,
मेरी भुली करली माता, स्वामी जी की सेवा की।
लोण भरे दोण माता, लोण भरे दोण की,
स्वामी जनो मयाल्दु माता, कैन नी होण की !
काटी जालो घास स्वामी, काटी जालो घास की,
मैं मरी गयू स्वामी, नी करणी श्रास की।
चली जालो कोस स्वामी, चली जालो कोस की,
माफ करी द्यान स्वामी, मेरा सब दोस की।
कमर की हूक स्वामी, कमर की हूक की,
तुम सणी मैन स्वामी, वड़ा दिन्या दूख की।

—(वन्दूक की नाल स्वामी, वन्दूक की नाल,)
स्वामी, तुम मा के हाथ की पकाई रोटी खाम्रोगे।!
(चावल कूटे गेन्दा, चावल कूटे,)
तेरे बिना मैं घर कैसे लौटूंगा गेन्दा।
(द्रोण भर नमक भरा, एक द्रोण नमक भरा,)
तुम सब कुछ करना नाथ, पर आतुर न होना!
(प्रेमी मुख स्वामी, प्रेमी मुख,)
श्रातुर न होओ नाथ, मेरा कलेजा फट रहा है।
(कोदो की रोटी गेंदा, कोदो की रोटी,)
मेरे लिए तुम्हारा साथ कैसा टूटा गेंदा !
(तेल का मैल गेंदा, तेल का मैल,)
कैसा रूप रंग था तेरा गेंदा, पर नसीब क्या कर गया ?
(घास काटा गया स्वामी, घास काटा गया,)
मेरे स्वामी, तुम मेरे मा के पास जाना।

(गुलेरी के पत्थर स्वामी, गुलेरी के पत्थर,)
स्वामी, मा जी को मेरा यह संदेश देना !
(मोतियो की खान मां जी, मोतियों की खान,)
मेरे स्वामी को मेरी बहिन ब्याह में देना मा जी !
(कांटो का घेरा मां जी, कांटो का घेरा,)
मेरी बहिन मा जी, मेरे बच्चों की लाडली बनेगी !
(थाली पर मेवे राले माता, थाली पर मेवे राले,)
माता, मेरी बहिन मेरे स्वामी की सेवा करेगी !
(द्रोण नमक भरा माता द्रोण नमक भरा,)
मां, जैसा हृदय मेरे स्वामी का है, वैसा किसी का नहीं !
(घास काटा गया स्वामी, घास काटा गया,)
मैं अब मर गई हूँ स्वामी, मेरी आशा न करना !
(कोस चला गया स्वामी, कोस चला गया,)
मेरे नाथ, मेरे सब दोषों को क्षमा कर देना !
(कमर की हूक स्वामी, कमर की हूक,)
स्वामी, मैंने तुम्हें आज तक बहुत दुख दिये !

रंत नी दिने रैबार

पाति व्रत की अडिग साधना नारी के चरित्र की विभूति है, जिस पर वह गर्व कर सकती है। प्रोषित पति का अपने को डिगाने वाले पुरुष की वासना को इस गीत में जो प्रत्युत्तर देती है, उसके सामने हीन पुरुषत्व झुके बिना नहीं रह सकता !

स्वामी तेरो परदेश त्वै मा मेरो जिऊ,
मुखड़ी तेरी क्या खूब, त्वै आरसी क्या शोभ ?
सत सराप जयान मात पितौंक तेरा,
जौन तू यख बिवाई !
रात क गणदी गैणा तारा,

दिन को डाल्यों का पात !
तू शोभदी इनी जिया,
जसो बाज को अंगार !
न देखो दिल को भौंरीलो,
न देखो मैत को देस !
तेरो बावा मैकू देन्दू जु हात तेरो,
गौं की सुराली फन्डू विसरदू मैं,
तेरी आख्यों का लोभ !
तू सोना की गडुवा, मैं पृथा को मोल !
घर की घर वाली इनी मेरी,
वैठीक खलोली त्वै भात !
रत नी दिने रैबार, तू कैन बुलाई इं रात ?
पिगली गलवाड़ी छांया पड्या,
नि लगे प्यारा को हात !
रिप त यनु चढ़े बंठीया,
रिंगदा चितेल्या गैणा,
जु तू यख आई छयो,
मैं तेरी लगदी माँ या वैण ?

—तेरा स्वामी परदेश है, पर तुझमे मेरे प्राण हैं !
क्या खूब मुखड़ा है तेरा, तुझे आरसी भी क्या शोभेगी ?
शत शाप जाये तेरे माता-पिता को,
जिन्होंने तुझे यहा ब्याहा !
तू रात को तारे गिनती है,
और दिन को पेड़ों के पत्ते,
तू मेरे हृदय मे ऐसी शोभती है,
जैसे बाज का अगार !
न तूने दिल का भौंरा ही देखा,

श्रोर न मायके की भूमि ही ।
तेरा बाप यदि मुझे तेरा हाथ दे देता,
तो मैं गांव का रिश्ता भूल जाता—
तेरी इन आखों के लोभ में ।
तू सोने का पात्र है श्रोर मैं पृथ्वी का मूल्य,
मेरी घर की गृहिणी ऐसी है—
कि वह तुझे बिठाकर खिलाएगी !'
'न किसी ने बुलाया, न सन्देश ही दिया,
तुझे इस रात किसने बुलाया ?'
'तेरे पीले गालों पर काली छाया पडी है,
उन पर प्रिय के हाथो का स्पर्श नहीं हुश्रा !'
रमणी को तब ऐसा रोष चढा
कि (बकता श्रागन्तुक ने) तारो को घूमते देखा !
'तू यहां क्या समझ कर चला आया—
मैं तेरी क्या लगती हूं ?—बहिन या मां ?'

मेरी किस्मत

मायके में बडे लाड़-प्यार से पली बालिका को जब ससुराल में पति-वियोग श्रोर साहूकारो की यातना सहनी पडती है तो वह अपनी असमर्थताश्रों के बीच छटपटाती बिलखती है । प्रस्तुत गीत उसी अवस्था का करुण चित्र है ।

चले रेल भै, बाजे ती सीटी,
निरदया स्वामी नी देन्दा चीठी !
नाणी का जाज मोड्यों तर,
निरदया स्वामी नी श्रौंदा घर !
फूलू मा सब फूल फूली गैन,
निरदया स्वामी मैं भूली रैन !

जौं वैएयोंन काटे रौल्यों घास,
सी वैणी होईन मिडिल पास।
जौं वैएयोंन सारे तौल्यों पाणो,
सी वैणी होईन रजौं की राणी।
वावान दिन्या खूटू का वूट,
कर्मन वोले भ्‍रगोरो कूट।
वावान दिन्या दस रुप्या फीस,
किस्मतन वोले मँडुवा पीस।
वावान दिने मखमल आंगी,
कर्मन वोले—तिन रण नॉगी।
वावान दिने जम्फर-साड़ी,
सासून दिने देली मां को वाड़ी।
मैं छऊँ वावा राजों का लैख,
मैं सणी नी मिले सौंजड़्या वैख।
वावान दिने मैं डेल परात,
आइन सौकार ली गैन रात।
स्वामी जी मेरा वीदेश पैटूया,
तुमारा सौकार छाजा मा वैठूया
एक रात क स्वामी घर आन,
अपणा सौकारू समभाई जान!
नाक की नथूली सौकारू धौलो,
अपणा स्वामी मैं घर वुलौलो।
दगड़्या भग्यानू की लोड़ी-जोडी,
मेरी किस्मत सौकारून फोड़ी।

—जव से रेल चली, सीटी वजी,
तव से निर्दयी स्वामी ने पत्र नहीं दिया।
वे पानी के जहाज मे न जाने कहाँ मुड ग।

निर्दयी स्वामी अब घर नहीं आते ।
जितने फूल थे, सब फूल गये हैं,
पर निर्दयी स्वामी मुझे फिर भी भूल रहे हैं ।
जिन बहिनों ने कल तक घाटियों में घास काटा था,
वे आज मिडिल पास हो गईं !
जिन बहिनों ने कल तक तौलियों में पानी भरा था,
वे आज राजाओं की रानिया बन गई हैं ।
(पर मेरा भाग्य) पिता जी नें मुझें पहिननें को जूते दिये,
पर भाग्य ने मुझसे कहा—तू सवा कूट ।
पिता जी स्कूल में मेरी दस रुपये फीस देते थे,
पर मेरे भाग्य ने कहा—जा, मडुवा पीस !
पिता जी मखमल की अंगिया लाकर देते थें,
भाग्य ने कहा—तुझे तो नंगा ही रहना है ।
पिता जी नें जम्फर और साडी लाकर दी,
सास नें मुझे देहली पर खाना खिलाया ।
पिता जी, मैं राजा के लायक थी,
मुझे समवयस्क पति नहीं मिला ।
पिता जी ने मुझे दहेज में जो बर्तन दिये थें,
साहूकार आये और रात ही सब उठा कर ले गये ।
जैसे ही मेरे स्वामी परदेश को चले,
वैसें ही उनके साहूकार छज्जे पर आ बैठे ।
एक रात को आओ पर घर आओ स्वामी,
अपनें साहूकारों को तो समझा कर जाओ ।
साहूकारों को मैं नाक की नथ दूँगी,
पर अपनें नाथ को घर बुलाऊँगी !
मेरी भाग्यवती सहेलियों के साथ उनके पति हैं,
किन्तु मेरी किस्मत तो साहूकारों ने फोडी है ।

रैबार

इस गीत में प्रोषितपतिका अपनी दीन हीन अवस्था से अपने पति को परिचित करवाती है। उसे पति का अभाव ही नहीं खल रहा है वरन् गरीबी के हाथों भी वह पीसी जा रही है।

लोण भरे दोण,
परदेस गैन स्वामी बीस गते सौण।
बाखरा की खाल,
तुम सणी जॉया दुई ह्वैन साल।
सुपा लाई पींटी,
अफू भी नी आया, नो आई चीठी।
हवा को रुख,
तुम बिना मेरा स्वामी भौत छन दुख।
गला को हार,
खाण नी देन्दू सेण घर मू सौकार।
दूकानी को नफा,
लाणूक थेकली नी, खाणूक गफा।
सावण को भाग
रूखा-सूखा भँगोरा मा पौंदी नी साग।
बासी त कफू,
गेऊँ सौकारू दियाल्या कोदू खांदा अफू।
रिंगाली को पला,
धोती केकू होण स्वामी टलों पर टला।
बाखरा की धौण,
काकर टूटेगे स्वामी, कैन स्यो सल्यौण?
औंलू को अचार,
पोंगडी नी छन रईं, टूटी गया पगार।

मोल केकू होरा स्वामी, गौड़ी नी न भैंसी।
मोटो बट्यो रसा,
तुमन क्या जारान, क्या च मेरी दसा।
नारंगी की दाणी,
तुमारी माया को स्वामी, गोट्यू छ पराणी।
बखरा की गूदी,
जवानी या आये स्वामी, कटेणे या सूदी।
आटो च गीलो,
जवानी चली गए स्वामी, तन होये क्वीलो।
बूणी जाली माणी,
ई अलसाईं डाली उन्दू धोली जावा पाणी।
—(एक द्रोण नमक भरा,)
नाथ, तुम बीस गते सावन परदेश गए थे।
(बकरी की खाल,)
तुम्हें गए हुए दो साल हो गए हैं।
(सूप बनाई,)
न तुम अपने आप आए और न चिट्ठी ही दी।
(हवा का रुख,)
स्वामी, तुम्हारे बिना मुझे बहुत दुख है।
(गले का हार)
घर पर साहूकार खाने सोने नहीं देता।
(दूकान का नफा),
पहिनने के लिए चिथड़ा नहीं, खाने के लिए टुकड़ा नहीं।
(साबुन का झाग,)
रूखे-सूखे सत्तू के साथ साग भी नसीब नहीं।
(कफू बोला,)

गेहूं हमने साहूकारों को दे दिए खुद मडुवा खाते हैं।
(रिंगाल की चटाई,)
धोती कहां से आयेगी स्वामी, टल्लों पर टल्ले लगे हैं!
(बकरी की गर्दन,)
घर की छत टूट गई है, स्वामी, ठीक करने वाला कोई नहीं।
(आंवले का अचार,)
खेत अब बचे नहीं हैं, उनकी दीवालें टूट गई हैं।
(इस तरह पैसे ढले,)
खाद कहां से होनी है स्वामी, न गाय है, न भैंस।
(मोटी रस्सी बनाई,)
तुम क्या जानो स्वामी मेरी क्या दशा है।
(नारंगी का दाना,)
तुम्हारे प्यार के कारण यह प्राण रोक रखा है।
(बकरी का गूदा,)
जवानी आई थी स्वामी, व्यर्थ ही कट गई।
(गीला आटा,)
जवानी चली गई है स्वामी, तन कोयला हो गया।
(माणी बुनी गई,)
इस मुरझाये पौधे के ऊपर पानी डाल जाओ।

चिट्ठी मेरी लिख देणी

चिट्ठी मेरी लिख देणी कब आला डेरा वो,
नौनी नौना भूखन मर्‍या अबका अन्न काल मा।
एक नौनू पढ़दू छयो दरजा सात मा,
उभी गुजरी गए ये जी न्याली गत मा।
तुमन नी देख्या स्वामी बेहाल मेरा वो,
मैं अभागी रोंदी रयूं सारा साल मा।

धोती फटी गए मेरी, आंगड़ी नी आंग मा,
लोग चूनी चूनी नौऊँ धरदा भूख नॉग मा।
भैंसी मोल लिनी छई दस बीसी तीन मा,
वा भी लॅमडी गए ये जी आज दीन मा।
मैन नथूली बेची-याले, नौंनों का प्यार मा,
सौकार आई जाँदू कै भी दिन कै भी वार मा।
मेरी चिट्ठी लिख देणी, कब आला डेरा वो,
नौनी नौना भूखन मर्‌या अबका अन्न काल मा।

—मुझे पत्र लिख देना कि तुम कब घर आओगे !
इस अन्नकाल में बाल-बच्चे भूख से मर गए हैं।
एक लडका सातवें दर्जे में पढता था,
हे आर्य, वह भी कल रात मर गया !
स्वामी, तुमने मेरे वे बुरे हाल नहीं देखे,
मं अभागिन सारे साल भर रोती रही हू।
मेरी धोती फट गई है, अग पर अगिया भी नही बची है।
लोग भूख-नांग में चुन कर नाम रखते हैं।
दस कोड़ी और तीन में एक भंस खरीदी थी
वह भी आज दुपहर को गिर गई।
मंने बच्चों के प्यार में नथ बेच दी है,
साहूकार किसी भी वार, किसी भी दिन चला आता है !
मेरी चिट्ठी लिख दो, वे कब घर आयेगें,
बाल बच्चे सब इस अन्न काल में भूख से मर गए हैं।

आयो मैनो रुमैलो

आयो मैनो रुमैलो, आयो मैनो झुमैलो !
लाल पींगला फूलून डाडी कॉठी खिलीन।
घूघूती वा वासदी फांग्यो बैठीक,

कफू कफू वासदो, डाल्यों डाल्यो नाचीक।
स्वामी मेरा परदेश, कोट-पैंट मा अड़्या छन,
कोट पैंट पैरिक, रंग मा भुल्यॉ छन !
आयो मैनो रुमैलो, आयो मैना भुमैलो !
चिट्ठी नी ऑंदी ऊंकी, मन मा क्या सुर्भी छ,
जिकुड़ी मेरी रोई रोई या रुर्भी छ।
हिलासी, हिलॉसी, वात तू मेरी सुणी जा,
दूध भातो खिलौला, वात तू मेरी सुणीजा।
चिट्ठी नी पत्री ऊंकी मन मा क्या रुर्भी छ,
आयो मैनो रुमैलो, आये मेनो भुमैलो।

—मन रमाने वाला महीना आया है, झुमैलो !
लाल और पीले फूलो से पर्वत खिल उठे है,
घूघती डाल-डाल पर वैठी बोल रही है,
फफू डाल-डाल पर नाचता हुवा बोल रहा है।
मेरे स्वामी परदेश मे ही कोट पैण्ट पहने अड़े है,
कोट पैण्ट पहनकर रग मे भूले हुए है।
रमणीक महीना आया है, झुमा देने वाला महीना आया है।
उनकी चिट्ठी पत्री नहीं आई है, न जाने उन्हे क्या सूझी है,
रो रो कर मेरा हृदय भीग गया है।
हे हिलास, तू मेरी वात सुन ले,
तुझे दूध भात दूंगी, मेरी चिट्ठी ले जा !
उनकी चिट्ठी पत्री नहीं आती, न जाने क्या सूझी है,
दिलको रमाने वाला महीना आया है, झुमैलो !

वारहमासी

फागुण मास फगुणेटु वाई,
तीन मेरा स्वामी मुखडी लुकाई !

चैत मास बुती जाला धान,
मिन खरी खाये स्वामी का बान।
बैसाक मैना लव्वी जाला गेऊँ,
स्वामी विदेश, कनकैक जेऊँ!
जेठ का मैना बूती जाला धान,
मी झूरी गयूं स्वामी का बान।
सौण का मैना रुणभुण्या पाणी,
कु रॉड जॉदी, बिन स्वामी धाणी।
भादों का मैना रौला काट्या बौला,
ऐ जावा स्वामी, मौज मा रौला।
असूज मैना धान लवाई,
तिन मेरा स्वामी, भात नी खाई।
कातिक मैना जोन बादलू बीच,
हा, मेरो स्वामी, घर नी च।
मंगसीर मैना फूली जाली लैण,
स्वामी का बिना कनी कैक रैण!
माघ मास कुखड़ी घुराई,
तिन मेरा स्वामी, मुखड़ी भुराई।
बार मैनों की बारमासी गाई,
घाघरी फटीक घुंडू मकी आई।
बार मैनों की बारमासी गाई,
तब विटी ऊँकी चीठी नी आई।

—फागुन के महीने में हल चलाया गया,
तूने मेरे प्रिय, अपना मुँह छिपा दिया!
चैत के महीने धान बोये गए,
मैंने स्वामी के लिए कितने कष्ट उठाए।
बैसाख के महीने गेहूँ की फसल काटी गई,

मैं स्वामी के बिना कैसे जाऊं ?
जेठ के महीने मँडुवा बोया गया,
मेरे स्वामी, तुमने मुझे कितना रुलाया !
आषाढ़ के महीने धान गोड़े गये,
मैं प्रिय के लिए घुल घुल कर मर रही हूँ !
सावन के महीने रिमझिम पानी बरसा,
पति को छोड़कर कौन अभागिन काम पर जायेगी !
भादो के महीने तालाबों से नहरें निकालीं,
आ जाओ स्वामी, हम मौज में रहेंगे !
असूज के महीने धान काटा गया,
मेरे स्वामी, तुमने भात नहीं खाया !
कार्तिक के महीने चन्द्रमा बादलों के बीच शोभता है,
किन्तु मेरे स्वामी मेरे पास नहीं ।
मगसीर के महीने सरसों फूली,
स्वामी के बिना मैं कैसे रहूंगी !
माघ के महीने मुर्गे बोले,
तेरे कारण हृदय व्यथित है स्वामी !
बारह महीनों की बारह मासी गाई,
मेरे प्रिय, तूने मुखड़ा छिपा दिया !
बारह महीनों की बारह मासी गाई
घाघरी फटकर घुटनों तक पहुंच गई है !
बारह महीनों की बारहमासी गाई,
तबसे उनकी चिट्ठी नहीं आई !

बारहमासो—२

आयो मैनो चैत को, हे दीद्यों, हे राम,
उठिक फुलारी झुसमुस, लै गैन काम !

मैनों आयो वैसाग को, सुख की नो आस,
ग्यों जौ का पुलों मुड़े, कमर पडीगे झास।
आयो मैनो जेठ को, भक्को ह्वैगो भौत,
स्वामी मेरो घर नी, समझी रयू मैं मौत !
मास पैलो बसगाल को आयो यो असाड,
मैं पापणी झुरि झुरि मर्यूं मास रयो न हाड।
मास दुसरो बसगाल को आयो स्यो सौण,
चिठी नी पतरी ऊँकी कु जाणी कब घर औण !
मास आयो भादों को डॉडू कुरेडी लौंखी,
तेरी खुद स्वामी जिकुड़ी मा बिजुली-सी चौंकी।
आयो मैनो असूज को बादल गैन दूर,
जोन काठों मा औंदी, जिया लाग बूरू !
आई दिवाली कातिकी, चढे घर घर तैकू ?
यूँ दिन स्वामी का बिना ज्यू लगदू कैकू ?
आयो मैना मंगसीर को हे वैण्यों, हे राम,
स्वामी की खुद मा हाड रयो न चाम।
पूष मास की ठंड बडी थर थर कपद गात,
कनि होली भग्यान सी पति जौंका सात।
लगी मैना माघ को गौं गौं छन ब्यो,
ब्योली ऑखी झुकैक ब्यौला से मिलदी हो !
फागुण मैना आये, हरी भरी ह्वैन सारी,
मी झूरि झूरि मरियू एकुला बादर की चारी !

—चैत का महीना आया, हे बहिनों, हे राम !
अधेरे में ही उठकर फूलहारी, काम पर जुट गई।
वैसाख का महीना आया, सुख की आश कहां ?
गेहूँ के बोझ के नीचे कमर पर लोच आ गई है।
जेठ का महीना आया, बहुत उमस हो गया है,

मेरे स्वामी घर नहीं, मैं मौत समझ रही हूँ।
बरसात का पहिला महीना आषाढ आया,
मैं पापिन झूर झूर कर मरी, न हाड रहा, न मांस।
बरसात का दूसरा मास सावन आया,
उनकी चिट्ठी नहीं आई, न जाने कब घर आवें!
भादो का महीना आया, पर्वतों पर बादल उमडे
स्वामी, तेरी याद हृदय पर बिजली-सी चमकी।
असौज का महीना आया, 'बादल दूर चले गये,
जब चाद काठो पर आया तो मेरे हृदय को बुरा लगा।
कातिक की दीवाली आई, तेल के पके भोजन बने,
इन दिनो स्वामी के बिना किसका जी लगता है?
मंगसर का महीना आया, हे बहिनो, हे राम!
स्वामी की याद में मेरा न हाड रहा, न चाम!
पूप मास की ठंड बडी, गात थर थर कांपता है,
कैसी भाग्यवती हैं वे, जिनके पति साथ हैं!
माघ का महीना आया, गांव गाव में व्याह हुए,
दुल्हनें दूल्हों से आंख मिलाकर मिलीं!
फागुन के महीने खेत हरे-भरे हुए,
किन्तु मैं पापिन अकेले बंदर की तरह दुखो में ही घुलती रही।

ऊँ की खुद

फूल फूलेन अनमन भांति,
बॉज बुरॉस की कोंपली मौली।
आये वसन्त प्यारो,
कुई फूल फूले ब्याले,
कुई फूले आज,
भोल फूललो कुई फूल प्यारो।

फूलू फूलू मा मारी रुणाली,
कली कली मा भौंरों को राज ।
सभी लयाड़े छन फूलीं,
भौरों की माला लगूल्यों मा झूलणी ।
डाली बोल्दी हरी ह्वे न, पंछियों की बोली प्यारी,
कखी घूघूती घुरघुर घूरदी
रितु बसन्त की चाँदना भांझे,
वास्या चकोर खेतु मा !
मैंन सोचे स्वामी घर आला,
मैं ऊँकी खुद मा गयूं मर ।

—भाति भाति के फूल खिले,
आज और बुरांस मुकुलित हुए !
प्यारा वसन्त आया है,
कोई फूल कल फूला,
कोई आज,
और कोई प्यारा फूल कल फूलेगा !
फूल फूल पर भौंरों का राज है
कली कली पर मधुकरियां गुनगुनाएंगी !
सभी सरसो के खेत फूले हैं,
भौंरों की माला लताओं पर झूम रही है ।
पेड़ पौधे हरे-भरे हुए, पंछी प्यारे बोल बोलने लगे,
कहीं घूघूती 'घुरघुर' बोलती है,
बसन्त ऋतु की चांदनी में,
चकोर खेतों में बोले !
मैंने सोचा था प्रिय घर लौटेंगे,
किन्तु मै उनकी याद में सूखकर मर रही हूं ।

खुदेड़ गीत

मायके के स्मृति-विषयक गीत

गढवाल की लडकी भी विधाता की विचित्र सृष्टि है।

पर्वत की उस ऊँची चोटी पर वह रोज घास काटने, भेड चराने आया करती है। वहा पर उसने एक डाली (छोटा पेड़) रोपी हुई है। उसे वह 'मायके की डाली' कहकर पुकारती है। रोज उसके पास बैठकर मायके की याद बिसराती है, मा बाप को उलाहना देती है और अपने भाग्य को कोसा करती है। सामने खड़े विशाल काय पर्वत उसकी प्रार्थना पर नहीं पसीजते, घने चीड उसकी वेदना को नहीं सुनते! पिता का देश देखे उसे वर्षों हो गये। तब वह अनजान बच्ची थी। एक दिन उसके पिता के आंगन में ढोल बजे। पाल्की में बैठकर दूर देश से कोई परदेशी आया और उसे चार पहाडो से भी दूर अपने घर ले गया! ससुराल की कल्पना से तभी उसका हृदय सिहर उठा था। 'काले पहाड के पीछे पिता जी, काले बादल हैं'—उसने कहा था—'मुझे वहां जाते डर लगता है!' वहा कौन उसका अपना था? नया घर था, नया पानी, नए पहाड, नए खेत! उस पर भी पति ममत्वहीन और सास अधिकार की कटु गुरुआनी!

'ससुराल' उसके लिए भयंकर शब्द होता है! वहा बर्छियो की जरूरत नहीं, तलवारों की कमी नहीं—व्यग, गालियां, कडुवे बोल क्या इनसे कम हैं? कनफटे जोगी जैसे कभी कान फडवाकर, मुड मुंडवाकर नए चेलो से कठिन साधना कराते थे, उससे कम यातना सास नहीं देती!

ससुराल की ऐसी रूखी जिन्दगी बरबस उसके ख्यालों को मायके की ओर ला मोडती है! माता-पिता के बाल्यकाल के व्यवहार और स्नेह की शीतल छाया में वह ससुराल की जिन्दगी के सताप को आसू की बूंदो से धो देना चाहती है। स्वभावत खीझ और रीझ की एक

मिली-जुली भावना से वह उन्हें याद करती है। कभी शाप देती है, कभी उलाहने भेजती है! किन्तु फिर भी मा के प्रति वह ममतामयी है और पिता के प्रति श्रद्धामयी। भाई का मुख देखने को वह तड़पती दीखती है! किन्तु मायके के लोग समवेदना ही तो प्रकट कर सकते हैं। हृदय पर काटो की तरह कसकते अभावों की पूर्ति तो वे भी नहीं कर सकते! परायी वहू को मायके की सुखमय गोदी कुछ समय के लिए ही तो मिल सकती है। मायके के पहाड, वन और नदियां कुछ ही दिनो तक तो सामने रह सकते हैं। फिर तो सारा जीवन ससुराल का ही होता है। किन्तु कभी सुख का, स्नेह और शाति का एक पल भी जीवन को अमर कर जाता है। जैसे हाडी में पकते चावल का एक दाना उबाल के साथ बाहर आने को छटपटाता है, उसी तरह लडकिया मायके के लिए तरसती हैं। पहाडो पर फूल खिलते हैं, और न जाने क्यों उनके हृदय उदासी से भरने लगते हैं?

चैत का महीना आता है। खेतो की मींडो पर फ्यूंली खिलती हैं, डांडो में बुरास अगारो की तरह फूल उठते हैं और सरसों की बाडियो में मधुकरियां गुनगुनाने लगती हैं। हिलांस, कफू और घूघती के स्वर वृक्षों से झरते सुनाई देते हैं। ये पक्षी गढवाल के लोक गीतो में विरह के प्रतीक रूप में प्राय आया करते हैं। इन सबके जीवन में गढवाली बालिका अपने ही कोमलतर हृदय की छाया पाती है! अतः उसकी खुद (मायके की स्मृति) और वियोग की भावनाएं इनकी वाणी के अचेतन स्पर्श से जाग्रत हो उठती हैं!

प्रकृति के जीवन-खडो में उसे अपनी ही सोई वेदना की जाग्रति दीख पडती है। क्या कफू और हिलास के स्वर, क्या भौंरों की गूंज क्या गेहूं-जौ के हरे-पीले खेत, क्या फूलो भरी पहाडियां सभी उसकी चेतना को झकझोर देते हैं! प्रकृति के इस खिले रूप की कल्पना वह मायके में ही करती है—मायके में फूल खिले होंगे, हिलांस बोलती होगी! काश, वह उन्हें देख पाती! किन्तु जब वह अपने को विवश

मायके के स्मृति-विषयक गीत

गढ़वाल की लडकी भी विधाता की विचित्र सृष्टि है !

पर्वत की उस ऊँची चोटी पर वह रोज घास काटने, भेड चराने आया करती है। वहा पर उसने एक डाली (छोटा पेड) रोपी हुई है। उसे वह 'मायके की डाली' कहकर पुकारती है। रोज उसके पास बैठकर मायके की याद बिसराती है, मा बाप को उलाहना देती है और अपने भाग्य को कोसा करती है। सामने खडे विशाल काय पर्वत उसकी प्रार्थना पर नहीं पसीजते, घने चीड उसकी वेदना को नहीं सुनते ! पिता का देश देखे उसे वर्षों हो गये। तब वह अनजान बच्ची थी। एक दिन उसके पिता के आँगन में ढोल बजे। पाल्की में बैठकर दूर देश से कोई परदेशी आया और उसे चार पहाडों से भी दूर अपने घर ले गया। ससुराल की कल्पना से तभी उसका हृदय सिहर उठा था। 'काले पहाड के पीछे पिता जी, काले बादल हैं'—उसने कहा था—'मुझे वहा जाते डर लगता है !' वहा कौन उसका अपना था ? नया घर था, नया पानी, नए पहाड, नए खेत ! उस पर भी पति ममत्वहीन और सास अधिकार की कटु गुरुआनी !

'ससुराल' उसके लिए भयंकर शब्द होता है ! वहा बर्छियो की जरूरत नहीं, तलवारों की कमी नहीं—व्यग, गालियां, कडुवे बोल क्या इनसे कम हैं ? कनफटे जोगी जैसे कभी कान फडवाकर, मुड मुडवाकर नए चेलों से कठिन साधना कराते थे, उससे कम यातना सास नहीं देती !

ससुराल की ऐसी रूखी जिन्दगी बरबस उसके ख्यालो को मायके की ओर ला मोडती है ! माता-पिता के बाल्यकाल के व्यवहार और स्नेह की शीतल छाया में वह ससुराल की जिन्दगी के सताप को आसू की बूंदो से धो देना चाहती है। स्वभावत खीझ और रीझ की एक

मिली-जुली भावना से वह उन्हें याद करती है। कभी शाप देती है, कभी उलाहने भेजती है। किन्तु फिर भी मा के प्रति वह ममतामयी है और पिता के प्रति श्रद्धामयी। भाई का मुख देखने को वह तड़पती दीखती है। किन्तु मायके के लोग समवेदना ही तो प्रकट कर सकते हैं। हृदय पर काटो की तरह कसकते अभावों की पूर्ति तो वे भी नहीं कर सकते। परायी बहू को मायके की सुखमय गोदी कुछ समय के लिए ही तो मिल सकती है। मायके के पहाड, वन और नदियां कुछ ही दिनो तक तो सामने रह सकते हैं। फिर तो सारा जीवन ससुराल का ही होता है! किन्तु कभी सुख का, स्नेह और शाति का एक पल भी जीवन को अमर कर जाता है। जैसे हांडी में पकते चावल का एक दाना उबाल के साथ बाहर आने को छटपटाता है, उसी तरह लडकियां मायके के लिए तरसती है। पहाडो पर फूल खिलते है, और न जाने क्यो उनके हृदय उदासी से भरने लगते हैं?

चैत का महीना आता है। खेतों की मींडों पर पयूंली खिलती है, डांडो में वुरास अगारों की तरह फूल उठते हैं और सरसो की बाडियो मे मधुकरियां गुनगुनाने लगती हैं। हिलास, कफू और घूघती के स्वर वृक्षों से झरते सुनाई देते है। ये पक्षी गढवाल के लोक गीतो में विरह के प्रतीक रूप में प्राय. आया करते हैं। इन सबके जीवन में गढवाली वालिका अपने ही कोमलतर हृदय की छाया पाती है! अत. उसकी खुद (मायके की स्मृति) और वियोग की भावनाएं इनकी वाणी के अचेतन स्पर्श से जाग्रत हो उठती हैं।

प्रकृति के जीवन-खडों में उसे अपनी ही सोई वेदना की जाग्रति दीख पड़ती है। क्या कफू और हिलास के स्वर, क्या भौंरो की गूंज क्या गेहूं-जौ के हरे-पीले खेत, क्या फूलो भरी पहाडियां सभी उसकी चेतना को झकझोर देते हैं! प्रकृति के इस खिले रूप की कल्पना वह मायके में ही करती है—मायके में फूल खिले होगे, हिलांस बोलती होगी! काश, वह उन्हे देख पाती! किन्तु जब वह अपने को विवश

पाती है तो मन मसोस कर रह जाती है ! केवल मा को कोस लेती है—'जिनकी माताएँ होंगी, वे अपनी बेटियो को मायके बुलायेगी !' उसकी भी माँ है, पर वह उसे मायके बुलाती ही नहीं।

माँ की भाति ही बहिनों को भाई बहुत प्यारे लगते हैं। गढवाली बालिका भाई के स्नेह के लिए बडी आतुर रहती है। भ्रातृहीना बहिनें प्राय: अपने भाग्यों को कोसा करती हैं। वैसे गढवाल में भाई और बहिन के जीवन में बडा अन्तर होता है ! पिता की आखो में पुत्र ही सब कुछ होता है—मरकर वह अपने को उसी में जीवित पाता है ! पुत्री पर माँ अवश्य ममता दिखाती है पर उस पारिवारिक व्यवस्था में जहा पुरुष ही प्रधान होता है, मा कोरी दया और सहानुभूति दिखाने के सिवा कर भी क्या सकती है ? बेचारी लडकी को बचपन से ही घास की एक पूली के लिए बन की खाक छानने का अभ्यास करना पड़ता है। उसके लिए धूप का सवाल नहीं, वर्षा की रोक नहीं। आधी रात में ही उठकर उसें चक्की पर जुतना है ! उसे गोशाला के द्वार खोलने हैं, धान कूटना है, घास-पात की व्यवस्था करनी है और औरो के जागने से भी पहले सूर्य की प्रथम किरणों के साथ खेतो में पहुँचना है। ऐसी स्थिति में वह कभी एक आह भर रह जाती है—'काश मैं लड़की न होकर अपने पिता का लड़का होती !'

यह है पुरुषो की व्यवस्था में उस पर होता आया अन्याय ! उसकी सेवाओं के लिए कोई प्रति दान नहीं। वह केवल श्रम की साधिका एक मशीन है। पुरुष बैठे-बैठे उससे माग करता है मेहनत, काम, पसीना और चाहता है वह शात, सतुष्ट और निरीह बनी रहे !

काश, जीर्ण-शीर्ण व्यवस्था के ये पहाड़ कभी झुक पाते !

१

डॉडू फूले फ्योंलड़ी,
गाड्डू वासे म्योलड़ी,
मैनो आयो चैत को,
झुम झुन वामणी नुन्यारी डाडूं की।
हरी ह्वैन डाली फूलू की,
मैं खुद लगी भूलू की।
कवी मैत मैं जादू नी,
वावा मैं वुलौंदू नी!
खुद लगी मैत की,
जौलु अव भै मू,
जैक खुद विसरौलू,
छकी रोलू वै मू।

—पर्वतो पर फ्यूलो खिली,
नदी के तटो पर चातकी वोली,
चैत का महीना आया,
झींगुर झिन झिन वोल रहे हैं।
फूलो की लताए हरी भरी हो गई हैं,
मैं अभी तक मायके नहीं गई,
पिता मुझे वुलाते ही नहीं।
अव मुझे मायके की सुधि आ रही है,
मैं भाई के पास जाऊंगी,
जाकर सारे दुखों को भुलाऊंगी,
मां के पास जी भर कर रोऊंगी!

२

आई पंचमी मऊ की,
घॉटी हर्याली जऊ की।
आयो मैनो चैत को,
वाटो वतै दे मैत को।

मैत वाली मैत हूली,
निरमैतीणा रोली यखूली ।
नि रोणू छोरी पापणी,
क्वी नी तेरी आपणी !
कका बड़ौं मू रोणू नी,
अपणो रंग खोणू नी !
छकी रोणू वई मुंग,
तव नी रोणू कैई मुंग ।

—माघ की पचमी आई,
घर-घर जो की हरियाली बांटी गई ।
फिर चैत का महीना आया,
अब मुझे मायके की राह तो बता दो ।
मायके वाली मायके में होगी
मायके-हीन अकेली रोयेगी ।
न रो पापिन छोकरी,
यहां कौन तेरा अपना है !
चाचा-ताऊ के पास रोना ठीक नहीं,
अपना रंग इस तरह न खो !
रोना हो तो जी भरकर मा के पास रो,
तब किसी और के पास न रोना ।

३

हे उचि डाँड्यों तुम नीसी जावा,
घणी कुलायों छॉटी होवा,
मैं कू लगी छ खुद मैतुड़ा की,
बाबा जी को देश देखण देवा ।

—हे ऊँचे पर्वतो, तुम नीचे झुक जाओ।
घने चीड़ के पेड़ो जरा छाँटे हो जाओ।
मुझे मायके की 'खुद' लग रही है,
पिता जी का देश देखने दो।

४

मैं छऊँ वैणी, निरदया नगरी,
लोग बोली देंदा मारी,
नऊँ देन्दा धरी!
बरछियों की मार देंदा,
तरवारियों का घऊ।
विदेशी लोक मां जी,
मुंडली मूंडला कंदूड़ी फाड़ला!
जौं की भाख्या नी बींगेन्दी माँ जी,
तौं की गाली क्या सहेली!
जौं को बाटो नी हिटेन्दो,
तौंका पैरू मा कनै सेयेलो?
मेरी जिकुड़ी मा माँ जी,
कुरेडी सी लौखी,
बिजुली सी चौंकी।
—बहिन, मैं निर्दय नगरी में हू,
लोग कड़वे बोल बोलते हैं।
नाम रखते हैं।
बर्छियों की मार करते हैं,
तलवारों के घाव,
अजनबी लोग मां जी,
मुंड मूंडते हैं कान फाड़ते हैं

जिनकी भाषा ही समझ मे नहीं आती,
उनकी गालियां कैसे सहू ?
जिनकी राह चलना ही नहीं आता,
उनके चरणों में कैसे सोऊं ?
इसीलिए मेरे हृदय पर मां,
बादल से लोट रहे हैं,
बिजलिया सी चमक रही हैं ।

५

उलार्‌या मास ऐगे, खुदेड़ बगत,
बार रितु बौड़ी ऐन, बार फूल फूली गैन ।
औंदौ की मुखड़ी न्याल्दू,
जांदौं की पिल्वाड़ी ।
एक दाणी चौलू बोदी, मैं उमली औं,
निरमैतीण छोरी बोदी, मैं मैत जौं !
भग्यान्यौं का भाग होला,
जौंका पीठी जौंला भाई ।
मैत बोलाला, रीत जणाला !
जौं दिशौं ध्याण्यो का गोती होला मैती,
तौ दिशौं ध्याणी मैल जाली देसु ।
सरापी जायान माजी, विधाता का घर ।
जनी कनी पुतरी चुली मां जी,
एक विराली पालदी ।
कुत्ता पालदी, पैरो जागा देन्दो ।
केक पाली होलू माँ जी,
मैं निरासू सी फूल ।

—उन्मत्त मास आ गया है और स्मृतियों को जगाने वाला समय, बारह रितुएं लौट आईं और बारह फूल फूले ।

मैं आते हुओं के चेहरे देखती हूं,
और जाते हुओं की पीठ !
एक दाना चावल कहता है, मैं झट उबलकर बाहर निकलूं ?
मायके विहीन बालिका कहती है, मैं कब मायके जाऊं !
भाग्यवतियों के भाग्य हैं,
जिनके पीछे भाइयों की जोडी है !
वे उन्हें मायके बुलायेंगे, व्यवहार जताएंगे ।
जिन दिशाओं में बहिनों के सगोत्र और मायके वाले होंगे,
उन दिशाओं में बहिनें मायके जाये गी !
माँ, विधाता के घर मेरा शाप जाय !
जैसी-कैसी पुत्री से तो मा,
तू एक बिल्ली पालती,
कुत्ता पालती, द्वार पर पहरा तो देता !
मुझे क्यों पाला मा तूने,
इस निराश फूल को ?

६

वासलो कफू, मेरा मैत्यो कू मैती,
कफू वासलो मेरा मैत्यों की तिर।
कफू वासलो नई रितु बौड़ली,
कफू वासलो मेरी वई सुणली ।
मैकू कलेऊ भेजली ।
वासलो कफू मेरा मैत्यों का चौंक।
मेरा मैती सुणला ऊॅ खुद लगलो,
जोडी सौजड्यों वाडुली लगली।
कफू वासलो मेरा मैत्यों की तिर,
मेरी वई सुणली, भैजी मेरा भेजली,
मैं मैत बुलौली।

—बोल रे बोल कफू, तू मेरा आत्मीय है!
कफू बोल, तू मेरे मायके की ओर बोल!
कफू बोलेगा तो नई रितु लौट आवेगी।
कफू बोलेगा तो मेरी मा सुनेगी।
मेरे लिए उपहार भेजेगी।
बोल रे कफू मेरे मायके के आगन में बोल।
मेरे मायके वाले सुनेंगें, उन्हे मेरी याद आयेगी,
समवयस्कों को हिचकीं लगेगी।
बोल कफू, मेरे मायके की ओर बोल!
मेरी मा सुनेगी तो मेरे भाई को मुझे लिवाने भेजेगी,
मैं मायके जाऊँगी।

७

जावा गैल्याण्यों, तुम मैत जावा,
मेरो रैबार मांजी मू लि जावा।
मालू भैंसी को खटो दई,
बई मा बोल्यान रोणीकि छई।
बाबाक बोल्यान देखीक जाई,
सासु सैसरों समझाई जाई।
—जाओ सखियो, तुम मायके जाओ।
मेरा सदेश मां के पास ले जाना!
मालू भैंस का खट्टा दही मुझे याद आता है,
मा से कहना, वह रो रही थी।
पिता जी से कहना, मेरी हालत देखकर जाना,
सास-ससुर को तो आकर समझा जाना।

८

भादों को मैना बौड़ीक ऐगे,
खुदेड़ पराणी उलारी गैगे।

द्वि दिन अब मैत मैं जौलू,
मै बैणों तैं मिलीक औलू।
मैत की ब्वारी सारा आली,
सासु सैसरियों का हाल बतालो।
घास पात क जू बण जाली,
वण मा गीत मन का लालो।
कनो बितौलू भादौ कू मैना?
मेरी विपता नी देखी केना।
क्या पाये दुन्या मा मैन ऐक,
कबी भलो नी बोले कैन मैक।

—भादो का महीना लौट आया है,
व्यथित हृदय उमगों से भर गया है।
मैं अब दो दिन के लिए मायके जाऊँगी,
भाई-बहिनों को मिलकर आऊँगी।
ससुराल से अब बहुएँ मायके आने लगी होंगी,
वे सास-ससुर की चर्चा करती होंगी।
जब घास पात के लिए वन जाती होंगी
तो वन में मन के गीत गाती होंगी।
मैं भादो का महीना कैसे विताऊँगी,
किसने मेरी विपत्ती नहीं देखी!
दुनिया में आकर मैंने क्या पाया?
किसीने भी मुझे भली बात नहीं कही।

९

आई गैन रितु बौडी, दाईं जमो फेरो,
फूली गैन वण बीच ग्वीराल बुरांस!
झपन्याली डाल्यों मा घूघती घूरली,

गैरी-गैरी गदन्यो मा म्योलड़ी बोलली
उन्चि उन्चि डांड्यों मा •कफू वासलो।
मौलली भाँति भाँति की फुलेर डाले।
गेऊँ जौ की सारी सैरी पिंगली ह्वैन,
राडा की रडवाड़ियों मा मारी रुणाली।
डाँडी काँठी गुंजी ग्वैरू की मुरल्योंन,
गौं की नौनी स्ये गीत वसंती गाली।
जौं की ब्वई होली मैतुड़ा बुलाली,
मेरी जिकुड़ी मा ब्वे, कुयेड़ी-सी लौंखी।

—दाईं के फेरे की तरह मधुमास लौट आया है,
बनो के बीच बुरास और कचनार फूल गये हैं।
पत्तो से भरी डालियों पर घूघुती बोली,
नदियो के गह्वरों में चातकी बोलने लगी है।
ऊँचे ऊंचे वन-पर्वतों पर कफू बोल रहा है,
भाँति भाँति की पुष्पवती लताएँ मुकुलित हो उठी हैं।
गेहूँ जौ के खेत पीले पड गये हैं,
सरसों की क्यारियों में मधुकरियाँ गुनगुनाती हैं।
पर्वत शिखर चरवाहों की मुरली से गूंजते हैं।
गाँव की कुमारिया वसत गीत गाती हैं।
जिनकी माताएँ होगी, वे बेटियो को मायके बुलाएगी।
मेरे हृदय पर तो बादल-से लोट रहे हैं माँ!

१०

बौड़ी ऐन बार मैनों की बार रितु,
रितु बौडी ऐन दाईं जसो फेरो।
बौड़ीक ऐ गये बसत पंचमी,
तब बौड़ीक ऐगे फूल सगराद।

वार फूलू मान, कु फूल प्यारो ?
वार फूलू मान, कु फूल सिरताज ?
सेतु सिरताज छ, रातू मखीमल,
जाई सुरमाई छ, प्यारो फूल गुलाव !
निगन्दू वुरांस डोला-सी गच्छेन्दू ।
वौड़ीक ऐ गए वैसाख विखोत,
वौड़ीक ऐ गए पापड़ी त्यौवार !
जौं दिशौं ध्याण्यों का मैती होला गोती,
तौं दिशौं ध्याणी मैत जाली !
निरमैतीण फ्यूंली देल्यों जाली !
—बारह महीनों की बारह ऋतुएं लौट आई हैं,
दाई के फेरे की तरह रितुएं लौट आई है !
बसंत पंचमी लौट आई है,
तब 'फूल सक्रान्ति' भी लौट आई है !
बारह फूलों में कौन फूल प्यारा होता है ?
बारह फूलों में कौन फूल सिरताज है ?
सफेद फूल सिरताज है, मखमल लाल होता है,
जई और सुरमाई भी अच्छे फूल हैं, गुलाब प्यारा होता है !
गन्ध-हीन बुरास तो डोले की तरह गुच्छा बनाता है ।
विषुवत् सक्रान्ति लौट आई है,
'पापड़ी-त्योहार' भी लौट आया है !
जिन दिशाओं में बहिनों के मायके और सगोत्र होंगे,
उन दिशाओं में वे मायके जायेगी !
पर मायके हीन फ्यूंली लोगों की देहलियों पर जायेगी !

११

फूल फूलेन अनमन भांति मॉ ।
यॉंज वुरॉंस की कोंपली मौलो,

सुमाया, सेलपाड़ो, कूँजो प्यारो,
वन लगुली सबी मौली गयेन।
कुई फूल फूले ब्याले, कुई फूले आज,
भोल फूललो कुई फूल पियारो।
फूलू फूलू मा मारी रुणाली,
कली कली पर भौंरों कू राज।
सबी लयाड़े छन पिंगली फूलणी,
भौंरों की माला लगूल्यों झूलणी।
कखी घूघती घुरघुर घुरदी प्यारी,
रितु वसंत की चांदना मां झे,
वास्या चकोर खेतु का।
—भांति भांति के फूल खिले है मा,
बांज और बुरांस की कोपले निकल आई है।
सुमायां, सेलपाड़ा और कूजा प्यारा लगता है,
बन लताएं सब मुकुलित हो उठी है।
कोई फूल कल फूला, कोई आज फूला,
और कोई प्यारा फूल कल फूलेगा!
फूल-फूल पर मधुकरिया गुनगुना रही है,
कली-कली पर भौंरो का राज है!
सभी खेत पीले होकर सरसों से फूल रहे है,
भौंरों की मालाएं लताओं के ऊपर झूल रही हैं।
कहीं घूघुती घुरघुर बोल रहीं है,
वसत रितु की चांदनी में,
खेतों में चकोर बोल रहे है।

१२

हिसर की गोंदी, भैजी हिंसर की गोंदी,
मैतुडा की बेटी भैजी, आखुडा रोंदी।

बलदृ को व्यवार भैजी, बल्दू को व्यवार,
त्वे डन् जागलू भैजी, जनू पूप त्यवार !
चॉदी को धागुलो भैजी, चांदी को धागुलो,
दिन चार मा भैजी, मैं वैदालु जागुलो !
चुवाई त छोई भैजी, चुवाई त छोई,
ग्तुिडी देग्वीक भैजी, भुमकॉदी रोई !
ग्वल्याणी की दॉदी भैजी, ग्वल्याणी की दादी,
मैतुडा की बेटी भैजी, कनी ललचादी !

—(हिसर की गोदी भाई जी, हिसर की गोंदी,)
मायके के लिये भाई जी बेटी आसु बहाकर रोती है !
(बैलो का व्यापार भाई जी, बैलों का व्यापार,)
मं तुम्हें उसी तरह जागूंगा भाई जी जैसे पूप का त्योहार।
(चांदी के कडे भाई जी, चादी के कडे)
दो चार दिन मे भाई जी, मं तुम्हें यहॉ जागूंगी !
(छोई चुवाई भाई जी, छोई चुवाई,)
एसी रितु देखकर आखो में रुदन छलक उठता है।
(खलिहान की मींड, भाई जी, खलिहान की मींड,)
तुम नहीं जानते भाई जी, मायके के लिये मं कितनी ललचाती हूं ?

१३

वृद्ध पति के दुर्व्यवहार का वर्णन इस गीत मे हुआ है, जिसके लिए लडकी अपने मां बाप को कोसती है, क्योंकि उन्होंने रुपये के लोभ मे आकर उसे वूढे के पास बेच दिया है। इसीलिये मा पर लडकी का यह व्यग कि उन रुपयो से तू नथ बनाकर पहनना, बहुत ही हृदय स्पर्शी है।

हे बई तू नी छ बई मेरी,
मेरा टकों की नथूली पैरी !

बाबान नी देखो बुड्या को रूप,
चूला पिछाडे जिलारा थूप !
बाखड्या भैंसी पनांदी जनी,
बुड्या जवाँई कणादो तनी !
ह्यात को लोट्या ह्यातन छूटे,
बुड्या माचद मैं मान उठे !
पाणी की गागर पन्यारा फूटे,
मौंरू की सोटी मै पर टूटे !
बुड्या की डर मैं सॉदी लूकी,
बुड्यान मैं मुछालौंन फूकी !
घास गडोली मैंन काटी,
दूद की वाटी बुड्यान चाटी !
नी जाई बुड्या तू ई मैनी पोर,
निंदरा लगीगे मैं घन घोर !
घास गडोली बांधदीं जबी,
बुड्या की याद मैं औंदी तबी !
सुणले माँ, तू मेरी वाणी,
बुड्या देखीक टूटे अन्न पाणी ।
—हे मा, तू मेरी मां नहीं,
मेरे टकों से नथ बनाकर पहिनना !
पिता जी, तुमने भी बूढे का रूप नहीं देखा,
चूल्हे के पीछे बलगम का ढेर तो देख लेते !
भैंस के दूहते हुए जैसी आवाज होती है,
त्यो ही बुड्ढा बैठा कराहता रहता है !
मेरा हाथ में लिया लोटा हाथ से छूट गया,
जब बूढ़ा मुझे पीटने को उठ खड़ा हुआ !
पनघट पर गगरी फूट गई,

तब क्या था, मोरू की लाठी मेरे ऊपर टूटी !
बूढ़े की डर मे मैं कोने पर छिपी,
बूढे ने मुझे जलती लकडी से जलाया !
घास का बोझ मैं काटती हूं,
और दूध के कटोरे बूढा चट करता है !
बूढे, तू इस महीने से आगे तेरी जिन्दगी न जाये,
सोने दे, मुझे गहरी नींद आ रही है !
घास का बोझ बाधकर जब मैं घर लौटती हूँ
तो बूढे का खयाल (कांटे-सा कसकता) आ जाता है !
मेरी माँ, मेरी बात सुनो !
बूढे को देखकर मेरा अन्न-पानी टूट गया है !

१४

बद्री की बेटी रामकेशी नो छ,
सौरयास बौं को छ्वे बडेती गो छ !
चल बेटी केशी, मुंडी हाती धोले,
मुंडी हाती ध्वेक छ्वे सौरयास जाली !
बडेती गों छ्वे, मिल नी जाणू,
तै पापी गों छ्वे, मुंगर्यो कू ख्याणू !
माटा की खाणी खणी जालो माटो,
तनी दूरू पाणी छ्वे, उकाली बाटी !
तेल कडाई जनो लायो साग,
तनी मेरी सासु छ्वै, तनी मेरो भाग !
—बद्री की बेटी है वह, रामकेशी उसका नाम है,
ससुराल उसकी बडेती गाव मे है !
'चल बेटी केशी, सिर और हाथ तो धो ले !
सिर और हाथ धोकर तू ससुराल जायेगी !

'नहीं मा, बड़ेती गाव में नहीं जाऊँगी,
उस गाव में मकई का खाना है !
मिट्टी को गहरे में खोदकर भी
जो पानी निकला, वह दूर है, रास्ता भी चढ़ाई का है।
तेल की कड़ाही में जिस पर साग पकता है,
उसी तरह मेरी सास है, और वैसा ही मेरा भाग्य !

१५

वासी त सेंटुली जिया, वासी त सेटुली,
नो जॉदू सौर्यास जिया, न बॉध भेटुली ।
वासो त मलेऊ जिया, वासी त मलेऊ,
नो जादू सौर्यास जिया, न खैरड कलेऊ ।
डाला की जड़ जिया, डाला की जड़,
बॉजा पड़ी जाया जिया, ते चौपता पड़ !
चरी जाली भेरो जिया, चरी जालो भेरो,
बावै का डॉडा जिया, चौखाल बसेरो ।
पकी त भोज जिंया, पकी त भोज,
सासू रॉड दे दी जिया, आदा रोटी रोज ।
फूली जाली लैण जिया, फूली जाली लैण,
जवैं मेरो छोटो जिया, सासू मेरी डेण !
मसेटो मेवाई जिया, मसेटो मेवाई,
स्रापी जायान जिया, कुघरू बेवाई ।
—(सेटुली चिड़िया बोली माँ, सेटुली चिड़िया बोली !)
मैं ससुराल नहीं जाऊँगी मा, मेरी वेणी न गूँथ ।
(मलेऊ चिडया बोली माँ, मलेऊ चिड़िया बोली !
मैं ससुराल नहीं जाऊँगी मां, मेरे लिए कलेवा न बना !
(पेड की जड मा, पेड की जड़ !)
—— —— पहाड, मा, उजाड हो जाय !

(भेड चरी मा, भेड चरी,)
चावं के डांडे पर मा, चौराहे पर हमारा घर है !
(भोजन पका माता, भोजन पका,)
मेरी सास मुझे रोज आधी रोटी देती है मां !
(सरसों फूली मा, सरसो फूली,)
मेरा पति छोटा है मां, और सास डायन है !
(मसेटो गीला हुआ मा, मसेटो गीला हुआ !)
तुम्हे मेरा शाप है मा, जिन्होने मुझे बुरे घर मे व्याहा !

१६

कूटला का वेड मा जी, कूटला को वेड,
सासू जोन करे मॉ जी, जिकूडी को छेड !
खल्याणी को दॉटू मा जी, खल्याणी को दॉटू,
छंछेड़ा की बाटी मा जी मन मारी खॉटू !
चरी जाला गोरू मा जी चरी जाला गोरू,
सूखी देन्दी रोटी मॉ जी लोण देन्दी कोरू !
खाई जालो घीऊ मा जी खाई जालो घीऊ,
सासू जी को लग्यू मा जी दुई रोटी डीऊ !
दुवनी खोटी मा जी, दुवनी च खोटी,
सासु यनी बोदी मां जी त्वारी ह्वैगी मोटी ।
नारंगी की दाणी मॉ जी, नारंगी की दाणी,
त्वारो ह्वैगी मोटी मॉ जी, कू करलू धाणी !
बाखरा की बोटी मॉ जी, बाखरा की बोटी,
सासु मेरी मा जी, गाली देन्दी खोटी !
गाडी गगडांदी मॉ जी, गाडी गगडादी,
घर म औंदू मां जी, सासू ककडादी !
पकी त पूरी मा जी, पकी त पूरी,

तुमारी छै लाडी मा जी सैसर्यों की चूरी !
काटी त खडीक मा जी, काटी त खडीक,
तेरी कोली रला माॅ जी, तेरा स्ये लड़ीक !
सिर को फूल माॅ जी, सिर को फूल,
बाब् को लडीक होदो माॅ जो रदी इस्कूल !
मसेटो मेवायो मा जी, मसेटो मेवायो,
बाबा को मैं बैरी माॅ जी, विदेसू वेवायो !
घूघूती घुराई माॅ जी, घूघूती घुराई,
ब्वै का लाडा ब्वै मू होला मैं बेटी दुराई !
—(कुटले का बेंटा, माँ जी, कुटले का बेंटा,)
मा जी, सास ने मेरे हृदय को चलनी बना दिया है ।
(खलिहान की दीवाल मा जी, खलिहान की दीवाल,)
जो खाना वह मुझे खाने को देती है, मैं मन मारकर खाती हूं !
(गायें चरीं मा जी, गाये चरी,)
मा जी, वह खाने को सूखी रोटी देती है और कोरा नमक !
(घी खाया माँ जी, घी खाया,)
मा जी, सास का हर रोज दो रोटी का 'ड्यू' लगा है !
(खोटी दुवन्नी मा जी, खोटी दुवन्नी,)
फिर भी सास कहती है बहू मोटी चली गई ।
(नारगी का दाना, माँ जी, नारंगी का दाना,)
हा, बहू तो मोटी पड गई अब काम कौन करेगा !
(बकरी की बोटी माँ जी, बकरी की बोटी,)
मा जी, सास खोटी-खोटी गालियाँ सुनाती है !
(गाडी गिडगिडाहट करती है माँ जी, गाडी गिडगिडाहट करती है,)
जब भी घर जाती हूँ सास बडबडाती रहती है !
(पूरियाँ पकी मा जी, पूरिया पकीं,)
तेरी तो म लाडली थी माँ, पर सास की बुरी बन बैठी हू ।

(खड़ीक के पत्ते काट मां, खड़ीक के पत्ते काटे,)
मां जी, तेरी गोद में तेरे ही बेटे रहेंगे !
(सिर का फूल मा जी, सिर का फूल,)
अगर मैं पिता जी की बेटी होती तो मैं भी स्कूल में रहती।
(मसेटा गीला हुआ मां जी, मसेटा गीला हुआ,)
पिता की मैं बैरिन निकली मां, जिन्होंने दूर ब्याहा दिया !
(घूघुती बोली मां जी, घूघुती बोली,)
मा के लाडले (बेटे) मा के पास होंगे, पर मुझ बेटी को अपने से दूर कर दिया !

१७

मेरा मैत का देस न बास,
न बास घुगुती रुम झुम !
बोई सुणली आँसू ढोलली,
बाबा सुणलो सासु मनालो !
नणद सुणली ताणा मारली,
ताणा मारली रुम-झुम !

—हे घूगती (चिड़िया), मेरे मायके की ओर न बोल !
न बोलो घुगती, रुमझुम !
मां सुनेगी तो आंसू बहायेगी,
पिता सुनेगा तो यहां आकर मेरी सास को मनायेगा,
ननद सुनेगी तो ताना मारेगी,
ताना मारेगी, रुमझुम !

१८

वन से घास का बोझ लिए प्रायः स्त्रियां गीत गाती जाती हैं। प्रस्तुत गीत में सन्ध्या को घर लौटती स्त्री एक ओर मायके की याद में घुलती मिलती है, दूसरी ओर घर-गृहस्थी के उत्तरदायित्वों के नीचे पिसी हुई।

तुमारी छै लाडी मा जी सैसर्‌यो की बूरी !
काटी त खडीक मा जी, काटी त खडीक,
तेरी कोली रला माँ जी, तेरा स्ये लड़ीक !
सिर को फूल माँ जी, सिर को फूल,
बाब्‌ को लडीक होदो माँ जो रदी इस्कूल !
मसेटो मेवायो मा जी, मसेटो मेवायो,
बाबा को मैं बैरी माँ जी, विदेसू बेवायो !
घूघूती घुराई माँ जी, घघूती घुराई,
व्वै का लाडा व्वै मू होला मैं वेटी दुराई !
—(कुटले का बेंटा, माँ जी, कुटले का बेंटा,)
मा जी, सास ने मेरे हृयय को चलनी बना दिया है।
(खलिहान की दीवाल मा जी, खलिहान की दीवाल,)
जो खाना वह मुझे खाने को देती है, मैं मन मारकर खाती हूँ !
(गाये चरीं मा जी, गाये चरी,)
मा जी, वह खाने को सूखी रोटी देती है और कोरा नमक !
(घी खाया माँ जी, घी खाया,)
मा जी, सास का हर रोज दो रोटी का 'ड्यू' लगा है !
(खोटी दुवन्नी मा जी, खोटी दुवन्नी,)
फिर भी सास कहती है बहू मोटी चली गई।
(नारंगी का दाना, माँ जी, नारंगी का दाना,)
हा, बहू तो मोटी पड़ गई अब काम कौन करेगा !
(बकरी की बोटी माँ जी, बकरी की बोटी,)
मा जी, सास खोटी-खोटी गालियाँ सुनाती है !
(गाडी गिडगिडाहट करती है माँ जी, गाडी गिडगिडाहट करती है,)
जब भी घर जाती हूँ सास बडबडाती रहती है !
(पूरियाँ पकी मा जी, पूरिया पकीं,)
तेरी तो म लाडली थी माँ, पर सास की बुरी बन बैठी हू।

(खड़ीक के पत्ते काट मां, खड़ीक के पत्ते काटे,)
मां जी, तेरी गोद में तेरे ही बेटे रहेंगे।
(सिर का फूल मा जी, सिर का फूल,)
अगर मैं पिता जी की बेटी होती तो मैं भी स्कूल में रहती।
(मसेटा गीला हुआ मां जी, मसेटा गीला हुआ,)
पिता की मैं बैरिन निकली मां, जिन्होंने दूर व्याहा दिया।
(घूघूती बोली मां जी, घूघूती बोली,)
मां के लाडले (बेटे) मा के पास होंगे, पर मुझ बेटी को अपने
से दूर कर दिया।

१७

मेरा मैत का देस न वास,
न वास घुगूती रुम झूम।
बोई सुणली आँसू ढोलली,
बाबा सुणलो सासू मनालो।
नणद सुणली ताणा मारली,
ताणा मारली रुम-झूम।

—हे घूगती (चिड़िया), मेरे मायके की ओर न बोल।
न बोली घूगती, रुमझूम।
मां सुनेगी तो आंसू बहायेगी,
पिता सुनेगा तो यहा आकर मेरी सास को मनायेगा,
ननद सुनेगी तो ताना मारेगी,
ताना मारेगी, रुमझूम।

१८

वन से घास का बोझ लिए प्राय स्त्रिया गीत गाती जाती हैं। प्रस्तुत गीत में सन्ध्या को घर लौटती स्त्री एक ओर मायके की याद मे घुलती मिलती है, दूसरी ओर घर-गृहस्थी के उत्तरदायित्वों के नीचे पिसी हुई।

गुलौरी को गारो मां जी, गुलौरी को गारो,
दिल मा उदास माँ जी, पीठी मा भारो।
दाथुड़ी की नौक मा जो, दाथुडो को नोक,
मौत ह्वैगे देर माँ जी, भैंसी ह्वोली चौक।
फेंडू पक्या वर माँ जी, फेडू पक्या वर,
अँध्यारू ह्वैगे मा जी, कब जौलू घर ?
सग्बाड़ी को साग मा जी, सग्वाडी को साग,
घडा पर पाणी नी ह्वोलू चूला पर आग।
भरी जालो माणो मां जी, भरी जालो माणो,
सुवेरी को भूको छऊँ, खाये नी छ खाणो।
वासी त मलेऊ माँ जी, बासी त मलेऊ,
मेरी माँ जी होंदी मा जी, खलौन्दी कलेऊ।
थकुली को काँसू माँ जी, थकुली को काँसू,
गला पर खिरखिरी, मा जी, आंख्यों मा आसू।
खल्याणी को दादू मां जी, खल्याणी को दांदू,
तेरी खुद लग्दी मा जी, दिल मेरो हिरादू।
लोण भरे दोण मा जो, लोण भरे दोण,
कैन मैं बुलाई नी मा जी, मैन तनी रोण।
चूड़ी छमणाणी माँ जी, चूडी छमणाणी,
माटी मेरी मैमू मां जी, मैत छ पराणी।
—(गुलोरी के पत्थर मां जी, गुलोरी के पत्थर,)
मां जी, मैं दिल से उदास हूँ, पीठ पर बोझा है।
(दराती की नोक मा जी, दराती की नोक,)
बहुत देर हो गई है मां जी, भैंस आगन में बँधी होगी।
(फेंडू पके मां जी फेडू पके,)
अँधेरा होने लगा है मां जी कब घर जाऊँगी !
(सागवाडी का साग मां जी, सागवाडी की साग)

घर में न घड़े पर पानी होगा, न चूल्हे पर आग !
(माणा भरा गया, माँ जी, माणा भरा गया,)
सुबह से भूखा हूँ मा जी, खाना नहीं खाया ।
(मलेऊ चिड़िया बोली मा जी, मलेऊ चिड़िया बोली,)
मेरी माता होती तो वह मुझे उपहार देती ।
(थाली का कासा माँ जी, थाली का कांसा,)
मायके में तो तू थी मां, पर ससुराल में ता सास है ।
(सुई सरकाई मा जी, सुई सरकाई,)
ससुराल के नाम पर मैं पत्थर फेंकती हूँ मा जी ।
(थाल का कासा मा जी, थाल का कांसा,
मां जी, गले पर खिरखिरी लगी है, आँखों में आसू हैं ।
(खलिहान की दिवाल मा जी, खलिहान की दिवाल,
तेरी याद आती है मा तो मेरे प्राण सिहरने लगते हैं ।
(द्रोण-भर नमक लिया, मा जी, द्रोण भर नमक लिया,)
किसी ने मुझे मायके नहीं बुलाया मां जी, मैं यों ही रोती रहूंगी ।
(चूड़िया छनछनाई मा जी, चूड़ियां छनछनाई,
मेरा शरीर मेरे पास है मा जी, पर प्राण मायके में ही हैं !

१६

फूली जालो कांस व्वै, फूली जालो कांस,
म्योलड़ी घासदी व्वै फूलदा बुरांस ।
हिसर को काँडो व्वै, हिसर को काडो,
मौली गैन डालो व्वै, हरी ह्वैन डॉडी ।
गौड़ी देली दूद व्वै, गौडी देली दूद,
मेरी जिकुडी लगी व्वै, तेरी खुद !
काखडी को रैतू व्वै, काखडी को रैतू,
मैं खुद लगी व्वै, तू बुलाई मैतू !
दाथुडी की नोक व्वै, दाथुडी को नौक,
वासलो कफू व्वै, मेरा मैत्यों का चौक ।
सूपा भरी दैण व्वै, सूपा भरी दैण,
आग भमराली व्वै, भैजी भेजी लेण !
टोपी धोई छोई व्वै, टोपी धोई छोई,

मैत्या डाड देखी ब्वै, मैं आंदी रोई ।
भंगोरा की बाल ब्वै, भंगोरा की बाल,
मैत को बाटो देखी ब्वै, आंखी ह्वैन लाल !
—कास फूले मां, कास फूले,
चातकी बोली मां, बुरास फूले ।
(हिसर के काटे मा, हिसर के काटे,)
पेड़ों पर कोंपलें आईं मां, पर्वत हरे हुए ।
(गाय दूध देगी मा, गाय दूध देगी,)
मेरे हृदय पर तेरी सुधि आई है मा !
(ककडी का रायता मां, ककडी का रायता,)
मुझे तेरी याद आती है मां. मुझे तू मायके बुलाना ।
(दरांती की नोक मां, दरांती की नोक,)
मेरे मायके के आगन में मा, कफू बोलेगा !
(सूप सरसो से भरी मा, सूप सरसों से भरी,)
आग भभरायेगी तो भाई को मुझे लिवाने भेजना !
(छोई में टोपी धोई मा, छोई में टोपी धोई,)
मायके के शिखर देखकर मा, मुझे रोना आता है ।
(सवा की बाल मा, सवां की बाल,)
मायके का रास्ता देखते देखते मा, आंखें लाल हो गई हैं।।

२०

तुर तुर्‌या पाणी नालटूड़ी शकी नी खायेन्दी तीस,
एक बुया की खदूडी, बुया तु माते सुपिणा दीश ।
—पानी की बारीक धार से प्यास नहीं बुझती;
मां मुझे तेरी याद आती है, मां, तू सपनें में तो दिखाई दे !

२१

हे न वास्या कुफो खुदा लगीन्दी, मेरी बुया क बोल्या,
मेरू वैदालू लाया डाल पवाणी भौती खुद लगीन्दी!
—हे कफू न बोल, मुझे खुद लगती है, मेरी मा को कहना,
मुझे बुलाने के लिए किसीको भेजना,
वृक्षों को स्पर्श कर जब पवन चलता है, तो मुझे बहुत खुद लगती है ।

छड़े

छूडा

छूडे मूलतः सूक्ति पूर्ण नीति-गीत हैं। उनमें जीवन के गहरे अनुभवों को अभिव्यक्ति मिली है। मानवीय आचरण के विविध पक्षों को छूते हुए जीवन के सत्यो की आनुभव जन्य व्याख्या, वर्जना और व्यावहारिक उपदेश उनका प्रतिपाद्य विषय है। इसके साथ ही कहावतों की भाति किसी भाव को अभिव्यक्ति के कौशल के साथ प्रस्तुत करने की प्रवृत्ति भी उनमें लक्षित होती है।

छूड़ों की अपनी एक लय होती है, अपना छद और गाने का समय होता है। वे प्राय. लम्बी लय में, ऊँचे स्वर से और त्योहारो में बडे-बूढ़ो द्वारा घर के भीतर गाये जाते हैं। वास्तव मे छूड़े विरक्त और पीडित हृदय के गीत प्रतीत होते हैं। जगत और जीवन की अस्थिरता, नीति, उपदेश, निराश तथा प्रताडित प्रणय और प्रकृति के विरुद्ध मानव के कटु सघर्ष के विषय में वे एक प्रौढ़ की दार्शनिक चेतना को व्यक्त करते हुए दीखते हैं। छूडो में जो प्रणय-भावना व्यक्त हुई हं उनमें हर्ष और उल्लास की अपेक्षा विराग अधिक प्रकट हुआ है छोपती बाजूबन्द तथा लामणो की अपेक्षा उनमें ऊँची नैतिकता व्यक्त हुई हं। उनमें जो नायक और नायिकाएँ आई हैं—जैसे गज और सलारी—वे किसी न किसी दुख से ग्रसित

१

पहाड की ढाल पर कोई युवती घास काट रही है। उधर से उसका एक प्रेमी गुजरता है और उसे सावधान करता है, कहीं वह नीचे न लुढ़क जाय।

पड़ पर की घस्यारी,
काटदे लुड़क्यालो घास।
ठुर न पड़ी मेरी घेंटुड़ी,,
कागा चूनी खाला मास।
रूप को विणास होल,
यारू क तरास!
ठुर न पड़ी मेरी घेंटुडी,
वें क होलू निराश।

—पहाड पर को घसियारिन,
हरा-भरा घास काट रही है!
गिर न पडना मेरी गौरैय्या,
कागा मास चुन चुन खायेगा।
रूप का विनाश होगा,
तेरे प्रिय जनो को त्रास होगा,
गिर न पडना मेरी गौरैया!
तेरी मा निराश होगी!

२

भाई और भाभी का व्यवहार प्राय सयुक्त कुटुम्बों में कुछ विलक्षण-सा होता है। कहते हैं, भाभी को देवर प्यारा होता है, किन्तु हमेशा नहीं—भाभी का देवर के प्रति कर्कश होना भी उतना ही सही है। भाई बुरा हो फिर भी भाई ही है, अपना खून गाढा होता है; किन्तु भाभी।

छूड़ा

छूडे मूलत. सूक्ति पूर्ण नीति-गीत हैं। उनमें जीवन के गहरे अनुभवों को अभिव्यक्ति मिली है। मानवीय आचरण के विविध पक्षों को छूते हुए जीवन के सत्यो की आनुभव जन्य व्याख्या, वर्जना और व्यावहारिक उपदेश उनका प्रतिपाद्य विषय है। इसके साथ ही कहावतों की भाति किसी भाव को अभिव्यक्ति के कौशल के साथ प्रस्तुत करने की प्रवृत्ति भी उनमें लक्षित होती है।

छूडों की अपनी एक लय होती है, अपना छद और गाने का समय होता है। वे प्रायः लम्बी लय में, ऊंचे स्वर से और त्योहारों में बडे-बूढ़ो द्वारा घर के भीतर गाये जाते हैं। वास्तव में छूडे विरक्त और पीडित हृदय के गीत प्रतीत होते हैं। जगत और जीवन की अस्थिरता, नीति, उपदेश, निराश तथा प्रताडित प्रणय और प्रकृति के विरुद्ध मानव के कटु सघर्ष के विषय में वे एक प्रौढ की दार्शनिक चेतना को व्यक्त करते हुए दीखते हैं। छूडो में जो प्रणय-भावना व्यक्त हुई है उनमें हर्ष और उल्लास की अपेक्षा विराग अधिक प्रकट हुआ है छोपती बाजूबन्द तथा लामणो की अपेक्षा उनमें ऊंची नैतिकता व्यक्त हुई है। उनमें जो नायक और नायिकाएं आई हैं—जैसे गजू और सलारी—वे किसी न किसी दुख से ग्रसित हैं। किन्तु साथ ही उन दुखो को सहने के लिए नीति, उपदेश और सान्त्वना का एक सहारा भी मिलता है, जो मनुष्य की विवशता, नियति की निष्ठुरता का सह्य बना देती है। जीवन की विषमताओं के बीच जीवन का सामजस्य छूडो का प्रमुख हेतु है। दूसरी बात यह है कि जीवन के बहुमुखी क्षेत्रों के अनुभवों से उद्भूत होकर वे जीवन के हित के लिए ही समझे गये हैं। खान-पान, प्रेम, विवाह, आचार व्यवहार के सबन्ध में इनमें जो विधि-निषेध दिए गए हैं, उनमें हृदय की ममता और मस्तिष्क की तर्कना दोनों सम्मिलित हैं। उनमें नीति और उपदेश हैं किन्तु हृदय की सहजवृतियो के प्रति भी न्याय किया गया है।

छूडे वास्तव में, चरवाहो के गीत हैं. गढवाल के बहुत से भागो में भेडें पाली जाती हैं। रवाईं जैसे क्षेत्रों में जहा भेड पालन मुख्य व्यवसाय है, छूड़े भेड़ पालक के जीवन की सुन्दर अभिव्यक्ति करते हैं। उनमें भेडों के प्रति ममत्व, भेड पालक के जीवन की कठिनाइया और प्राकृतिक शोभा के अनेक चित्र मिलते हैं।

भाषा और भावो की दृष्टि से छूडे बहुत प्राचीन गीत प्रतीत होते हैं।

१

पहाड की ढाल पर कोई युवती घास काट रही है। उधर से उसका एक प्रेमी गुजरता है और उसे सावधान करता है, कहीं वह नीचे न लुढक जाय।

पड़ पर की घस्यारी,
काटदे लुड़क्यालो घास!
ठुर न पड़ी मेरी घेंटुड़ी,,
कागा चूनी खाला मास।
रूप को विणास होल,
यारू क तरास!
ठुर न पड़ी मेरी घेंटुड़ी,
वें क होलू निराश।

—पहाड पर की घसियारिन,
हरा-भरा घास काट रही है!
गिर न पडना मेरी गौरैय्या,
कागा मास चुन चुन खायेगा।
रूप का विनाश होगा,
तेरे प्रिय जनों को त्रास होगा,
गिर न पडना मेरी गौरैया!
तेरी मा निराश होगी।

२

भाई और भाभी का व्यवहार प्राय सयुक्त कुटुम्बो में कुछ विलक्षण-सा होता है। कहते हैं, भाभी को देवर प्यारा होता है, किन्तु हमेशा नहीं—भाभी का देवर के प्रति कर्कश होना भी उतना ही सही है। भाई बुरा हो फिर भी भाई ही है, अपना खून गाढा होता है, किन्तु भाभी ।

जाती सुणेन्दी भाई की बासुली,
ती ती बोलेन्द् कखी नजौं !
जाती सुणेद् बौ को कक्‌ड़ाट,
ताती बोलेन्द् विष खै मरी जौं !

—जब भाई की बासुरी सुनता हूँ,
तब सोचता हूँ घर से कहीं न जाऊँ !
पर जब सुनता हूं भाभी का बडबडाना,
तो मन करता है कि विष खाकर मर जाऊँ !

३

जीवन मरता नहीं वह धारा के प्रवाह रूप में निरतर चलता रहता है। पेड का एक भाग कभी सूख जाता है, किन्तु दूसरे से नई कोपलें निकलने लगती हैं। इसी तरह जीवन को मृत न समझिये, मौत उसकी एक शाखा को कुम्हला सकती है, पर दूसरी शाखा उसी क्षण मुकुलित हो उठती है। इसीलिए, मरता हुआ मनुष्य मौत से भी जीवन (पर जन्म) का अपना हिस्सा मांग कर जाता है।

सुकी बृलु डाडी,
हरु लगलो फागो,
मर्‍यो बल मणसात,
ते जुग को बाटो मॉगो !

—सूखता है तरु कहीं,
कहीं हरी टहनी निकलती है।
मनुष्य मरता है पर जिन्दगी—
दूसरे जन्म का भी हिस्सा मागकर चलती है !

४

मरने के पश्चात मनुष्य के सारे पार्थिव सबंध टूट जाते हैं—उसे

तब कफन के लिये केवल गज भर कपड़े की जरूरत पड़ती है, और हाथ भर जमीन की !

• उपाड़े गैली कागज,
उपाड़े गैली ताऊ,
गज भर मागो कापिड़ा,
हात भर जमीनेर ठाऊँ !
—उड़ते कागजों की तरह,
सारे सबंध उखड़ गये !
मुर्दे ने केवल गज भर कपड़ा मागा,
और हाथ भर जमीन में ठांव !

५

शिशु की माता और युवक की पत्नी की मृत्यु मानव जीवन के सबसे बड़े अभिशाप हैं। सौतेली मां या धाय और दूसरी पत्नी इन अभावों की पूर्ति नहीं कर सकते ! फिर भी किया क्या जाय ? मौत मनुष्य की अंतिम बेवसी है !

एक ना मर्या वाला की बोई।
एक ना मर्या तरुणा की जोई।
वालो रोंदो खावुड़ी हटाई,
तरुणो रोन्दो सातुरी सोई।
दाड़ी ठई पापी जमराजा की,
जैन यो मरणो कियो;
रितु बौड़ी औंदी,
मुआ बौड़ी नी औंदो।
एक न मर्या वाला की बोई,
एक न मर्या तरुणा की जोई।
न रो वाला त्वै दुध्यारी लगौला,

न रो तरुणा त्वै नयो डोला लौला।
डॅड्योट्या जोई माया कख छई,
माई मौस्याण दूधी कख छई।
काटी कुराड़ी सूख्यो सादण,
मुओ मरे, चुके दुनिया।
अमर कुणौं नी होणू,
धरती को पिठारो कुणौ नी लाणो।
—एक, न मरे शिशु की माई,
एक, न मरे तरुण की जाया भाई !
रोता शिशु मुँह खोले,
तरुण सूनी सेज पै डोले !
दहाड़ ढहे उस यमराज की,
जिसने मौत बेकाज की !
जाती रितु भी लौट आती,
मौत न किसी को लौटाती !
एक, न मरे शिशु की माई,
एक, न मरे तरुण की जाया भाई !
न रो शिशु, तेरे लिये धाय बुलायेंगे,
न रो तरुण तुझे नई वधू लायेंगे।
पर दूसरी वधू में कहा वह प्रेम का नाता,
माता सी कब बन सकी है विमाता ?
चली कुल्हाड़ी सादन डाली सूखी,
मरा मरने वाला, दुनिया उसको चूकी।
अमर न कोई रहेगा इस जग में अहो,
धरती को पीठ लगा कौन ले जायेगा साथ कहो ?

६

सोचीक बोलाणू,
चबाईक खाणू,

अवाटा को पाणी नी पेण !
—सोचकर बोलना चाहिये,
चबाकर खाना चाहिये,
अवाट (रास्ते सें अलग) का पानी न पीना चाहिये !

७

सवाद कै बणानू सगुवा,
सवाद कै बणानू भात,
जैंकी लागो चित मन,
ते की नी पूछणू जात !
—स्वादिष्ट साग बनाओ,
स्वादिष्ट भात बनाओ !
जिस पर दिल लग जाय,
उसकी जात न पूछो !

८

एक आभूषण-प्रिय युवती अपने पति से इसलिए रोष प्रकट करती है कि और ढाकरी (बाजार में सौदा खरीदने वाले) अपनी प्रेयसियों के लिये कई उपहार लेकर आ गये हैं किन्तु उसका पति घर पर ही बैठा भट्ट (एक चबेना) भून रहा है। वह उसे आरसी लाने का उलाहना देती है !

हौर ढाकरी ढाकर नस्या,
भरू मुंडासों कू ठट्ट !
मेरो स्वामी घर बैठ्यू,
खायूं र्योंद भुनद भट्ट !
तिखड़ी हौर वणिज ल्याया,
हौर चीज तेरी जड़ी मर्‌या,
मैं तै तु आरसी नी ल्याया !

—और ढाकरी बाजार चले गये,
उन्होने सामान की ढेर लगा दी है !
पर मेरा स्वामी घर बैठा है,
बैठा-बैठा 'भट्ट' भून रहा है !
और लोग तो खरीददारी करके आये हैं,
और चीजें तो भाड में जाय,
मेरे लिये कोई आरसी नहीं लाया !

९

प्रस्तुत 'बारह मासी' जीवन के कुछ आदर्श सामने रखती है। उपदेश विशेष हैं।

रोटी पकी च जवाडी चूना की,
हरि बोला जी, हरि बोला जी !
देख चैत चोरी छ, चोरी न करी,
चोरी चीज न छुय्या !
प्यारो मैनो बैसाग को,
न पे तमाखू धुवां,
कालो कस कलेजी बैठलो,
खांसी पड़ली भुवॉ !
जेठ जेठय्या, जेठ भी देण ठहो,
जब बॉट बॅटैय्या !
जब मैना अषाड, बात बिगाड,
जीती रिवाड न हैय्याँ !
सौण बिसौण झाडीक लगौण,
सुही नी सेणू भुय्या !
भाद भदैय्या, काग विरैय्या,
भाई भाई मा छुय्यॉ !

असूज असूज तू रदो बे बेवूज,
दिन हरि भजैय्या।
प्यारी रात कातकी छ,
काली कामली ओढन बिछैय्या।
तिन मंगसीर ढंग सीर रणू,
सुद्दी नी चलणो,
उदमातो न हुय्यां!
प्यारो जु पूष. घूसी मारला,
घूसी घासी न करैया।
जब माघू बे माघू
राड को लागो,
धारो-धारो जैया।
देखी वैणी फागुणी
धान कमौणी,
नी लाणी छुयां।

—जौ और मंडुवे की रोटी पकी है,
हरि कहो जी, हरि कहो जी!
देख चैत में चोरी न करना,
चोरी से किसी की चीज न छूना।
बैसाख का महीना प्यारा है,
तू तम्बाकू का धुवां न पी,
तेरे कलेजे पर काला दाग पड़ जायेगा,
और खास कर तू चितपट गिर जाएगी!
जेठ जेठा महीना है, बड़े भाई को
बड़ी बांट देनी चाहिये।
जब आषाढ आता है तो बात बिगाड़ता है,

इसलिये तू ईर्ष्यालु न होना !
सावन में बिस्तरा झाड़ कर लगाओ,
ऐसे ही जमीन पर न सो जाना चाहिये !
भादों कौवे की तरह काला है,
भाई भाई में विवाद चल पड़ते हैं।
असौज के महीने तू बेबूझ क्यों रहता है ?
हरि का भजन कर !
कार्तिक की रात प्यारी है,
काली कंबल ओढ़ो भी और बिछाओ भी।
मगसर के महीने ढंग से रहो !
ऐसे ही न चला करो,
उन्मत्त न बन जाओ !
पूष प्यारा होता है,
खूब मालिश किया करो !
जब माघ आये,
तो हे स्त्री,
तू जगह जगह न जाया कर !
बहिन, फागुन का महीना देख,
फसल कमा,
बातें न किया कर !

१०

संसार में सभी का यौवन सार्थक नहीं होता। सभी फूल मूर्ति पर नहीं चढ़ते हैं। सभी इच्छायें पूरी नहीं होती।

जेतो त होंद नदी नाड़
तेती न लायेन्दी तर,
जेती त होन्द मुलक बांठीण,
तेती ना लायेन्दी घर !

—जितने नदी-नाले हैं
उन सभी पर पुल नहीं होते !
संसार की जितनी सुन्दरियां हैं,
वे सभी व्याही नहीं जातीं !

११

छोड़दे माते चौंरी को आणो-जाणो !
छोड़दे चौंरी को बाट ।
उलाया मेरीया को पराणी,
न रंदी हँसण घाट !
—हे बेटी, तू चौंरी पर आना जाना छोडदे !
तू चौंरी का रास्ता छोडदे !
पर नहीं, तू उन्मत्त हृदय की है
तू हँसे-खेले बिना कैसे रहेगी !

१२

क्या भागी उमली धुमली,
क्या तेरे गलोठ्यों झोल !
जु तेरा मनरो कुरोध,
से भागी मैं माफी बोल !
न मैं उमली धुमली,
न मेर गलोठ्यों झोल,
न मेर मन की जोडी,
सासुड़ी मारदी बोल !
—हे सौभाग्यवती, क्यों धुँधली वनी हो ?
कपोलों पर कालिमा क्यों छाई है ?
तेरे मन में जो व्यथा है,
वह तू मुझसे बोल !

न, म धुँधली नहीं हूँ,
न मेरे कपोलों पर कालिमा ही है।
मेरे मन की जोडी (पति) नहीं है,
और मेरी सास बोलियां मारती हैं।

१३

जैश ऐंशू एश न औन्दू आग,
छीजती लागी नारैणी मूर्ति,
जैं छीजा डालीरा लाबू।

—जैसा यह वर्ष है, वैसा आगे नहीं आयेगा,
नारायण की मूर्ति धीरे धीरे घिसती जा रही है,
जैसे पेड़ से पत्ते गिरते जाते हैं।

१४

विचगो वालो वसत,
सूखी गो लालूरया घास,
विची ना तरुणया ज्वानी,
जेशी रात ब्याणी।

—नव वसत बीत गया है,
हरा-भरा घास सूख गया है।
किन्तु हे मेरी सुघर जवानी, तू ऐसी न बीतना,
जैसे देखते ही रात्रि-विहान होगया हो।

१५

क्वि मेरा माघ फागूण,
न लेन्दा पीठी जड़े।
वालो वसीत आलो,
बोशी लाऊँ थातरू छड़े।

—माघ और फागुन बीत गये है,
अब मैं पीठ पर बोझा न लूंगा !
नव-वसन्त आने वाला है,
अब शिखरो पर बैठकर छूड़े गाऊँगा !

१६

ऐंशु शुणी मरिगो आगु रऊँ छटी,
फली रैंगे जामरी बूटी !
—इस वर्ष मृत्यु से छूट गया हूँ,
तभी जभीर के वृक्ष की भांति फूला हूँ !

१७

जड़ी मरला जैनु, झाड मलुवा डेरा,
कामो की पड़ विसर मु र हिलम तेरा !
देखण की जैनु मेरा कूजी री कली,
पूछण की पड़ी बेसर दूण किनै वली !
जड़ी मर जैनु आँखी का गेरा,
तेरी रख ताईं, जंगल म डेरा !
जब देखू जैन, लेसरू आंखी,
ऐशा बुश भौंर जैश दूध दी माखी !
—चाहे मर ही क्यों न जाऊँ, वनो में डेरा डाल दिया है
काम-काज भी भूल गया हूँ, मैं तेरे ही ध्यान में हूँ !
तू देखने में कूजें की कली-सी है,
नाक पर लटकी बेसर तू हिला ही नहीं सकती !
तेरी आखों के घेरे में मैं मर जाऊँ !
तेरी रक्षा के लिये मैं जगल में ही डेरा डाल लूंगा !
जब मैं तेरी सुन्दर आंखें देखता हूँ
तो दिल का भौंरा वैसा ही उन पर बैठना चाहता है जैसी
दूध पर मक्खी !

१८

आकाश घुमड़ रहा है। अपने अपने रोज के काम पर जाने से पहले चरवाहा प्रेमी अपनी प्रेयसी को चुम्बन देने को कहता है किन्तु वह इतना कहकर ही बात टाल देती है कि मुझे पानी चढ़ा (लगा) है—सर्दी लगी है—चुम्बन से तुम्हें भी लग जायेगी।

शेड़कुड़ा फुंडै की छड़कुड़ी,
दे बौंर खाबुड़्या बोली,
उठाँदो के नी भेडुड्या,
रोड़ थाई बादुली तोली!
तू नस बौंर भेडुक,
मु नस डोखीर धाणी,
पिंची देन्दू तू खाबुडी,
मु ले चढियूं पाणी!

—हे इस गृह की सुन्दर स्वामिनी,
'हे भ्रमरी, मुझे अपने अधर पान करने दे!'
'जाता क्यों नहीं चरवाहे,
आकाश बादलों को तोल रहा है!
हे भ्रमर, तू भेड़ों के साथ जा,
मैं खेतों में काम करने जाती हूँ!
तुझे अधर पान करने देती,
पर मुझे पानी चढ़ा है!'

१९

बै बाबू को भगार लाग्या ना,
न भगार पणमेसर ताऊँ।
खोटी गरल्टी मु अपणी लाई,
जातरा घाटु भड़ी आऊँ!

—इसमें माता पिता का दोष नहीं,
और न परमेश्वर तेरा ही दोष है !
मैं ही अपना खोटा भाग्य लाया हूँ
जब मैं गर्भ में आया !

२०

तू होन्दी तरुणा बरुणा,
मुई आन्दो दाड़्या को वाठो ।
छोडी ना नह भैं मते—
आद जंगार को लाठो ।
—वरुणा, तू तरुणी है,
मैं दाढी वाला बूढा हूँ !
मुझे छोड़ कर न चली जाना,
जैसे कोई आधे में ही जंगार का लट्ठा छोड दे ।

२१

न वर्स मेरी गैठूड़ी,
वर्स वंगाण की वेला,
भौंरीलो काठू भेड् मंजे,
सौन्तुड्या वरन्द ह्ल्या !
—हे मेरे आकाश इधर न वरस !
उधर वंगाण की तरफ वरस ले !
यहां कांठों पर मेरा भौंरा भेडें चरा रहा है,
उसका पायजामा कीचड से भर जायेगा !

२२

प्रिय के वियोग में नायिका ने न अपने लिये भोजन बनाया न कुत्ते को ही खिलाया। नीचे की उक्ति कुत्ते को संबोधित कर कही गई है।

सिमरे धुमरे बोलूँ छौंटुड़्या,
तू औंड कै फंडूड़ी भौंक।
न तौंक आज खाणू पेण,
न मेरा जीवन सूक !

—हे प्यारे कुत्ते, तुझे में कहती हूँ
कि तू कहीं और जाकर भौंक,
यहां न आज तेरे लिये खाना-पीना है,
न मेरे जीवन के लिये ही सुख है।

२३

चाणी रा आज को दोशरो,
चाणी रा भोल की रात।
सोना की पकौनू पस्तुडया,
मोत्यों कू पकौनू भात।
न रंदो आज को दोशरो,
न रंदो मोल की रात !
नौखिले गिरण मेरी,
औटाल्टी व्यॉदी रात।

—आज के दिन यहीं रहो,
कल की रात भी यहीं रहना !
तेरे लिये सोने की रोटिया पकाऊँगा,
मोतियों का भात बनाऊँगा।
न मैं आज के दिन रुकूँगा,
और न कल की रात।
मेरी फूल सी खिली नई गृहिणी है'
उसी की अट्टालिका में मुझे रात खुलेगी।

२४

मेरा गौं तु इनु आया,
जनु डिंग्या मथ सुवा,
आणू क तू आई जाया,
मुखटुड़ी देखनू दुवा !
—मेरे गाव तू ऐसे आना,
जैसे वृक्ष के ऊपर तोता आ बैठता है।
आना, तू जरूर आना,
मैं बड़े प्रेम से तेरा मुँह देखूंगी।

२५

हर्री पिंगली चलकुड़ी
तू राडा मानीर जाया,
काल सन्तूड़ी को भौंरीलो,
ते छोरिय घर बुलाया।
भौंर ले बोलन्दो जिकुड़ा न लादा तौकू ह्ल,
फेंडुक्या खेलालू जड़ेलू बैठिके बजालु नल !'
न छोड़ दो बणौन्दी भेडुल्या न लाँदू ठाठाडूं ह्ल,
जली मरलू तेरो जड़ेलू, मैं थातरी बजौंदू नल।
ऐश क्यों बोल बौर, बोल बुशड़ी चीटी,
कि मेरा मैती दूबल, कि मेरी बठाई फीटी ?
न तेरा मैती दूबल, न तेरी बठाई फीटी,
आन्द तरुण माँ कै दीणी, सि मेरा मन फीटी !
जौंल देनू बाकिरू, बाजरा देनू मु घाड,
मुरखा भौंरील घर आया, खाव खड़ खाला डांड।
'—हे हर्री पीली चिडियां,
अरी तू मानीर (स्थान) जाना !
वहा मेरा काले सलवार वाला भौंरा है,

उसे घर बुला ले आना ।
मेरे उस भौंरे से कहना, अब तू हल न लगाना,
गोद में बच्चे को खिलाना और बैठ कर बशी बजाना।'
'नहीं न मै भेड़ें चराऊँगा, न खडे खडे हल चलाऊँगा,
तेरा बच्चा जल मरे, मै मैदानों में बशी बजाऊँगा !'
'ऐसा क्यो कहता है भौंरे, साफ बात कह न,
क्या मेरे मायके वाले निर्धन हैं, या मेरा सौंदर्य फीका है ?'
'न तेरे मायके वाले निर्धन हैं, न तेरा सौंदर्य फीका है,
तूने मुझे मा की गाली दी है इसलिए तुझसे मन फीका हो गया !'
'तुझे दो-दो बकरिया दूंगी, उनके साथ बजती घटिया दूंगी,
हे मेरे मूर्ख भौंरे, घर आना, मै अपने मुंह को कूडे से भर कर
तेरा दड दे दूंगी !'

२६

छोड़ बौंर राती को इटणू,
वोईरी काटला चोर,
वाली जिकुड़ी तेरी जाली,
मेरे लोवी होन्द ओर ।
—प्रिय, रात को यहा आना छोड दे,
वैरी तुझे छिप कर काट देगे !—
तेरा वाल-हृदय नष्ट होगा ।
मेरे रूप का लोभी कोई ओर हो गया है !

२७

बाल्यकाल में माता बालिका को डाटती-फटकारती है, उस समय वह बुरा मानती है किन्तु बाद के विवाहित जीवन में वे शिक्षाये हा स्मृतियां बनकर शेष रह जाती हैं ।

तै वुयौ अड़ायो पड़ायो,
मैं वुयौ जाणी खेल,

विगाणी माया क पुतरा
ये वुया तातड़ो पियॉद तेल ।
—हे मां, कभी तू अड़ाती-पढाती थी,
तब मां, मैंने उसे खेल समझा।
अब पराये प्रेम में पला किसी का पुत्र
हे मां, मुझे गर्म तेल पिलाता है।

२८

तू बौंर काती ताकुली,
औं वौर छिटकलू ऊन,
बौंरा का घुंडा वेशी ताकू
जेशी पुनिया की जून ।
मु वण कमल को पाणी,
तू वण कांठु दूणी,
तू वि चाईंथी चरखी,
मु चाईंथी कपासेर पूणी !

—भौंरे, तू तकली कातना,
और मैं ऊन छिटकाऊंगी।
भौंरे के घुटने पर बैठकर तकली
ऐसी घूमती है, जैसे पूनो का चाद हो ।
हे प्रिय, मै कमल नदी का पानी बनूंगी,
तुम दूणी का शिखर बनना ।
तुम चर्खा बनना,
मैं कपास की पूनी वनूंगी ।

२९

चुल्ली पियारो चुलियाणो,
तारू से पियारी गैण,

दिशा पियारी तैकी होन्दी,
जैकी पीठी की बैण !
छमरोट फूलेल नीम्बू,
फूले भंकोले जाई ।
पेट क मिल जड़ि ले,
न मिल पीठ को भाई ।
—चूल्हे को आग प्यारी होती है,
तारों से आकाश प्यारा लगता है ।
दिशा उसकी प्यारी होती है
जिसकी पीठ की बहिन हो ।
छमरोट में नीम्बू फूले,
भकोली में जई फूली,
गर्भ में पुत्र मिल भी जाता है,
पर पीठ का भाई नहीं मिलता ।

३०

निन्दुली बोल सूती रणो,
चित्त वाली सूतण नी देन्दी ।
माइलूड़ी बोल मैच आया,
शाशूड़ी आण नी देन्दी ।
शाशूडी मेरी थेर सा पाशुड़ी,
शैसरो मेरो क्यारको-सी कल,
भग्वान ले भौंरीलो मेरो,
जशो दाड़िमो सी फूल ।
—नींद कहती है कि मैं सो रहूँ
पर चित्त मुझे सोने नहीं देता !
मा कहती है कि मायके आना,
पर सास आने नहीं देती ।

सास मेरी शेर की पसली की तरह है,
ससुर मेरा क्यारियों की नहर की तरह
भौंरा मेरा भाग्यशाली है,
वह दाड़िम के फूल जैसा है !

३१

कूण सूती गैरी मॅजिया,
क्या स तुमारो नॉऊ,
मिरग मॉजी थ्यारी वंठिया,
नौन्याणी माजी साऊॅ ।
आऊॅ सूतो तेरी ग़ैरी मजिया,
खाती अरजुन नाऊॅ ।
मिरग मॉजी कथरो वठीया,
नया माऊ स आऊॅ !

—'गहरी मंजिया में कौन सो रहा है
तुम्हारा क्या नाम है ?'
'पशुओं में थेरी सुन्दर होती है
स्त्रियो में मैं सुन्दर हूँ।'
'तेरी गहरी मजिया में मैं सोया हूँ,
अर्जुन मेरा नाम है ।
पशुओ में कस्तूरा सुन्दर होता है
और युवको मे मैं हूँ।'

३२

कूण कियो वाठो को मरीणो,
कूणी दुवड़िया लायो रीण ।
पापी अपराधी ज्योंरा मेरा,
न माणदो कसी की गीण ।

—किसने सुन्दरियों के लिए मृत्यु बनाई ?
किसने निर्धन पर ऋण किया ?
मेरे अपराधी पापी यमराज,
तू किसी की भी दया नहीं करता !

३३

धरणी रीटे सांपीण,
अगाश रीटली शीणी,
मणछ भगार लाणदो,
विपता भगवान दीणी !

—धरणी पर सर्पिणी रेंग रही है,
आकाश पर चील मडरा रही है;
मनुष्य दोषी ठहराया जाता है,
पर विपत्ति भगवान की देन है !

३४

पांचु पंडौं खरी आई,
चराई वैराट का गोरू !
कीचकि दानौं मांगणी बोल,
खाती अरजुन की जोरू !

—पांच पांडवों पर भी विपत्ति आई है,
उन्हें भी विराट राजा की गायें चरानी पड़ीं !
कीचक दानव ने भी—
अर्जुन की पत्नी को मांगने का साहस किया।

३५

कि नीली पीली चलकुणी,
क्या टीप ठुंडन गालो ?

न पायो सौंठी को सौंजुड़्या,
न पायो खुंकल्या वालो ।

—हे नीली पीली चिडिया,
तू खुशी में चोंच से दाना चुग रही है,
पर मुझे तो न जोडी का पति मिला है;
और न गोदी में बच्चा ही !

३६

हंसी खाण, वाठी बुलाण,
कोया न वाटुड़ लाणो !
चार दिन मानछडो—
मरेय त अंधागोर जाणो !

—हसते हुए खाओ, मधुरता से बोलो,
दुख के बोझ को न लादो !
मनुष्य का जीवन चार दिन का है,
फिर तो अधकार में जाना है !

३७

औटाले आमु घूगत्या घूरे,
पाचे औटाल घूरेन्द मोर,
ज्यू जागू वुश त भौंरीलो,
त्यूं जागू वुशंद ओर !

—अट्टालिका के आगे फाख्ता बोल रहो है,
अट्टालिका के पीछे मोर बोल रहा है ।
जिन स्थानों पर भौंरा बैठता था,
उन स्थानों पर अब कोई और बैठता है !

आणू क गजू आई जया,
आऊँ सूती देवली द्वार ।
कूकर भुकला भुकण देया,
ताऊँ गाडनू लस्यार पार ।
तेरो हँसणो, मेरो खेलणो,
नगुरी पड़ली रीप ।
कि नौला गजू देशू परदेशू,
कि खौला डाडू को वीप ।
कालू गजू की सूंथणी,
काली गजू की पाग,
कि नौला गजू उड़ाल,
दूणी लगौला आग !

—वैसे तू आ जाना गजू,
मैं द्वार की देहली पर सोती हूँ !
कुत्ते भौंके तो भौंकने देना,
मैं तुझे कमरबन्द पर बाध कर खींच लूँगी ।
तेरे हसने और मेरे खेलने पर
नगरी में लोग ईर्ष्या करते हैं ।
गजू या तो परदेश में चलदे,
या पर्वतों का विष खाले !
काला है गजू का पायजामा,
और काली ही है गजू की पगडी ।
या तो गजू यहा से भाग चलें,
या दूणी में आग लगादे ।

मरी त जाली मलारी,
सात त औनू औं !
सोन बणौनू पत्यौऊँ,
टाटोंदी गाड्नू तौं !
मरी त जाली मलारी,
सात आशनू औं !
तौं ले वोलौं मलारी
उई फुकी औनू तौं !
सल माथ दिकेन्दो
जसी पुनिया की जून तौं,
तौं ले वोलौं मलारी,
मलारी रखनू नौं !

—अगर तू मर जायेगी मलारी,
तो मैं भी तेरे ही साथ आऊगा !
सोने की मैं तेरी प्रतिमा बनाऊगा
और उसे गले में बाधकर रखूंगा !
अगर तू मर जायेगी मलारी,
तो मैं भी तेरे ही साथ आऊगा !
तुझे मैं कहता हू मलारी,
कि मैं तुझे जला आऊंगा !
चिता के ऊपर जलती हुई तू
पूर्णिमा के चाद सी दीखेगी !
तुझे मैं कहता हू मलारी
कि मैं तुम्हारा नाम ख्यात करूगा !

४०

जैंछी होली वल धियाणी,
लाली खावुदी हैंसी !
जैंछी होली चल रहणी,

३८

आणु क गजू आई जया,
आऊँ सूती देवली द्वार ।
कूकर भुकला भुकण देया,
ताऊँ गाडनू लस्यार पार ।

तेरो हँसणो, मेरो खेलणो,
नगुरी पड़ली रीष ।
कि नौला गजू देशू परदेशू,
कि खौला डांडू को बीष ।
कालू गजू की सूथणी,
काली गजू की पाग,
कि नौला गजू उड़ाल,
दूणी लगौला आग !

—वैसे तू आ जाना गजू,
मैं द्वार की देहली पर सोती हूँ !
कुत्ते भौंके तो भौंकने देना,
मैं तुझे कमरबन्द पर बांध कर खींच लूँगी !
तेरे हसने और मेरे खेलने पर
नगरी में लोग ईर्ष्या करते हैं ।
गजू या तो परदेश में चलदे,
या पर्वतों का विष खाले !
काला है गजू का पायजामा,
और काली ही है गजू की पगड़ी ।
या तो गजू यहा से भाग चले,
या दूणी में आग लगादे ।

मरी त जाली मलारी,
सात त औनू औं !
सोन वणौनू पत्यौऊँ,
टाटोंदी गाडूनू तौं !
मरी त जाली मलारी,
सात आशनू औं !
तौं ले वोलों मलारी
उई फूकी औनू तौं !
सल माथ दिकेन्दो
जसी पुनिया की जून तौं,
तौं ले वोलौं मलारी,
मलारी रखनू नौं !

—अगर तू मर जायेगी मलारी,
तो मैं भी तेरे ही साथ आऊगा !
सोने की मैं तेरी प्रतिमा बनाऊंगा
और उसे गले मे बाधकर रखूगा !
अगर तू मर जायेगी मलारी,
तो मैं भी तेरे ही साथ आऊगा !
तुझसे मैं कहता हू मलारी,
कि मैं तुझे जला आऊगा !
चिता के ऊपर जलती हुई तू
पूर्णिमा के चाद सी दीखेगी !
तुझसे मैं कहता हू मलारी
कि मैं तुम्हारा नाम ख्यात करूगा !

४०

जैछी होली वल धियाणी,
लाली खावुदी हॅसी !
जैछी होली वल रुइणी,

रली घरू दी बसी !

--जब तक तुम क्वाँरी हो,
तभी तक तुम्हारे होंठों पर हंसी है।
जब किसी की पत्नी बन जाओगी
तो घरमें बैठी बन्द रहोगी !

४१

छोड प्यारी टाटू की सांगुल्टी,
छोड़ प्यारी सिराण को हात।
बेडा मेरी बाग मारलू
थातरू बियाईं नैगी रात।
न छोड़दू टाटू की सांगुल्टी,
न छोड़दू सिराणा हात।
तेरा बेड़ जू बौं शौबू मर्‌या
काले आया एकलू रात !

—प्यारी तू गलबाँही छोड दे,
प्यारी, अपने सिरहाने रखा मेरा हाथ छोड दे।
मेरी भेड़ों को बाघ मार ले जायेगा,
अब पर्वतीय मैदानों पर रात खुल गई है।
नहीं, मैं तेरी गलबाही नहीं छोड़ती,
न सिरहाने का हाथ ही छोड़ूंगी !
तेरी सब भेडो को चाहे बाघ ही मार ले जाय;
तू अकेली रात में आया ही क्यों था ?
(जब आया है तो मैं तुझे जानें न दूंगी !)

४२

हँसी बोलणो, बाटी कै खाणो,
बाटो पाणी नी पीणौ।

हुए माणुसी मरी जाणो,
हे मनछो अमर कुणो न हुणौ !
जेशो अऊँशु एशो हंदो ना आगू,
एशो छिनौ माणश जेशो डाड़ी रोलाप् !
फूली त जादे फुलटू फूली जाइली दाई,
माटी छुये धरती, मानवा हंसा जि सिद्वारे री वाई !
(उनु वले कामोटिया लाओ लिओ ले वेअॅ,)
शागौ री हुदी शोवडी जिमराजौरी भेउड़ी नेअॅ !
(गाडा वटौ शिणकी, जाअँलो वीओ,)
कसूरो त हंदो भगवान रो जिणे भरणो कीओ।
(शेलू री पागटी सूती, वुणो लौ शीकी,)
भगवानो री न कसूरौ करमू दी विधाताएँ लीखी !
(शागौ त बोलू शउड़िया गाड़ी लेइली ओई)
लिखनो वाड़ा लिखी देअं मेटतो वाड़ा ना कोई'।

—हे मनुष्यो, हसकर बोलो, बांटकर खाओ,
पर बँटा हुआ पानी न पिओ !
जो मनुष्य पैदा हुए हैं, सब मरेगें,
अमर कोई नहीं रहेगा।
मनुष्य जैसा इस वर्ष है,
वैसा आगे नहीं रहेगा !
वह तो ऐसा क्षीण होता जाता है, जैसे पेड़ों—
के पत्तो को पतझड नष्ट करता जाता है !
फूल फूलते हैं, सरसो फूलती है,
मिट्टी का शरीर पृथ्वी पर छूट जाता है, पर हंस यम द्वार
चला जाता है !
यम अपनी साग की क्यारी से अच्छा अच्छा साग छांटकर
ले जाता है और बुरो को छोड़ जाता है।

भगवान ने मृत्यु को जन्म देकर अपराध किया है !
परन्तु अपराध तो भगवान का भी नहीं,
अपराध तो कर्म रूपी विधाता की लेख का है !
लिखने वाले ने लिख दिया, उसे मिटाने वाला कोई नहीं।

४३

पत्नी अपने पति को किसी अन्य का प्रेम-पात्र बनते नहीं देख सकती और पति कभी उसके हस्तक्षेप से उसकी मृत्यु के मूल्य पर भी मुक्त होना चाहता है। अर्जुन और द्रोपदी का यह प्रेम-पूर्ण विवाद कुछ ऐसा ही है।

तौं ले बोलौं खाती पडुवाण,
तेरो न गाडूणो नौं !
मैं बाजणू चाचरा की दूब,
चाचरीया शोवी रौण औं !
तौं ले बोलौं दुरपती,
तेरो न गाडूणो नौं।
मैं बाजो गोठ को बैल,
दातु चरी खौलू तौं।
तौं ले बोलौं खाती पडुवाण,
तेरो नी गाडुणो नौं,
मैं बाजण डाडू को सिंहनाथ,
गोठ मारी डोबनू तौं।
तौं ले बोलौ दुरपती,
तेरो नी गाडूणो नौं !
मैं वाजौं डॉडू को तोपची,
करॉथ्यों मारण तौं।
तौं ले बोलौं खाती पंडुवाण,

तेरो न गाडूणो नौं।
मैं वाजू डांडू को वौंर,
फूल शोवी जौंनू औं।
तौं ले वालौं दुरपती,
तेरो न गाडूणो नौं।
मैं वाजण घोड़कू दानो,
चड़का मारी खाउनू तौं।

—मैं तुझे कहती हूं अर्जुन पांडव,
कि मैं तेरा नाम (तक) न लूंगी !
मैं चरागाह की दूब बनूंगी,
चरागाह में ही मैं शोभती रहूंगी।
मैं (भी) तुझे कहता हू द्रौपदी
कि मैं तेरा नाम न लूंगा।

(तब) मैं गोठ का बैल बन जाऊंगा,
और तुझे दांतों से चरकर खा जाऊंगा।
तुझे (भी) मैं कहती हू अर्जुन पांडव,
कि मैं तेरा नाम न लूंगी।
मैं वन-पर्वतों का सिंह बनूंगी,
और गोठ में ही तुझे मार डालूंगी !

तुझे कहे देता हू द्रौपदी,
मैं तेरा नाम न लूंगा,
मैं पर्वतों का शिकारी बन जाऊंगा,
और झाड़ियों के बीच तुझे मार डालूंगा।

तुझे (मैं) कहती हू अर्जुन पांडव,
मैं (कभी) तेरा नाम न लूंगी !
मैं शिखरों पर भौंरा बनूंगी,
और फूलों के साथ शोभा दूंगी !

तुझे कहता हू द्रौपदी,
मैं (फिर भी) तेरा नाम न लूंगा।

मैं (तब) गरजता दानव बनूंगा,
और वज्र से तुझे मार कर खाऊंगा।

४४

पुत्रियों के होते हुए भी पुत्रों का अभाव किसी भी सुन्दरी के हृदय का व्यथा भार हो सकता है यह गीत इसी भाव को व्यक्त करता है।

काथगा पष्टारी की मुनाली,
तू का ले करंदी सुई ?
जड़िलो मेरो बल अथि ना,
जाड़िलो मेरी-सी दुई !
—'हे पष्टारी की मुनाली
तू क्यों दुखी होकर बोलती है !'
'(मैं इसलिए दुखी हू क्योंकि)
मेरा कोई लड़का नहीं,
केवल दो लड़कियां हैं !'

४५

आगू कुमार की दामीण,
पाछू भराड़ को सर,
भराड़ राजा बल पणमेसर,
मु देया पुत्रू को वर।
—आगे कुमार का मैदान है,
पीछे भराड़ का ताल,
हे भराड देवता, हे परमेश्वर,
तू मुझे पुत्रों का वर दे !

४६

वसते पियारो ठंडू पाणी,
ह्यूंद् पियारो आग।
बेड़ा पियारो माभी वण,
धियाणी पियारो माग।

—वसन्त में ठंडा पानी प्यारा,
हिम पात में आग प्यारी,
भेड को मांजी बन प्यारा,
और लडकियो को माघ !

४७

फुफ्या भरची दुई होन्दी,
जसू तराजू को तोल।
तू फुफ्या सोना को गेन्दुवा,
मु मलारी धरती को मोल।
आज फुफिया चाणी रौला,
भोल से काटणो वाट।
ताऊँ ले फुफिया डॉड कॉठ,
मु नईंक गाड।
तू फुफिया वल वंठीयाक,
आऊँ रई मोड़ का डर।
कि जाणू फुफिया वल वंठीयाक,
कि रण माइच मर।

—फूफी और भतीजी दोनो
तराजू से तोली हुई-सी हैं।
फूफी, तू सोने की गेंद है,
मैं मलारी धरती का मोल हूं।
फूफी आज हम बैठी रहेंगी,
कल से रास्ते चलना होगा।
तुझे पहाड़ों के शिखरों पर चलना होगा,
और मुझे नदी के किनारे-किनारे।
फूफी तू सुन्दर पुरुष को व्याही है,
मैं तो मूर्ख के घर गई हूं।
या तो मैं सुन्दर पुरुष को पाऊंगी,
या फिर मायके मे ही मर जाऊंगी।

रत नी दिने रैबार,
तू केक आई आदुडी रात ?
रात कू गणदी गैइणा तारा,
दुशड़ी डाल्यूं का पात,
स्वामी तेरो परदेश,
त्वै मा मेरो जिऊ।
तू एशी शोभ जियरा,
जशो बॉन को अँगार।
पिंगली गलूठ्यों छाया पड़ी,
ना लगो प्यारा को हात।
रिस त येशो चढ़े बंठीया,
रिंगदो चितैला गैइणा,
जु तू यख आई—वैख,
मु तेरी मॉ या वैइणा।

—'न तुझे सन्देश दिया, न बुलाया,
तो फिर क्यों आधी रात चला आया ?'
'तू रात को गिनती तारे,
दिन को तरु-पात सारे !
प्रिय छोड तुझे परदेश गया,
मुझको तुझसे स्नेह नया !
करती इस उर में तू श्रृंगार,
वाज का जलता ज्यों अगार !
पडी गालों पर छाया काली,
प्रिय का न स्पर्श मिला आली !'
रोष चढा तब उस रूपा को,
घूमी उसके आगे धरणी थी !
बोली–तू जो यहा आया,
मैं तेरी भगिनी या जननी थी ?

सामयिक गीत

नई रीत

गढ़वाल मा या नई रीत लैगी,
अबकी नौनी शौकीन ह्वैगी।
नौनी छ छोटी, वड़ो चैंदी फोंदी,
अबकी नौनी मिजाजी होन्दी।
सोना की चूडी लगीं छन हात,
भ्वा फुंड की नी करदिन बात।
बिगर हार अब शोभा नी च,
बेसर चैंदी नाक का बीच।
साड़ी विलौज भाबरी भूली,
नाक मा फूली रंदी येकूली।
चादरी चैंदी अनमॅन रंग,
ऑगड़ी स्वाणी वैका सग।
गातक चैंदी रेसमी साड़ी,
शौकन दुनिया इनी बिगाड़ी!
अबकी नौनी फैशन करदी,
नी करदी काम भूखन मरदी।

—गढ़वाल में अब नई रीत आई है,
अब के जमाने की लडकिया शौकीन हो गई हैं।
लडकी तो छोटी है, मगर वेणी उसें लम्बी चाहिये।
ये नई लडकियाँ शौक के लिये रोतीं हैं।
सोने की चूडियाँ हाथो पर लगी हैं,
जमीन की बाते नहीं करती।
हार के विना अब शोभा ही नहीं,
नाक के बीच अब वेसर चाहिये।
अब पतली साडी और ब्लाउज चाहिये,
और नाक पर अकेली फूली पहनती हैं,

अब तो उन्हें रंग विरंगा दुशाला चाहिए,
उसके साथ सजीली अंगिया भी चाहिए।
पहिनने के लिए रेशमी साडी चाहिए,
शौक ने दुनिया को ऐसा बिगाड़ा !
इस जमाने की लडकिया फैसन करती है,
काम नहीं करती, भूखो मरती है।

डिग्गी घमाघम

पनघट पर स्त्रियो की बाते प्राय हुआ करती हैं। पनघट का यह गीत नारी की महत्वाकाक्षा को व्यक्त करता है। देखिये, औरतो की मिनिष्ट्री के ये पोर्टफोलियो किस तरह बँट रहे हैं।

रीटि जाला बाज, रीटि जाला बाज,
वसन्तू की तारा बोदे मैं चलौलू राज !
डिग्गी घमाघम !
झंगोरा की बाल, झगोरा की बाल,
पदानू की भूमा बोदे, मैं छ जवारलाल।
पैरी जालो कोट, पैरी जाला कोट,
छज्जा वालो दीदी बोदी, मैं छपौलू नोट !
लुवा गड़ी न्याण, लुवा गड़ी न्याण,
बचूली की सासू बोदी मैं छ डिपट्याण।
पाणी को तुकम, पाणी को तुकम,
मेरी नणद बोदे, मैं चलौलू हुकम।
डिग्गी घमाघम।

—(बाज घूमे, बाज घूमे,)
वसंतू की (पत्नी) तारा कहती है, राज मैं चलाऊँगी
डिग्गी घमाघम !
(सवां की बाल, सवां की बाल,)
प्रधान की भूमा कहती है, मैं जवाहरलाल हू।

(कोट पहिना गया, कोट पहिना गया,)
छज्जे वाली दीदी कहती है, नोट में छपाऊगी।
(लोहे से निहान गढ़ी, लोहे से निहान गढी,)
बचूली की सास कहती है, मैं डिप्टाइन हूँ।
(पानी की बूंद, पानी की बूंद,)
मेरी ननद कहती है, हुक्म मैं चलाऊँगी।

जमाना को रंग

तेरो रंग बदल्यूं च है रे जमाना।
दुनिया का देख ढंग, चड्यूं च कच्चो रंग।
भेद भौ कुछ नी च, सब एक समाना।
छै रुप्या को कोट सिलैले तब चलदो बॉगो,
जेब मा वेका धेला नी च चुफ्लो वे को नॉगो।
कली होका सॉदी रख्या बीडी पेन्दा ज्यादा,
कोणा पर बीड़ी सुलगै, रजै फुके आदा।
नौना को भैंसो ब्यायूं, बुड्या लग्यूं च सास,
ब्वारी करदी सैर फैर, सासू काटदी घास!
सासू कर्दी कूटणी पीसणी, ब्वारी ह्वैगे सयाणी,
नौनों मू चा को गिलास, बुड्या मू पज्वाणी!
जोंखी मूंडी फुंडू धोली, चिफ्ली करी दाड़ी,
घर की जनानीक धोती नी, रंडीक लौंदा साड़ी।
हात पर बीडि लीले, गिचा पर पान,
बुड्या बुड्योंन जोंखी मूंडी, हम भी होन्दा ज्वान।

—अरे जमाने, तेरा रंग बदल गया है।
दुनिया के ढंग तो देखो, सब कच्चा रंग चढा है।
भेद-भाव कुछ नहीं रहा, सब एक समान हो गया है!
छः रुपये का कोट सिला लिया, तभी टेढ़ा टेढा चलता है,

जेब में तो उसके घेला नहीं और सिर देखो तो नगा !
हुक्के तो अब छोड दिए, ज्यादातर बीडी पीते हैं;
कोने पर बीडी सुलगाई तो रजाई आधी जल गई !
लडके की भैंस व्याही है, बूढा बाप आशा में है कि पीने को
दूध मिलेगा। (किन्तु... !)
बहू तो इधर उधर सैर करती है, सास घास काटती है,
सास कूटना-पीसना करती है, और बहू चौधरानी बनी फिरती है।
बेटे तो चाय पीते हैं, बाप चाय के बचे-खुचे पत्ते खाता है।
मूँछे मूँडकर फेंकदो हैं, दाडी चिकनी करते हैं
घर की औरत के लिए धोती नहीं पर रंडी के लिये साडी लाते हैं।
हाथ पर बीडी ले ली, मुँह पर पान रखा,
बूढे-बूढों ने भी मूँछे मूँड दीं—हम भी जवान होते हैं !

दुनिया की हवा

दुनिया की हवा देखा किलै या रूखो छ,
दया धर्म की डाली बोल किलै सूखी छ ?
भगवान की आख्यों मा क्या निंद आई छ,
गरीबू की तरफ फेर अँध्यारो किलै छ ?
हम नादान गरीबू की प्रभू हाई करख जाली,
हम बाग बगीचा छाँ तुम बाग का माली !
जौं मू बेटी छ ज्वान, तौंकू भारी छ गुमान,
घर-बर नी देखदान तौंकी रूप्यों मा छ जान !
बोद मैं बाइस सौ ल्यौंलो पौणा द्वी मगोलो,
ओबरा चिणौल बेदो, यां दान किलै छ ?
बेटी का रूप्योंन उ सेठ बणी गन,
द्वि ऐन-गत्तेदार सेठ जी ठग्या गेन।
सौ-सौ रूप्या देन्दा, ब्याज का लोब,

उगदा नी आसाम्यों से, पछतॉदो किलै छ?
गौचर जु वन्द करीन, जमींन छन वणौणा,
रगड़ौं मा सेरा वैन या भूक किलै छ?
सुई धागो सबू मू छ स्यूंदा नी छन कुई,
जु गौं को मुखिया तै मू कैंची किलै छ?
तैन गौं की करी टुकड़ी, मरजाद तौंकी विगाडी,
वो गौं को परवान विश्वास किलै छ?

—दुनिया की हवा रूखी क्यों हुई है?
दया-धर्म का डाली, कहो क्यो सूखी है?
भगवान की आखो मे कैसी नींद आई है?
गरीबो की तरफ उसने चुप्पी साधी हुई है।
अमीरो की तरफ तेरा गैस लैम्प वला हुआ है,
किन्तु गरीबो की तरफ अधेरा क्यो है?
प्रभो, हम नादान गरीवो की आहें कहा जाये गी?
हम वाग वगीचे हैं प्रभु, तुम वाग के माली हो।
जिनके पास जवान वेटी है, उनको वडा गुमान है,
वे घर-वर कुछ नहीं देखते केवल पैसे में प्राण है।
कहते हैं. मे वाइस सौ लूंगा, दो वराती बुलाऊँगा,
ओवरी मे वेदी वनाऊँगा, ऐसा कन्यादान क्यो है?
वेटी को वेचकर अब वह सेठ वन गया,
दो गल्लेदार आये और सेठ जी ठगे गये।
व्याज के लोभ में तब वह सैकडो रुपये उधार देता है,
पर वे आसामियो रा उगते ही नही, फिर पछताता क्यो है?
चरागाह बन्द कर दिए हैं लोग खेत वनाने लगे है,
रगडो में भी खेती होने लगी है, ऐसी भूख क्यो होने लगी है?
स वके पास सुई तागा है, पर मिलता कोई नहीं,

पर जो गाव का मुखिया है, उसके पास कैंची क्यो है ?
उसने गाव के टुकडे किये है, मर्यादा बिगाडी है,
गाव के उस प्रधान पर फिर भी लोगो का विश्वास क्यो है ?

चले जमानो

युग की गति पानी के जहाज की तरह है। समानता और जनतंत्र के इस युग मे प्रत्येक योग्य-अयोग्य नागरिक अपने को किसी से कम नहीं समझता—भारत की यह बहुत ही आधुनिक चेतना है। प्रस्तुत गीत उसी पर एक व्यग है !

जमानो चले जनो पाणी मा को जाज।
कामला भुल फुली,
जौ का कपाल मा,
द्वै मण माटू रण छौ पड्यू,
तौन भी रख्यालीन बुलबुली।
जमानो चले जनु पाणी मा को जाज।
काफला की ऊनी, शंख की धूनी,
दि्दा पुल पार गैनी,
लौटी आये घर मू,
बोल्दो भैजी समन्यन्।
मैं भी होयो कानूनी !
जमानो चले जनो पाणी को जाज !
चटनू का काज, काग्रेसी राज,
जौन मुख नी धोण छौ,
आँखौं पर पाक का धारा
रण छा लग्याँ, स्ये भी बोदा—
मैं भी चश्मा बाज !
जमानो चले जनो पाणी को जाज !

उगदा नी आसाम्यों से, पछतॉदो किलै छ ?
गौचर जु बन्द करीन, जमींन छन वणौणा,
रगडौं मा सेरा वैन या भूक किलै छ ?
सुई धागो सन् मू छ स्यूंदा नी छन कुई,
जु गौं को मुखिया तै मू कैंची किलै छ ?
तैन गौं की करी टुकड़ी, मरजाद तौंकी विगाड़ी,
वो गौं को परधान विश्वास किलै छ ?

—दुनिया की हवा रूखी क्यो हुई है ?
दया-धर्म का डाली, कहो क्यो सूखी है ?
भगवान की आखों में कैसी नींद आई है ?
गरीबो की तरफ उसने चुप्पी साधी हुई है।
अमीरो की तरफ तेरा गैस लैम्प बला हुआ है,
किन्तु गरीबों की तरफ अधेरा क्यो है ?
प्रभो, हम नादान गरीबो की आहे कहा जाये गी ?
हम बाग बगीचे हैं प्रभु, तुम बाग के माली हो।
जिनके पास जवान बेटी है, उनको बडा गुमान है,
वे घर-वर कुछ नहीं देखते केवल पैसे में प्राण है।
कहते हैं मैं बाइस सौ लूंगा, दो बराती बुलाऊंगा,
ओवरी मे वेदी बनाऊंगा, ऐसा कन्यादान क्यो है ?
बेटी को बेचकर अब वह सेठ बन गया,
दो गल्लेदार आये और सेठ जी ठगे गये।
ब्याज के लोभ में तब वह सैकडो रुपये उधार देता है,
पर वे आसामियों स उगते ही नहीं, फिर पछताता क्यो है ?
चरागाह बन्द कर दिए हैं लोग खेत बनाने लगे है,
रगडों में भी खेती होने लगी है, ऐसी भूख क्यों होने लगी है ?
स बके पास सुई तागा है, पर मिलता कोई नहीं,

पर जो गाव का मुखिया है, उसके पास कंची क्यो है ?
उसने गाव के टुकडे किये हैं, मर्यादा बिगाडी है,
गाव के उस प्रधान पर फिर भी लोगो का विश्वास क्यो है ?

चले जमानो

युग की गति पानी के जहाज की तरह है। समानता और जनतंत्र के इस युग मे प्रत्येक योग्य-अयोग्य नागरिक अपने को किसी से कम नहीं समझता—भारत की यह बहुत ही आधुनिक चेतना है। प्रस्तुत गीत उसी पर एक व्यग है।

जमानो चले जनो पाणी मा को जाज।
कामला भुल भुली,
औं का कपाल मा,
द्वै मण माटू रण छौं पड्यू,
तौन भी रख्यालीन वुलवुली।
जमानो चले जनु पाणी मा को जाज।
काफला की ऊनी, शख की धूनी,
दिदा पुल पार गैनी,
लौटी आये घर मू,
वोल्दो भैजी समन्यन्।
मैं भी होयां कानूनी !
जमानो चले जनो पाणी को जाज !
वटनू का काज, कांग्रेसी राज,
जौन मुख नी धोण छौ,
आँखौं पर पाक का धारा
रण छा लग्याँ, स्ये भी वोदा—
मैं भी चश्मा वाज !
जमानो चले जनो पाणी को जाज !

छॉछी लाया रैक,
जु कभी विखोत भी नी नहाया,
सिंगाणा न रखदा नाक लवतार्य,
स्ये भी बोदा
मैंक भी बोला बैख !
जमानो चले जनो पाणी मा को जाज ।
तौली लायो तॉद,
जैं जनानी देखीक
कुत्ता भी नी खॉदो छॉछ,
स्या भी बोदी–
मैंक भी बोला बॉद ।
जमानो चले जनो पाणी मा को जाज ।
—जमाना ऐसा चल रहा है जैसा पानी का जहाज !
(कम्बल का ओढना,)
जिनके सिर के ऊपर
ढाई मन मिट्टी पड़ी रहनी थी,
उन्होंने भी अंग्रेजी बाल रख लिए हैं !
जमाना ऐसा चल रहा है, जैसा पानी जहाज !
(काफल का रस, शख की ध्वनि,)
भैया पुल पार तो गया ही नहीं,
घर लौट आया,
कहता है भाई जी नमस्कार !
मैं भी अब कानूनी (कानून जानने वाला) हो गया हूँ ।
जमाना ऐसा चल रहा है, जैसा पानी का जहाज !
(बटनों के काज, कांग्रेसी राज में,)
जो कभी मुँह नहीं धोते,

आंखों में जिनके पाक की धारें लगी रहती हैं,
वे भी कहते हैं—
हम भी चश्मेवान हैं !
जमाना ऐसा चल रहा है जैसा पानी का जहाज !
जो कभी विषुवत सक्रांति को
भी न नहाया,
सिगाणे से जिसका नाक लथपथ हुआ रहता है,
वह भी कहता है—
मुझे भी मनुष्य कहो !
जमाना ऐसा चल रहा है, जैसा पानी में जहाज ।
जिस औरत को देखकर,
कुत्ता भी छांछ नहीं खाता,
वह भी कहती है—
मुझे भी सुन्दरी कहो !
जमाना ऐसा चल रहा है, जैसा पानी का जहाज ।

भारत का हाल

प्रस्तुत गीत भारत की युद्धोत्तर आर्थिक परिस्थिति का दिग्दर्शन कराता है ।

कसो जमानो आयो सौ बिन्दी का साल जी,
भारत का नेता हुवैन पंडित जवाहरलाल जी !
सुणा-सुणा भाई वन्दो भारत को गीत जी,
कसा कसा हाल हुवैन, कसी ऐन रीत जी !
रुप्या पायो गेऊँ हुवैगे, चौंल कौ नी दाणो जी !
पांच पांच सौ का भैंसा होया दूध नी माणो जी !
भैंसा का मोल गौड़ो हुवैगे, गौड़ा का मोल बकरी जी,
सौदा खाणक पैसा नी, कसी होये अकरी जी !

छ्वॉछी लाया रैक,
जु कभी विखोत भी नी नहाया,
सिगाणा न रखदा नाक लवतार्य,
स्ये भी बोदा
मैंक भी बोला वैख !
जमानो चले जनो पाणी मा को जाज ।
तौली लायो तॉद,
जैं जनानी देखीक
कुत्ता भी नी खॉदो छ्वॉछ,
स्या भी बोदी-
मैक भी बोला बॉद !
जमानो चले जनो पाणी मा को जाज !

—जमाना ऐसा चल रहा है जैसा पानी का जहाज !
(कम्बल का ओढना,)
जिनके सिर के ऊपर
ढाई मन मिट्टी पड़ी रहती थी,
उन्होने भी अंग्रेजी बाल रख लिए है !

जमाना ऐसा चल रहा है, जैसा पानी जहाज !
(काफल का रस, शख की ध्वनि,)
भैया पुल पार तो गया ही नहीं,
घर लौट आया,
कहता है . भाई जी नमस्कार !
मैं भी अब कानूनी (कानून जानने वाला) हो गया हूँ।

जमाना ऐसा चल रहा है, जैसा पानी का जहाज !
(बटनों के काज, कांग्रेसी राज में,)
जो कभी मुँह नहीं धोते,

आंखों में जिनके पाक की धारें लगी रहती है,
वे भी कहते हैं—
हम भी चश्मेबाज हैं !

जमाना ऐसा चल रहा है जैसा पानी का जहाज !

जो कभी विषुवत संक्रांति को
भी न नहाया,
सिंगाणे से जिसका नाक लथपथ हुआ रहता है,
वह भी कहता है—
मुझे भी मनुष्य कहो !

जमाना ऐसा चल रहा है, जैसा पानी में जहाज।

जिस औरत को देखकर,
कुत्ता भी छाछ नहीं खाता,
वह भी कहती है—
मुझे भी सुन्दरी कहो !

जमाना ऐसा चल रहा है, जैसा पानी का जहाज।

भारत का हाल

प्रस्तुत गीत भारत की युद्धोत्तर आर्थिक परिस्थिति का दिग्दर्शन कराता है।

कनो जमानो आयो सौ विन्दी का साल जी,
भारत का नेता ह्वैन पंडित जवाहरलाल जी।
सूणा-सूणा भाई वन्दो भारत को गीत जी,
कना कना हाल ह्वैन, कनी ऐन रीत जी !
रुप्या पाथो गेऊँ ह्वैगे, चौंल की नी दाणी जी।
पांच पांच सौ का भैंसा होया दूध नी माणी जी !
भैंसा का मोल गौड़ो ह्वैगे, गौड़ा का मोल बकरी जी,
सौदा खाणक पैसा नी, कनी होये अकरी जी !

गऊँ गऊँ मा कन्ट्रोल ह्वेये, मिलदी नी चीनी जी,
हौर चीज फुन्ड् फूका चा जरूर पीणी जी !
डेरा मू मेमान अय् छ, खाँद्ो रुप्या रोज जी,
जादो क्यों नी जाँदो चुचा विसौ का खोज जी !

—न जाने सौं के विन्दुओं के इस साल कैसा जमाना आया !
पंडित जवाहरलाल भारत के नेता हुए !
सुनो सुनो भाइयो, भारत का गीत सुनो !
कैसी दशा हुई है, कैसी रीत आई है !
रुपये का आध सेर गेंहू हुआ, चावल का दाना नहीं,
पांच पाच सौ में भैंस बिकती है, दूध एक सेर भी नहीं देती।
भैंस के मोल पर गाय आ गई है, गाय के मोल पर बकरी,
सौदा खाने के लिये कौडी नहीं, कैसी मँहगाई आई !
गाव गाव में कंट्रोल हो गया है, चीनी नहीं मिलती।
और चीजो को तो छोडो भी, पर चाय जरूर पीनी है !
घर में मेहमान आया है, कई रुपये रोज खा जाता है,
अरे तू जा, कहीं अनाज की खोज क्यो नहीं जाता ?

बाजरो

अनाज के उस अभाव के युग में जब पहली बार गढवाल में वाजरा बिकने को आया तो वे न उसकी रोटी ही पका सके और वह उनके पचने में ही आया।

पकौ बामणी बासमती भात,
मैं भूको रयूँ ब्याली की रात !
ज्वार वाजरान बुरी विताई,
कोदा झंगोरान मुखड़ी लुकाई !
ज्वार वाजरा की रोटी पकाई,

छोटा छोरौं की पोटगी भकाई !
बाजरा की रोटी नौना नी खांदा,
लगौ ब्वैं डिस्याणो टुप सेई जांदा !

—ब्राह्मणी आज तो बासमती चावल पका;
मैं कल की रात तो भूखा ही रहा !
ज्वार बाजरे ने बुरी विता दी है,
मंडुवे सवां ने सूरत छिपा ली है !
ज्वार बाजरे की रोटी पकाई
तो छोटे मुन्नों के पेट फूल गये !
बच्चे बाजरे की रोटी नहीं खाते,
मा विछौना लगा—कहकर सो जाते है !

भर्ती नी होदा

हमारी शताब्दी ने दो महान विश्व युद्ध देखे है। शासक वर्ग के उनमें भले ही जो हित रहे हो किन्तु युद्ध के प्रति जन-साधारण की प्रतिक्रिया घृणामयी ही रही है। एक ओर शासक वर्ग का प्रलोभन था, दूसरी ओर जनता का मानवतावादी आदर्श।

सुबेदार जमादार भर्ती नी होन्दा,
भर्ती नी होंदा, मा बाप रोन्दा !
तिन क्या बुरो माण कुर्सी वैठणो,
लौटू का पूला घर भेजणो !
घर की घरवाली मौकारू लाली,
बाल-बच्चों तैं सरकार पढ़ाली !
जापान जरमन को मरे मुर्दा,
जौन लडाई करे शुरू या !
बणू-बणू पियारी दिल की रोली,
जिकुड़ी लगली कनी गोली !

पंद्र अगस्त हमू दिलैगी वो,
अंगरेजू सणी भगैगी वो।
आजादी हमू दिलैगी वो,
राज किसाणु दिलैगी वो!
मातमा गाधी बड़ू त्यागी छ,
देश मुलक को अनुरगी छ।

—महात्मा गाघी बडे भाग्य शाली हैं,
देश के अनुरागी हैं।
वे बकरी का दूध पीते हैं,
खादी के वस्त्र पहनते हैं।
वे हमें पन्द्रह अगस्त दे गए,
वे अग्रेंजों को भगा गए,
वे हमें आजादी दिला गए,
वे राज किसानों को दे गए!
महात्मा गाघी बडे त्यागी हैं,
देश के अनुरागी हैं।

नेहरू

धान की लवाई नेरू, धान की लवाई, झम।
अंगरेजी जमाना नेरू, गरीबू की तवाई, झम।
चिण्यो त पगार नेरू, चिण्यो त पगार, छम!
अगरेजी जमाना नेरू, बेंट थई बेगार, झम!
भैंसू की छान नेरू, भैंसू की छान, झम।
अगरेजी जमाना नेरू, अमीरू की शान, झम।
हल का फाला नेरू, हल का फाला झम।
जनता का मुख नेरू, कना लग्याँ ताला झम!
लिखी जाली पाटी नेरू, लिखी जाली पाटी झम।

गरीबू की कमाई नेरू, अमीरून चाटी भम !
घूगती की घोली नेरू, घूगती की घोली भम !
देश पर प्राण देंदी नेरू, कांगरेसी टोली भम !
गंगा जी को तीर नेरू, गगा जी को तीर भम !
सुमन नागेंद्र मोलू नेरू, गढ़वाल का वीर भम !
काटे त घास नेरू, काटे त घास भम !
भारत का गरीब नेरू, तेरा ही सास भम !

(धान की कटाई नेहरू, धान की कटाई !)
अग्रेजो के शासन में नेहरू, गरीबों की तबाही थी !
(पुश्ता चुना नेहरू, पुश्ता चिना !)
अग्रेजों के शासन मे नेहरू, भेंट और वेगार थी !
(भैस की छान नेहरू, भैस की छान,)
अग्रेजों के शासन में नेहरू, अमीरों की ही शान थी !
(हल का फाल नेहरू, हल का फाल !)
जनता के मु ह पर नेहरू, तब कैसे ताले लगे थे !
(पाटी लिखी नेहरू, पाटी लिखी—)
गरीबों की कमाई तो नेहरू, अमीरो ने चाटी है।
(घूगती का घोसला नेहरू, घूघती का घोसला,)
काग्रेसी टोली नेहरू देश पर बलिदान हुई !
(गगा जी का तट, नेहरू गगाजी का तट,)
गढ़वाल में भी नेहरू, सुमन नागेन्द्र मोलू जैसे वीर हुए हैं !
(घास काटा नेहरू, घास काटा,)
नेहरू, भारत के गरीब तेरे ही भरोसे पर है !

नेता जी

और एक बार आजाद हिन्द फौज के गढवाली सिपाहियो ने 'जय हिन्द' के नारे से गढ़वाल की सोई कन्दराओ को गु जा दिया।

नेता जी के प्रति श्रद्धांजली के ये शब्द कितने मर्मस्पर्शी है—'लडाई तुमने लडी नेता जी और आजाद हम हुए' त्याग की इससे सुन्दर व्याख्या और क्या हो सकती है ?

जै हिन्द अखोड की साईं नेता जी जै हिन्द,
जै हिन्द बर्लिन पौंछीन नेता जी जै हिन्द,
जै हिन्द आजादी ताईं नेता जी जै हिन्द,
जै हिन्द आरसी को ऐना नेता जी जै हिन्द,
जै हिन्द हिटलर मिलीक नेता जी जै हिन्द,
जै हिन्द सिंगापुर गैना नेता जी जै हिन्द ।
जै हिन्द लुवा गडी सरो नेता जी जै हिन्द,
जै हिन्द सिंगा पुर जैक नेता जी जै हिन्द ।
जै हिन्द फौज खडी करी नेता जी जै हिन्द,
जै हिन्द कपड़ों की गाजी नेता जी जै हिन्द,
जै हिन्द नेता जी लगै नेता जी जै हिन्द,
जै हिन्द प्राण की बाजी नेता जी जै हिन्द !
जै हिन्द फॉडी जाली ऊन नेता जी जै हिन्द,
जै हिन्द सुफल फलीगे नेता जी जै हिन्द,
जै हिन्द तुमारो खून, नेता जी जै हिन्द !
जै हिन्द बाखरा की गूदी नेता जी जै हिन्द,
जै हिन्द धनि ऊ मात पितौंक जै हिन्द,
जै हिन्द जौन पिलाये दूदी नेता जी जै हिन्द,
जै हिन्द लगोठी का बाद नेता जी जै हिन्द ।
जै हिन्द त्वैन लडै लड़े नेता जी जै हिन्द,
जै हिन्द हम होया आजाद नेता जी जै हिन्द,
जै हिन्द धातु गड़े पारो नेता जी जै हिन्द,
जै हिन्द मा गुंजीगे नेता जी जै हिन्द,
जै हिन्द को नारो नेता जी जै हिन्द ।

—(जय हिन्द अखरोट की टहनी नेता जी जय हिन्द !)
जय हिन्द नेता जी बर्लिन पहुँचे, नेता जी, जय हिन्द !
जय हिन्द आजादी के लिये, नेता जी, जय हिन्द !
(जय हिन्द आयना नेता जी जय हिन्द !)
जय हिन्द हिटलर से मिलकर नेता जी जय हिन्द !
जय हिन्द सिंगापुर गये नेता जी जय हिन्द !
(जय हिन्द लोहे की सीखचें नेता जी जय हिन्द !)
जय हिन्द सिंगापुर जाकर नेता जी जय हिन्द !
जय हिन्द फौज खडी की, नेता जी जय हिन्द !
(जय हिन्द कपड़ो की गाठ, नेता जी जय हिन्द,)
जय हिन्द तुमने नेता जी जयहिन्द
जय हिन्द प्राणों की बाजी लगाई नेता जी जय हिन्द !
(जय हिन्द ऊन धुनी गई नेता जी, जय हिन्द,)
जय हिन्द सफल हो गई नेता जी जय हिन्द,
जय हिन्द तुम्हारा खून नेता जी जय हिन्द !
(जय हिन्द बकरी की गूदी नेता जी जय हिन्द !)
जय हिन्द उन माता-पिता को धन्य है, जय हिन्द,
जय हिन्द जिन्होंने तुम्हें दूध पिलाया नेता जी जय हिन्द !
(जय हिन्द बकरे का पेट नेता जय हिंद,)
जय हिंद तूने लड़ाई लडी नेता जी जय हिंद,
जय हिंद, और हम आजाद हुए नेता जी जय हिंद !
(जय हिंद धातु का पारा गढा नेता जी जय हिंद)
जय हिंद हिंद में गूंज गया नेता जी जय हिंद,
जय हिंद जय हिंद का नारा नेता जी जय हिंद !

श्री देव सुमन

श्री देव सुमन टिहरी गढवाल के कांग्रेसी नेता थे, जो सामंत

शाही के विरुद्ध संघर्ष करते हुए ८४ दिन की भूख हड़ताल के पश्चात देश की बलि वेदी पर चढ़े ।

सड़की को सूत सुमन सड़की को सूत ले,
टीरी मा पैदा ह्वैगे सुमन, सुमन सपूत ले !
गढ़ माता को प्यारो सुमन, सुमन सपूत ले !
अखोड़ को कीच सुमन, अखोड़ को कीच,
ढंडक शुरू ह्वैगे सुमन, रवाईं का बीच !
घाघरी को फेर सुमन, घाघरी को फेर,
गढ़माता की जिकुड़ी सुमन, पैनो लागे तीर !
गढ़माता की वीर सुमन, पैनो लागे तीर ले,
बजायो त धण सुमन, बजायो त घण,
मरि जाण बल सुमन, घर नी रण !
नौ लखो हार सुमन, नौ लखो हार,
त्वैन शुरू कर्याले सुमन, आजादी परचार !
गाधी जी का चेला सुमन, आजादी परचार,
काटी जालो कूरो सुमन, काटी जालो कूरो !
यो सुमन ढडकी ह्वैगे, होई जाणो सूरो,
कपड़ा को गज सुमन, कपड़ा को गज,
आँगण का बीच सुमन, झंडा देन्द सज !
घास काटे सुमन, घास काटे च्वान,
तेरा साथी छन सुमन, इसकूली ज्वान !
देवता का भोग सुमन, देवता को भोग,
तेरा साथी छन सुमन, गौं गौं का लोग !
बाखुरी को कान सुमन, बाखरी को कान,
सुफल होइगे सुमन, तेरो स्यो बलिदान !
गढमाता की वीर सुमन, तेरो स्यो बलिदान !

(सड़क नापने की डोरी सुमन, सड़क नापने की डोरी,)
टिहरी में सुमन सपूत पैदा हो गया।
गढ़माता का प्यारा सुमन पैदा हो गया।
(अखरोट का कीचड़ सुमन, अखरोट का कीचड़,)
सुमन, रवाई के लोगों में असंतोष शुरू हो गया है।
(घाघरे का फेर सुमन, घाघरे का फेर,)
तिलाड़ी के मैदान में गढ़ माता के हृदय पर देख कैसा तीर लगा है।
गढ़माता के वीर सुमन, कैसा पैना तीर लगा है।
(घन बजाया सुमन, घन बजाया,)
चाहे मर जांय सुमन, पर घर नहीं बैठना है!
(नौ लखा हार सुमन, नौ लखा हार,)
तूने आजादी के विचारों का प्रचार किया सुमन!
गांधी जी के चेले सुमन तूने आजादी का प्रचार किया है!
(घास काटा गया सुमन, घास काटा गया,)
यह सुमन क्रान्तिकारी बन गया है, तुम भी शूर बनो।
(कपड़े का गज सुमन, कपड़े का गज,)
सुमन, आंगन के बीच कांग्रेसी झंडा कैसी शोभा देता है!
(पहाड़ पर घास काटा सुमन, पहाड़ पर घास काटा,)
स्कूल के लड़के सुमन, तेरे साथी बनें!
(देवता का भोग सुमन, देवता का भोग,)
गांव-गांव लोग सुमन, तेरे साथी बनें।
(बकरी के कान सुमन, बकरी के कान,)
तेरा बलिदान सुमन सफल हुआ!
गढ़माता के वीर सुमन तेरा बलिदान सफल हुआ।

बाजो हारमुनी

टिहरी की सामंत शाही से मुक्ति प्राप्त कर वहां की जनता ने जिस उल्लास और हर्ष का अनुभव किया, वह इस गीत में व्यक्त हुआ

जिन पहाडों पर जाने को वदर भी न भरते दम,
चली दौडी वहा मोटर थ रा रा पम पम !
भूखे पेट घन-सब्बल बजाते रहे हम,
पहुँचाई टिहरी मोटर थ रा रा पम पम !
किसीने अठन्नी चवन्नी कमाई किसीने पैसा,
चली मोटर पहाड़ों पर कुमायां सा भैंसा !
महीनो के, वर्षों के पथ हुए अब सुगम,
दिनों दिन मोटर आती थरा रा पम पम !
अब न ये पैर दुखेंगे, यह पीठ लदेगी कम,
बिठा लायेगी मोटर थ रा रा पम पम !

करा

आजादी के बाद पंचायतें बनीं, जनता में सुधार की भावनएं जागीं, निर्माण के सपने मंडराये ।

गौं गौं मा पचैत करा अर सुधारा पाणी जी !
सुख से उठली बैठली राणी-बौराणी जी !
न करा मुकदमा भायों, करा आपस मा मेल जी,
कोर्ट मा पड्या रला बेचला लोण तेल जी !
शराब नी पेणी भायों, नी खेलणू जुवा जी,
गली गली पड्यॉ रला बोलला ब्वई बुवा जी !
पंचू मा जैक सुणावा, घूस नी खाणी जी,
सई सई निसाब करणू वाल बचों जाणी जी !
अपणी ही खेती छ, अपणो ही छ राज जी,
मेल से रणो भायों, पाई आजादी आज जी
डाली-बोटी लगावा, बणावा बग्वान जी !
जागू जागू मोटर पौंछावा, देवा श्रम दान जी ।

—गांव गाव में पचायतें बनाओ, पानी को सुधारो !
तुम्हारी ही रानी बहूरानियां सुख से उठेंगी-बैठेंगी !
मुकद्दमे न करो, आपस में मेल करो !
नहीं तो कचहरी में पड़े रहोगे, नमक- तेल के पैसे भी गवाओगे !
शराब न पिओ भाइयो, जुआ न खेलो,
नहीं तो गली-गली में पड़े हुए मां-बाप को पुकारते रहोगे।
पचो से जाकर कहो कि वे रिश्वत न लें !
अपनी सतान का ख्याल रखते हुए सही-सही फैसला करें।
अपनी ही खेती है, अब अपना ही राज है !
मेल से रहो भाइयो, हमें आज आजादी मिली है।
पेड़-पौधे लगाओ, बगीचे बनाओ;
जगह जगह मोटर सडकें पहुचाओ, श्रमदान दो !

झांझा—सड़क

लोक तत्र में सबसे प्रमुख वस्तु श्रम-साधना है। इधर राजकीय सूत्रो से 'श्रमदान' का आन्दोलन चलाया गया है। झाझा सड़क का यह गीत जनता की श्रम-साधना का सुन्दर शब्दो में उल्लेख करता है।

पाड़ से जूझ्या एक छंदा ज्वान,
सावली चलौंदा जना काठुली खान।
पाड़ पर चिबट्या जनी गंगाडी बीछी,
छोरौं की माटान भरेणीन घीची !
जनतान देखा इनो करे सॉसो,
ये पाड़ तोड़ला हम जनो कॉसो !
ये काम से न हम मुख मोड़ला,
पड़तें हम छात्योन फोड़ला।
पड़ीगे तख वीरू को घेर,

उठीन साबली नी करे देर।
घण की चोटून पाड़ थर्राये,
झॉझा का बिट्टा सडक आये।
पड़ तोड़ीक सड़क मा मिलायो,
लोगून काम को इनो फल पायो।
सापली घण् न करे तोपू को काम,
वीरू की भुजौंन रखे नाम।

—लोस्तू के पचो ने यह बात सोची,
कि श्रमदान में हाथ देना ही चाहिए !
किन्तु हाथ की सब्बल हाथ में ही रह गई,
पहाड़ को देख कर सबके छक्के छूट गए !
एक तरह के ही जवान पहाड से जूझ पडे,
काबुली खानों की तरह उन्होंने सब्बल चलाए।
वे पहाड़ पर बिच्छू की तरह चिपट गए,
लड़कों के मुंह मिट्टी से भर गए !
तब देखो, जनता ने ऐसा साहस किया,
कि हम इस पहाड़ को कांसे की तरह फोड देंगे !
इस काम से हम मुंह नहीं मोड़ेंगे !
पहाड को हम छाती से फोड डालेंगे !
तब वीरों नें वहा घेरा डाल दिया,
सब्बलें उठीं—देर न लगी !
घन की चोट से पहाड थर्रा उठा,
और झासा के ढगार पर सडक बन गई !
पहाड को तोडकर सडक पर मिला दिया गया,
लोगो ने अपने श्रम का ऐसा फल पाया।
सब्बल और घनो ने तोपो का काम किया,
वीरो की बाहो ने अपना नाम रख लिया।

सतपुली

सतपुली मे बाढ आ जाने से संवत् २००८ में कई मोटरें और ड्राइवर काल कवलित हुए थे।

वीसा सौ आठ ले भादऊ मास,
सतपुली मोटर बगीन खास।
नयार बढ़ीगे कनो पाणी,
किसमतन क्या बात ठाणी ?
काल की डोरी निंद्रा ऐगी,
गिड़ गिड़ थिर थिर सुरणेण लैगी।
खडा उठा भायों देखा भैर,
बगीक औणान सांदण खैर।
शिवनन्दी को छयो गोरधन दास,
द्वि हजार रुप्या छै जैका पास।
गाडी बगदी जब तैन देखी,
रुप्यों गड़ोली नैयार फेंकी।
पापी नयार कमायो त्वैक,
मंगसीर का मैना व्यौ छौ मैकू !
दगड़्या भग्यान घर जाला,
मैं बण्यूं माछी का गाला।
काखड़ी वूती छै सग्वाड़ा व्वेन,
लगे भुमणाट नो चाखे मैन !

—सवत् बीस सौ आठ का भादों मास था,
सतपुली में मोटरें बहीं !
नयार में कैसी बाढ़ आई है ?
किस्मत ने यह क्या ठान ली है !
काल रस्सी से नींद आ गई,

गिड़ गिड़ थिर-थिर सुनाई देने लगा।

खड़े उठो भाइयो, बाहर देखो!

सांदन और खर के पेड बहते आ रहे हैं।

शिवनन्दी का एक गोवर्धनदास था,

जिसके पास दो हजार रुपये थे!

जब उसने गाडी बहती देखी,

तो रुपयों की गड्डी नैयार में फेंक दी!

मंगसीर के महीने मेरा ब्याह था,
हे पापी नैयार, मैंने क्या तुम्हारे ही लिए कमाया था!
मेरे साथी अपने अपने घर जायेंगे,

पर मैं मछलियो का खाद्य बन गया हू!
बाडी में मा ने ककडिया बोई थीं,
फल लगेंगे पर मैं नहीं चख सकूंगा।

स्यो भी झगड़ा छैं च

अभाव जीवन में झंझट बन कर आते हैं। गरीबी के अभाव ऐसे ही होते हैं। कम से कम जवानी में तो वे बहुत ही खलते हैं जब खाने-पीने की उम्र होती है।

मालू डाली तर बण्यी छ, नीम्बू दाणी खैंच,
नाक की नथूली नी च,
खाण क थकूली नी च,
लाण क झगूली नी च,
जवानी एकूली ही च,
स्यो भी झगड़ा छैं च।
—मालू-पेड हरा भरा है, नीम्बू के दाने खींच ले।
नाक की नथ नहीं,
खाने की थाली नहीं,

पहिनने को वस्त्र नहीं,
जवानी अकेली ही बीत रही है,
यह भी तो एक झगडा ही है।

अकाल

अकाल और बेकारी के दुर्दिनो मे कोई कुल-वधू मोटर सड़क पर मजदूरी कर शाम को बाजरा खरीद अपने बच्चो को पालती है। उसका पढ़ा-लिखा पति शहरों की खाक छानता हुआ नौकरी की तलाश करता है किन्तु हताश घर लौट आता है। कुल वधू अपने घर की शोचनीय दशा का वर्णन अपनी मां से कर रही है।

गागरी की डीलीं ब्वै, गागरी की डीली।
वल देसू धुम्येने ब्वै, नौकरी नी मीली!
लुवा को तालो ब्वै, लुवा को तालो,
बाजरान नौनों ब्वै, भौं कुछ होई जालो।
कॉसी की थकुली ब्वै, कांसी की थकुली,
पोटगी कू वेच्याले ब्वै नाक की नथूली!
ओडार की ओट ब्वै ओडार की ओट,
मांगीक पैर्यूं च ब्वै ससूरा को कोट!
पकोड़्यों की तैकी ब्वै, पकोड़्यों की तैकी
मुंडली खुरसेगी ब्वै, मजूरी कै कैकी!

—(गागरी का तला मां, गागरी का तला,)
वे शहर-शहर में घूमे मा, पर उन्हें नौकरी नहीं मिली!
(लोहे का ताला मा, लोहे का ताला,)
बाजरे से बच्चों को मां, न जाने क्या हो जायेगा!
(कांस की थाली मां, कास की थाली,)
पेट के लिए मा, मैंने नथ भी वेच दी है।
(गुफा की ओट मा, गुफा की ओट,)

मैंने ससुर का कोट मांगकर पहन रखा है मा।
(पकोड़ियां पकी मां, पकोडिया पकीं)
मजदूरी करके मां बाल भी झड गए हैं।

सलौ

टिड्डियों के आने की दुखद स्मृति इस गीत में सुरक्षित है।

सलौ डारि ऐ गैना, डालि बोटी खै गैना।
फसल पात खै गैना, बाजरो खाणो कै गैना।
सलौ डारि डॉड्यूं मा वैठी गैन खाड्यूं मा।
ह्वात झींकड़ा लीन, सलौ ह्वाकि दीन।
काकी पकाली पलेऊ, काला ह्काल् मलेऊ।
भैजी ह्काल् टोपीन, बौ ह्टाली धोतीन।
उड़द गथ खै गैना, छूडी सारी कै गैना।
भैर देखा बिजोपट, फसल देखा सफाचट।
पड़ीं च बाल बच्चौं की कनी रोवा रो,
हे नौंनों का बुवा जी, सलौ ऐन सलौ।

—टिड्डियों का समूह आया है, पेड पौधों को खा गया है।
फसल-पात खा गया है, बाजरा खाना कर गया है!
टिड्डियों का समूह पहाडों पर आया, खड्डो में बैठा!
हाथों में 'झंकडे' लिये और टिड्डिया भगा दी गई।
चाची मट्ठा पकायेगी, चाचा खेतों से पक्षियो को हटायेगा।
भाई (टिड्डिया) टोपी से हटायेगा, भाभी धोती से हटायेगी।
वे उड़द और लोविया खा गई, खेतों को खाली कर गई।
बाहर देखो तो अधकार हुआ है, फसल सफाचट हो गई है।
बाल बच्चे किस तरह रो रहे हैं।
हे लड़कों के पिता जी, टिड्डिया आ गई हैं।

कलियुग

एक बाग री सेरसा बौलै, दूजी बाग ले दूना रे
कलिजुगर पहर आया, महंग मिल सूना रे
एक बाग री घोड़ा दऊल, एक बाग री ऊट रे
कलिजुगर पहर आया, भैंसा गुजर लूट रे
एकी बाग री सेरसा बोऊ दूजी बागरी राले
कलिजुगर पहर आया, बकरी बाग खाई
एक बागरी बलदा चर, दूजी बागरी गोरू
कलिजुगर पहर आया मंहगी मिल री जोरू
केती दुश तै बाश खाय केती दुशर भूख रे
कलिजुगर पहर आय बोता मिल दूख रे
उबू चुलू लाबा, खेतू लाबा जबा रे
कलिजुगर पहर आया, जिवणा झूटा रवा रे।

—एक बाग में सरसों बोई, दूसरे बाग में दूना,
कलियुग का पहरा आया है, सोना मँहगा मिलता है।
एक बाग में घोड़ा दौडता है, एक बाग में ऊंट,
कलियुग का पहरा लगा है, भैंस गूजर को लूट रही है।
एक बाग में सरसों बोता हू, और दूसरे में राई,
कलियुग का पहरा है, बकरी शेर को खाती है।
एक बाग में बैल चरते हैं, दूसरे बाग में गोएं,
कलियुग आया है, स्त्रियां महंगी मिलती हैं।
कितने ही दिन बासी खाया, कितने ही दिन भूखे रहे,
कलियुग आया है, बहुत दुख मिलते हैं!
ऊपर की भूमि पर चुलू लगाए, खेतों में जो बोए,
कलियुग का पहरा है, अब जीना झूठा है।

युग–धर्म

एबर नइया चूँग वाँसरी,
ध्याणटी बजाली वीमू वलिये !
एबर नइया वेग मोटुवे,
गुजरू जाणिये मोटा बलिये !
एबर नणिया वेगी वांठीणी,
गुड़ की जसी भेली बलिये !
एबर बामणा साँचे चाणले,
चाखले आडरे पाशे वलिये !
देशेर वंठीया सोदा बेचला,
बेचला ऊलरी धागी वलिये !
जेवत बोलत खाण पेणखी,
हाथड़ू धोअल आगी वलिये !

—अबके नवयुवक बांसुरी बजाते हैं
और युवतियां बीन !
अबके नवयुवक मोटे होते जाते हैं,
जैसे गुजरों के भैंसे हों !
अबकी युवतिया सुन्दर बनती हैं—
गुड़ की भेली-सी लगती हैं !
अबके ब्राह्मण पतरा बनाते हैं,
हड्डी के पाशे से प्रश्न बोलते हैं !
देश की सुन्दरियां सौदा बेचेंगी,
ऊन के तागे बेचेंगी,
जब उन्हें खाने पीने को कहा जायगा,
तो सबसे आगे हाथ धोकर तैयार होंगी !

विविध गीत

युग-धर्म

एबर नइया चूँग वाँसरी,
ध्याणटी बजाली वीमू वलिये !
एबर नइया वेग मोटुवे,
गुजरू जाणिये भोटा बलिये !
एबर नणिया वेगी वांठीणी,
गुड़ की जसी भेली बलिये !
एबर बामणा साँचे चाणले,
चाखले आडरे पाशे बलिये !
देशेर वंठीया सोदा बेचला,
बेचला ऊलरी धागी वलिये !
जेवत बोलत खाण पेणखी,
हाथड् धोअल आगी बलिये !

—अबके नवयुवक बांसुरी बजाते हैं
और युवतियां बीन !
अबके नवयुवक मोटे होते जाते हैं,
जैसे गुजरों के भैंसे हों !
अबकी युवतिया सुन्दर बनती हैं—
गुड की भेली-सी लगती हैं !
अबके ब्राह्मण पतरा बनाते हैं,
हड्डी के पाशे से प्रश्न बोलते हैं !
देश की सुन्दरियां सौदा बेचेंगी,
ऊन के तागे बेचेंगी,
जब उन्हें खाने पीने को कहा जायगा,
तो सबसे आगे हाथ धोकर तैयार होंगी !

विविध गीत

विविध गीत

लोक गीतों के लिये कोई विषय वर्जित नहीं, अछूता नहीं। यही कारण है कि गढ़वाली लोक गीत संपूर्ण गढ़वाली जाति के सांस्कृतिक और सामाजिक हृदय को अभिव्यक्त करते हैं। ये गीत जनता के इतने निकट से उद्भूत हुए हैं कि कोई नई घटना, कोई नया भाव ऐसा नहीं, जिस पर गढ़वाल में गीत न बने हों। गांव में नर-भक्षी बाघ आया, बाजरा बिकने आया, मोटर रोड आई, किसी स्त्री ने पति के छुटकारा पाने के लिये आत्म हत्या करदी, कोई मर गया, किसी का प्रेम हो गया, कहीं कोई विचित्र बात दीख गई—बस फिर कहना क्या है, गीत अपने आप चल पडते हैं। गढवाल में धार्मिक, सामाजिक सुधार, प्रेम, करुणा, वीरता, हास्य और व्यंग संबंधी सभी तरह के लोक गीत मिलते हैं किन्तु करुणा गढवाली जीवन को विरासत में मिली है। और गढ़वाली नारी ईश्वर की सृष्टि में सदा से ही करुणा की मूर्ति रही है। इसी गढवाली नारी की करुणा यहां के लोक गीतो में सर्वत्र अभिव्यक्त हुई है। खूदेड गीत इस कथन के साक्षी हैं ही, उनके अतिरिक्त विरह-गीत, आत्म हत्या, सास के अत्याचारो, पति के दुर्व्यवहारो के गीत, अनमेल विवाह, भूख और नाग के गीत भी कम करुण नहीं। इस करुण व्यक्तित्व के बीच भी श्रृंगार गीतों में गढ़वाली नारी का त्याग और तपस्या की प्रेम-साधना के दर्शन होते है। ऐसी गीत काव्य के पुनीत मंदिर की अमर श्री हैं। वैसें गढ़वाली नारी के पत्नीत्व में भी मातृत्व ही है किन्तु जहा उसके मातृत्व के ही एक मात्र दर्शन होते हैं वहां उसके आगे श्रद्धा से सिर झुक जाता है।

हास्य और व्यंग से भी गढवाली लोक गीतो का भंडार खाली नहीं। किंतु जो जाति युग युगो से करुणा को आंखो में पालती रही हो, हास्य उसके अधरो को जरा ही स्फुरित कर पाता है। इसीलिये हास्य और व्यंग संबंधी लोकगीत गढ़वाल में अधिक नहीं, पर जो हैं उनकी महत्ता इस संग्रह के 'मोती ढांग' 'शंकरी झोटा' और 'खाडू' आदि गीतों में देखी जा सकती है। प्रतीकों की इतनी सुन्दर निर्वाह कुशलता केवल गढ़वाली लोक-कला की ही विशेषता है।

बालो गोबीन्दू

आत्महत्या के लिये प्रस्तुत मा अंतिम बार अपने पुत्र गोविन्द से दूध पीने के लिए कहती है। मरने से पहले वह उसके मुँह से आत्मीयता पूर्ण संबोधन 'मा' सुन लेना चाहती है। अपने हृदय में आत्महत्या के भावो को छिपाये वह केवल इतना ही प्रगट होने देती है कि वह गगा स्नान के लिए जा रही है।

बाला गोवीन्दू दूदी पियाल,
आज की राति कोली सियाल।
भोल की राति दादो मू रैलो,
आज की राति ब्वई बोल्याल!
मैं जादू बेटा, गगा नहेण,
बाला गोवीन्दू दूदी पियाल।
हे मेरी ध्यूराण्यों, सुण्याला,
मेरा गोवीन्दू कलेऊ दियाल्या!
औरू की बोई अपणो बोलाली,
रोण बैठलो मेरो बालो गोवीन्दू!
औरू का छोरा इसकूल जाला,
वणू चिल्लालो मेरो बालो गोवीन्दू
बोई बोल्याल, दूदी पकाला,
मैं जादू गगा नहेण बाला गोवीन्दू

—बाल गोविन्द, मेरे स्तनो का दूध पी ले
आज की रात मेरी गोद में सो जा!
कल की रात तू अपनी दादी के पास रहेगा।
इसलिए आज जरा मुझे मा कहकर तो पुका
मैं गगा मे नहाने जा रही हूँ,
मेरे लाडले गोविन्द, तू दूध पीले!

मेरी देवरानियों, सुनो !
मेरे गोविन्द को कलेवा देते रहना !
औरों की मातायें अपने बच्चों को बुलायेंगी,
पर मेरा लाडला गोविन्द रोने बैठेगा !
औरो के बच्चे स्कूल जायेंगे,
मेरा गोविन्द बनों में चिल्लाता फिरेगा
तू मुझे मा कह दे, दूध पी ले,
मैं गंगा में नहाने जा रही हूँ लाडले गोविन्द !

मायास्वरी

सास और पति के अत्याचारो से पीडित गढ़वाली नारी के लिए नदी की गोद जब अंतिम आश्रय बनती है तो उसका नाम लेने के लिए लोक गीत ही बच रहते हैं।

सुपी भरे ले लैण,
मायास्वरी देवेस्वरी दुई छन बैण।
जॉदुरी रुणाई,
गाड पड़न जौला दीदी कैन न सुणाई !
कोठारी का खाना,
गाड पड़न जौला दीदी घास का बाना !
कागजू का तऊ,
गाड पड़ी गैन दुई बैणी तिलपाड़ा रऊ !
कूटला की कूटी,
औतू औतू रींगे दीदी वेन्दी नी फूटी !
तामा की खाण,
औतू औतू रींगे दीदी, लटूयों को डस्याण !
हिंसरी का गोंदा,
गाड मा बगदू रै ढै गज को फोंदा।

तास खेली,
वाँधी की वांधी रैगी माँ की धौंपेली !
पाणी की पतूली,
गंगा छाला सूंचणी दीदी सोना की नथूली !
भीमल की छट्टी,
सासू की गाली सूणी जिकुड़ी ह्वै खट्टी !
पीनी त सराप,
और क्नी होन्दा दीदी मैंश च खराप !
मसेटो मेवाई,
वावा की मैं वैरी, कुधरू वेवाई !
—(सूप पर सरसों भरी,
महेश्वरी और देवेश्वरी दोनों बहिनें हैं।
(चक्की की रनरनाहट,)
बहिन, नदी में डूबने चले गे, किसी को न सुनाना !
(कोठार के खाने,)
घास का बहाना बनाकर नदी में डूबने जायेंगी।
(कागज के ताव,)
तब वे दोनों वहिनें तिलपाड़ा के तालाव में डूब गईं।
(कुटला का वेंटा,)
तेरी लाश भांवर-भांवर में घूमती रही पर तेरी माथे की विंदिया
नहीं फूटी !
(तांबे की खान,)
तेरी लटों का विछौना (गुच्छा) भांवर-भांवर में घूमता रहा।
(हिसर का गोंवा,)
तेरी ढाई गज लम्बी चुटिया नदी में वहती रही।
(पानी की पतेली,)
मां ने जैसी तेरी वेणी वांधी थी, वैसी का वैसी बंधी रही।

(तास खेले,)
तेरी सोने की नथ गंगा के तट पर तेरी प्रतीक्षा कर रही है।
(भीमल की छड़ी,)
सास की गालियां सुनते सुनते मेरा दिल खट्टा हो गया है।
(शराब पी,)
और चाहे कैसे भी होते, पर मेरा पति बुरा है।
(मसेटा गीला हुआ,)
मैं पिता की वैरिन निकली, जिसने ऐसे घर में मेरा ब्याह किया।

मेरी चन्द्रा कख छ ?

सास के दुर्व्यवहार के लिए गढ़वाल प्रसिद्ध है। एक सास अपनी बहू को मार देती है। उसकी माता अपनी बेटी के विषय में पूछती है तो सास अनेक बहाने बनाने लगती है। प्रस्तुत गीत मातृ हृदय की करुणा और सास की कटुता दोनो को व्यक्त करता है

बतौ रे समदणी, मेरा चन्दरा कख छ ?
तेरी चन्दरा पाणी मू गै छई,
बंठा फोड़ीक कखी धोली आई छई।
बंठा का सांट गागरी द्यूलू,
बतौ रे समदणि, मेरी चन्दरा कख छ ?
तेरी चन्दरा घास कू गै छई,
दाथी तोड़ीक कखी धोली आई।
दाथी का सॉट थमाली द्यूलो,
बतौ रे समदणी, मेरी चन्दरा कख छ ?
तेरी चन्दरा गोरू मू गई छई,
गौड़ी हमारी भेल धोलीक आई।
गौड़ी का साँट भैंसी द्यूलो,
बता रे समदणी, मेरी चन्दरा कख छ ?
तेरी चन्दरा कौथीक गै छई,

धागुली वेचीक खै आई ।
धागुली का साट खग्वाली द्यूलो,
बतौ रे समदणि, मेरो चन्दरा कख छ ?
—बता री समधिन, मेरी (बेटी) चन्द्रा कहा है ?
तेरी (बेटी) चन्द्रा पनघट पर गई थी,
बठा फोडकर कहीं फेंक आई !
बठे के बदले मे तुम्हें गगरी दूंगी,
बता री समधिन, मेरी चन्द्रा कहा है ?
तेरी चन्द्रा कहीं घास को गई थी,
दराती तोड कर कहीं फेंक आई ।
दराती के बदले मे बड़ी दरांती दूंगी,
बता री समधिन, मेरी चन्द्रा कहा है ?
तेरी चन्द्रा गायों के साथ गई थी,
गाय को ढगार में गिरा कर आई ।
गाय के बदले मे भैंस दूंगी,
बता री समधिन, मेरी चन्द्रा कहा है ?
तेरी चन्द्रा खेल-तमाशे गई थी,
हाथ के कडे बेचकर खा आई है।
कडो के बदले मे हंसली दूंगी,
बता रे समधिन, मेरी चन्द्रा कहा है

नगीना

एक थी नगीना। बहुत ऊँचे स्वप्न थे उसके, कि वह पढेगी-लिखेगी, ऊँचे अफसर की पत्नी बनेगी, रेशमी साडी पहनेगी और बैठी-बैठी हारमोनियम बजायेगी पर नारी को हीन समझने वाले नर-समाज ने उसे ऊपर नहीं उठने दिया और यह गीत उसके जीवन का उपहास बनकर सदा के लिये रह गया।

तिन त बोले मैंन अगरेजी पढ़न बेटी नगीना।
तब नी पढ़े ओम् न म सि धं बेटी नगीना।
तिन ता बोले मैन पट्टी की पट्वान होण बेटी नगीना,
तब नी होई गौं की पदानी बेटी नगीना।
तिन त बोले, मैन लाहोरी लड्डू खाणा बेटी नगीना,
तब नी मिले झंगोरा को पज्वाणी बेटी नगीना।
तिन त बोले मैन हारमोनी बाजोण बेटी नगीना,
तब नी मिल्यों फूट्यूं कनस्तर बेटी नगीना!
तिन त बोले मैन रेशमी साडी पैर्न बेटी नगीना!
तब नी मिले फटी सी लत्ता बेटी नगीना।

—तूने तो कहा था, मैं अंग्रेजी पढूंगी, बेटी नगीना।
पर तूने ऊँ न म सि ध भी न पढा, बेटी नगीना!
तूने तो कहा था, मैं पटवारिन बनूंगी बेटी नगीना!
पर तू तो गांव की पधानी भी न बनी, बेटी नगीना।
तूने तो कहा था, मैं लाहोरी लड्डू खाऊंगी, बेटी नगीना!
पर तुझे समा का पानी (माड) भी न मिला, बेटी नगीना!
तूने तो कहा था, मैं हारमोनियम बजाऊँगी, बेटी नगीना।
तब तुझे फूटा कनस्तर भी न मिला, बेटी नगीना!
तूने तो कहा था, मैं रेशमी साडी पहनूंगी, बेटी नगीना!
तब तुझे गात ढकाने को फटे चिथडे भी न मिले, बेटी नगीना।

पहाड़ बेवाई

लडकियों की स्कूली शिक्षा का प्रसार पिछले दशक से गांवों में होने लगा है। किंतु गिरी हुई आर्थिक अवस्था, कृषि ही जीविका का प्रमुख साधन होने और पढ़े-लिखे वर के न मिलने के कारण गांवो की पढ़ी-लिखी लडकियों के जीवन में बडी विषमताएँ उठ खडी हुई हैं। इस गीत में उन्हीं की प्रतिक्रिया व्यक्त हुई है।

भ्वां मा दवाती घुंड्यों मा किताबी,
कलम की हात्योंन दाथी नी धरेन्दी !
बाबा कू मर्यान अंगरेजी पढ़ाई,
चाचा कू मर्यान पहाड़ बेवाई !
भैर औदू ब्वारी, क्या मैनी लगीं छ,
लुकारी बुवारी नेलणी छन गोडणी !
हमारी बुवारी को पलंग सज्यू छ !
भैर औदू ब्वारी गोडणू सिखौलु,
मैं नी औंदू रौल, गोडण नी औंदू !
बाबा होन्दू शहरू पढ़ौन्दू,
स्वामी होंदा पढ़्या देसू घुमौन्दा !
बाबा कू मरी अंगरेजी पढ़ाई,
चाचा कू मरे पहाड़ बेवाई !

—जमीन पर दवात, घुटनो पर किताब—
(रखकर कभी मैं पढा करती थी !)
आज कलम से अभ्यस्त उन हाथो में
घास काटने का हँसिया नहीं रखा जाता !
पिता का मुर्दा मरा जिसने अग्रेजी पढाई,
फिर चाचा का मुर्दा मरा, जो मुझे पहाड मे व्याह दिया !
(उसे बंठी देख सास कहती है :)
बाहर तो आ बहू, देख, कैसा महीना आया है !
औरो की बहुएँ गोड रही है, नेर रही हैं,
पर हमारी बहू का पलग सजा है !
बाहर तो आ बहू, तुझे गोड़ना-नेरना सिखाऊँगी !
बाहर न आऊँगी सास, मुझे गोडना नहीं आता !
पिता जी जीवित होते तो वे मुझे शहर मे पढने को भेजते,
पति पढे-लिखे होते तो वे मुझे देश में घुमाते !

पिता का मुर्दा मरा जो मुझे अंग्रेजी पढ़ाई !

चाचा का मुर्दा मरा जो पहाड में ब्याह कर दिया !

करोड़ी रुपयों

ब्याह जहां विक्रय है, वहा पति के रूप मे रुपये देखे जाते हैं। 'मुझे देखकर मेरा ब्याह करना भैया' बहिन की इस अभिलाषा की पूर्ति क्या करोड़ों रुपये कभी कर पाये ?

भुली, सैंडो मोड़्यो दाऊँ ।
भुली, त्वै सैसर द्यूलो,
तला वाला ले गाऊँ ।
दिदा, पीतला की मेखी,
मेरा व्यऊ करी दीदा,
तू मैं सणि देखी ।
भुली डिमकाली घोड़ी,
बुली, जगथू का डेरा,
रुप्यों एक करोड़ी ।
—बहिन, तेरा ब्याह करूगा
नीचे वाले गाव में !
भैया, मेरा ब्याह करना
मुझे देखकर ही !
बहिन, जगथू के घर
एक करोड रुपये हैं !

सगरांदू बुड्या

इसी लिये जब जवानी बुढापे से बांध दी जाती है तो जीवन अपनी परिभाषा ही खो बैठता है।

मैं नी औंदू त्वैकू सगरॉदू वुड्या रम छम ।
त्वै वुड्या का फुल्या जोंखा, सगरादू वुड्या रम छम !

मैं नी औंदू त्वैकू संगरांदू वुड्या रम छम,
मैं यखुली रई व्याली, सगरांदू वुड्या रम छम !
मैं नी औंदू त्वैकू संगरांदू वुड्या रम छम !

—मैं तेरे घर नहीं आऊँगी, संगरादू बूढे रमछम !
तुझ बूढे की सफेद मूंछे हैं, सगरादू बूढ़े रमछम !
मैं तेरे लिए नहीं आऊँगी, सगरादू बूढ़े रमछम !
मैं कल अकेली ही सोई, सगरांदू बूढ़े रमछम !
मैं तेरे लिए नहीं रहूंगी, सगरादू बूढे रमछम !

मजु

ब्याह की ऐसी ही भूले कभी जीवन को अश्रुमय प्रश्न बनाकर ङपने के लिए छोड देती हैं।

छाजा को किनारा वैठीं मजु किलै रोणी तू ?
झड़ वदली-सी रुण झुणी मंजु किलै रोणी तू ?
जौंल मी घूवती आंखी उरयाई गैन हे,
दिवा जसी जोत मेरी मजु किलै वुझणी तू ?
कुमाली-सी ठाण मेरी मजु अलसाणी किलै तू !
यकुली चाखुड़ी सी रीटणी मजु किलै तू ?

—छज्जे के छोर पर वैठी मजु, अकेली क्यो रोती तू ?
झरती वदली-सी झर झर, आसू क्यो खोती तू ?
युगल घूगती-सी आखें रो-रो हुई हैं राती,
दीप-ज्योति-सी तू मजु क्यो वुझती है जाती ?
श्रृंगार मयी कुमाली-सी मजु, क्यों कुम्हलाती तू,
अकेली चकोरी-सी क्यो घूम घूम अकुलाती तू ?

छमियाँ कू

जीवन को इसप्रकार भार वनाने में माता-पिता कितने अधे होते हैं, यह प्रस्तुत गीत में की गई विवाह-चर्चा वताती है ।

ज्वा बेटी छमियाॅ कू जाली,
वीं बेटी रोजो द्यूलो दैजो !
मैं बुबा छमियाॅ कू नी देणू,
छमिया खंकारा को भोगी !
मैं बुबा बाॅदर कू देण—
बाॅदर सोंटा फोली लालो !
ज्वा बेटी छमियां कू जाली,
वीं बेटी लैन्दि द्यूलो गौडी !
मैं बाबा बांदर कू देण,
बादर खिलालो घुग्गू धारी !
बाॅदर लिजालो डाली डाल्यों,
मैं सणी नचालू पौडू पौडू !
मैं बुबा छमिया कूनी देणू,
छमिया को नौ पथा गाड !
मैं बुबा बाॅदर कू देणू,
छमिया खंखारा को भोगी !

—जो बेटी छमियां (वृद्ध) के साथ व्याह कर लेगी,
उसें मैं दहेज दूंगा !
मुझे छमिया को मत देना पिता जी !
छमियां खांव खाव खांसता-खखारता रहेगा !
(इससे अच्छा) मुझे किसी बन्दर को देवो पिता जी,
बन्दर मुझे लोबिया की फलियां लाकर खिलाएगा !
जो बेटी छमियां को ब्याहेगी,
उसें मैं दुधार गाय दहेज में दूंगा।
नहीं पिता जी मुझे बन्दर को देदो !
बन्दर मुझे खिलायेगा,
बन्दर मुझे पेड-पेड़ पर ले जायेगा,

पहाड-पहाड पर नचायेगा !
मुझे छमिया को न देना पिता जी,
उसके गले पर बडा-सा गलगड है !
मुझे तुम बन्दर को दे देना पिता जी,
छमियां तो खांव खांव खखारता रहेगा !

वलि की-सी-चाखरी

अपने प्राणों की रक्षा अथवा सिद्धि के लिये जिस प्रकार भारत में वलि के लिए बकरी को चुना गया, वैसे ही नारी को समाज ने सदैव स्वार्थों के नीचे कुचल कर रखा। वडियारी सेरे (खेतों) में जब नहर का पानी नहीं पहुचा तो ज्योतिषी ने मनुष्य की वलि देने को कहा, पर वलि किसकी दी जाय ? पुरुषों का कहना था—पिता को वलि देने से कचहरी सूनी पड जायेगी, भाई की वलि देने से राज्य सूना पड जायेगा ! और फिर वलि के लिए चुना गया—छोटे भाई की पत्नी को, जैसे संसार के लिये उसका अस्तित्व कुछ मूल्य न रखता हो !

जीरी झमको तै वडेगी सेरा जीरी झमको !
जीरी झमको मैं कूल नी औंदी जीरी झमको !
लोकारी सेरी भै जीरी झमको साणी ह्वै न वाणी.
ह्मारी ईं सेरी जीरी झमको के को ह्वोये दोप ?
जा दौं मेरा हीत जीरी झमको गौणी लौन्दौं पूछी
वोन्न क्या छ मैन जीरी झमको मनखी वलि चैंदी।
नौना का वुवा जी जीरी झमको क्या कुछ करला ?
वोलदौं मेरी मा जी जीरी झमको वलि कै जी देऊला ?
वड़ो भैजी देई देऊला जीरी छमको राजा सूनो होलो।
वाबा जी देई देऊला जीरी झमको कछड़ी सूनी होली !
त्वे देई देऊला मां जी जीरी झमको चुल्ली सूनी होली।

छोटी भुली देई देऊला जीरी झमको दिशा सूनी होली ।
छोटा भुला की ब्वारी जीरी झमको, तू मैत जयौ दौं,
ब्वै बाबू देख्यौदौं, जीरी झमको, भै बैणा भेटी औ दौं ।
पैटीगे वा छोरी जीरी झमको रोंदी तडफांदी,
ल्यवा मेरा बावा जी जीरी झमको निमणोंदी की कापडे,
बणाऊँ मेरी मा जी जीरी झमको निमणौंदी की खीर ।
बणाऊँ मेरा दादू जीरी झमको निमणौंदू कलेऊ,
बाँधा मेरी बौजी जीरी झमको, निमणौंद को मुंड !
तनो कैक बोलदी जीरी झमको कुवाणि न बोल !
आइगे वा ब्वारी जीरी झमको वलि की-सी बाखरी,
तिन मेरी ब्वारी जीरी झमको भोल मारेइ जाण ।

—बडियारी सेरे (खेतों) में धान लहलहाये ।
धान लहलहाता पर गूल (छोटी नहर) का पानी नहीं आता ।
औरों के खेत सब बोये गये हैं, वे धान से लहलहायेंगे,
हमारे इन खेतो को किस देवता ने शाप दिया है ?
जा तो मेरे हीत, ज्योतिषियो से पूछकर आ ।
मैं क्या कहूं, धान के खेत लहलहायेंगे, मनुष्य की बलि चाहिये ।
लड़के के पिता जी, कहो क्या उपाय करे ?
कहु तो मेरी मा, किसकी बलि दे ?
अगर बड़े भाई को बलि दे तो राज सूना हो जायेगा ।
पिता जी की बलि दे तो सभा सूनी हो जाएगी ।
तेरी बलि दें तो मां, चूल्हा सूना हो जाएगा ।
छोटी बहिन की बलि दे तो दिशा सूनी हो जाएगी ।
छोटे भैया की बहू, तुम मायके हो आओ !
अपने माता पिता के दर्शन कर आवो, भाई बहिनो को मिल आवो ।
तब वह लड़की रोती-तडपती मायके चल दी ।
लाओ पिता जी, मुझे अंतिम बार के वस्त्र दो ।

बना मां, अंतिम बार की खीर बना।
बना मेरे भैया, अंतिम बार का 'कलेवा' बना।
करो मेरी भाभी, अंतिम बार मेरे शीश का शृंगार करो।
(ऐसा न कह, ऐसे अपशब्द क्यों कहती है ?)
तब वह बलि की बकरी की तरह लौट आई,
(सास ने तब उसे सुनाया—)
तू कल मारी जायेगी मेरी बहू ! तब धान लहलहा उठेगा।

माड़ी

मृत्यु इतनी अप्रिय होती है कि स्वजन को मरे हुए देखकर भी हृदय उसके मरण का विश्वास नहीं करना चाहता। मां की प्यारी किशोरी उसी के आंखों के आगे मर जाती है किन्तु उसके लम्बे मुख मण्डल, खड़ी नासिका और चमकती आंखों में उसे सजीवता का भ्रम होने लगता है और वह उसे सोई हुई समझकर प्यार के उलाहने देकर जगाने का निष्फल आग्रह करने लगती है। 'माड़ी' का यह गीत मातृ-हृदय की सरलता और करुणा की काव्य-श्री है।

मेरी उनाड़्या माड़ी हे बीजी जा दी।
लाडुली बेटुली, हे बीजी जादी।
तेरी कैसी नींदरा, हे बीजी जा दी।
सिरूवाणी को घाम, हे बीजी जा दी।
पैंद्वाण्यों आये, हे बीजी जा दी।
दागड्या की पंद्यारी, हे बीजी जा दी।
पाणी लोक ऐन, हे बीजी जा दी।
दगड़ा की घस्यारी, हे बीजी जा दी।
धास कू गैन, हे बीजी जा दी।
तेरी धौल्याण्या गौडी हे बीजी जा दी!
गुठ्यारी ही रैगे हे बीजी जा दी!

छोटी भुली देई देऊला जीरी झमको दिशा सूनी होली।
छोटा भुला की ब्वारी जीरी झमको, तू मैत जयौ दौं,
ब्वै बाबू देख्यौदौं, जीरी झमको, भै बैणा भेटी औ दौं।
पैटीगे वा छोरी जीरी झमको रोदी तड़फादी।
ल्यवा मेरा बाबा जी जीरी झमको निमणोंदी की कापड़े,
बणाऊँ मेरी मा जी जीरी झमको निमणौंदी की खीर।
बणाऊँ मेरा दादू जीरी झमको निमणौंदू कलेऊ,
बाँधा मेरी बौजी जीरी झमको, निमणौंद को मुंड।
तनो केक बोलदी जीरी झमको कुवाणि न बोल!
आइगे वा ब्वारी जीरी झमको वलि की-सी बाखरी,
तिन मेरी ब्वारी जीरी झमको भोल मारेइ जाण।

—बड़ियारी सेंरे (खेतो) में धान लहलहाये।
धान लहलहाता पर गूल (छोटी नहर) का पानी नहीं आता।
औरों के खेत सब बोये गये हैं, वे धान से लहलहायेंगे,
हमारे इन खेतों को किस देवता ने शाप दिया है?
जा तो मेरे हीत, ज्योतिषियों से पूछकर आ!
मैं क्या कहूं, धान के खेत लहलहायेंगे, मनुष्य की बलि चाहिये।
लड़के के पिता जी, कहो क्या उपाय करें?
कह तो मेरी मां, किसकी बलि दें?
अगर बड़े भाई की बलि दें तो राज सूना हो जायेगा।
पिता जी की बलि दें तो सभा सूनी हो जाएगी!
तेरी बलि दें तो माँ, चूल्हा सूना हो जाएगा।
छोटी बहिन की बलि दें तो दिशा सूनी हो जाएगी।
छोटे भैया की बहू, तुम मायके हो आओ!
अपने माता पिता के दर्शन कर आवो, भाई बहिनों को मिल आवो।
तब वह लड़की रोती-तड़पती मायके चल दी।
लाओ पिता जी, मुझे अंतिम बार के वस्त्र दो।

पैरों में आ गई है, अरी जाग जा न !
साथ की पनिहारिनें—अरी जाग जा न !
पानी भर कर ले आई, अरी जाग जा न !
साथ की घसियारिनें,—अरी जाग जा न !
घास को चली गई, अरी जाग जा न !
तेरी धवली गाय—अरी जाग जा न !
खूंटे पर ही रह गई, अरी जाग जा न !
तेरे हिस्से का दूध—अरी जाग जा न !
बिल्ली ने पी दिया, अरी जाग जा न !
मेरी नटखट माडी, अरी जाग जा न !
सुबह के पक्षी—अरी जाग जा न !
बोलने लगे हैं, अरी जाग जा न !
हिमालय के शिखर,—अरी जाग जा न !
आभा से उज्ज्वल हो उठे हैं, अरी जाग जा
हमारा बाट का घर है, अरी जाग जा
तेरी यह कैसी नींद है ?—अरी जाग जा
तुझे क्या हो गया ? अरी जाग जा न !
न मुंह खोलती, न तू संकेत करती है, जाग
तेरे बोलते प्राण—अरी जाग जा न !
कौन देव हर ले गया, अरी जाग जा न !
तुझे किसकी डर है ? जाग जा न !
भौरो की बेटिया—अरी जाग जा न !
मायके आयेंगी, अरी जाग जा न !
पर मैं रोती रहूंगी ! अरी जाग जा न !
अब कहा से देखूंगी, अरी जाग जा न !
तेरा लम्बा मुखडा, अरी जाग जा न !
तेरी लम्बी नाक, अरी जाग जा न !

तेरा बांठा को दूध, हे बीजी जा दी
विरालीन खायें, हे बीजी जा दी
मेरी ऊनाड्या माड़ी हे बीजी जा दी
भोर का पंछी हे बीजी जा दी
बासण लैन, हे बीजी जा दी
ध्यं चली काठों, हे बीजी जा दी
उजेली ह्वै गैन हे बीजी जा दी
बाटा को डेरो हे बीजी जा दी
तेरी कैसी च नींदरा हे बीजी जा दी
क्या ह्वै लो तोई, हे बीजी जा दी
त्वै वाच न सान हे बीजी जा दी
तेरा बोलॉदा पराण हे बीजी जा दी
को दैव लीग्ये हे बीजी जा दी
त्वै कैकी च डर, हे बीजी जा दी
लुकारी बेटुली हे बीजी जा दी
मैतुड़ा औली हे बीजी जा दी
रोई रोई रौलु हे बीजी जा दी
कसकै देखलू हे बीजी जा दी
लमछड़ी मुखड़ी, हे बीजी जा दी
तरतरी नाकड़ी, हे बीजी जा दी
कुरबुरी ऑखड़ी, हे बीजी जा दी
कुमाली सी ठाण, हे बीजी जा दी

—मेरी नटखट माडी, अरी जाग जा न !
मेरी लाडली बेटी अरी जाग जा न !
तेरी कैसी नींद है ?—जाग जा न,
सिरहाने की धूप—अरी जाग जा न

पैरो में आ गई है, अरी जाग जा न !
साथ की पनिहारिनें—अरी जाग जा न !
पानी भर कर ले आई, अरी जाग जा न !
साथ की घसियारिनें,—अरी जाग जा न
घास को चली गई, अरी जाग जा न !
तेरी धवली गाय—अरी जाग जा न !
खूटे पर ही रह गई, अरी जाग जा न !
तेरे हिस्से का दूध—अरी जाग जा न !
बिल्ली ने पी लिया, अरी जाग जा न !
मेरी नटखट लाडी, अरी जाग जा न !
सुबह के पछी—अरी जाग जा न !
बोलने लगे हैं, अरी जाग जा न !
हिमालय के शिखर,—अरी जाग जा न !
आभा से उज्ज्वल हो उठे हैं, अरी जाग ज
हमारा बाट का घर है, अरी जाग जा
तेरी यह कैसी नींद है ?—अरी जाग जा
तुझे क्या हो गया ? अरी जाग जा न !
न मुह खोलती, न तू सकेत करती है, जाग
तेरे बोलते प्राण—अरी जाग जा न !
कौन देव हर ले गया, अरी जाग जा न !
तुझे किसकी डर है ? जाग जा न !
औरो की बेटिया—अरी जाग जा न !
मायके आयेंगी, अरी जाग जा न !
पर मै रोती रहूंगी ! अरी जाग जा न !
अब कहा से देखूंगी, अरी जाग जा न !
तेरा लम्बा मुखडा, अरी जाग जा न !
तेरी लम्बी नाक, अरी जाग जा न !

काली आंखें, अरी जाग जा न !
कुमाली का सा शृंगार, अरी जाग जा न !

माधो सिंह

माधो सिंह गढ़वाल का प्रसिद्ध भड था। प्रस्तुत प्रसग उस अवसर से सबद्ध है, जब वह या तो शत्रुओं से मारे जाने या राजा के द्वारा कैद किए जाने पर घर न लौट सका था।

बार ऐन बग्वाली माधोसिंह,
सोल ऐन सराध माधोसिंह !
मेरो माधो नी आयो, माधो
त्वै जागी रैन माधोसिंह
तेरी राणी बौराणी माधोसिंह।
दाल दलीं रै माधोसिंह।
चौंल छड़्यां रया माधो सिंह।
तेरी ब्वै रोंदी रै माधोसिंह,
सबी ऐन घर माधोसिंह,
मेरो माधो नी आयो माधोसिंह

—बारह बिखालिया आईं माधोसिंह,
सोलह श्राद्ध आये माधोसिंह,
पर मेरा माधो नहीं आया माधोसिंह !
तुझे जागतीं रहीं माधोसिंह,
तेरी रानियां बहूरानियां माधोसिंह !
दाल दली ही रही माधोसिंह,
चावल कूटे ही रहे माधोसिंह !
तेरी मा रोती रही, माधोसिंह,
सभी घर आये माधोसिंह,
पर मेरा माधो नहीं आया, माधोसिंह !

गजेसिंह

गजेसिंह सम्भवतः माधोसिंह का वीर पुत्र था। पिता का बदला लेने के लिए राणीहाट जाने को प्रस्तुत देखकर उसकी मां उसे वहां जाने से रोकती है।

रणिहाट नी जाणू गजेसिंह, हल जोता का दिन गजेसिंह
छि दारु नी पेणी गजेसिंह, रणिहाट नी जाणू गजेसिंह
हौंसिया छै वैख गजेसिंह, वड़ा वावू को वेटा गजेसिंह।
त्यरा कानू कुंडल गजेसिंह, त्यरा हात धागुला गजेसिंह
त्वे राणी लूटली गजेसिंह, रणिहाट नी जाणू गजेसिंह,
तेरो वावू मारेणे गजेसिंह, रणिहाट नी जाणू गजेसिंह।
वैरियों का वदाण गजेसिंह, सांपू का डिस्याण गजेसिंह,
वड़ा वावू को वेटा गजेसिंह, दुरोलो नी होणो गजेसिंह,
मर्द मरी जाँदा गजेसिंह, वोल रई जांदा गजेसिंह !

—हल जोतने के दिन (वसंत पचमी) राणीहाट न जा गजेसिंह !
छि शराब न पिया कर गजेसिंह ! राणीहाट न जा गजेसिंह !
तू उन्मत्त है गजेसिंह, तू बड़े बाप का वेटा है गजेसिंह !
तेरे कानों में कुंडल हैं गजेसिंह, तेरे हाथो में कड़े हैं गजेसिंह।
तुझे रानिया लूट लेंगी गजेसिंह, तू रणीहाट न जा गजेसिंह।
तेरा पिता मारा गया गजेसिंह, तू रणीहाट न जा गजेसिंह !
वैरियो की भूमि मे न जा गजेसिंह, सापो की सेज पर न जा !
तू बडे बाप का वेटा है गजेसिंह, शराब न पिया कर गजेसिंह !
मर जाते हैं गजेसिंह, पर बोल रह जाते हैं गजेसिंह !

रणू

तैं थांकी रवाईं रणू भली घोडी चमकोद !
भल नी जाणू 'रवाईं', तेरो बावू गॅवाई।
तेरी तिला वाखरी रण, ठक छ्यूंदी !

तिला मारी खौलू माता, रण न चौं ज्यूँदी
तैं बांकी रवाईं रणू, भली घोड़ी चमकौंद !
तेरो मामा रीषाड़ रणू, तेरी मामी हैसाड़ !
काल का डिस्याण न जा, वेरी का बाधाण न ज
तू एकू एकुन्त रणू तैं बांकी रवाईं न जा !
तेरो बाबू गँवाई रणू देवी का थूल !
तू छै मेरो प्यारो रणू, फ्यूली को-सी फूल !
भड़ू को वचणू मरणू जिया, द्वि दिनक होंद
मै न जांण रवाईं, रणू भली घोड़ी चमकौंद
तैं बाँकी रवाईं रणू भली घोड़ी चमकौंद !

—उस बांकी रवाईं के लिए रणू घोडी रवाना करता है
अरे, रवाईं न जा ! वहाँ तेरे पिता ने प्राण गँवाये थे !
रणू तेरी तिला नामक बकरी छींक रही है ।
तिला को मारकर खाऊंगा मा, जिन्दा नहीं छोड़ूंगा !
उस बांकी रवाईं के लिए रणू घोडी रवाना करता है ।
तेरा मामा ईर्ष्यालु है रणू, तेरी मामी हँसोड है !
तू काल की शैया पर न जा, वैरी की भूमि में न जा !
तू मेरा इकलौता बेटा है रणू, बांकी रवाईं न जा !
रणू, देवी के देवल में तेरे पिता जी मारे गये,
अब फ्यूंली के फूल की तरह तू ही मेरा एक प्यारा है र
वीरो का मरना-बचना दो दिन का होता है मा !
मुझे रवांई जाना है; रणू अपनी घोडी रवाना करता है
उस बाकी रवाईं के लिए रणू अपनी घोडी रवाना करता

युद्ध-वर्णन

तौंकी रघुवंशी घोडी छूटीन मरदो !
तौंकी जामा की तणी टूटीन मरदो !

तौंकी ऐड़ी हत्यारी सजीन मरदो
तौंकी तुरी रणसिंगी वजीन मरदो
तौंकू छेत्री को हंकार चढ़ीगे मरदो
तौंकी आख्यों खून सरीगे मरदो
तौंन नंगी शमशीर चमकैन मरदो
तौंका जोंखों का वाल ववरैन मरदो
तौंका वावन वाजा वाजला मरदो !
हनुमन्ती निसाण साजला मरदो
तौंन मुंडू का चौंरा लगैन मरदो !
वैर्‌यों का खूनन घट रिंगैन मरदो
तौंन वडा वडा माल मारीन मरदो
मौत का घाट उतारीन मरदो
तौं माई मरदू का चेलौंन मरदो !
तखो भांगलो दूतणो कर दीने मरदो
—उनकी रघुवंशी घोडियां रण भूमि में उत
उन वीरों के जामों के वध टूट पडे मर्दो !
उनके अस्त्र-शस्त्र सजे मर्दो !
उनकी तुरी और रणसिंगी वजी, मर्दो !
उन्हें क्षत्रिय का अहकार चढा मर्दो !
उनकी आखों में खून की लाली फैली मर्दो !
उन्होने नगी तलवारे चमकाई मर्दो !
उनकी मूछो के वाल उठ खडे हुए मर्दो !
उनके वावन वाजे वजे मर्दो !
हनुमान-धारी ध्वज सजे मर्दो !
उन्होने वैरियो के खून से चक्किया चलाई म
उन्होंने वड़े वड़े मल्ल मारे मर्दो,
वे मौत के घाट उतारे मर्दो !

तिला मारी खौलू माता, रण न छौं
तैं बाकी रवाईं रणू, भली घोड़ी चमकौं
तेरो मामा रीषाड़ रणू, तेरी मामी हैंस
काल का ढिस्याण न जा, वेरी का बाधाण
तू एकू एकून्त रणू तैं बाकी रवाईं न
तेरो बाबू गँवाई रणू देवी का थूल !
तू छै मेरो प्यारो रणू, फ्यूंली को-सी फू
भड़ू को बचणू मरणू जिया, द्वि दिनव
मै न जाण रवाईं, रणू भली घोड़ी चम
तैं बाकी रवाईं रणू भली घोड़ी चमकौं

—उस बांकी रवाईं के लिए रणू घोडी रवाना क
अरे, रवाईं न जा ! वहां तेरे पिता ने प्राण गंवा
रणू तेरी तिला नामक बकरी छींक रही है !
तिला को मारकर खाऊंगा मा, जिन्दा नहीं छोड़
उस बाकी रवाईं के लिए रणू घोडी रवाना करत
तेरा मामा ईर्ष्यालु है रणू, तेरी मामी हंसोड है !
तू काल की शैया पर न जा, वैरी की भूमि में न ज
तू मेरा इकलौता बेटा है रणू, बांकी रवाईं न ज
रणू, देवी के देवल में तेरे पिता जी मारे गये,
अब फ्यूंली के फूल की तरह तू ही मेरा एक प्यार
वीरों का मरना-बचना दो दिन का होता है मा !
मुझे रवांई जाना है; रणू अपनी घोडी रवाना क
उस बाकी रवाईं के लिए रणू अपनी घोडी रवान

युद्ध-वर्णन

तौंकी रघुवंशी घोड़ी छूटीन मरदो !
तौंकी जामा की तणी टूटीन मरदो !

वूती जाला गेऊँ,
सौ साठ वेवरी आला मैं मोती न देऊँ !
उपाड्यो त खड़,
मोती की जोड़ी की लैलो मल्योऊ जसी वड़ !
—शावास रे मेरे वूढ़े वैल मोती !
(खलिहान की मींढ,)
हल को देखते ही मोती लम्वा पड जाता है ।
(जाल फेंका गया,)
गौवो को देखकर वूढा मोती ढगार में छलाग मारता है !
(योगी का घर,)
कौवो की डर से वूढ़ा वैल वाहर नहीं निकलता !
(घीटी गई हींग,)
वैल वँधा तो नीचे के ओवरे पर उसके सींग ऊपर तक पहुँचे हैं ।
(खलिहान की मींड,)
हल लगाने के समय वूढ़ा मोती झट खिसक जाता है !
(टहनी काटी,)
जवान गौवो को देखकर वह आखो से घूरता है ।
(ताल पर भौंरा घूमा,)
हल तो जैसा भी लगाये मोती पर उसका वहुत सहारा है ।
(मेथी कूटी गई,)
मोती वैल जिन्दा रहा तो मैं कुटले से खेती कर लूँगा ।
(वदूक का गज,)
मोती वैल जिन्दा रहेगा तो आगन में शोभा देगा ।
(गेहूं वोये जायेगे,)
सौ साठ व्यापारी आ जाय, पर मै मोती को न दूँगा ।
(घास उखाडा)
मोती की जोडी का मै मल्योऊ पक्षी जैसा वैल लाऊँगा !

उन माई और मर्दों के चेलो ने, मर्दो !
वहा भाग बोने के लिए कर दिया, मर्दो !

३

मोती ढांगू

'मोती ढांगू' (मोती नाम का बुड्ढा बैल) उन भोग विलास के पुतलों का व्यग्य-चित्र है, जिनकी अकर्मण्यता वासना के अतिरिक्त किसी की चुनौती नहीं मानती !

साबासी मेरा मोती ढांगा !
खल्याणी को दांदो,
हलसुंगी देखीक मोती लमसट होई जॉदो !
छमकैत जाल,
कलोड़्यों देखीक ढांगू, ढौंढा देन्दू फाल !
जोगी को घर,
भैर नी औंदू ढांगू, कौवों की डर।
धोटी जालो ईंग,
ओबरा बांध्यूं मोती ढागू बौंड तैका सींग !
खल्याणी को दॉदू,
हल की बगत ढांगू खस रड़ी जांदू !
काटि जाली सॉकी
ज्वान ज्वान कलोड़्यों देखी कनो घुरौंद आंखी !
ताल रींगे औत,
हल जनु लालू ढॉगू सारू तैकू भौत ।
कूटी जाली मेथी,
मोती ढागू बच्यूं रलो कुटलान करला खेती ।
बन्दूकी को गज,
मोती ढॉगू वच्यूं रलो चौक देलो सज ।

घूघती को घोल मामा, घूघती को घोल,
झगरेटा नी खाँदो मामा वड़ौंडी लो मोल !
हैलुंगी को हैल मामा, हैलुंगी को हैल,
रात खांद उजाड़ मामा दिन डाल्यों का छैल !
घट पीसे पिलो मामा, घट पीसे पिलो,
रात खाद उजाड़ मामा, दाऊँ करदूँ ऊ किलो !
घोटी जालो हींग मामा, घोटी जालो हींग,
शंकरी झोटा मामा, कनो घुमौन्दो सींग !

—(खलिहान की मींड मामा, खलिहान की मींड,)
तेरा शकरी भैंसा मामा, 'झंगरेटा' नहीं खाता !
(घूघती का घोसला मामा, घूघती का घोंसला !)
झगरेटा नहीं खाता, मामा अब चरागाह मोल ले ले !
(हल का फाल मामा, हल का फाल,)
वह रात-रात तो खेतो का अनाज खाता है, दिन पेड़ो की छाया में मौज से लेटा रहता है ?
(कच्चा अन्न घराट में पीसा मामा, कच्चा अन्न पीसा !)
खूंटे पर रस्सी से बाध कर रखता हूँ फिर भी खेतो में 'उजाड़' खाने चला जाता है !
(हींग घोटी जायेगी मामा, हींग घोटी जायेगी !)
लोगो को देखकर मामा, तेरा शकरी भैंसा सींग घुमाता है !

बाघ

पहाड़ो के सघन वनो मे जब नर-भक्षी व्याघ्र गावो मे अपनी
कार करने लगते है तो लोगो मे एक आतक फैल जाता है। व्याघ्र
प्रचलित अनेको गीत इसी भावना को व्यक्त करते है।

लोकू को खेती को काम नी होये पूरू,
यो निरभागी बाघ होंडगे शूरू !

खाड़ू

स्वार्थी सबलों के साथ कभी सरल-हृदय दुर्बल अपना सींग तुडा
ार आते हैं। मेंढा को लेकर लिखी गई यह अन्योक्ति बड़ी मार्मिकता
लए हुए है।

भगूली को मैल बे !
सींग न तोड़ाई कखी बोगठ्यों की गैल वे !
मेरा खाड़ू जी गुद बुद्या बोगठ्यों की गैल वे !
हॉ, सारंगी को सार बे,
तेरी गैल वाला प्यारा मतलबी यार वे ।
द्वी हजार्या खाड़ू भौंर मतलबी यार वे !
गाड का छाला वे,
उजाड़ नी खाणू चुचा, क्वी ढुंगा की लाला वे ।
मेरा विलौती खाड़ू भौंर क्वी ढुंगा की लाला वे !

—तू कहीं बकरो के साथ सींग न तुडवाना !
ओ मेरे सुन्दर मेंढे, बकरो के साथ सींग न तुडवाना !
प्यारे तेरे साथ वाले मतलबी यार हैं !
ओ मेरे दो हजार के मेंढ़े मतलबी यार हैं !
दूसरे के खेत का अनाज न खाना, कोई पत्थर को मारेगा !
ओ मेरे विलायती मेढ़े-भौंरे, कोई पत्थर को मारेगा !

शंकरी भोटा

अभावों के बीच जो जीवन से समझौता नहीं कर पाते वरन
अनुचित साधनो से उनकी पूर्ति करते हैं, कुछ ऐसी ही व्यक्तित्व की
प्रवंचना है शकर भैंसा के साथ। मानव जगत में भी इस सत-चरित्र
के अपवाद नहीं।

खल्याणी को दादो मामा खल्याणी को दाँदो,
तेरो शंकरी भोटा मामा भगरेटा नी खाँदो !

कभी एक जगह, कभी दूसरी जगह चला जाता है,
स्त्रियो से चोरकर उनके बच्चों को खाता है !
यह बाघ कैसा अभागी है।
इसने हमारी आखें आसुओ से गीली कर रखी है !
उसने एक स्त्री पर झपटा मारा,
'हा, मेरे लिए खाना बनाने वाला भी कोई न रहा।'
—उसका पति इस तरह विलाप करता है !
इस पापी बाघ के लिए कब मौत आयेगी ?
उस पहाड के ऊपर एक दुगडी गांव है ।
वहा, गाय की कसम उसने एक बुढिया मारी।
उस बाघ ने बुढिया का गला पकडा,
उसकी बहू ने छुडाने के लिए बुढिया की टाग खींची !
(पर औरो ने मना किया)
खाने भी दे, बुढिया का काल आया है,
हम बाघ की डर से बाहर हर्गिज नहीं जायेगें !
इन दरवाजों को झटपट बन्द करदो,
जब तक धूप हो, तब तक रोटी खालो !
इस साल किसी की भलाई नहीं,
हम बाघ की डर से बाहर न जायेगे।
लोग खेतो से डरते- मरते घर लौटते हैं,
बिल्ली को देखकर भी वे डरने लगते हैं।
गोधूलि में यदि कहीं कुत्ते भूंक गये
तो नामी पुरुष भी घर मे छिप जाते हैं।
घर में छिप जाते हैं, जैसे तालाब मे मछली,
और पेट में डर के मारे नरसिंह नाचने लगता है।

कनै जौलू ?

नायक अपनी प्रेयसी से मेले मे बाजार चलने को कहता है। यह

एकी जागान बल हैकी जागा जाद,
जनानी चोरीक नौनौऊँ छ खाँद !
कनो निरभागी यो बाग गीजी,
हमारी आंखी आंसुन भीजी !
एकी जनानी वैन मारे धाडो,
मैं कू वाडी पकौण को करे भाडो !
तैं को मालिक बवरांदो भौत,
ये पापी बागक कब औली मौत ?
तै डॉडा का ऐंच दुगड़ी गौऊँ,
तख बुडड़ी मारे वैन गौ का सौऊँ !
तै बागन पकड़े बुडड़ी की गली,
ब्वारी की पकड़ी छै वीं की नली !
खाण दे बुडड़ी की ऐगे खैर,
हम बाग की डर नी औंदा भैर !
तौं द्वारू तैं अब झट लावा,
घमछंदे भायों रोटी खावा !
ऐंसू का साल नी कैकी खैर,
हम बाग की डर नी औंदा भैर !
डरदा-मरदा औंदान वो घर,
विरालों देखीक लगदी छ डर !
रुमसूम्या वगत जु कुकर भूक्या,
इना नामी वधू जु ओबरा लूक्या !
ओबरा लूक्या रऊ-सी माछा,
पोटगा मा डर का नरसिंह नाच्या !

—खेती का काम अभी पूरा भी न हो पाया था कि बाघ का आतंक शुरू हो गया।

'उस ऊपर वाले गाव में !'
'अलसी, तेरे प्रेमी कितने हैं ?'
'एक बीस और नौ !'
'अलसी, तेरे घर में क्या-क्या है ?'
'एक फूटा हुआ तवा !'
'अलसी, तेरा पशु-धन क्या है ?'
'एक लगडी गौ !'
'अलसी, तू खाती क्या है ?'
'एक बाली जौ !'
अलसी, नमस्ते अरी भाभी !'

जेमड़ी दिसा

(हिंसर की गोंदी,)
तु कै जोगी मँगत्यों गौं औण नी देंदी !
कंडाली की जेमड़ी दिसा ।
(गाड़ी को गेट,)
मँगत्यों देखीक त लूकी जाँदी घास का पेट !
(थाली राल्या मेवा,)
द्वी चार घास का पुला मैं मा और धोली देवा, !
(दली जाली दाल,)
मंगत्यों देखीक जेमड़ी कोणा देन्दी फाल !
(थाली राल्या मेवा,)
छोटा छोरूक बोदी तौं द्वारू ढकी देवा !
(काखड़ी खाईं छ,)
इनो बोला छोरू त्वै मैत जाई छ !
कि यनु बोला छोरू त्वै गिख की ग्वाईं छ !

छोटा सा गीत उनके सहयात्रा के उल्लास और अभाव की असमर्थता दोनों को एक साथ व्यक्त करता है।

बरखा पड़े रुणझुण्या कुंवा पाणीं कज्यारू,
न मेरो कुरता, न मेरी सदरी कनै जौलू बजारू?
बरखा पड़े रुणझुण्या कुंवा पाणी कज्यारू!
तखी दरजी तखी कपड़ा चल स्याली बजारू!

—रिमझिम वर्षा हुई, कुएं का पानी कजला हुआ।
न मेरे पास कुर्त्ता है, न सदरी है मैं बाजार कैसे जाऊ?
रिमझिम वर्षा हुई, कुए का पानी कजला हुआ!
वहीं दर्जी है, वहीं कपड़ा है, चल साली, बाजार चल!

अलसी

हास्य और व्यग्य का एक लघु चित्र 'अलसी' में प्रस्तुत हुआ है।

अलसी, सिमानी चुची बौ!
अलसी, तू रंदी कख छै?
लै मथ्या गौं।
अलसी, तेरा यार कति?
एक बीसी नौ!
अलसी तेरा भितर क्या च?
एक फूट्यूं तौ?
अलसी, तेरा धन कति?
एक डुंडी गौ।
अलसी, तू खॉदी क्या छै?
एक डाली जौ!
अलसी, सिमानी चुची बौ।

—'अलसी, नमस्ते अरी भाभी।
अलसी, तू रहती कहा है?'

तेथु देखिय रोवली मेरी वइण गोपी !
गरै नाई गिणनै मेरी रौथाला तलवार,
तेथु देखिय मरलो मेरी पौंशरी नार !
गरै नाई गिणनै मेरी शॉकला ताई,
तेथु देखिय रोवली मेरो पीठेर वाई !
गरै नाई गिणनै मेरी रावडेर आती,
तेथु देखिय रोवलो मेरो ,गॉवेर साती !

—इस पार तिऊणी गाव है उस पार टोंस नदी का तट ।
नौकरी के लिए जमरू नेगी धणसना (स्थान) जा रहा था ।
इस बार तिऊणी गाव है, उस पार टोस नदी की मिट्टी,
स्त्री के कारण वहां वह वलसना में काट दिया गया ।
हे लोगो, मेरे पैर के जूतों को मेरे घर न ले जाना,
उन्हें देखकर मेरा जंजीर में बधा कुत्ता रोने लगेगा !
मेरा कांसे का प्याला मेरे घर न ले जाना,
उसे देखकर मेरा बूढा बाप रोने लगेगा !
मेरी रौयाल मेले में पहनी जाने वाली टोपी मेरे घर न पहुंचाना,
उसे देखकर मेरी वहिन गोपी रोने लगेगी ।
मेरी रौयाल मेले मे साथ रहने वाली तलवार मेरे घर न पहुँचाना,
उसे देखकर मेरी पार्श्ववर्तिनी पत्नी रो मरेगी ।
मेरी सांकल की तालियां मेरे घर न पहुँचाना,
उन्हें देखकर मेरा सहोदर भाई रोने लगेगा ।
मेरे ऊचे हाथी को अब मेरे घर न पहुचाना,
उसे देखकर मेरे गाव के साथी रोने लगेंगे ।

रघुदास

रघुदास और उसके बलों की यह व्यंग-गाथा बंगाण प्रदेश के लोक-मानस की मीठी चुटकी है ।

(लड़ाई हारीं छ,)
कि यनु बोला छोरू कि व्वै चौर्यों की मारीं छ !
(रात खूलीं छ,)
कि यनु बोला व्वै की आंखी फूटीं कमर लूलीं छ !
—तू किसी फकीर या मंगते को गाव में नहीं आने देती !
कढाली (गांव) की जेमडी बहिन,
मगतो को देखकर तू घास के पेट छिप जाती है !
और कहती है . मेरे ऊपर घास के दो चार पुले और डालदो !
मगतों को देखकर जेमडी कोने पर छलाग मारती है !
छोटे बच्चों को कहती है : इन दरवाजो को ढकदो !
ऐसा कहदो बच्चो, कि मा मायके गई है !
या ऐसा कहदो बच्चो कि मा रीछ की खाई हुई है।
या ऐसा कहदो बच्चो कि मा बुखारों की मारी हुई है।
या ऐसा कहदो कि मा की आख फूटी है कमर लूली हो गई है !

जमरू नेगी

बंगाण क्षेत्र का यह करुण गीत उस मरते हुए ममतामय हृदय की करुणा व्यक्त करता है जो अपने साथ ही अपनी स्मृति को भी मिटा देना चाहता है।

वार बोलेण तिउणी पार टोंसेर छालऋ,
नुकरी खि जमरू नेगी वणसना चालऋ!
वार बोलेण तिउणी, पार टोंसेर माटऋ,
छेउड़ो रि ताइयॉ नेगी बलसना काटऋ!
गरै नाई गिणनै मेरै पइररा जुत्ता,
तेथु देख्यिय खला मेरै शागलोरा कुत्ता!
गरै नाई गिणनै मेरे कासटीरा कापू,
तेथु देखिय रोवला मेरे वुडेढ बापू।
गरै नाई गिणनै मेरो रौथाला टोपी,

तेथु देखिय रोवली मेरी बइण गोपी।
गरै नाई गिणनै मेरी रौथाला तलवार,
तेथु देखिय मरलो मेरी पौंशरी नार।
गरै नाई गिणनै मेरी शॉक्ला ताई,
तेथु देखिय रोवली मेरो पीठेर बाई।
गरै नाई गिणनै मेरी रावडेर आती,
तेथु देखिय रोवलो मेरो ,गॉवेर साती।

—इस पार तिऊणी गाव है उस पार टोंस नदी का तट।
नौकरी के लिए जमरू नेगी घणसना (स्थान) जा रहा था।
इस वार तिऊणी गाव है, उस पार टोस नदी की मिट्टी,
स्त्री के कारण वहां वह वलसना में काट दिया गया।
हे लोगो, मेरे पैर के जूतो को मेरे घर न ले जाना,
उन्हें देखकर मेरा जजीर में वधा कुत्ता रोने लगेगा!
मेरा कासे का प्याला मेरे घर न ले जाना,
उसे देखकर मेरा वूढा वाप रोने लगेगा!
मेरी रौंयाल मेले में पहनी जाने वाली टोपी मेरे घर न पहुंचाना,
उसे देखकर मेरी वहिन गोपी रोने लगेगी!
मेरी रौयाल मेले में साथ रहने वाली तलवार मेरे घर न पहुंचाना,
उसे देखकर मेरी पार्श्ववर्तिनी पत्नी रो मरेगी।
मेरी सांकल की तालियां मेरे घर न पहुंचाना,
उन्हें देखकर मेरा सहोदर भाई रोने लगेगा।
मेरे ऊचे हाथी को अव मेरे घर न पहुंचाना,
उसे देखकर मेरे गाव के साथी रोने लगेंगे!

रघुदास

रघुदास और उसके व लों की यह व्यंग-गाथा धंगाण प्रदेश के क-मानस की मीठी चुटकी है।

(लड़ाई हारीं छ,)
कि यनु बोला छोरू कि ब्वै चौर्यों की मारीं छ।
(रात खूलीं छ,)
कि यनु बोला ब्वै की आंखी फूटीं कमर लूलीं छ।
—तू किसी फकीर या मंगते को गाव में नहीं आने देती!
कंडाली (गांव) की जेमडी बहिन,
मंगतो को देखकर तू घास के पेट छिप जाती है!
और कहती है · मेरे ऊपर घास के दो चार पुले और डालदो।
मगतो को देखकर जेमडी कोने पर छलाग मारती है!
छोटे बच्चों को कहती है · इन दरवाजो को ढकदो!
ऐसा कहदो बच्चो, कि मां मायके गई है।
या ऐसा कहदो बच्चो कि मा रीछ की खाई हुई है।
या ऐसा कहदो बच्चो कि मा बुखारों की मारी हुई है।
या ऐसा कहदो कि मा की आख फूटी है कमर लूली हो गई है

जमरू नेगी

वंगाण क्षेत्र का यह करुण गीत उस मरते हुए ममतामय हृदय क
रुणा व्यक्त करता है जो अपने साथ ही अपनी स्मृति को भी मिट
ना चाहता है।

वार बोलेण तिउणी पार टॉसेर छालश्र,
नुकरी खि जसरू नेगी वणसना चालश्र।
वार बोलेण तिउणी, पार टॉसेर माटश्र,
छेउड़ो रि ताइयाॅ नेगी वलसना काटश्र।
गरै नाई गिणनै मेरै पइररा जुत्ता,
तेथु देखिय खला मेरै शागलोरा कुत्ता।
गरै नाई गिणनै मेरे कासटीरा कापू,
तेथु देखिय रोवला मेरे वुडेढ बापू।
गरै नाई गिणनै मेरो रौथाला टोपी,

—जैसे धनुष प्रत्यंचा से छूटता है, वैसे ही रघुदास जाने को प्रस्तुत हुआ !
अरे बच्चो, तुम छींकना नहीं, मैं बैलो के व्यापार पर जा रहा हू ।
जाने के लिए तैयार होकर वह बरामदे मे आया,
और कमरबद में बटुवा बाध कर वह बाहर निकला !
फिर रघुदास लातें और एडिया मारतो हुआ चलने लगा,
जिधर ही बैलो की जोडी दिखाई दी, उधर ही इशारे करने लगा।
अब सचमुच ही वह बैलो की पूछ-ताछ करने लगा,
कोई तीस रुपया कहे तो वह चालीस देने को तैयार हुआ
बैलो को लेकर तब रघुदास छइला के पुल पर पहुँचा,
जेठ के महीने रास्ते लगा था, कार्तिक जाकर तब कहीं वहा आ सका
रघुदास के बैलो के कंधे मकान की छत पर लगे थे।
उसने पचो से जाकर कहा—मेरे बैलो के लिए खुली सडक बनाओ
रघुदास अपने बैलो को झोपडी मे रखता है,
ओबरे मे गुपचुप रखता है, कही उन्हे डायन न देखले !
औरो ने बैलो का गात और पैर सराहे, पर रघु को पूँछ पसन्द आई
मेरी मति मारी गई जो मैं बैलो के लिए तावीज नहीं लाया ?
जब चकोर और तीतर वोलते हैं तो रघुदास के बैल—
हे ब्राह्मण, भीतर ही भीतर कब तक दिन गिनते रहेंगे !
जैसे बैल रघुदास लाया है, वैसे कोई भी नहीं लाया !
औरो के बैल लाठी से हाके जाते पर रघु के बैलों को डडा चाहिए !
रघुदास के ये बैल घास के पुले चट कर जाते हैं,
रघुदास ऐसे बैल लाया कि वे न जाने कैसे उल्टे-सुल्टे हैं !
बैलो को लाकर अब रघुदास पहाड की चोटी पर गीत गाता है,
जैसे जैसे दिन बीतते जाते हैं हिमपात होने लगता है !
न जाने रघुदास कैसे उलटे-सुलटे (अटशट) बैल ले आया
कि खेत मे बोये तो उसने गेहू थे पर उगी घास।

चाम्बुआ वाम्बुआ रघुदास दणुरि जेणि पौणज,
छिकिय वाईं छेड़ू मेरियो वल्दू डेऊं वौणज।
चाम्बुआ रघुदास वाइरे निकल तगदा,
गाचिदा पूचा वाद वटुआ वाइरे निकल तगदा।
ऑउदा लागा रघुदास लातेरि आडे फानिये।
जेथिके देखे जुडै वलदा तेथिके देउला सानिये।
पुछदा लाग रघुदास पुछदा लाग गतिये,
तीस रुपया मोलेरि बोल चालिश देणी गतिये।
आणा वलदा रघुदास छइला पूजा तरकै
जेठेर मैना दि आडादा लागा कातिक पूजा गरकै।
आणे बलदा रघुदास चुडा लागे दडकै
इण बोलणो पंचू वाई क खुलिय गाड सडकै।
आणे वलदा रघुदास छजुरी टपरी आगिये,
शिगै शिगै ओवरै ओवरै गाडे देखिन चाट्टें डागिये,
मोरुने छांढै गति ने लिय रघुवे छाटे पुजड़े।
एति अकल वुलि मेरी लाइन वलै बुजडे।
आणे बलदा रंघुदास चाकुरे वाश तितरै,
ओरू बोलयो बामण केवडो गिनण वितरै।
जिणे वलदा रघुवे आणे तिणे नी आगे कोइए,
ओरु रे वलदा छींटे वाई ले रघु रे व,दूले टोइए।
आणे वलदा रघुदास गासर जेणी पुलटे,
इने आणे वलदा पुछै, उल्टै पुछै न सुलटे।
आणे वलदा रघुदास टोपुआ लाग टींद,
जे तेखी गिने पारै दुरेदि तेतेखि लाग दींद।
आणे वलदा रघुदास उमले सादे न सुमले,
एकी कुरालि दी गिऊँ वये थे तिंद राजे वुमले।

—जैसे धनुष प्रत्यंचा से छटता है, वैसे ही रघुदास जाने को प्रस्तुत हुआ !
अरे बच्चो, तुम छींकना नहीं, मैं बैलो के व्यापार पर जा रहा हू ।
जाने के लिए तैयार होकर वह बरामदे मे आया,
और कमरबद मे बटुवा बाध कर वह बाहर निकला !
फिर रघुदास लातें और एडिया मारता हुआ चलने लगा,
जिधर ही बैलो की जोडी दिखाई दी, उधर ही इशारे करने लगा।
अब सचमुच ही वह बैलो की पूछ-ताछ करने लगा,
कोई तीस रुपया कहे तो वह चालीस देने को तैयार हुआ
बैलो को लेकर तब रघुदास छड्ला के पुल पर पहुँचा,
जेठ के महीने रास्ते लगा था, कार्तिक जाकर तब कहीं वहा आ सका
रघुदास के बैलो के कंधे मकान की छत पर लगे थे।
उसने पचो से जाकर कहा—मेरे बैलो के लिए खुली सडक बनाओ
रघुदास अपने बैलो को झोपडी मे रखता है,
ओवरे में गुपचुप रखता है, कही उन्हे डायने न देखले !
औरो ने बैलो का गात और पैर सराहे, पर रघु को पूँछ पसन्द आई
मेरी मति मारी गई जो मैं बैलो के लिए तावीज नहीं लाया ?
जब चकोर और तीतर बोलते है तो रघुदास के बैल—
हे ब्राह्मण, भीतर ही भीतर कब तक दिन गिनते रहेंगे !
जैसे बैल रघुदास लाया है, वैसे कोई भी नहीं लाया !
औरों के बैल लाठी से हाके जाते पर रघु के बैलों को डडा चाहिए !
रघुदास के ये बैल घास के पुले चट कर जाते हैं,
रघुदास ऐसे बैल लाया कि वे न जाने कैसे उल्टे-सुल्टे हैं।
बैलो को लाकर अब रघुदास पहाड की चोटी पर गीत गाता है,
जैसे जैसे दिन बीतते जाते हैं हिमपात होने लगता है !
न जाने रघुदास कैसे उलटे-सुलटे (अटशट) बैल ले आया
कि खेत मे बोये तो उसने गेहू थे पर उगी घास ।

बोलणी

ससार की हर वस्तु की एक विशेषता होती है। प्रस्तुत गीत में रोटी, चावल, स्त्री, पुरुष आदि की विशेषता का उल्लेख है।

भुजी बोलणी बल खिरकंडा की,
बन्द गोभी की, गोदड़ा की, पालिगा की,
भुजी कटलोणी ना राखो जब कोई,
भुजी अलोणी ना राखो जब कोई,
भुजी फरकौण्या ना राखो जब कोई,
हे मेरी छुमा, टपकारा मारो जब कोई।
भात बोलणो बल राम जवाण को,
भात बोलणो बल बासमती को,
भात बुकौण्या ना राखो जब कोई,
भात फुकोण्या ना राखो जब कोई,
भात गिलगिलो ना राखो जब कोई,
भात सिनसिनो ना राखो जब कोई,
भात पसोण्या ना राखो जब कोई,
हे मेरी छुमा हात काटो जब कोई।
गेऊँ बोलणा बल केसरी गेऊँ,
मुंडरी गेऊँ, केदारी गेऊँ,
चट पीसीक तैं जब कोई,
आटू गुद्याली जब कोई,
बौंली ठबसैकतैं, चूडी छमणौक तैं,
कमरी मटकैक तैं, आँखी चटकैक तैं,
नाकी पोंजीक तैं, खूब सोचीक तैं
रोटी इकाड्या ना राखो जब कोई,
रोटी इकतर्या ना राखो जब कोई,

रोटी काची ना राखो जव कोई,
रोटी फुकीं ना राखो जव कोई,
फुलका उतारो जव कोई,
हे मेरी छुमा फुलका उतारो जव कोई!
वाद बोलणी वल जौनपुर की,
छोटी मांग्यालो जव कोई।
नार बोलणी वल नागपुर की,
लवा लयालो जव कोई।
वाद बोलणी वल देखणी दरसनी,
वौंली विटकैक तैं, कमरी भट कैक तैं,
आंखी टमकैक तैं नाक समालो जव कोई,
हे मेरी छुमा, नाक समालो जव कोई।
वैख बोलणो वल चॉद कोट को,
मथेंडो लगैक, कडेरो धरीक,
देव वण जाइक गिड़विट्ट गिड़विट्ट,
कंडेरो विसैंक, चुल्लो लगैक,
आटो गाडीक, रोटला पकैक फुंडै धरीक,
द्वी पैसा लोक, वण्या मू जैक,
फुड़ वक जवान जु कुई बोल्याले,
धक्का वण्या का द्वी चार खयालो,
घुस्सा चारेक अपणा लयालो!
हे मेरी छुमा, अपणा लयालो।

—सब्जी अच्छी कहें तो सिरकडे की,
बन्द गोभी की, तोरियों की, पालक की
पर जब कोई सब्जी में ज्यादा नमक न डाले,
जब कोई सब्जी को अलोनी न रखे,
जब कोई सब्जी को (पकाते हुए) इधर उधर घुमाता रहे,

हे मेरी छुमा, जब कोई उसें खाते हुए टपकारे मारता रहे !
चावल अच्छे कहें तो रामजवान के,
चावल कहने तो वासमती के,
पर जब कोई चावल चबाने लायक न रखे, ‘
जब चावल कोई पकाते हुए जलाये नहीं,
जब कोई चावलो को गीला न रखे,
जब कोई चावलों को अधपका न रखे,
जब चावल पसाने न पढें,
हे मेरी छुमा, जब कोई खाते समय उगली काटने लगे !
गेहूँ कहने तो केसरी गेहूँ,
मुंडरी गेहूँ, केदारी गेहूँ !
जल्दी (जब कोई) पीसकर,
जब कोई आटा गूंदले !
आस्तीन ऊपर करके, चूडियो को छनछना कर
कमरिया मटकाकर, आखें उठाकर
नाक पोछकर खूब सोचकर
रोटी को इकहरी न रखे जब कोई,
रोटी को टेडी-मेडी न बनाये जब कोई,
रोटी को कच्ची न रखे जब कोई,
रोटी को जलाये न जब कोई,
और इस तरह फुलके उतारे कोई,
हे मेरी छुमा, फुलके उतारे कोई !
सुन्दरी कहनी तो जौनपुर की,
पर जब कोई वचपन में ही मगनी कर दे !
नारी कहनी तो नागपुर की,
जब वह ‘लवा’ (वस्त्र विशेष) पहन ले !
सुन्दरी कहें तो उस जो देखने में सुन्दर हो,

जो आस्तीनों को उठाकर, कमरिया झटका कर,
आँखें मटका कर जो नाक सभाल ले !
हे मेरी छुमा, जो नाक को संभाल ले !
पुरुष कहना तो चादकोट का,
लाठी लेकर कंडी रखकर
गिडबिट्ट गिडबिट्ट देववन जाकर
अपनी कंडी, अलग रखकर, चुल्हा लगाकर,
आटा निकालकर, रोटियां पकाकर, किनारे रखकर,
दो पंने लेकर, बनिये के पास जाकर,
कोई उज्जड जवान कहकर,
जो बनिये के धक्के खा जायेगा
और दो चार घूंसे अपने आप भी लगा देगा,
हे मेरी छुमा. अपने आप भी लगा देगा !

जात कर्म

विवाहिता इस गीत में अपनी पुत्रोत्पत्ति की सूचना भौंरे के द्वारा अपने मायके तक पहुंचाती है।

जा धौं भौंरा, मां जी का पास हमारी !
कुशल मंगल बोलाई.
कल्याण बोल आई !
जा धौं भौंरा, बाबा जी का पास हमारा !
कुशल मगल सुणे आई,
कल्यारण बोल आई !
धिया न तुमारी बालण भौंरा,
जाल तोड़्यो, रण जीत्यो !
कल्याण बोलो आई.
कुशल बोलो आई !

—जा तो भौंरि, माँ के पास जा !
कुशल मगल सुना कर आना !
कल्याण की सूचना देकर आना !
जा तो भौंरि, पिता जी के पास जा !
कुशल मगल सुनाकर आना,
कल्याण की सूचना देकर आना !
भौंरि वहां जाकर कहना—तुम्हारी बेटी ने
जाल तोड़ लिया है, रण जीत लिया है
(प्रसव की संकट को पार कर लिया है)
कल्याण कह कर आओ,
कुशल कहकर आओ !

कुलाचार

मंगल कार्यों के अवसर पर तथा त्योहारों में मांगते हुए ढोल आदि वाद्यों के साधक 'औजी' सवर्णों की विरुदावली गाते हैं।

मंगलाचार मंगलाचार, बड़ा सरकार, बडा दरबार !
राज महल्ली, राजमुसद्दी, जुग जुग जीवे राजधिराज !
माराज बोलॉदा बद्रीनाथ, जै जै कार जै जै कार !
पूरबी पच्छमी घाट को राज बढ़े,
उत्तरी दक्खणी घाट को राज बढे
बेटी बेटान को राज बढ़े,
नाती पोतान को राज बढ़े,
कुल का दिवा सब पर नेह करे,
दाता धाता गुण से भरपूर करे !
ग्यानी पंडित सदा गरीब रये,
छत्री का हस्त रग्छा को शस्तर रये,
मूसा घॉड पैरावै, दुंला वैठे,

कागा घांड पैरावै, देश फिरे ।
दातों का दियान भंडार नी घटदो माराज,
पछी का पियान समुद्र नी सूखदो !
अपखा वॉठा की दाल भात,
अपणी गति को मैल दी देण माराज ।
नगो ठकौण, भूखो पत्यौण जै जै ठाकुरो ।
—मंगल हो, मगल ! वडे सरकार, आपका वडा दरबार ।
आप राजमहलो में रहने वाले राजमुसद्दी हैं, राजधिराज, आप युग युग तक जीवें ।
आप बोलते बद्रीनाथ हैं, मैं आपका जय जयकार करता हूँ,
आपका पूर्वी-पश्चिमी घाट का राज बढे ।
उत्तरी और दक्षिणी घाट (दिशा) का राज बढे ।
आपके वेटो का राज बढ़े ।
नाती-पोतो का राज बढें ।
आप कुल के दीपक हैं, आप सब पर स्नेह करें ।
विधाता आपको गुणो से भरपूर करें ।
ज्ञानी पडित सदा गरीब रहा है,
क्षत्रियों के हाथ में रक्षा का शस्त्र रहा है ।
चूहे को घंटी पहनाओ तो उसे लेकर बिल में घुस जाता है,
पर कौवा को घटी पहनाओ तो वह देश देश घुमाकर आता है ।
(ब्राह्मण और क्षत्रियों गुण और ज्ञान इसी तरह लोक में बंटता आया है, पर हम तुम पर ही आश्रित रहे ?)
दातों के देने से भडार नहीं घटता,
पक्षियो के पीने से समुद्र नहीं सूखता ।
अपने हिस्से की दाल-भात,
अपने शरीर का मैल (पहना हुआ वस्त्र) दे दो श्रीमान !
मुझे नगे को ढकाना है, भूखे को पतियाना है । जय हो !

नन्दा

पितृ-गृह छोडने की करुणा कन्या के जीवन की सबसे बडी विडम्बना है। वह सोच ही नहीं पाती कि आखिर उसने ही कौन से पाप किये हैं कि उसे पितृगृह छोडना पडता है। इस विषमता पर उसकी रीझ कभी बहुत प्यारी होती है। इस गीत में भगवती नन्दा की उसी मनोस्थिति का चित्रण हुआ है।

क्वी बैणी दिनी दादून, दादून वे सैणा चौरास।
क्वी बैणी दिनी दादून, दादून वे सैणा सिरीनगर।
क्वी बैणी दिनी दादून, दादून वे उच्चा दिलगोड,
क्वी बैणी दिनी दादून, दादून वे रौंत्याली सुमाडी।
होलो जसी मेरो होलो हिऊँ को डिसाण,
होलो जसी मेरो होलो, हिऊँ को ढक्याणं !
मैं रयूँ दादू की, दादू की कुलाडै की नन्दा,
मैं दिन्यूँ दादून, दादून वै काली धौली राठ।
सबी बैण्यों गैणी दिनेन मैं दीनी नाक नथूली,
मैं दिन्यूँ दादून, दादून वै काला-कुमौऊँ,
बाबा जी का देस देखा क्या घाम लग्यूँ च,
ससुरा जी का देस बोई कुयेडी लौंखी !
सटेडी पुंगडी मैत्यों की सूखा पडी जैन !
भंगरेडी पुंगड्यों मैत्यों की भडुवा ह्वै जैन !
कोदाड़ी पुंगड्यों मैत्यों की फ्योंली फूली जैन।
गॅवाडी पुंगड्यों मैत्यों की चाली जामी जैन।
मैत्यों का खरक मैत्यों का वागी वागी ह्वैन।
भाइयों की सतान, मैत्यों की नौनी ना ह्वैन।
सैसूर जाण की बेला न कैक तैं आन !

—कोई बहिन भाई ने चौरास के मैदान मे ब्याही,
कोई बहिन भाई ने श्रीनगर के मैदान में ब्याही !
किसी बहिन का ब्याह भाई ने ऊँचे दिलगोट में किया,
किसी बहिन का ब्याह भाई ने रमणीक सुमाडी में किया।
पर मुझे ऐसी जगह ब्याहा, जहा बर्फ का ही बिछौना है,
जहां मेरा बर्फ का ही ओढना है।
मैं भैया की फुलाडली नन्दा रही हूं,
मुझे भैया ने काली और अलकनन्दा के राठ (राष्ट्र) मे ब्याहा।
सभी बहिनो को भैया ने गहने दिये, मुझे नथ ही दी,
मुझे भैया ने उस काले कुमाऊं मे ब्याह दिया।
पिता के देश मे देखो, कैसी धूप लगी है,
पर ससुर जी के देश मे हे मा, बादल लोट रहे हैं।
मेरे मायके वालो के धान के खेत सूख जाय !
मेरे मायके वालो के सवा के खेतो मे अन्न पैदा न हो !
मेरे मायके वालो के मंडुवा के खेतो म फ्यूली फूले,
मेरे मायके वालो के गहू के खेतो में घास उगे,
मेरे मायके वालो के भैंसों के खरक मे केवल भैंसा ही पैदा हो
मेरे भाइयो की सतान न हो, मायके वालो की कोई कन्या न हो।
और उनके लिए ससुराल जाने की वेला कभी न आये।

रासू जाणू

किशोरी जुगा रास नृत्य मे वस्त्राभरण सहित सम्मिलित होने के लिए मा से अनुरोध करती है किंतु मा उसे कई बहाने बनाकर टालना चाहती है और अत मे एक धुंधला सा सकेत मात्र कर देती है कि तू सुन्दरी है। तुझे नहीं जाना चाहिए।

ढाकिया ढक बजालू भाणू,
मुई बुया थौलू रासू लाणू !
तैं मेरी जुगा चौनी जाणू !

थौला बड़ा बड़ी जड़ा,
मैं बुया थौलू रासू जाणू !
मैं बुया जाणिकी मरणू,
दे बुया गति की आगूड़ी ।
सी जुगा तेरी भौजान लेगी ।
थौला बड़ा बड़ा जूड़ा
मैं बुया थौलू रासू लाणू,
तैं मेरी जुगा वींनी जाणू,
मैं बुया जाण की मरण,
दे बुया तू मु घाघूरी ।
से मेरी तेरी भौजान लेगी !
दे बुया सिरा की चादर,
से मेरी तेरी भौजान लेगी !
थौला वड़ा वड़ा जुड़ा,
मु बुया थौलू रासू जाणू !
तैं मेरी जुगा बीनी जाणू,
तू मेरी तखी भूली जाली,
तु मेरी एजू की बंठिय
तैं मेरी जुगा बी नी जाणू !
—ढाकी वाद्य बजा रहे हैं,
मां मैं रास-मडल में नाचूंगी ।
न, मेरी जुगा, तू वहां न जाना !
वहां मेला लगा है !
मैं मा, मेले के रास में जाऊंगी !
मैं मा, या तो जाऊंगी, या मरूंगी,
मुझे अपनी अंगिया दे मा !
वह तो तेरी भाभी ले गई जुगा !

बड़ा मेला लगा है,

मं मेले मे रास रचूगी मा ।

तू न जा, मेरी जुगा !

मं, मा, या तो मरूंगी, या जाऊंगी,

तू मुझे घघरा दे मा !

वह तो तेरी भाभी ले गई ।

मुझे सिर की चादर दे मा,

बडा मेला जुडा है,

मं मेले के रास मडल में जाऊंगी ।

मेरी जुगा, तू न जा ।

तू वहीं भूल जायेगी,

तू अपूर्व सुन्दरी है,

मेरी जुगा, तू यहा न जा !

नी जॉर्दा

कन्या की इच्छा के विरुद्ध विवाह समाज की एक बडी समस्या है। इस गीत मे कन्या की इच्छा मे विवाह का आर्थिक पहलू ही अधिक सामने आया है।

जा जा बेटी नैणी बजार,

रुप्या देलो लाख्या हजार ।

काटी कुचाई काटी गोबी,

तू जो बुबा धन को लोबी ।

शाडरे जाली उच्ची पर्वत,

त्वडके बुबा क्या ग्याण खांद,

क्या लाणू त लाद ?

खॉद बेटी कौणे फाफीरो,

भिड्दी बेटी उन को चोला।

त्वइके बुवा जुगा नी जॉदी
ना त मिल्यो जिऊ को साती,
ना त मिल्यो दूद भाती !
—'जा जा, बेटी, नैणी बाजार जा !
(वह मुझे) हजारो लाखो रुपये देगा !'
'कुचाई काटी, गोभी काटी,
पिता तू धन का लोभी है !'
'तू पर्वत की तरफ ससुराल जायेगी ।'
'वहा पिता जी, क्या खाना खाते हैं,
क्या कपड़े पहनते हैं ?'
'बेटी वहा कगूनी और फाफरा खाते हैं,
ऊन का चोला पहनते है !'
'वहां तो पिता जी मैं कभी न जाऊंगी,
न तो मुझे हृदय का साथी ही मिलेगा,
न दूध भात का खाना ही !'

केन्द्री बेटी

प्रसव नारी का जीवन भी है मृत्यु भी। जब जन्म मृत्यु का कारण बनता है, उस स्थिति में वह कितना करुण होता है, यह कहने की आवश्यकता नहीं।

केन्दरी बेटी भरेन्दों भाडो,
चलेन्दों न पिता कालसी को डाडो।
हे परभु तिरलोकी नाथ,
कनू छूटे दूनिया को सात ?
सत्र अठार साल की ज्वानी,
कनि करे कालन मन मानी !
मेरा विधाता क्या लेखे त्वैन,

दुनिया मा ऐकी क्या पाये मैंन ?
पेट आधार जब रई गए,
तू जाणी दैव, मेरो काल आये !
कनो फूटे केन्दरी को भाग,
नाक नथूली सेन्दूक जाग !
—केन्दरी बेटी वर्तन की तरह भरी; (गर्भवती हुई)
पिता जी, मुझसे कालसी का डाडा नहीं चढ़ा जाता !
हे प्रभु, हे देव, हे त्रिलोकी नाथ,
दुनिया का साथ कैसे छूटा !
मेरी सत्रह अट्ठारह साल की जवानी थी,
काल, तूने कैसी मन-मानी की !
मेरे विधाता, तूने मेरे भाग्य में क्या लिख दिया,
दुनिया में आकर मैंने क्या पाया ?
गर्भ में जब आधार (शिशु) रह गया था,
तभी तू जानता है देव, कि मेरा काल आ गया !
हाँ, केन्दरी का भाग्य फूट गया,
नाक की नथ अब सन्दूक में पड़ी है।

लायकू राम

टीकर इस्कूल लायकूराम गूथली पोलू,
चोटी किरष्टी रोई इन्दोरी पोरी !
माँ तेरी मात रे लायकूराम गूंथली पोलू,
तेरी मात रे लायकूराम देखी ना बोलू !
चाचा चाइथ केशवराम शिशराम भाई,
बोडरी हातकू मेरी जान देन्द बचाई !
भाई बागण बनिय किय खाचो घर माटो,
टीकरालो रे छोटु चाकुरा जैं काटो !

बोटी रे किराष्टी रोवै शुणरे शलाई
छोटू छोटू तेरो रोवै खावुडी बाई
मा दे लयाकूरामेरी दूदर गिलास
पारै देखे शड़ुके लायकूरामेरी लाश

—टीकर स्कूल में लायकूराम मारा गया,
इन्द्र की परी सी उसकी बहू रोती रही !
लायकूराम, तेरी बूढी मा अब सफेद बालो को कैसे गूथेगी ?
वह अब तेरे साथियो को कैसे देख सकेगी ?

मेरे चाचा केशवराम और शीशराम चाहते तो
वे बैरियों से मेरी जान बचा सकते थे !
किसीने मेरे हाथ-पैर बाधे, किसीने मुह में मिट्टी भरी
टीकर वालो ने मुझ लडके को बकरी की तरह काटा
सोने की सलाई उसकी बहू किराष्टी रोती है.
उसका छोटा बच्चा मुह खोलकर रोता है।
मा, जो अपने लयाकूराम को दूध का गिलास पिलाती थी
आज लयाकूराम की लाश को सडक पर जाते देखती रही है।

मलारी

एक था गजू और एक थी उसकी प्रेयसी मलारी। बाप—मोण्या सौन्दाण—उनके बीच की दीवाल था। गजू उससे डरता था और मलारी उसकी उपेक्षा नहीं कर सकती थी। आखिर मलारी रुग्ण हुई और मृत्यु-शैया पर भी वह अपने प्रिय की कामना न छोड सकी।

मु त पूछ सौंदाण क्या असूख तोई,
मोण्या सौंदाण की मलारी गय असुगी होई।
उडा त बोला गगाड़ू फेडू त पक्या वर,
मुंड त लाग्यो मुंडारो गात सर्यो जर।

तुवा त मेरो सौंदाण तू हुन्दै मुल्के को जाणो,
मुक लै श्राणू तबै मरो गजू बोड्दी श्राणो ।
श्राण को गजू श्राई गयो सो श्रायो श्रपणे वरे,
पोड्या मते गजू श्राई गयो मोण्या सौंदाण की डरे।
उखल्यो मते की कूटदारी काउंणी कूटली घाणी,
पोड्या फंडो को मानसूडो गजड्या जाणी ।
नाड्या त ठुडुवे चडो त वासली काई,
काने को गाड दुरेटो गजू स्यू देण हिरणक पाई ।

--उसके पिता सौन्दाण ने पूछा--तुझे क्या दुख है ?
मोण्या सौन्दाण की मलारी रोगिणी हो गई !
(जैसे) गगाड की भूमि में बेर पकते हैं (वैसे ही)
मेरे सिर मे दर्द हो रहा है, शरीर मे ज्वर फैल गया है ।
पिता सौन्दाण, तू सारे मुल्क का जाना हुआ है,
मैं तब मरूंगी, जब तू गजू को बुलाकर ले आयेगा ।
आने को गजू आ गया, अपने आप ही आ गया,
पेंडी तक गजू आ गया, पर मोण्या सौंदाण से डरता था,
ओखली के ऊपर कूटने वाली कगूनी कूट रही थी,
पेंडी पर के आगन्तुक को मलारी ने जान लिया ।
गहरी उपत्यकाओ मे कोई चिडिया बोली,
गजू ने कान का कुंडल निकाला और (मरती हुई मलारी के मुंह मे) हिरण्य रख दिया !

सोम जजमान

उत्सवो और त्योहारो के अवसर पर मांगते हुए औजी प्राय इस गीत की भूमिका बांधते हैं ।

मर्द को मर्द जाने, मर्द को मर्द पछाने,

मर्द को मर्द छुड़ावे, मर्द को मर्द बचावे।
बाजा में ढोल काम, हस्ती के दन्त काम;
अंधे को जोत नी, वैरी को राग नी;
फूस-फास की ओट नी, चद्दर की चोंट नी।
नंग के ऊपर मास नी, पत्थर पर घास नी
सोम जजमान की आस नी।

टिप्पणी=फूस फास=घास-फूस। चोंट=वर्षा से बचने के लिए बनाया हुआ आवरण। नग=नाखून। नी=नहीं।

परिशिष्ट १

टिप्पणियाँ

संख्याएं पुस्तक के पृष्ठों को सूचित करती हैं।

२—वाँज, वान एक पेड का नाम; वज्रकाष्ठ।

४—बुराँस एक पेड और उसका गुच्छेदार लाल फूल, रेट्रोण्डन।

ताछुला एक पत्तेदार घास।

दरांती दायडी दात्र।

नर और नारायण बद्रीनाथ क्षेत्र में अवस्थित पौराणिक पर्वत श्रेणिया।

केला और चीड़ पवित्रता और मंगल के प्रतीक।

साग वाडी शाक वाटिका

भकोरी · एक वाद्य। वैदिक साहित्य में उल्लेख मिलता है।

फ्यूँली एक पीला फूल।

प्रसव-प्राण धूप शिखरो पर अस्त होती हुई अंतिम धूप के विषय मे यह सामान्य विश्वास गढ़वाल में है कि उसमे प्रसवा के प्राण बसते हैं।

७—पोखरी . एक गाव का नाम।

यात्रा देव-यात्रा; मेला, पूजा।

१०—चोपडा, चौथान : स्थानो के नाम।

डाडी-काँठी पर्वत श्रेणिया।

१३—डँड्योली पर्वतो का एक फूल।

कोठार काष्ठागार। अन्न रखने के लिए लकड़ी के बने बड़े-बडे सदूक।

१४—दाहिनी होना : सानुकूल होना।

१६—रौंसाल : वृक्ष का नाम।

१८—देबल : देवालय।

लस्या, बजिरा : स्थानो के नाम।

मोतू : व्यक्ति का नाम।

चावलों के जौ बनाना . चमत्कार दिखाना।

२०—रूपा : चाँदी।

डिमरी : ब्राह्मणो की एक जाति।

राठ : उत्तरी गढ़वाल का एक प्रदेश।

२८—गोमूत्र सिंचन : पवित्रता शुचिता के लिए आवश्यक समझा जाता है।

अबाट : रास्ते से दूर।

३२—चेटक : नाटक की एक कोटि।

२८—अक्षत : पूजा के चावल।

३६—चकोरों-सी टोली बच्चों के लिए आया है।

३७—हर्ष देखना : पुत्रादि के संभव से प्रसन्न होना।

हौंसिया उम्र : हौंस=लालसा। वह अवस्था (यौवन) जब जीवन इच्छाओ और लालसाओं का केन्द्र होता है।

३८—सुवा पंखी साडी वह साडी जो तोते के पखो के समान हो।

आंवले के समान डोली : इस उपमा में समान धर्म आकार की गोलाई है।

४४—औजी : ढोल-दमामा बजाने वाले हरिजन।

४५—मोती : चावलों के लिए सुन्दर प्रतीक।

५१—छाटा : हिन्दी छंटना—अलग होना। बीच में फासला होना।

५४—छोलंग, बिजोरा : फल विशेष।

५८—कुंगू कुमकुम।

५६—खर्क : भैंसो के रहने का स्थान।

गोठ : बकरियों के रहने का स्थान।

७२—घूघूती . एक चिडिया, फाख्ता।

७४—मन लगना : पसंद करना, प्रेम करना।

रिंगाल : बांसी।

कलमेना : लकड़ी विशेष।

सेम-मुखेम : एक स्थान, जहां कृष्ण का मन्दिर है।

हिंसर : बेरी की तरह का एक फल।

गोंदकी : Lump

दाम : एक तोल।

रमोली : एक स्थान।

७६—खैर : लकड़ी विशेष।

७७—मोरू : बांज की जाति का पेड़।

पुला : गट्ठा।

७८—सेंटुला : एक पक्षी।

८० बेसर, बुलाक : नाक का गहना।

८१—कुमाली : एक पतंगा जिसकी कमर बहुत बारीक होती है।

८३—गलखी : कोमल ग्रास।

८४—भीमल : एक वृक्ष।

ठलकी : गट्ठा।

हुड़की : एक वाद्य।

८५—पाखा : पक्ष, पहाड़ का एक भाग।

ह्विलांस : तोते की जाति की एक चिड़िया

८६—मालू : एक बड़े पत्तों वाला पेड़।

पौड़ी : गढ़वाल का एक नगर।

८८—चौणा : एक अन्न।

८९—तिवार : बरामदे वाला विशेष ढंग का मकान।

९१—मलारी, मलारी : नायिकाओं के नाम।

गजू : नायक, एक नाम।

९६—पटुंगा : कमरबन्द।

१८—देवल · देवालय।

लस्या, बजिरा : स्थानों के नाम।

मोतू · व्यक्ति का नाम।

चावलों के जौ बनाना चमत्कार दिखाना।

२०—रूपा . चाँदी।

डिमरी : ब्राह्मणों की एक जाति।

राठ : उत्तरी गढवाल का एक प्रदेश।

२८—गोमूत्र सिंचन : पवित्रता शुचिता के लिए आवश्यक समझा जाता है।

अबाट : रास्ते से दूर।

३२—चेटक : नाटक की एक कोटि।

२८—अक्षत : पूजा के चावल।

३६—चकोरों-सी टोली . बच्चों के लिए आया है।

३७—हर्ष देखना : पुत्रादि के वैभव से प्रसन्न होना।

हौंसिया उम्र : हौंस=लालसा। वह अवस्था (यौवन) जब जीवन इच्छाओं और लालसाओं का केन्द्र होता है।

३८—सुवा पंखी साडी वह साडी जो तोते के पखों के समान हो।

आवले के समान डोली : इस उपमा में समान धर्म आकार की गोलाई है।

४४—औजी : ढोल-दमामा बजाने वाले हरिजन।

४५—मोती : चावलों के लिए सुन्दर प्रतीक।

५१—छाटा . हिन्दी छँटना—अलग होना। बीच में फासला होना।

५४—छोलंग, बिजोरा फल विशेष।

५८—कुंगू . कुमकुम।

५६—खर्क · भैंसो के रहने का स्थान।

गोठ · बकरियों के रहने का स्थान।

७२—घूघूती . एक चिडिया; फाख्ता।

७४—मन लगना : पसंद करना, प्रेम करना।

रिंगाल : बांसी।

कलमेना : लकड़ी विशेष।

सेम-मुखेम : एक स्थान, जहां कृष्ण का मन्दिर है।

हिंसर : बेरी की तरह का एक फल।

गांठकी Lump

ढाम : एक तोल।

रमोली : एक स्थान।

७६—खैर : लकड़ी विशेष।

७७—मोरू : बांज की जाति का पेड़।

पुला : गट्ठा।

७८—सेंटुला : एक पक्षी।

८० बेसर, बुलाक : नाक का गहना।

८१—कुमाली : एक पतंगा जिसकी कमर बहुत बारीक होती है।

८३—गलुखी : कोमल ग्रास।

८४—भीमल : एक वृक्ष।

ठेलकी : गट्ठा।

हुड़की : एक वाद्य।

८५—पाखा : पक्ष, पहाड़ का एक भाग।

ह्लिलाम : तोते की जाति की एक चिड़िया

८६—मालू : एक बड़े पत्तों वाला पेड़।

पौड़ी : गढ़वाल का एक नगर।

८८—चीणा : एक अन्न।

८९—तिबार : बरामदे वाला विशेष ढंग का मकान।

९१—मलारी, मलारी : नायिकाओं के नाम।

गजू : नायक, एक नाम।

९६—पहुंगा : कामरकन्द।

फतुही : औरताना वास्कट।

९९—मलेऊ : पक्षी विशेष।

११३—धार : पहाड की वह चोटी जो तलवार की धार सी लगती हैं।

११४—घाट : अस्ताचल।

नोकली आगन।

११५—बमूर, बमौरा · फल विशेष।

१२० फ्यूँली जैसा भाग्य : फ्यूंली का सौंदर्य ही उसका भाग्य है।

१२२ कूंजा · कुब्ज; जगली फूल।

१२४ ठाकुर : विशिष्ट, सम्मानित।

ऐनल-कैनल : फूल विशेष।

१३५—दुपट्टा और टोपी : पुरुष और स्त्री के प्रतीक।

गंगा का पानी : यौवन का सुख।

मुंग माला नायिका, नाम विशेष।

१३६—किनगोड . एक जगली फल।

१४०—डाली . वृक्ष का लघुत्व सूचक शब्द।

गर्मियों की दुपहरी : यौवन।

वृक्ष : पेमी।

छाया : प्रेम का प्रतीक।

१४६—भाना · प्रेयसी के लिए एक सबोधन।

१४७—रौड़ी · मथनी।

घुटनों तक : अधिक। मैं घुटनो तक प्रेम मे डूबा हूं।

१५०—खेश . एक प्रकार की चादर।

हृदय की शौकीन · मै तुम्हारा हृदय (प्रेम) मात्र चाहती हूँ।

फूलो के साथ वसत मे।

१५१—खुली छाती निष्कपट।

गिलई : एक लता का नाम।

गुलौरा : गुलेल।

माणी . एक तोल।

१५३—कंडारा . एक पौधा।

१५७—छोई : राख को घोलकर कपड़े धोने के लिए बनाई जाती है।

१५८—पॅवर . नोक, घेरा।

१६१ मीन एक पौधा।

१६२ थेगली लगाना दूर की हांकना; प्रपंच रचना।

१७० देश गढ़वाल में देश शब्द भारत के मैदानी भागों के लिए भी प्रयुक्त होता है।

१७१ नाम रखना : बदनाम करना।

१७२—भेंटना गले लगाना, आलिंगन करना।

१७५—द्रोण : एक परिमाण।

कोदो : मंडुवा; कोद्रव।

१८०—तौलि : एक बर्तन।

१८३—टल्ला फटे कपड़े के ऊपर लगाया हुआ कपड़े का टुकड़ा।

१८४ नाग : नग्नता।

१८५ झुमैलो गीत की टेक।

१८८ फूलहारी चैत के महीने किशोरियां घर के द्वारों पर फूल चढ़ाती हैं। उन्हें फूलहारी कहा जाता है।

१८९ झूर : दुखित होना।

१९७ खुद : क्षुधा–आत्मिक क्षुधा। प्रिय जनों के अभाव में मिलन की आत्मिक क्षुधा।

२०० हिचकी धारणा है कि जब कोई किसी को याद करता है तो उसे हिचकियां आती हैं।

२०२ दाईं : गेहूं-जौ की बालियों को आंगन में बिखरा कर बैलों को घुमाकर कूटने की क्रिया।

२०३ फूल संक्रान्ति चैत की समाप्ति और बरसात के प्रारंभ का सधि दिवस, जब फूलो का त्यौहार मनाया जाता है।

पापड़ी त्यौहार वह त्योहार जिसमें चावल के पापड़ बनाये जाते हैं।

२०८—चौपता नाम।

२०६—मसेटो : उबालकर पीसे कुलत्थ।

२१०—ड्यू : अंग्रेजी due

२११—खड़ीक : एक वृक्ष।

२१२—फेड़ू : वन्य फल।

२१३ खिरखिरी . चिड चिडी (choking) पीड़ा।

पत्थर फेंकना घृणा प्रदर्शित करना।

२१४ आग भभरायेगी जलती आग की लपट से उद्भूत ध्वनि 'भभराना' कहलाती है। आग का भभराना किसी के याद करने का सूचक है।

भट्ट : सोया बीन। एक चबेना।

२२६ नारायणी मूर्ति : शरीर।

२२८ पानी चढ़ा है : जुकाम लगा है।

२२६ बंगाण : एक स्थान (रवाईं में)।

२३३ अड़ाना-पढ़ाना : धमकाना-सिखाना।

दूणी : स्थान का नाम।

२३४ छमरोट, भंकोली . स्थान विशेष।

२३५ थेर : एक वन्य पशु।

२४३ गरजता दानव मेघ।

२४? पष्ठारी, कुमार,

भराड़ · स्थान विशेष।

२५४ गल्लेदार झूठे व्यापारी।

रगड़ा : पथरीली भूमि।

२५७ सौ के विंदु का साल : सम्वत २००० ।

२५८ साहूकारा · रुपये व्याज पर देना ।

२८८ सँगरांदू : नाम विशेष ।

२६१ वडियारी : नाम स्थान ।

गूल, कूल : कूलिका ।

ढाकी-वाद्यी : नाचने बजाने वाली जाति ।

वर्तन की तरह भरी : गर्भवती हुई ।

तिलाडी : रवाई में एक मैदान, जहा कि टिहरी के राजा क विरुद्ध क्रांतिकारी एकत्र हुए थे, और उन्हें गोलियो का शिकार बनाया गया था ।

२६८—भाग वोना : नष्ट करना ।

२३३—गर्म तेल पिलाता है : कष्ट देता है ।

३०३—झगरेटा : झगोरा (सया) के डठल ।

३०४—नरसिंह नाचना : हलचल होना ।

उजाड़ खाना . खेतों की सुरक्षित फसल का पशुओ द्वारा खाया जाना ।

परिशिष्ट २

गीतों के प्राप्ति-सूत्र

जिनसे ये गीत सुने गये

१—दामोदर प्रसाद थपलियाल, खातस्यूं, गढवाल

मेरो गढवाल

२—उर्वीदत्त उपाध्याय, नितोनस्यूं, गढ़वाल

देवतों की पाती, जो जग दे

३—चक्रधर वहुगुणा, (मोघंग से)

पोखरी का हीत, ऐ जाणू रुकमा मेरा मलेषा, जय जग दे !

४—शकुन्त जोशी, मुसमोला, चटियार गढ़

जाग, बीजी जावा, नरसिंह, श्रोंजोझाडो, सगुन वोला, गाली, आरती, मेरो मन लागो, यखी रं जा, सौकार को जु बढ़दो नी ब्याज।

५—राजेश्वर प्रसाद उनियाल, मुयालगांव, नैल चामी
बोलणी, रणू, गजेसिंह, दौंता,

६—सिराज वाघी, काडा बडियार गढ़
दुनिया की हवा, जमाना को रंग, श्रमदान, सगरांडू बुड्या, जेमडी विसा, बाघ, छडा ९

७—जीतसिंह कैंतुरा, हौंदू लोस्तू
गेंदा, बालो गोबीन्दू, माधोसिंह।

८—प्रभा कंडारी सरकासैणी, लोस्तू
वस्त्रपर्व, बाजरो, मैत की याद. मेरी किसमत, नी रोणू, न्यूतो, बासलो कफू, पाठ बेवाई, बारमासी, सप्त पदी, निमन्त्रण, बाद, गहणा पर्व, बरात आगमन, देखण देवा।

९—माल चन्द रमोला, रैका, टिहरी गढ़वाल
बाजूबन्द-१, ३,

१०—हर्षमणि भट्ट, डुंडा, उत्तरकाशी
बाजूबन्द—२ ४, ५,

११—शंभुप्रसाद बहुगुणा (विराट हृदय से)
मजु, मोती ढागू, ऐ जा अगनी, रखवाली, खुदेडगीत १०,

१२—'धुयॉल' से (संपादक, अबोध बहुगुणा)
उर्यल भेद, भूत वे देश जौला, सर बियांरा बो क्या घरे हो, तेरो दादू का जायूं छ, लहसक कमर, दौंथी, छमिया, बलि की बाखरी, नौकरी नी मिली, नदा।

१३—कुंवर सिंह सितोनस्यू।
पैया डाली, रैमासो को फूल फूले कविलास; नगेलो, खुदेडगीत ७ और १३

१४--पांखू, वारह स्यूं ।

सुदेड गीत १. २, ३, ४, ५

१५--शिवराज सिंह, वावे, नागपुर

फंकी वौराण, खुदेडगीत १५, १६, १९, १४, बाजूबद ६

१६—ललित सिंह भडारी, पौडूया, रैका

जनशक्ति, नगीना,

१७—सुरेन्द्र सिंह रावत, मैजिनी त्रंगाण

रघुवास, लामण ११, जमरू नेगी।

१८--कुंवरसिंह पुंडीर, चिलेडी

फनी, पिंगली मुखडी ।

१९—चन्द्रमोहन रतूड़ी द्वारा लोकेन्द्र मकज़ानी टिहरी छूजी ।

२०—हेमचन्द्र रमोला, गमरी

नई रीत, भारत का हाल,

२१—शंभुशरण जोशी, भेलुन्ता, रैका

मैं भी औंदू. सुदेडगीत १, १७, ऊंकी सुव ।

२२—पद्मा रावत, मैंजिनी, धगाण

कलियुग, युगधर्म, नी जादी ।

२३—देवानन्द, दयानन्द वडोनो, भटवाड़ा, नैलचामी

रुमैलो झुमैलो, माडी ।

२४—शंकरू, नगुण ।

युद्धवर्णन, आशीर्वाद, पयू ली ।

२५—आलमू, गाढ, लोस्तु

सितरपाल, हनुमान, सुरकंडा, गुरु वदना, आछरी,

२६—सुन्दर लाल उनियाल, भटवाड़ी, नैलचामी

रैबार, चिट्ठी मेरी लिख देणी ।

२७—वचनसिंह पुंडीर, चिलेडी

गांधी, नेहरू, नेता जी ।

२८—श्री राम ममगाईं, गढ़वाल

सर्लों, सतपुली।

२६—हरिसिंह पाब, जौनपुर,

छूड़ा १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, १०,

३०—चन्दू, कुफारा, रवाईं

छूड़ा १२, १३, १४, १५, १७, १८, १९, २०।

३१—राजेन्द्र नयन, रवाईं, मुराड़ी

छूड़ा २१, २२, २३, २४, २५, २६, २७, रासू जाण,

३२—योगेश्वर प्रसाद विजलवाण, पुरोला रवाईं

छोपती १, २, लामण ७, ८, ११, १२।

३३—किसनू, मठ, रवाईं

छूड़ा २८, २९, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४।

३४—अब्बलसिंह पॅवार, मैंजिनी बंगाण

छूड़ा ३८, ३९, ४०, ४ , ४२, ४३।

३५—रामेश्वर, बालमसिंह, भाटिया, रवाईं

लामण १, ४, ५, ६, १०, केन्द्री मलारी, छोपती ३, ४।

३६—रामकली, ढोंड्या—, रवाईं

सभी बासती गीत।

३७—सुमंगला, बड़कोट

धूलि अर्घ, दी देवा बाबा जी, प्रस्थान, लगदी डर, गृह प्रवेश मैं जांदू !

३८—धर्मदास गडोली, रवाईं

ब्याई, आज छूटो, को देश, दूर को पयाणों, रंत नी दिने रैबार, खुदेड़ गीत २०, २१, मलारी, लायकूराम, मी जांदी बाजूबंद ९, ८, ७, मांग

३९—जन जाग्रांत से

मेरी चन्द्रा कख ?